ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

6

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

खुत्बात

ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

नाम किताब

खुत्बात जुलफ़क़ार 'फ़क़ीर'

6

मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी

पहला एडीशन: 2013 साइज़: 23x36x16

पेज: 284

प्रस्तुतकर्ता: जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशक

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2

Phones: 23289786, 23289159 Fax: 23279998

E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

KHUTBAT ZULFIQAR *FAQEER* Vol. 6

By: Prof. Muhammad Haneef Naqshbandi

Translitration : Ab-Darda

Pages: 284 Size: 23x36/16

Composed at: QAYAM GRAPHICS, Dehra Dun-248001

Ph.: 9675042215, 9634328430

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

फ़हरिस्त-मज़ामीन

(विषय-सूची)

❁ ❁ ❁

फ़ज़ाइल सैय्यदना सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु

❋ ❋ ❋

उलमाए देवबंद का तारीख़ी पसमंज़र

❋ ❋ ❋

इस्लाही बातें

❋ ❋ ❋

बरकत या कसरत

❋ ❋ ❋

हिफ़ाज़ते क़ुरआन

❋ ❋ ❋

ताइदे ग़ैबी

❋ ❋ ❋

ख़ौफ़े ख़ुदा

❋ ❋ ❋

पेश लफ़्ज़

सब तारीफ़ें अल्लाह जल्लाशानुहू के वास्ते हैं जो अपने बंदों से काम ले लेते हैं। अल्लाह का शुक्र है कि इस आजिज़ को खुत्बाते फ़क़ीर की छठी जिल्द तर्तीब देने की तौफ़ीक़ नसीब हुई। यह सब मुर्शिद व मुरब्बी, उलमा और सालिहीन के महबूब हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी दामत बरकातुहुम की दुआओं और तवज्जुह की वजह से मुमकिन हुआ वरना ज़िंदगी के कारोबार के दौरान काम में इतनी रुकावटें आती हैं कि काम को जल्दी करने की सारी कोशिशें देर में बदल जाती हैं। बहरहाल छठी जिल्द आपके हाथों में है और उम्मीद है कि अल्लाह की तौफ़ीक़ से सालाना इज्तिमा सन् 2001 ई० तक एक और जिल्द मंज़रे आम पर आ सकेगी, इंशाअल्लाह।

यह जिल्द हिकमत और मारिफ़त के कुल आठ खुत्बात का मजमूआ है। हर बयान में बेशुमार फ़ायदे व समरात हैं। इनको लिखते हुए आजिज़ की अपनी कैफ़ियत अजीब हो जाती है। लिखने के बीच दिल में यह शदीद तमन्ना पैदा होती है कि काश मुझ में भी ये बयान की हुई कैफ़ियत आ जाएं। यह खुत्बात यक़ीनन पढ़ने वालों के लिए भी नाफ़े होंगे। किसी भी तहरीर के मुताले के दौरान दिल की तारों का हिल जाना बात करने वाले के फ़ैज़ से होता है। इख़्लासे नीयत और हुज़ूरे क़ल्ब (ध्यान) से

किताब को पढ़ना हज़रत की ज़ाते बाबरकत से फ़ैज़याब होने का बाइस होगा।

आजिज़ ने ख़ुत्बाते बाबरकत की पुरकशिश ज़ीनत और तर्तीब के लिए अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश की है फिर भी पढ़ने वाले अगर कोई कमी ज़्यादती पाएं तो बताकर अल्लाह के यहाँ अज्र के हक़दार हों।

आजिज़ इस किताब की तर्तीब में मदद करने वाले ख़ुशनसीब हज़रात का दिल की गहराई से शुक्रगुज़ार है और ख़ासतौर पर इदारा मक्तबतुल फ़क़ीर का जिसने इसकी तबाअत और इशाअत का काम बहुत ख़ूबी के साथ अंजाम दिया। अल्लाह तआला मेरे इन तमाम मददगारों को अज्रे अज़ीम अता फ़रमाए और हमें सारी ज़िंदगी इशाअत के इस काम को करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। (आमीन)

फ़क़ीर मुहम्मद हनीफ़ अफ़ी अन्हु

एम०ए०बी०एड०

मौज़ा बाग़, झंग

मईयत-ए-इलाही

जब कुछ लोग इस तरह चोरी करते हुए पकड़े गए तो बाक़ी लोगों ने चोरी करने से तौबा कर ली क्योंकि सबको यह एहसास रहता कि हमें कैमरे की आँख से देखा जा रहा है। अगर कैमरे की आँख देख रही होती है और बंदे को इतना डर लगा होता है तो जिस बंदे को यह ख़्याल नसीब हो कि मेरा परवरदिगार देख रहा है तो वह गुनाह की हिम्मत कैसे करेगा।

मईयत-ए-इलाही

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَکَفٰی وَ سَلٰمٌ عَلٰی عِبَادِہِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِo بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِo

هُوَ مَعَکُمْ اَیْنَمَا کُنْتُمْo سُبْحٰنَ رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُوْنَo وَسَلٰمٌ عَلَی

الْمُرْسَلِیْنَo وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَo

मईयते इलाही का हुक्म

इर्शाद बारी तआला है ﴿هُوَ مَعَکُمْ اَیْنَمَا کُنْتُمْ﴾ (अल्लाह तआला) तुम्हारे साथ है तुम जहाँ कहीं भी हो। अल्लाह की मईयत का इल्म हर मुसलमान को है। हम उसे अपनी रगे जान से भी ज़्यादा क़रीब समझते हैं क्योंकि क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَیْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِیْدِ﴾ कि हम उनकी रगे जान से भी ज़्यादा उनके क़रीब है और दूसरी जगह फ़रमाया कि जहाँ तीन आदमी होते हैं वहाँ चौथा वह होता है और जहाँ पाँच होते हैं वहाँ छठा वह होता है।

इल्म और इस्तेहज़ार (ध्यान) में फ़र्क़

एक है किसी चीज़ का इल्म होना और दूसरा है किसी चीज़ का इस्तेहज़ार होना। "इल्म होने" का मतलब है जानना और इस्तेहज़ार इसको कहते हैं कि वह चीज़ याद रहे और दिमाग में हाज़िर रहे। इल्म की हद तक तो हम में से हर एक को पता है

कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारे साथ है मगर यह चीज़ ज़हनों में हाज़िर नहीं रहती और दिलों में हर वक़्त इसकी कैफ़ियत मौजूद नहीं रहती।

औराद व वज़ाइफ़ की ख़ुसूसियत

मशाइख़े तरीक़त बैअत के बाद जो औराद व वज़ाइफ़ बताते हैं उन औराद व वज़ाइफ़ की ख़ुसूसियत यह होती है कि इंसान को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मईयत का इस्तेहज़ार नसीब हो जाता है जो कि असल मक़सूद है। अगर इंसान को औराद व वज़ाइफ़ करने के बावजूद भी मईयते इलाही का ध्यान नसीब न हो तो इसका यह मतलब है कि वह सिलसिले के आदाब व शराइत की पाबंदी नहीं कर रहा है।

सिलसिलए नक़्शबंदिया में मईयते इलाही का हुसूल

हमारे सिलसिला आलिया नक़्शबंदिया के पैंतीस सबक़ हैं। उनमें से पंद्रह सबक़ों के बाद सोलहवाँ सबक़ "मुराक़बा मईयत" कहलाता है। जो आदमी आदाब व शर्तों के साथ पंद्रह सबक़ पूरे करे तो यह हो ही नहीं सकता कि उसे सोलहवें सबक़ पर मईयते इलाही की कैफ़ियत का इस्तेहज़ार नसीब न हो। मसलन जब कोई बच्चा स्कूल में दाख़िला लेता है तो पहले प्राइमरी पास करता है, फिर मैट्रिक का इम्तिहान देता है, एम०एफ़०ए०, बी०ए० करके कॉलेज से निकलता है और एम०ए० या एम०एस०सी० करके मास्टर की डिग्री हासिल कर लेता है। हमारे हाँ भी इसी तरह है कि सोलहवें सबक़ पर सालिक को मईयत इलाही की कैफ़ियत हासिल हो जाती है।

निगाहे नुबुव्वत का फ़ैज़ान

सहाबा किराम का हाल जुदा था। उनको "मईयते इलाही" की यह कैफ़ियत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली मुलाक़ात में ही हासिल हो जाती थी–

ख़ुद न थे जो राह पर औरों के हादी बन गए
वह क्या नज़र थी जिसने मुर्दों को मसीहा कर दिया

वह मुर्दा हालत में दरे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जाया करते थे और महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक ही नज़रे कीमिया उनकी ज़िंदगियों को बदल कर रख देती थी और उन्हें मईयते इलाही की कैफ़ियत हासिल हो जाया करती थी लेकिन यह बात याद रखें कि निगाहे नुबुव्वत का फ़ैज़ान कोई और चीज़ है। आज उससे चौदह सौ साल बाद का दौर है। आज अगर कोई आदमी चाहे कि मुझे यह कैफ़ियत हासिल हो जाए तो उसे मेहनत करना पड़ेगी। अब यह सवाल पैदा होता है कि वह कौन सी मेहनत करेंगे? उसे चाहिए कि ज़िक्र व मुराक़बा करे। हमारे सिलसिला नक़्शबंदिया के अंदर मुराक़बा बताते हैं।

मुराक़बा क्या है?

मुराक़बा क्या है? शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० अपनी किताब "अल् क़ौलु-जमील" में फ़रमाते हैं :

﴿المراقبة ان تلازم قلبك لعلم ان الله ناظر اليك.﴾

मुराक़बा यह होता है कि तू अपने दिल में इस बात को लाज़िम कर ले कि अल्लाह तआला तेरी तरफ़ देख रहा है। यह कैफ़ियत इंसान को मश्क़ करने से हासिल हो जाती है।

मईयते इलाही की इस्तेदाद पैदा करने का तरीक़ा

जो हज़रात बुख़ारी शरीफ़ का दौरा करते हैं, उन्हें जो इल्म पहले सात साल में पढ़ाया जाता है वह उनको बुख़ारी शरीफ़ और दूसरी हदीस की किताबें पढ़ने की और उनको समझने की इस्तेदाद पैदा करने के लिए पढ़ाया जाता है। सात साल पढ़ने के बाद तालिब इल्म इतनी सलाहियत हासिल कर लेता है कि वह हदीसों की तमाम किताबें पढ़ सकता है और उन हदीसों की गहराई तक उतर सकता है। इसी तरह हमारे मशाइख़ भी "मईयते इलाही" वाले सोलहवें सबक़ की सलाहियत पैदा करने के लिए पंद्रह सबक़ो की मेहनत करवाते हैं।

औराद वज़ाइफ़ का मक़सद

हमारे मशाइख़ सिर्फ़ सवाब हासिल करने के लिए यह नहीं बताते कि आप सुबह व शाम यह औराद व वज़ाइफ़ और मुराक़बा किया करें। सवाब के लिए बताना होता तो और बड़े काम थे। वह तो ये बातें बातिन की सफ़ाई के लिए बताते हैं, दिल की सफ़ाई और तज़्किए के लिए बताते हैं। ज़िक्र करने से अंदर की गंदगी दूर होती है और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मईयत का ध्यान नसीब हो जाता है। इससे अल्लाह तआला की याद दिल में ऐसी जम जाती है कि—

भुलाना भी चाहो तो भुला न सकोगे

एक मिसाल से वज़ाहत

इसकी मिसाल यूँ समझ लीजिए कि अगर किसी माँ का बेटा

मर जाए और उसे दूसरे दिन यह कहा जाए कि तुम आज अपने बच्चे को याद न करना तो यह बात उसके बस में नहीं होगी। वह भुलाना भी चाहेगी तो भी उसे हर वक़्त बच्चा याद आएगा। उसे महसूस होगा जैसे वह बच्चा उसके सामने है। वह खाना खाते हुए भी उसे याद करेगी, बात करते हुए भी उसे याद करेगी, उठते बैठते भी उसे याद करेगी यहाँ तक कि रात को बिस्तर पर सोते हुए भी उसे याद करेगी। जैसे वह माँ कहती है बच्चे को भूलना मेरे बस की बात नहीं इसी तरह जो इंसान यह सबक़ कर लेता है और उसे "मईयते इलाही" की कैफ़ियत मिल जाती है तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को भूलना उसके बस में नहीं होता। अब इसका यह मतलब हर्गिज़ नहीं है कि वह विलायत के सब मुक़ामात तय कर चुका होता है नहीं बल्कि वह बंदा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हिफ़ाज़त में आ जाता है।

औलिया किराम और हिफ़ाज़ते खुदावंदी

अंबियाए किराम मासूम होते हैं और औलिया किराम महफ़ूज़ होते हैं यानी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपने औलिया किराम को गुनाहों की ज़िल्लत से निकाल लेते हैं जैसे बाप अगर अपने बेटे को ग़लत क़िस्म के लोगों में खड़ा देखे तो उसका ज़रा जी नहीं चाहता कि वह उन लोगों में रहे बल्कि उसकी यह कोशिश होगी कि वह उसे फ़ौरन उस माहौल से निकाले। बिल्कुल इसी तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त भी अपने बंदे को नफ़्स और शैतान के ग़लबे से निकाल लेते हैं क्योंकि उसने ज़िक्र व इबादत के ज़रिए अपने परवरदिगार को राज़ी कर लिया होता है।

तसव्वुफ़ व सुलूक का मक़सद

तसव्वुफ़ व सलूक का मक़सद न रंगों को देखना, न मुक़द्दमों का फ़तेह करना, न दुश्मनों पर ग़ालिब आना, न दुआओं का क़बूल होना, न रिज़्क़ में बरकत होना, न इबादत में सुरूर हासिल होना है बल्कि मक़सद यह है कि इस्तिक़ामत के साथ शरीअत पर अमल नसीब हो जाए। सालिक जब यह मक़सद हासिल कर लेता है तो वह शरीअत के मुताबिक़ अमल करके सुकून पा लेता है। जैसे बच्चा माँ की गोद में आकर सुकून पा लेता है उसी तरह वह बंदा मुसल्ले पर आकर पुरसुकून हो जाता है क्योंकि उसे अल्लाह के ज़िक्र में लुत्फ़ व मज़ा आ रहा होता है।

मक़ामे फ़नाइयत

मुराक़बाए मईयत करने से इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को हर वक़्त याद करता है। हमारे मशाइख़ ने यह बात इन अल्फ़ाज़ में समेट दी है ﴿الفانی لا یرد﴾ कि फ़ानी वापस नहीं लौटता। फ़ानी का क्या मतलब? फ़ानी उस इंसान को कहते हैं जो मासिवा (अल्लाह के ग़ैर) की याद को भुला बैठे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद में डूब जाए, अल्लाह के रंग में रंग जाए और अल्लाह की याद उस की तबीयत का हिस्सा बन जाए। ऐसा आदमी ज़िक्र में फ़नाइयत हासिल कर लेता है जिसकी वजह से उसे फ़ानी कहा जाता है।

“फ़ानी आदमी वापस नहीं लौटता” का क्या मलतब है? इसका मतलब यह है कि जैसे कोई आदमी बालिग़ होने के बाद दुबारा नाबालिग़ नहीं हो सकता और फल पकने के बाद दुबारा कच्चा नहीं हो सकता उसी तरह फ़ानी आदमी ज़िक्र करके अपनी

रूहानियत को उसे दर्जे पर पहुँचा देता है कि फिर अल्लाह तआला उसको वापस नहीं लौटने देते और उसे अपने प्यारे बंदों में शामिल कर लेते हैं। यह चीज़ हमें हासिल होनी चाहिए।

फ़नाइयत हासिल करने का तरीक़ा

फ़नाइयत हासिल करने का तरीक़ा यह है कि तख़लिया (तन्हाई) में बैठकर अल्लाह को याद किया जाए। इंसान सारी दुनिया से हट-कट जाए और अल्लाह तआला की याद में डूब जाए। लेकिन अफ़सोस इस बात पर है कि अक्सर लोगों की आदत ख़लवत (अकेले) में बैठने की नहीं है। उनको बातों का चस्का होता है और चुप रहने से तबीयत घबराती है, महफ़िल में बैठने की आदत होती है और अकेले बैठने से तबीयत में वहशत होती है जबकि हमारे मशाइख़ यह कहते हैं कि सद हवास ज़ाहिर से फ़तेह हवास बातिन हुआ करता है यानी जब इंसान ज़ाहिर हवास को बंद कर लेता है तब उसके बातिन के हवास खुलना शुरू हो जाते हैं–

तर्जुमा : तू अपनी आँख को ग़ैर से बंद कर ले, कान को बंद कर ले और अपने लबों को बंद कर ले फिर भी अगर तुम्हें महबूब की याद मज़ा न दे तो फिर मेरे ऊपर हंसी करते फिरना।

हमारे लिए यह काम सबसे मुश्किल है।

मुराक़बा असल चीज़ है

अगर पूछें कि क्या आप मुराक़बा करते हैं? जवाब मिलता है

कि जी वक़्त नहीं मिलता। जी दरूद शरीफ़ और इस्तिग़फ़ार की तस्बीहात तो कर लेता हूँ मगर मुराक़बा नहीं होता। इसका मतलब तो यह हुआ कि जी मैं पानी, नमक, मिर्च और घी मिला लेता हूँ मगर मेरे पास सब्ज़ी और गोश्त नहीं होता तो जिस आदमी के पास सब्ज़ी और गोश्त न हो क्या वह बाक़ी चीज़ें मिलाकर सालन तैयार कर लेगा? हर्गिज़ नहीं। और अगर उसके पास नमक, मिर्च और घी न हो तो क्या सिर्फ़ सब्ज़ी या गोश्त उबाल लेने से वह सालन बना लेगा? हर्गिज़ नहीं। इसी तरह "मुराक़बा करना" जो असल चीज़ है वह तो करते नहीं और फिर कहते हैं कि जी असर नहीं होता।

हज़ार साल से आज़माइ हुई मेहनत

याद रखिए कि हमारे मशाइख़ की यह मेहनत कोई मामूली चीज़ नहीं है। यह बड़ी मक़बूल हस्तियों की बताई हुई मेहनत है। उन्होंने अल्लाह तआला की पसंदीदा ज़िंदगी गुज़ारी और उसके सामने सालों तहज्जुद के वक़्त रो रो कर के मांगा कि ऐ मालिक! हमें वह तरीक़ा बता दे जिससे हमारे दिलों में तेरी याद बैठ जाए। उनकी तक़्वे व तहारत की ज़िंदगियों पर खुश होकर परवरदिगार ने उनके सामने यह ज़िक्र के तरीक़े खोल दिए। हज़ार साल से पहले के मशाइख़ ने यह मेहनत की और फिर उन्होंने तस्दीक़ की कि जो आदमी इस तरह से मेहनत करेगा उसे यह नेमत मिल जाएगी। जिस तरह आज अगर किसी आदमी को कोई गोली खाने से सेहत मिल जाती है तो वह हर एक को बताता फिरता है उसी तरह हमारे मशाइख़ को जिस मेहनत करने से रूहानी बीमारियों से शिफ़ा मिली, उन्होंने भी इस मेहनत का तरीक़ा बता दिया। अगर

कोई आदमी आज भी इस मेहनत को करेगा तो अल्लाह तआला उसकी बातिनी बीमारियों को दूर करेंगे।

सबसे बड़ी मुसीबत

आज के दौर की सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि गुनाहों से सौ फ़ीसद तौबा नहीं करते, इल्ला माशाअल्लाह। पाँचों उंगलियाँ बराबर नहीं होतीं। क़ुदसी रूहें भी मौजूद हैं। लेकिन मान लें कि अगर सारे गुनाहों की तादाद सौ है तो आज कोई पचास फ़ीसद गुनाहों से बच रहा है, कोई साठ फ़ीसद गुनाहों से बच रहा है, कोई दीनदार कहलाने वाले नव्वे फ़ीसद गुनाहों से बच रहे हैं। और इससे ऊपर ज़िक्र-अज़्कार की मेहनत करने वाले हैं वे भी नव्वे फ़ीसद, पिच्चानवें फ़ीसद बच रहे हैं। आख़िर पाँच फ़ीसद गुनाहों में नफ़्स कहीं न कहीं धोका दे जाता है। किसी की आँख क़ाबू में नहीं, किसी की ज़बान क़ाबू में नहीं, किसी ने दिल को किसी अरमान में फँसा रखा है और किसी ने अपने आपको किसी कारोबार में उलझा रखा है। कोई न कोई ऐसा गुनाह हो जाता है जिसकी वजह से बंदा अल्लाह तआला से दूर रहता है।

गुनाह की नजासत का वबाल

अल्लाह तआला पाक हैं और पाक ही चीज़ को पसंद करते हैं जब कि गुनाह नजासत है। इसीलिए तो मुशरिक बंदे को इन अल्फ़ाज़ में नजिस कहा गया ﴿إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ﴾। एक मुशरिक सत्तर बार भी ग़ुस्ल करके आ जाए तो वह पाक नहीं हो सकता। इसलिए कि एक ज़ाहिरी नजासत होती है और एक अंदुरूनी नजासत होती है और मुशरिक बंदा शिर्क की वजह से अंदुरूनी

नजासत में सना होता है। जब तक वह शिर्क वाले गुनाह को नहीं छोड़ेगा तब तक वह उस नजासत से पाक नहीं हो सकता। गुनाह क्योंकि नजासत की तरह है इसलिए अगर हमारा एक उज़्व भी गुनाह की नजासत से लिथड़ा हुआ हो तो हम अल्लाह तआला से वासिल नहीं हो सकते। लिहाज़ा उस पाक परवरदिगार के साथ वस्ल हासिल करने के लिए गुनाहों की ज़िल्लत और गुनाहों की गंदगी से निकलना ज़रूरी है।

मंज़िल के सामने थकने वाला मुसाफ़िर

यूँ समझिए कि कलिमा पढ़कर सौ गुनाहों को छोड़ना था। किसी ने नव्वे क़दम उठा लिए, किसी ने पिच्चानवे क़दम उठा लिए, कोई अल्लाह तआला से दस क़दम दूर खड़ा है, कोई पाँच क़दम दूर खड़ा है लेकिन जिसने सौ फ़ीसद गुनाहों को छोड़ा है वह बंदा अल्लाह से वासिल हो गया है। अब हमारी ज़िंदगी पर कितना अफ़सोस है कि हम पिच्चानवें क़दम तो उठा चुके हैं और आख़िरी पाँच क़दम न उठाने की वजह से हम वासिल नहीं हो रहे–

हसरत है उस मुसाफ़िर मुज़्तर के हाल पर
जो थक के रह गया हो मंज़िल के सामने

मंज़िल भी सामने है और हर काम शरीअत व सुन्नत के मुताबिक़ करते हैं मगर कोई एक आध गुनाह ऐसा है जिसने उलझाया हुआ है।

गुनाह से कैसे बचा जाए?

मुअज़्ज़ज़ जमात! इन बाक़ी बचे हुए गुनाहों से भी तौबा करके अपने परवरदिगार से वासिल हो जाइए ﴿اُدْخُلُوْا فِی السِّلْمِ﴾

كَسَلِّمِ अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि तुम पूरे के पूरे सलामती में दाख़िल हो जाओ। गोया वह चाहते हैं कि तुम सर के बालों से लेकर पाँव के नाख़ुनों तक गुनाहों की ज़िल्लत से निकल जाओ और ताअत की इज़्ज़त पर आ जाओ और गुनाहों से बचना तब ही आसान है जब दिल में हर वक़्त अल्लाह तआला का ध्यान रहेगा।

अमरीका में चोरी का हल

हमने यूरोप व अमरीका में देखा कि वहाँ बड़े-बड़े स्टोर होते हैं। लोग वहाँ पर चीज़ें ख़रीदने तो जाते हैं मगर कोई बंदा भी वहाँ पर पड़ी किसी चीज़ को उठाकर जेब में नहीं डालता। इसकी वजह यह है कि उन्होंने ने कुछ कैमरे लगाए होते हैं और लोगों को पता है कि अगर कोई चीज़ चुराई तो कैमरे की स्क्रीन पर महफ़ूज़ हो जाएगी। सीक्योरिटी गार्ड बैठे देख रहे हैं, वे आकर उसे पकड़ेंगे और उससे कहेंगे कि आपने चोरी की है। अगर कोई चोर वहाँ पर कहे कि मैंने चोरी नहीं की तो वह सीक्योरिटी गार्ड वह चीज़ जहाँ उसने डाली होती है वह निकालकर भी दिखाएंगे और स्क्रीन के ऊपर उसको चोरी करता हुआ भी दिखा देंगे। जब कुछ लोग इस तरह चोरी करते हुए पकड़े गए तो बाक़ी लोगों पर ऐसा ख़ौफ़ बैठ गया कि काफ़िर और दग़ाबाज़ होने के बावजूद वहाँ जाकर चोरी करने की हिम्मत नहीं करते क्योंकि हर एक को एहसास होता है मुझे देखा जा रहा है। अगर कैमरे की आँख देख रही होती है तो इतना डर लगा होता है तो जिस बंदे को यह ध्यान नसीब हो कि मेरा परवरदिगार मुझे देख रहा है तो वह गुनाहों की हिम्मत कैसे करेगा।

इंसानी सोच पर माहौल का असर

आदमी जिस माहौल में रहता है उस पर वही सोच ग़ालिब आ जाती है मसलन अगर एक आदमी किसी डिसपैंसरी में बैठा हो और वह डिसपेंसर से कहे कि मेरे सर में दर्द है तो वह उसे कहेगा कि तुम पीनाडोल की गोली खा लो। और अगर कोई आदमी मस्जिद में उलमा के पास बैठा हो और कहे कि जी मुझे सर दर्द है तो साथ वाला कहेगा कि हज़रत साहब से दम करवा लो। डिसपैंसरी के माहौल में गोली खाने की तरफ़ ध्यान चला गया और मस्जिद के माहौल में दम की तरफ़ ध्यान चला गया। गोया जैसा माहौल था बंदे की सोच भी वैसी ही बन गई।

मुसब्बिब-उल-असबाब की याद

हम क्योंकि असबाब में रहते हैं इसलिए असबाब हम पर ग़ालिब आ जाते हैं। हमारी सोच असबाब के मातहत होती है मगर यह बात ज़रूरी है कि हम कुछ देर मुसब्बिब-उल-असबाब (असबाब को बनाने वाले) की याद में गुज़ारें ताकि हमारी तवज्जुह असबाब से ऊँची हो जाए। तब हमारा ध्यान अल्लाह तआला की तरफ़ जाएगा वरना असबाब में फंसे रहेंगे।

हज़रत ज़कृरिया अलैहिस्सलाम और हज़रतमरयम अलैहस्सलाम पर माहौल के असरात

हज़रत ज़कृरिया अलैहिस्सलाम दावत व तबलीग़ के काम के लिए तशरीफ़ ले गए। वहाँ लोगों से मिलते रहे। तबलीग़ करते रहे और लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाते रहे। लोगों के साथ मिलने की वजह से असबाब के आलम में ज़िंदगी गुज़रती रही।

यह क्योंकि इंसान की फ़ितरत है कि जैसा माहौल मिलेगा वैसी ही सोच ग़ालिब आ जाती है। इसलिए जब वापस आने लगे तो ज़हन में ख़्याल आया कि मरयम के पास खाने पीने की चीज़ें कुछ कम थीं, कहीं ऐसा न हो कि वह ख़त्म हो गई हों। उसे लाकर देने वाला तो कोई और नहीं है और मुझे भी देर हो गई। यह सोच कर ज़रा तेज़ी से चले

﴿كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا﴾

जब मेहराब में दाख़िल हुए तो मरयम बैठी हुई बे मौसम के फल खा रही थी।

वह हैरान होकर पूछने लगे ﴿اَنّٰى لَكِ هٰذَا﴾ यह फल तुझे किसने लाकर दिए? मरयम क्योंकि ज़िक्र व इबादत और तख़लिए (तन्हाई) में वक़्त गुज़ार रही थीं और इनाबत इलल्लाह की कैफ़ियत पक्की हो चुकी थी इसलिए वह कहने लगीं ﴿هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ﴾ कि यह अल्लाह की तरफ़ से हैं ﴿اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾ बेशक अल्लाह तआला जिसे चाहते हैं उसे बग़ैर हिसाब रिज़्क़ अता फ़रमा देते हैं।

जब मरयम अलैहस्सलाम ने यह बात की तो हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम का ध्यान इस तरफ़ गया कि वाक़ई अल्लाह तआला तो हर चीज़ पर क़ादिर हैं। इसलिए उन्होंने उस वक़्त दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! अगर आप मरयम को बेमौसम फल अता कर सकते हैं तो मुझे भी तू तैय्यब (पाकीज़ा) बेटा अता फ़रमा दे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मौक़ा महल के मुनासिब मांगी हुई दुआ फ़ौरन क़बूल फ़रमा ली।

हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ऊँची शान वाले हैं मगर

क्योंकि वह लोगों से मिल मिलाकर आ रहे थे इसलिए उनकी सोच असबाब के तहत थी और मरयम अलैहस्सलाम क्योंकि तख़लिए में बैठी हुई थीं इसलिए उनकी तवज्जुह असबाब से ऊपर अल्लाह तआला की तरफ़ थी।

मगर यही मरयम अलैहस्सलाम जो बेमौसम के फल खाती थी जब उन्होंने ख़ुद घर की ज़िंदगी गुज़ारनी शुरू कर दी तो उनकी सोच भी असबाब के तहत हो गई।

एक बार मरयम अलैहस्सलाम ग़ुस्ल के लिए घर के पूरब की तरफ़ गयीं तो पर्दा कर लिया ﴿فَاَرْسَلْنَا اِلَيْهَا رُوْحَنَا﴾ अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेज दिया। ﴿فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا﴾ जिब्राईल अलैहिस्सलाम भरपूर नौजवान की शक्ल में सामने आए। जब वह भरपूर मर्द की शक्ल में सामने आए तो मरयम अलैहस्सलाम आज के दौर की बिगड़ी हुई बेगम तो नहीं थीं कि वह तन्हाई में ग़ैर महरम को देखकर मुस्कुराहटों से इस्तिक़बाल करतीं। वह तो पाकदामन थीं। उन्होंने जब उन्हें तन्हाई में देखा तो फ़ौरन डर गयीं और घबराकर कहने लगीं ﴿اِنِّي اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا﴾ कि रहमान की पनाह चाहती हूँ। जब डरकर कहा कि मैं रहमान की पनाह चाहती हूँ तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम समझ गए कि मरयम अलैहस्सलाम ख़ौफ़ज़दा हो गयीं हैं तो इसलिए अब इन्हें बात बता देनी चाहिए। लिहाज़ा फ़रमाने लगे कि ﴿اِنَّمَا اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ﴾ मैं तेरे रब का भेजा हुआ नुमाइन्दा हूँ ﴿لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا﴾ ताकि तुझे नेक बेटा दिया जाए।

अब मरयम क्योंकि असबाब के तहत ज़िंदगी गुज़ार रही थीं इसलिए सोचने लगीं कि बेटा होने के लिए तो दो सबब होते हैं

या तो इंसान निकाह करे या फिर गुनाह करे। न मैंने निकाह किया और न मैंने गुनाह किया। जब दोनों सबब मौजूद नहीं हैं तो फिर मेरा बेटा कैसे हो सकता है। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ﴿قَالَ كَذٰلِكِ﴾ मरयम! जैसे तुम कह रही हो ऐसा ही है, न आपने निकाह किया न आपसे गुनाह हुआ। ﴿كَذٰلِكِ﴾ के लफ़्ज़ ने बीबी मरयम अलैहस्सलाम की पाकदामनी पर मुहर लगा दी। क़ुरआन मजीद क़ियामत तक उनकी पाकदामनी की गवाही देता रहेगा। अल्लाह तआला ऐसी बेटियाँ हर एक को नसीब फ़रमाए, आमीन। ज़िब्राईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ﴿قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ﴾ कि आपके रब ने कहा कि यह मेरे लिए आसान है। आपको यह बेटा किसी ज़ुल्फ़ों वाली सरकार ने नहीं देना बल्कि आपको यह बेटा पाक परवरदिगार ने देना है। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने उनको बेटा दे दिया।

ईमान को मज़बूत से मज़बूत करने का तरीक़ा

हमारे मशाइख़ यही फ़रमाते हैं कि हम रोज़ाना कुछ वक़्त तख़लिए में गुज़ारें, मुसल्ले पर बैठें या मस्जिद के कोने में बैठें या तन्हाई में बैठें। उस वक़्त सारी दुनिया से हट-कट जाएं। यह सोचें और फ़िक्र करें जिन्होंने हमें बूढ़ा कर दिया है, उस वक़्त उनको अपने ज़हनों से निकाल फेंका करें और अपने दिमाग़ को ख़ाली कर के अपने मौला की याद में लगा दिया करें। जब अल्लाह तआला की तरफ़ ध्यान होगा तो ईमान मज़बूत से मज़बूत होता चला जाएगा। यह कौन सी ऐसी बात है जो समझ में नहीं आ सकती।

उंगली पकड़कर मंज़िल पर पहुँचाने वाले

कुछ लोग कहते हैं कि जी बैअत क्यों की जाती है? पीर की

क्या ज़रूरत है? भाई! इसलिए बैअत होते हैं कि वे मशाइख़ अल्लाह तआला की मईयत हासिल करने का तरीक़ा बताते हैं। जिस रास्ते से हमने गुज़रना होता है वह उस रास्ते से गुज़र चुके होते हैं। इसलिए वे उंगली पकड़कर मंज़िल तक पहुँचा देते हैं।

अफ़ज़ल ईमान

जिस बंदे के अंदर मईयते इलाही का ध्यान पैदा हो जाता है वह हर वक़्त अल्लाह तआला की याद में रहता है। इसको हदीस पाक में अफ़ज़लुल-ईमान कहा गया है। हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿افضل الايمان ان تعلم ان اللّٰه معك حين ما كنت﴾

अफ़ज़ल ईमान यह है कि तू इस बात को जान ले कि अल्लाह तआला तेरे साथ हैं तू जहाँ कहीं भी है।

इस अफ़ज़ल ईमान को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नें इर्शाद फ़रमाया :

﴿احفظ اللّٰه يحفظك، احفظ اللّٰه تجدك تجاهك﴾

तू अल्लाह की हिफ़ाज़त कर तू अल्लाह को अपने सामने पाएगा गोया हर वक़्त अल्लाह तआला का ध्यान रहेगा।

फ़िक्र की गंदगी का इलाज

इस चीज़ में आज आम लोगों का तो क्या कहना उलमा और तलबा भी वह मेहनत नहीं कर रहे हैं जो करनी चाहिए थी। इसी लिए नफ़सानियत से जान नहीं छूटती। तलबा अक्सर शिकायत

करते हैं कि हज़रत नज़र क़ाबू में नहीं रहती, हज़रत! वसवसों पर क़ाबू नहीं रहता, हज़रत! जो पढ़ते हैं वह भूल जाते हैं। सब का खुलासा फ़िक्र की गंदगी है और फ़िक्र की गंदगी हमेशा ज़िक्र से दूर हुआ करती है। आप ज़रा तवज्जुह से ज़िक्र कीजिए फिर देखिए कि अल्लाह तआला फ़िक्र को कैसे पाक फ़रमा देते हैं। सोच भी पाक हो जाती है और इंसान के अंदर से हवस भी ख़त्म हो जाती है। उसकी निगाह की हिफ़ाज़त हो जाती है और अल्लाह तआला उसकी तबीयत में सुकून पैदा कर देते हैं। आज हमें हमारी हवस ने परेशान कर रखा है। जिसकी शादी नहीं हुई वे भी परेशान है और जिसकी हो चुकी है वह इससे भी ज़्यादा परेशान है। इस बीमारी से जान छुड़ाने का सिर्फ़ एक ही तरीक़ा है कि इसका बाक़ायदा इलाज करवाया जाए। और याद रखिए कि इसका इलाज ज़िक्र से होगा क्योंकि हदीस पाक में है ﴿ذكر الله شفاء القلوب﴾ अल्लाह का ज़िक्र दिलों की शिफ़ा है।

दिल के रोग की अलामत

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाया, ऐ नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की बीवियो! अगर किसी से बातचीत करने का मौक़ा आए तो पर्दे के पीछे से बातचीत करो और ज़रा सख़्ती से बात करो, ऐसा न हो कि अगर तुम नरमी से बोलो ﴿فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ﴾ तो लालच करे वह बंदा जिसके दिल में मर्ज़ है। इसका मतलब यह है कि ग़ैर-महरम से बात करके और ग़ैर-महरम की तरफ़ देखकर जो बंदा दिल में लालच करता है उसके बारे में क़ुरआन की गवाही है कि उसके दिल में मर्ज़ होता है। अगर आज तमा की नज़र इधर उधर उठती है या बात करके

तबीयत के अंदर तमा पैदा होती है तो यह इस बात का पक्का सबूत है कि हमारे दिलों के अंदर मर्ज़ मौजूद है। इसीलिए मशाइख़ ज़िक्र करवाते हैं जिससे यह तमा ख़त्म हो जाती है और तबीयत के अंदर सुकून आ जाता है।

अल्लाह की रज़ा की तलब

जिस आदमी को मईयत इलाही की कैफ़ियत का इस्तेहज़ार नसीब हो जाए उसके लिए गुनाहों से बचना आसान हो जाता है। हर काम करते वक़्त वह समझता है कि अल्लाह तआला मुझे देख रहे हैं इसलिए वह हर काम अल्लाह की रज़ा के लिए कर रहा होता है।

मौलाना मुहम्मद याक़ूब नानूतवी रह० और रज़ाए इलाही

हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब नानूतवी रह० हमारे बड़ों में से थे। एक बार वह किसी बच्चे को किसी ग़लती पर सज़ा देने लगे। उसे दो चार थप्पड़ लगाए। जब बच्चे को थप्पड़ लगे और उसे दर्द हुआ तो रोकर कहने लगा, हज़रत! मुझे अल्लाह के लिए माफ़ कर दें। हज़रत रह० ने फ़रमाया, ओ ख़ुदा के बंदे! मैं तुझे अल्लाह के लिए ही तो मार रहा हूँ। मालूम हुआ कि उनका ग़ुस्से के वक़्त भी किसी को मारना अल्लाह ही के लिए हुआ करता था।

सैय्यदना हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और रज़ाए इलाही

एक बार सैय्यदना अली रज़ियल्लाहु अन्हु एक काफ़िर के सीने

पर चढ़ बैठे। क़रीब था कि उसके सीने में ख़जंर घोंप देते। मगर उस कमीने ने आपके चेहरए अनवर पर थूक दिया। जब थूक दिया तो बजाए उसको ज़िब्ह करने के आप पीछे हट गए। वह हैरान होकर पूछने लगा, अली! आपने मुझे मारा क्यों नहीं? आप फ़रमाने लगे कि मैं तुझे अल्लाह की रज़ा के लिए मारना चाहता था मगर जब तूने मेरे चेहरे पर थूका तो फिर मेरा ज़ाती गुस्सा भी शामिल हो गया और मैं अपने ज़ाती गुस्से की वजह से किसी को क़त्ल नहीं कर सकता।

एक चरवाहे के दिल में मईयते इलाही का इस्तेहज़ार

एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने जंगल में पड़ाव डाला। एक नौजवान अपनी बकरियों को चराता हुआ क़रीब से गुज़रा। आपने उसे कहा, आओ भई! कुछ खा लो। वह कहने लगा ﴿انا صائم﴾ कि मैं रोज़ेदार हूँ। जब उसने यह बात कही तो आप बड़े हैरान हुए कि जंगल की तन्हाई है और कोई देखने वाला भी नहीं है और यह नौजवान रोज़ा रखे हुए है और फिर सख़्त गर्मी में बकरियाँ चरा रहा है और कोई तारीफ़ करने वाला भी नहीं है। आपने सोचा कि इसको ज़रा आज़माना चाहिए। आपने कुछ देर के बाद उसे अपने पास बुलाया और फ़रमाया, भई! एक बकरी तुम हमें दे दो। हम उसको ज़िब्ह करके खाएंगे और तुम भी इफ़्तारी के वक़्त हमारे साथ खा लेना। वह नौजवान कहने लगा, जी ये बकरियाँ मेरी नहीं हैं, ये तो मेरे मालिक की हैं। आपने फ़रमाया कि इतनी बकरियों में से एक बकरी का तेरे

मालिक को क्या पता चलेगा? जब यह फ़रमाया तो वह कहने लगा, अगर मेरे मालिक को पता नहीं चलेगा तो ﴿فاين الله﴾ तो फिर अल्लाह कहाँ है? उसको पता चल जाएगा। आप यह वाक़िआ सुनाते और फ़रमाते कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उस नौजवान के दिल में कैसा ईमान रख दिया था कि वह जंगल में भी कहता है ﴿فاين الله﴾ कि फिर अल्लाह कहाँ है?

एक लड़की के दिल में मईयते इलाही का इस्तेहज़ार

एक बार सैय्यदना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रात को गली में चक्कर लगा रहे थे। एक घर से एक बूढ़ी माँ अपनी बेटी से बातें कर रही थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ग़ौर किया तो पता चला कि वह बुढ़िया उस लड़की से पूछ रही थी कि क्या बकरी ने दूध दे दिया? उसने कहा, जी हाँ दे दिया। फिर पूछा कि कितना दूध दिया है? लड़की ने कहा, थोड़ा सा दिया है। वह कहने लगी, मांगने वाले तो पूरा मांगेगे इसलिए तुम उसमें पानी मिला दो। उसने कहा, अमीरुल मोमिनीन ने पानी मिलाने से मना किया हुआ है इसलिए नहीं मिलाती। वह बुढ़िया कहने लगी, कौन सा अमीरुल मोमिनीन हमें देख रहे हैं। लड़की ने कहा, अम्मा! अगर अमीरुल मोमिनीन नहीं देख रहे तो अमीरुल मोमिनीन का परवरदिगार तो देख रहा है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी यह बातचीत सुनी और घर आए। आपने सुबह को उस बुढ़िया को भी बुलवाया और उसकी लड़की को भी। उस बुढ़िया को आपने तंबीह फ़रमाई।

उसके बाद आपने उस लड़की की उम्र पूछी तो पता चला कि वह बालिग़ थी। आपने उस लड़की के तक़्वे की बुनियाद पर उसे अपनी बहू के तौर पर पसंद फ़रमा लिया। लिहाज़ा आपने उसका रिश्ता मांगा और वह आपकी बहू बन गई। यह वही लड़की थी जो बाद में हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० की नानी बनी। यह ईमान होता है जिसकी तासीर अल्लाह तआला औलादों और नस्लों में चला देते हैं।

एक लड़के के दिल में मईयते इलाही का इस्तेहज़ार

कहते हैं कि एक बाप अपने बेटे के साथ सफ़र कर रहा था। जब वह अंगूरों के एक बाग़ के क़रीब से गुज़रा तो बाप का दिल ललच पड़ा और उसने चाहा कि कुछ अंगूर खाऊँ। लिहाज़ा उसने अपने बेटे को एक जगह खड़ा किया और कहा, बेटा! तुम यहाँ खड़े होकर इधर-उधर झांकना ताकि कोई आने लगे तो पता चल जाए। जब वह अंगूर तोड़ने के लिए गया तो वह अभी पेड़ के क़रीब ही पहुँचा था कि बच्चे ने शोर मचा दिया। कहने लगा, ﴿يا ابی یا ابی احد یرانی﴾ ऐ अब्बा जान! ऐ अब्बा जान! एक हमें देख रहा है। जब उसने यह कहा तो बाप डरकर पीछे की तरफ़ भागा। उसने बच्चे के पास आकर इधर-उधर देखा तो कोई भी नहीं था। वह कहने लगा, कौन देख रहा है? बेटे ने कहा, अब्बा जान! अगर कोई बंदा नहीं देख रहा तो बंदों का परवरदिगार तो देख रहा है।

ख़बरदार! अल्लाह देख रहा है

अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَى﴾ क्या यह (काफ़िर व मुश्रिक, गुनाहगार) नहीं जानता

कि अल्लाह देख रहा है। इन अल्फ़ाज़ को पढ़कर हैरान होते हैं। अब बताइए कि जब हम अल्लाह तआला की निगाहों के सामने गुनाह करेंगे तो फिर कल क़ियामत के दिन हमें कितनी शर्मिन्दगी और ज़िल्लत होगी। इसलिए आज मौक़ा है कि हम अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगे और अपने अंदर "मईयत" की कैफ़ियत पैदा करने की कोशिश करें। हम मेहनत के लिए ही तो पैदा हुए हैं। इर्शादे बारी तआला है ﴿لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي كَبَدٍ﴾ तहक़ीक़ इंसान को मेहनत के लिए पैदा किया गया है।

हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन ज़करिया रह० और मईयते इलाही

शैख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी रह० के पास हज़रत बहाउद्दीन ज़क्रिया मुलतानी रह० गए, बैअत हुए और उन्होंने तीसरे दिन उन्हें ख़िलाफ़त दे दी। जब उनको तीसरे दिन ख़िलाफ़त मिली तो वहाँ के जो मक़ामी लोग थे वे कहने लगे हज़रत! यह दूर से आया और तीन दिनों में उसको यह नेमत मिल गई। हम लोग भी मुद्दतों से आपकी ख़िदमत में पड़े हैं। हम पर भी नज़रे करम फ़रमा दें। शैख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी रह० ने फ़रमाया, अच्छा आप को समझाएंगे।

दूसरे दिन उन्होंने बहुत सी मुर्ग़ियाँ मंगवायीं और उन तमाम लोगों को दीं जिन्होंने एतिराज़ किया था और बहाउद्दीन ज़क्रिया मुलतानी रह० को भी दी। और सब से फ़रमाया कि इस मुर्ग़ी को ऐसी जगह ज़िब्ह करके लाओ जहाँ कोई न देखता हो। चुनाँचे कोई पेड़ की ओट में ज़िब्ह करके लाया, कोई कमरे में ज़िब्ह

करके लाया और कोई दीवार के पीछे ज़िब्ह करके लाया। सबने ज़िब्ह करके ला दीं और हज़रत को दिखायीं मगर हज़रत बहाउद्दीन रह० थोड़ी देर बाद आए और रोना शुरू कर दिया। हज़रत ने पूछा भाई तुम क्यों रो रहे हो? कहने लगे हज़रत! आपने फ़रमाया था कि किसी ऐसी जगह ज़िब्ह करना जहाँ कोई न देख रहा हो। मगर मैं जहाँ भी गया मेरा परवरदिगार मुझे देख रहा था जिसकी वजह से मैं ज़िब्ह न कर सका और यूँ आपके हुक्म पर अमल न हो सका।

उस वक़्त हज़रत ने अपने दूसरे मुरीदीन की तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़रमाया, देखो! मैंने इसकी इस कैफ़ियत की वजह से इसे यह नेमत जल्दी दे दी है।

तसव्वुफ़ का इंकार करने वाले और मक़ामे एहसान

मुह्तरम जमात! हमारे दिल में हर वक़्त यह कैफ़ियत रहनी चाहिए कि हम अल्लाह तआला के सामने है। इसको "मक़ामे एहसान" कहते हैं। जो लोग तसव्वुफ़ के मुख़ालिफ़ हैं वे ज़रा बताएं कि वे मक़ामे एहसान कैसे हासिल कर सकते हैं? जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, ﴿ما الاحسان﴾ ऐ अल्लाह के महबूब! एहसान क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, भई! आप ही बता दीजिए। वह कहने लगे, ﴿ان تعبد الله كانك تراه﴾ तू अल्लाह की इबादत ऐसे कर जैसे तू उसे देख रहा है। ﴿فان لم تكن تراه فانه يراك﴾ और अगर यह कैफ़ियत नहीं तो तू अल्लाह की इबादत ऐसे कर जैसे वह

तुझे देख रहा हो यानी अव्वल तो मुशाहिदे की कैफ़ियत हो और अगर वह नहीं तो फिर मुराक़बे की कैफ़ियत हो।

उन लोगों से पूछें कि अगर मुराक़बे की कैफ़ियत हो और न मुशाहिदे की कैफ़ियत तो फिर नमाज़ें कैसी पढ़ते हैं? वे कहते हैं कि तसव्वुफ़ बिदअत है और एक अजमी चीज़ है। भई! अगर तसव्वुफ़ को अजमी चीज़ मानते हो तो एहसान को तो अरबी मानोगे नां। बताओ एहसान कैसे हासिल कर सकते हो? क्या आप में से कोई ऐसा आदमी जो खड़ा होकर यह कहे कि मुझे एहसानी कैफ़ियत हासिल है। आप हज़ारों में से एक बंदा भी नहीं दिखा सकते और हम अल्लाह का शुक्र कि ज़िक्र व अज़्कार करने वाले कितने ही ऐसे बंदे पेश कर सकते हैं जिन को अल्लाह तआला ने गुनाहों की ज़िल्लत से महफ़ूज़ किया होता है।

अल्लाह वालों पर यादे इलाही का ग़लबा

बुनियादी तौर पर यह चीज़ देखनी होती है कि किसको ईमान की वह आला कैफ़ियत हासिल हो गई है? मईयते इलाही का इस्तेहज़ार किसको नसीब हो गया है? जिसको यह नेमत नसीब हो जाती है वह गुनाह करने की हिम्मत नहीं करता बल्कि इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० ने तो यहाँ तक लिख दिया है कि अगर ऐसे बंदे को हज़ार साल की उम्र भी दी जाए और वह हज़ार साल कोशिश करे कि मैं अल्लाह को दिल से भुला बैठूँ तो वह फिर भी अल्लाह तआला को दिल से भुला नहीं सकेगा–

भुलाना भी चाहो भुला नहीं सकोगे

अल्लाह की याद दिल में ऐसी रच बस जाती है जैसे कुछ लोग

कहते हैं कि जी रिश्ते से तो इंकार हो गया लेकिन क्या करें कि उसको दिल भूल ही नहीं रहा। यह भी कह रहे होते हैं कि रिश्ते से इंकार हो गया है और उसके माँ-बाप रिश्ता करने के लिए तैयार नहीं हैं मगर साथ ही कह रहे होते हैं कि बस दिल ऐसा फँसा कि वह दिल से भूल ही नहीं रही। ओ ख़ुदा के बंदे! अगर एक मख़्लूक़ के हुस्न व जमाल का तेरे दिल पर यह असर है कि तू भुलाना भी चाहता है मगर भुला नहीं पाता तो जिनके दिलों में अल्लाह तआला के हुस्न व जमाल के नक़ूश बैठ जाते हैं क्या उनको यह कैफ़ियत हासिल नहीं हो सकती। अल्लाह वाले अल्लाह के मतवाले होते हैं। उनके दिलों में हर वक़्त यह कैफ़ियत रहती है कि—

लेटे बैठे चलते फिरते आठ पहर हो
अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह!

उनको हर हाल में अल्लाह तआला याद रहते हैं—

गो मैं रहा रहीन सितम हाए रोज़गार
लेकिन तेरे ख़्याल से ग़ाफ़िल नहीं रहा

वे एक लम्हे भी अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल नहीं होते। अल्लाह तआला ऐसे बंदों के बारे में फ़रमाते हैं :

﴿رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ﴾

कि ये मेरे वे बंदे हैं जिनको तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त भी मेरी याद से ग़ाफ़िल नहीं कर पाती। फ़रमाते हैं कि ये मेरे वे हिम्मत वाले बंदे हैं :

﴿اَلَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيَامًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ﴾

जो खड़े भी मुझे याद करते हैं, लेटे भी मुझे याद करते हैं और बैठे भी मुझे याद करते हैं। जब इंसान को यह कैफ़ियत मिल जाए तो फिर वह अल्लाह तआला को नहीं भूलता।

ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन मज्ज़ूब रह० और मईयते इलाही

हज़रत मौलाना मुहम्मद शफ़ी साहब रह० फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० के बड़े ख़लीफ़ा ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन मज्ज़ूब रह० और हम कुछ दूसरे ख़लीफ़ा इकठ्ठे बैठे हुए थे। इस दौरान में ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन मज्ज़ूब रह० ने उन्हें कुछ मज़ाक की बातें सुनाना शुरू कर दीं यानी खुश तबई की ऐसी बातें सुनाना शुरू कर दीं कि लोगों ने हँसना शुरू कर दिया। सच्ची बातें भी खुश तबई वाली हो सकती हैं। कभी-कभी नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम भी सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से खुश मिज़ाजी की बातें फ़रमा लेते थे और सहाबा किराम एक दूसरे से हँसी मज़ाक फ़रमा लेते थे। ज़रूरी नहीं कि झूठा लतीफ़ा सुनाकर ही खुश करना होता है। अल्लाह वालों के पास ऐसे इल्मी लतीफ़े होते हैं कि बात भी सच्ची करते हैं और दूसरे खिलखिलाकर हँस भी रहे होते हैं। हज़रत मुफ़्ती साहब रह० फ़रमाते हैं कि उन्होंने कुछ देर हमें ऐसी बातें सुनायीं कि हम हँस-हँस कर लोट-पोट हो गए। हमने उनसे कहा अब तो पेट में बल पड़ने लगे अब आप यह बातें न सुनाएं। इस बात के जवाब में उन्होंने फ़रमाया कि तुम में से कौन है जो इस तमाम हँसी के दौरान एक लम्हा भी अल्लाह से ग़ाफ़िल नहीं हुआ। फ़रमाते हैं कि एक अजीब सा सवाल था कि हम हैरान रह गए। फिर

फ़रमाने लगे तुम्हें इतनी देर हँसाता रहा मगर इस दौरान में एक लम्हा भी अल्लाह से ग़ाफ़िल नहीं हुआ। जिस इंसान को मईयते इलाही की कैफ़ियत हासिल हो चुकी होती है वह ऐसी बातें सुनकर हँस भी रहा होता है मगर उसका अंदरून अल्लाह तआला के साथ जुड़ा हुआ होता है।

एक बादशाह की सबक़ देने वाली दास्तान

इमाम शाफ़ई रह० या किसी और फ़क़ीह के दौर का वाक़िआ है कि वक़्त का बादशाह अपनी बीवी के साथ तन्हाई में था। उसकी बीवी किसी वजह से उससे नाराज़ थी। बादशाह चाहता था कि मुहब्बत व प्यार में वक़्त गुज़ारें और बीवी जली बैठी थी और वह चाहती थी कि उसकी शक्ल एक आँख भी न देखूँ। इधर से इसरार उधर से इंकार। जब बहुत देर हो गई तो बादशाह ने मुहब्बत में कुछ और बात कर दी। जब उसने बात कर दी तो उसने आगे से कहा, जहन्नमी! दफ़ा हो यहाँ से। जब उसने इतनी बड़ी बात कह दी तो बादशाह को भी गुस्सा आ गया। चुनाँचे कहने लगा, अच्छा! अगर मैं जहन्नमी तो तुझे तीन तलाक़। अब उसने बात तो कर दी मगर वे दोनों पूरी रात फ़िक्रमंद रहे कि तलाक़ हुई या नहीं।

ख़ैर सुबह को उठे तो उनके दिमाग़ ठंडे हो चुके थे। चुनाँचे फ़तवा लेने के लिए फ़िक्रमंद हो गए। किसी मुक़ामी आलिम के पास पहुँचे और उनको पूरी सूरतेहाल बताई और कहा कि बताएं कि तलाक़ हो भी गई या नहीं क्योंकि शर्त के साथ थी। उन्होंने कहा, मैं इसका फ़तवा नहीं दे सकता क्योंकि मैं नहीं जानता कि तुम जहन्नमी हो या नहीं। कई और उलमा से भी पूछा गया।

मगर उन सबने कहा कि हम इसका फ़तवा नहीं दे सकते क्योंकि बात शर्त के साथ है।

बादशाह चाहता था कि इस क़द ख़ूबसूरत और अच्छी बीवी मुझसे जुदा न हो। मगर मसअले का पता नहीं चल रहा था कि अब हलाल भी है या नहीं। चुनाँचे बड़ा मसअला बना बल्कि बादशाह का मसअला तो और ज़्यादा फैलता है। आख़िर में एक आलिम को बुलाया गया और उनसे अर्ज़ किया गया कि आप बताएं। उन्होंने फ़रमाया कि मैं जवाब तो दूंगा मगर इसके लिए मुझे तन्हाई में बादशाह से कुछ पूछना पड़ेगा। उसने कहा, ठीक है, पूछें। चुनाँचे उन्होंने बादशाह से अकेले में पूछा कि क्या आपकी ज़िंदगी में कभी कोई ऐसा मौक़ा आया है कि आप उस वक़्त गुनाह कर सकते हों मगर आपने अल्लाह के ख़ौफ़ से वह कबीरा गुनाह छोड़ दिया हो।

बादशाह सोचने लगा। कुछ देर के बाद उसने कहा, हाँ एक बार ऐसा वाक़िआ पेश आया था। पूछा, वह कैसे? वह कहने लगा, एक बार जब मैं आराम के लिए दोपहर के वक़्त अपने कमरे में गया तो मैंने देखा कि महल में काम करने वाली लड़कियों में से एक बहुत ही ख़ूबसूरत लड़की मेरे कमरे में कुछ चीज़ें संवार रही थी। जब मैं कमरे में दाख़िल हुआ तो मैंने उस लड़की को कमरे में अकेला पाया। उसके हुस्न व जमाल को देखकर मेरा ख़्याल बुराई की तरफ़ चला गया। चुनाँचे मैंने दरवाज़े की कुंडी लगा दी और उसकी तरफ़ आगे बढ़ा। वह लड़की नेक, अफ़ीफ़ा और पाकदामन लड़की थी। उसने जैसे ही देखा कि बादशाह ने कुंडी लगा ली और मेरी तरफ़ ख़ास नज़र के साथ

क़दम उठा रहा है तो वह फ़ौरन घबरा गई। जब मैं उसके क़रीब पहुँचा तो वह कहने लगी, ﴿يا مالك اتقوا الله﴾ ऐ बादशाह! अल्लाह से डर। जब उसने ये अल्फ़ाज़ कहे तो अल्लाह का नाम सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए और अल्लाह का जलाल मेरे ऊपर ग़ालिब आ गया। चुनाँचे मैंने उस लड़की से कहा, अच्छा, चली जा। मैंने दरवाज़ा खोला और उसको कमरे से बाहर भेज दिया। अगर मैं गुनाह करना चाहता तो मैं उस वक़्त उस लड़की से गुनाह कर सकता था। मुझे कोई पूछने वाला नहीं था मगर अल्लाह के जलाल, अज़्मत और ख़ौफ़ की वजह से मैंने उस लड़की को भेज दिया और गुनाह से बाज़ आ गया।

उस आलिम ने कहा कि अगर तेरे साथ यह वाक़िआ पेश आया था तो मैं फ़तवा दे देता हूँ कि तू जन्नती है और तेरी तलाक़ नहीं पड़ी।

अब दूसरे उलमा ने कहा, जनाब! आप कैसे फ़तवा दे सकते हैं? उन्होंने फ़रमाया, जनाब मैंने अपनी तरफ़ से फ़तवा नहीं दिया बल्कि यह फ़तवा तो क़ुरआन दे रहा है। वे हैरान हो गए कि क़ुरआन ने फ़तवा कहाँ दिया। उन्होंने जवाब में क़ुरआन पाक की आयत पढ़ी :

﴿وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَ نَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِىَ الْمَاْوٰى.﴾

जो अपने रब के सामने खड़े होने से डर गया और उसने अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात में पड़ने से बचा लिया तो ऐसे बंदे का ठिकाना जन्नत होगी।

फिर उन्होंने बादशाह से फ़रमाया, क्योंकि तुमने अल्लाह के

ख़ौफ़ की वजह से गुनाह को छोड़ा था इसलिए में लिखकर देता हूँ कि अल्लाह तआला तुम्हें जन्नत अता फ़रमा देंगे।

अल्लाह तआला हमें मईयत का यह ध्यान नसीब फ़रमा दे। हमें गुनाहों की ज़िल्लत से महफ़ूज़ फ़रमा दें और बाक़ी ज़िंदगी गुनाहों से पाक होकर गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें। (आमीन सुम्मा आमीन)

﴿وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.﴾

फ़ज़ाइल सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु

जब सूरज निकलता है तो उसकी किरने सबसे पहले उस इमारत पर पड़ती हैं जो सबसे बुलन्द व बाला होती है। इसी तरह जब नुबुव्वत का सूरज निकला तो उसकी पहली किरनें उस हस्ती पर पड़ीं जो उम्मत में सबसे बुलन्द व बाला थी, वह सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ात थी।

फ़ज़ाइल सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلَمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

يٰاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَo سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ

عَمَّا يَصِفُوْنَo وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَo وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo

सादिक़ीन से मुराद

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ﴾ ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, ﴿وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ﴾ और सच्चों के साथ रहो। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि सादिक़ीन से मुराद मशाइख़े सूफ़िया हैं। अल्लाह तआला हमें हुक्म दे रहे हैं कि हम ऐसे साहिबे निस्बत लोगों की निस्बत अपनाएं।

सादिक़ीन का दवाम

आज दुनिया कहती है कि जुनैद और बायज़ीद रह० तो अब नहीं हैं। सच्चे आदमी तो अब मिलते नहीं, क्या करें? यह बात ग़ौर करने के लायक़ है कि जब क़ुरआन मजीद में फ़रमा दिया

कि ऐ ईमान वालो! तुम सच्चों की सोहबत इख़्तियार करो तो यह हुक्म क़ियामत तक के लिए है। इसलिए जब तक ईमान वाले मौजूद रहेंगे तब तक सादिक़ीन भी मौजूद रहेंगे। यह कभी नहीं हो सकता कि सादिक़ीन ख़त्म हो जाएं और क़ुरआन मजीद की इस आयत पर अमल करना नामुमकिन हो जाए। यह कैसे हो सकता है कि क़ुरआन मजीद की कोई आयत नाक़ाबिले अमल हो जाए। अगर हम मान लेते हैं कि क़ियामत तक क़ुरआन मजीद क़ाबिले अमल किताब है तो हमें यह बात भी ज़हन में बिठा लेनी चाहिए कि सादिक़ीन की जमाअत भी हर दौर और हर ज़माने में रहेगी।

सादिक़ीन की तलाश

अलबत्ता सादिक़ीन की जमाअत तलाश करनी पड़ती है। उसे ढूंढना हमारी ज़िम्मेदारी है। दुनिया के मामलात में हम कितनी चीज़ों को ढूंढते हैं जबकि यह तो हमारा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से ताल्लुक़ का मामला है। इसलिए हमें चाहिए कि हम इस मामले में भी अल्लाह तआला से मदद मांगे। और अगर ज़िंदगी में कोई ऐसा आदमी मिल जाए तो उसकी सोहबत को ग़नीमत समझना चाहिए क्योंकि इन बुज़ुर्गों की नज़र तिरयाक़ होती है और उनकी तवज्जोह में दिल की शिफ़ा होती है।

बरकत ही बरकत

निस्बत एक नूर है। वह नूर जब किसी के सीने में दाख़िल होता है तो अल्लाह तआला उसको सरापा बरकत बना देते हैं। उसके देखने में बरकत, बोलने में बरकत, उसके अमल में बरकत, उसके फ़ैसले में बरकत और वे जहाँ बैठते हैं उस जगह बरकतें

आ जाती है बल्कि कुछ तो ऐसे होते हैं जो सरापा तबर्रुक बन जाते हैं। वे जिस शहर से गुज़र जाएं वहाँ उनकी बरकतें असरअंदाज़ हो जाती हैं।

बरकत के हासिल करने की एक शर्त

इन बरकतों को हासिल करने की एक शर्त है, वह यह कि इंसान इन साहिबे निस्बत लोगों के साथ मुहब्बत पैदा करे। जितनी मुहब्बत गहरी होगी उतना ही फ़ैज़ का असर जल्दी होगा। जितना ताल्लुक़ मज़बूत होगा उतना ही करन्ट जल्दी दौड़ेगा। और कभी-कभी तो एक लम्हे की तवज्जोह भी बंदे की ज़िंदगी का मक़सद पूरा कर देती है लेकिन इसके लिए अल्लाह से मांगना होता है।

माद्दे से पार देखने वाली निगाहें

अल्लाह वाले अपनी मर्ज़ी से तवज्जोह नहीं डालते बल्कि अल्लाह तआला उनके दिलों में बातें डालते हैं। ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० फ़रमाया करते थे कि अगर मैं तवज्जोह दूँ तो एक लम्हे में पूरे मजमे को तड़पाकर रख दूँ मगर ऊपर से मुझे ऐसा करने की इजाज़त नहीं है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनको बसीरत दे देते हैं और उनकी निगाहें माद्दे से पार देखती हैं।

तक्बीरे तहरीमा से पहले बैतुल्लाह की ज़ियारत

ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० एक बार अकोड़ा खटक के मदरसे में ठहरे हुए थे। वहाँ उलमा का पंद्रह रोज़ा तर्बियती प्रोग्राम था। एक आलिम ने उनसे सवाल क्या कि हज़रत! मैंने यह नोट किया है कि आप जब भी नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े होते हैं, इक़ामत हो जाती है मगर आप जल्दी नीयत नहीं बांधते हैं। इसमें

क्या हिकमत है? हज़रत रह० यह बात सुनकर मुस्कराए और फ़रमाया कि आप लोग तो उलमा हैं, आपकी तवज्जोह इलल्लाह की कैफ़ियत हर वक़्त बनी रहती है मगर मैं तो फ़कीर आदमी हूँ। नमाज़ पढ़ाने के लिए मुसल्ले पर खड़ा होता हूँ तो जब तक मुझे सामने बैतुल्लाह नज़र नहीं आता मैं उस वक़्त तक नमाज़ की नीयत नहीं बांधा करता। जिनको निस्बत का नूर नसीब हो जाता है तो फिर वे ऐसी नमाज़ें पढ़ा करते हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक दुआ

यह वह नेमत है जिसके बारे में नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, ﴿اَللّٰهُمَّ اَرِنَا حَقَائِقَ الْاَشْيَاءِ كَمَا هِيَ﴾ ऐ अल्लाह! हमें चीज़ों की हक़ीक़त दिखा दीजिए जैसे कि वे हैं। अल्लाह तआला उन हज़रात को चीज़ों की हक़ीक़त दिखा देते हैं। और उनके सामने इंसान के दिल भी खुल जाते हैं। वे इंसानों के दिलों को यूँ पढ़ रहे होते हैं जैसे हम खुली हुई किताब को पढ़ते हैं।

लानत ऐसे पीर पर

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० एक बार कराची में थे। एक साहब उनको वहाँ मिलने के लिए आए। किसी दूसरे आदमी ने कहा, हज़रत! यह आदमी दिल में दुनिया लेकर आपके पास आया है। हज़रत ने जब उसकी यह बात सुनी तो उसे डांटते हुए फ़रमाया कि मैं लानत भेजता हूँ ऐसे पीर पर जिसके पास कोई मुरीद आए और उसे पता भी न चले की यह किस मकसद के लिए आया है।

एक ज़ाती वाक़िआ

यह आजिज़ एक बार एक आलिम को लेकर हज़रत मुर्शिदे

आलम रह० की ख़िदमत में चकवाल हाज़िर हुआ। मेरे दिल में ख़्याल आया कि इतने बड़े आलिम मेरे हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए हैं, इसलिए बेहतर है कि मैं उनके बारे में हज़रत को कुछ बता दूँ। चुनाँचे हम जैसे ही हज़रत से मिले, मैंने अर्ज़ किया, हज़रत! यह एक बड़े आलिम हैं जो आपकी ज़ियारत के लिए हाज़िर हुए हैं। हज़रत फ़रमाने लगे, "चुप कर, मैं इसे पहले ही पढ़ चुका हूँ।" हज़रत ने ये अल्फ़ाज़ मस्जिद में खड़े होकर इर्शाद फ़रमाए।

दिलों के जासूस

अल्लाह वाले जो असीसुल-क़ुलूब (दिलों के जासूस) होते हैं। अल्लाह तआला दिलों के हाल उन पर खोल देते हैं। इसलिए बंदा जब उनकी सोहबत में बैठे तो अपने दिल को संभालकर बैठे। कहते हैं कि जब किसी हाकिम की सोहबत में बैठो तो अपनी निगाहों को संभाल कर बैठो क्योंकि हाकिम के अलावा इधर-उधर देखोगे तो वह अपना डंडा चलाएगा और अपना इख़्तियार इस्तेमाल करेगा। अगर उलमा की सोहबत में बैठो तो अपनी ज़बान को संभाल कर बैठो, इसलिए कि अगर कोई लफ़्ज़ आगे पीछे हो गया तो मुफ़्ती हज़रात फ़तवा लगा देंगे और अगर अल्लाह वालों की सोहबत में बैठो तो अपने दिलों को संभालकर बैठो।

सिपुर्दगी और शफ़क़त

दिल मुतवज्जुह हों तो तवज्जोह भी उन पर असर करती है। इसलिए जब भी आदमी अपने शेख़ की महफ़िल में बैठे तो पूरी तवज्जोह से बैठे। एक तरफ़ से मुहब्बत और सिपुर्दगी हो, दूसरी

तरफ़ से शफ़क़त और इनायत हो तो अल्लाह तआला बंदे का काम बना दिया करते हैं। इसलिए शेख़ के साथ मुहब्बत की निस्बत को और ज़्यादा मज़बूत कीजिए।

सिलसिला नक़्शबंदिया के नाम की वजह

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को नबी अलैहिस्सलाम के साथ निस्बते इत्तिहादी नसीब थी। हमारा यह सिलसिला नक़्शबंदिया सिद्दीक़ी निस्बत रखने वाला है। इस सिलसिला का नाम इब्तिदा में "सिद्दीक़िया सिलसिला" था लेकिन शेख़ बहाऊद्दीन नक़्शबंदी बुख़ारी रह० के बाद इस सिलसिले का नाम "सिलसिला नक़्शबंदिया" मशहूर हो गया क्योंकि उनके बारे में आता है कि वह सालिकों के दिलों पर अल्लाह! अल्लाह! की ज़र्ब लगाते थे। ﴿كان ينقش اسم الله على قلوب السالكين﴾ वह सालिकीन के दिलों पर अल्लाह का नाम नक़्श कर देते थे।

सिद्दीक़ी निस्बत एक मज़बूत निस्बत

नबी अलैहिस्सलाम से कमालाते विलायत सबसे ज़्यादा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हासिल किए और कमालाते नुबुव्वत सब से ज़्यादा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हासिल किए। इसलिए सहाबा किराम में सबसे ज़्यादा मज़बूत निस्बत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को थी। उनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ इतना ताल्लुक़ था कि अगर उनके हालाते ज़िंदगी को पढ़ा जाए तो बिल्कुल एक जैसे हालात नज़र आते हैं। आज इस महफ़िल में बात करने का बुनियादी मक़सद यह था कि आपको यह बात ज़हन में रखनी चाहिए कि

हमारी निस्बत सिद्दीक़ी निस्बत है जो कि एक मज़बूत तरीन निस्बत है। नबी अलैहिस्सलाम से तमाम कमालात सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के सीने में मुन्तक़िल हुए और उनके सीने से क़ियामत तक ये मशाइख़ के सीनों में मुन्तक़िल होते रहेंगे।

निस्बत और ख़िलाफ़त

निस्बत को तमन्ना बनाकर मांगना इबादत है क्योंकि निस्बत हासिल हो जाने से इंसान की इबादत की कैफ़ियत में हुज़ूरी आ जाती है। नमाज़ बेहतर हो जाती है। तिलावते क़ुरआन की कैफ़ियत बेहतर हो जाती है। ग़फ़लत ख़त्म हो जाती है और गुनाहों से जान छूट जाती है। अलबत्ता ख़िलाफ़त की तमन्ना दिल में रखना तसव्वुफ़ की दुनिया का शिर्क कहलाता है। ख़िलाफ़त का मिल जाना कोई और चीज़ है। वह तो एक इंतिज़ामी उमूर की बात है और निस्बत के हासिल होने की तमन्ना रखना और चीज़ है। इसलिए यह तमन्ना दिल में हो कि ऐ अल्लाह! हमें नूरे निस्बत अता फ़रमा ताकि हम अपनी इबादत में यकसूई और हुज़ूरी पैदा कर सकें और हमारी ज़िंदगी से मासियत ख़त्म हो जाए।

सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ज़ीलत की असल वजह

इस निस्बत की अज़मत हर वक़्त दिल पर हावी रहनी चाहिए कि यह सिद्दीक़ी निस्बत है। जो कैफ़ियत सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के मुबारक दिल की थी वही मुन्तक़िल

होती चली आ रही है। उनकी बीवी फ़रमाती थीं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को दूसरों पर फ़ज़ीलत नमाज़ और रोज़ों की वजह से नहीं थी बल्कि दिल के उस दर्द व ग़म की वजह से थी जो अल्लाह तआला ने उनको अता कर दिया था।

फ़ज़ाइल और मनाक़िब

अब सैय्यदना अबूबक्र के कुछ फ़ज़ाइल आपके सामने बयान किए जाते हैं ताकि उनकी मुहब्बत दिल में बैठ जाए और यह वाज़ेह हो जाए कि यह कितनी अज़ीम निस्बत है जो हमारे मशाइख़ के ज़रिए से मुन्तक़िल होती चली आ रही है।

बिला तअम्मुल (झिझक) इस्लाम क़बूल करना

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु वह सहाबी हैं जिन्होंने बग़ैर ताम्मुल नबी अलैहिस्सलाम पर ईमान क़बूल फ़रमा लिया। चुनाँचे हदीस पाक में आया है, नबी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैंने जिस पर भी ईमान को पेश किया हर एक ने कुछ सोच-विचार किया सिवाए अबूबक्र के कि जैसे ही मैंने उस पर इस्लाम को पेश किया उसने बेझिझक इस्लाम को क़बूल कर लिया यहाँ तक कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने जब इस्लाम को पेश किया तो उन्होंने भी कहा कि मैं मशवरा करूंगा। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तो मरने मारने पर तुल गए थे। यह शान सिर्फ़ अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को नसीब हुई कि उन्होंने बग़ैर झिझक के इस्लाम क़बूल कर लिया। और फिर उनकी वजह से कई जलीलुक़द्र सहाबा ने इस्लाम क़बूल किया जिनमें उस्मान बिन अफ़्फ़ान, उस्मान बिन मज़ऊन, तल्हा, ज़ुबैर और सअद बिन अबी

वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हुम के नाम क़ाबिले ज़िक्र हैं। अब सोचिए कि कितनी बाबरकत निस्बत थी कि इतने बड़े-बड़े सहाबा किराम उनकी वजह से इस्लाम क़बूल करने वाले बन गए।

सहाबा किराम की सबसे बड़ी ख़ूबी

मोहतरम जमाअत! जब तारीख़ बन जाती है तो फिर तो दुश्मन भी मान लिया करते हैं। लुत्फ़ व मज़े की बात यह है कि इंसान तारीख़ बनने से पहले उसको तसलीम कर ले। आज तो आप को ऐसे हिन्दू भी मिलेंगे जिन्होंने नबी अलैहिस्सलाम की शान में नाअते कहीं, ऐसे सिख मिलेंगे जिन्होंने नबी अलैहिस्सलाम की शान में किताबें लिखीं बल्कि अब तो सारी दुनिया मानती है। लेकिन जब नबी अलैहिस्सलाम ने नुबुव्वत का इज़्हार फ़रमाया था, उस वक़्त अभी तारीख़ नहीं बनी थी। जिन्होंने उस वक़्त झिझके बग़ैर इस्लाम को क़बूल कर लिया अल्लाह के नज़दीक वे हस्तियाँ बड़ी अज़ीम थीं। सहाबा किराम की सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि उन्होंने तारीख़ को उस वक़्त मान लिया था जब अभी तारीख़ नहीं बनी थी।

उम्मत में बुलन्द व बाला हस्ती

जब सूरज निकलता है तो उसकी किरनें सबसे पहले उस इमारत पर पड़ती हैं जो सबसे बुलन्द व बाला होती है। इसी तरह जब नुबुव्वत का सूरज निकला तो उसकी पहली किरनें उस हस्ती पर पड़ीं जो उम्मत में सबसे बुलन्द व बाला थी। वह सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ात थी।

इश्के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु

एक दफ़ा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हरम शरीफ़ में थे। कुफ़्फ़ार ने आकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को तकलीफ़ पहुँचानी शुरू कर दी। एक काफ़िर कहीं बाहर से निकला। उसने अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा और कहने लगा ﴿ادرك صاحبك﴾ कि तू अपने दोस्त का ख़्याल कर कि उसको तो कुफ़्फ़ार तकलीफ़ पहुँचा रहे हैं। आप भागे हुए मस्जिद में पहुँचे और मजमे को चीरकर अन्दर गए और फ़रमाने लगे, ﴿اتقتلون رجلا ان يقول ربي الله﴾ क्या तुम उस हस्ती को मारना चाहते हो जो यह कहते हैं कि मेरा रब अल्लाह है?

अब काफ़िरों ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को छोड़कर उनको मारना शुरू कर दिया। रिवायत में आया है कि सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ज़बान से सिर्फ़ इतना कह रहे थे ﴿تبارکت یا ذاالجلال والاکرام﴾ काफ़िरों ने इतना मारा कि बेहोश हो गए। उस वक़्त उनके क़बीले के लोग वहाँ पहुँचे और उन्हें उठाकर घर ले आए, बहुत देर के बाद होश में आए, रात गुज़र गई। जब होश में आए तो वालिदा ने कहा बेटा कुछ खा लो। उस वक़्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी वालिदा से पूछा अम्मा! मुझे बताओ कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम किस हाल में हैं? उसने कहा बेटा! तेरा अपना हाल यह है कि जिस्म ज़ख़्मों से चूर-चूर हो चुका है। अब भी पूछ रहे हो कि उनका क्या हाल है? फ़रमाया हाँ, जब तक मुझे उनके हाल का पता नहीं चलेगा मैं कुछ नहीं खाऊँगा। उनकी वालिदा ने कहा मुझे तो नहीं पता कि

वह किस हाल में है? अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उम्मे जमील रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम बताया और फ़रमाया कि उनके पास जाइए, वह आपको बताएंगी। लिहाज़ा उनसे पूछा गया तो उन्होंने बताया कि दारे अरक़म में हैं। जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को पता चला तो अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी वालिदा के साथ दारे अरक़म पहुँचे। रिवायत में आता है कि जब सिद्दीक़े अकबर दारे अरक़म पहुँचे तो सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की इस कैफ़ियत को देखकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का बोसा लिया और उसके बाद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का बोसा लिया, सुब्हानअल्लाह।

हज़रत अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ुबूले इस्लाम

जिस दिन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को तकलीफ़ दी गई उसके बाद उसी दिन हज़रत अमीरे हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ईमान ले आए। चुनाँचे किताबों में लिखा है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ मांगी तो उमर बिन ख़त्ताब ईमान ले आए और इधर अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुर्बानी दी तो हज़रत अमीरे हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ईमान ले आए। उनकी क़ुर्बानी भी कितनी अज़ीम थी कि जिसकी वजह से एक जलीलुक़द्र हस्ती ईमान ले आई।

जन्नत की खुशख़बरी

एक बार नबी अलैहिस्सलाम तशरीफ़ फ़रमा थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा आज रोज़ादार कौन है? सहाबा

किराम के पूरे मजमे में अबूबक्र सिद्दीक़ खड़े हुए। थोड़ी देर के बाद नबी अलैहिस्सलाम ने पूछा, आज जनाज़े के पीछे कौन चला? इस पर भी हज़रत अबूबक्र खड़े हुए। थोड़ी देर के बाद पूछा आज मुहताज को खाना किसने खिलाया? उसके जवाब में भी अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, आज बीमार की इयादत किसने की? इस पर भी अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए। जब चारों मर्तबा सिद्दीक़े अकबर खड़े हुए तो नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जिसके अंदर ये चार अवसाफ़ मौजूद हों मैं उसको जन्नत की ख़ुशख़बरी देता हूँ।

फ़ज़ाइले सिद्दीक़ी और नबी अलैहिस्सलाम की हदीसें

सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर के फ़ज़ाइल में एक सौ इक्यासी (181) हदीसें मौजूद हैं और अठासी (88) हदीसें सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों के फ़ज़ाइल में मौजूद हैं। सत्रह (17) हदीसें ऐसी हैं जिनमें तीनों ख़लीफ़ा अबूबक्र, उमर और उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुम के फ़ज़ाइल का ज़िक्र है। और चौदह (14) हदीसें ऐसी हैं जिनमें चारों ख़लीफ़ाओं के फ़ज़ाइल मौजूद हैं। इससे अंदाज़ा लगाइए कि नबी अलैहिस्सलाम की ज़बान मुबारक से हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के किस क़द्र फ़ज़ाइल बयान हुए हैं।

लफ़्ज़ "अबूबक्र" की लुग़वी तहक़ीक़

उलमा किराम ने लिखा है कि आप का नाम "अबूबक्र" बता रहा है कि अल्लाह तआला ने आपको हर मैदान में दूसरों से आगे कर दिया। वह कैसे? तलबा जानते हैं कि जिस लफ़्ज़ का माद्दा 'ब', 'काफ़', 'र' यानी फ़ा कलिमा, ऐन कलिमा और लाम

कलिमा 'ब', 'काफ़', 'र' तो इस माद्दे से जो लफ़्ज़ बनता है तो उसका तर्जुमा "सबसे पहली चीज़" बनता है। मिसाल के तौर पर बकरः, कल सुबह, गोया दिन का पहला हिस्सा। इसी तरह बकूर उस फल को कहते हैं जो मौसम का पहला पहला हो। बाकिरा कुँवारी लड़की को कहते हैं जिसने ख़ाविन्द न देखा हो और शादी होकर पहली मर्तबा ख़ाविन्द के पास आए। तो 'ब', 'काफ़', 'र' जिस लफ़्ज़ का माद्दा हो वह अपने मैदान में सबसे आगे होता है। आपका नाम भी अल्लाह तआला ने "अबूबक्र" रखवाया। लिहाज़ा हर मैदान में दूसरों से आगे रहे।

अव्वलियाते सिद्दीक़ी

देखिए मर्दों में सबसे पहले इस्लाम किसने क़बूल किया? हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ने, इसमें भी वह अव्वल। क़ुरआन मजीद का नाम उन्होंने सबसे पहले "मुसहफ़" रखा। इसमें भी वह सबसे अव्वल। आप ख़लीफ़ा राशिद बने, इसमें भी सबसे अव्वल। उन्होंने सबसे पहले ख़िलाफ़त का वली अहद तय किया, इसमें भी सबसे अव्वल। उनका लक़ब "अतीक़" पड़ा इसमें भी सबसे अव्वल। उनको लक़ब "सिद्दीक़" मिला इसमें सबसे अव्वल। उन्होंने क़ुरआन मजीद को जमा किया इसमें भी सबसे अव्वल। उनको अपने बाप की ज़िंदगी में ख़िलाफ़त मिली इसमें भी सबसे अव्वल। उन्होंने बैतुलमाल क़ायम किया, इसमें भी सबसे अव्वल। उनका लक़ब ख़लीफ़तुर्रसूल पड़ा इसमें भी सबसे अव्वल। और हदीस पाक में आया कि मेरी उम्मत में सिद्दीक़े अकबर सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। इसमें भी सबसे अव्वल। इनको "अव्वलियाते सिद्दीक़ी" कहा जाता है।

हिजरत के सफ़र की चंद झलकियाँ

उनके हिजरत के सफ़र के भी कुछ नुक्ते सुन लीजिए। आप हज़रात ध्यान से सुनिएगा।

दरे सिद्दीक़ी पर आमदे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हिजरत का सफ़र जब होना था तो नबी अलैहिस्सलाम सिद्दीक़े अकबर के घर पहुँचे। पहले दोपहर के वक़्त तशरीफ़ लाए और पूरे सफ़र की तैयारी कर ली गई। फिर वापस तशरीफ़ ले गए और सफ़र पर रवाना होने के लिए रात को तशरीफ़ लाए। जब रात को तशरीफ़ लाए तो अभी दरवाज़े पर तशरीफ़ लाकर खड़े ही हुए थे कि मामूली सी आहट से अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ौरन बाहर निकल आए। पूछा, अबूबक्र! तुम जाग रहे थे? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! जी हाँ जाग रहा था। पूछा, क्या तुम सोए नहीं थे? अर्ज़ किया, जी! नहीं सोया। पूछा, अबूबक्र! क्यों नहीं सोए? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! मुझे ख़्याल रहा कि आप तशरीफ़ लाएंगे, ऐसा न हो कि आप तशरीफ़ लाएं और मैं सोया हुआ हूँ। आपको इंतिज़ार में चंद लम्हे खड़ा होना पड़े। इस ख़्याल के आने के बाद अबूबक्र को नींद ही नहीं आई। मैं आपकी राह तकता रहा।

नबी अलैहिस्सलाम का तख़लिया (तन्हाई)

नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, मुझे तख़लिए की

ज़रूरत है। अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मेरी दो बेटियाँ हैं और घरवाले हैं। इनके अलावा घर में और कोई नहीं है। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, बहुत अच्छा। फिर आपने इर्शाद फ़रमाया, सफ़र की तैयारी करो। सामान में से किसी चीज़ को बांधने की ज़रूरत थी। आपकी बड़ी बेटी असमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास एक दुपट्टा था। उन्होंने कपड़े के दो टुकड़े कर दिए और एक में सामान बांध दिया, दूसरा अपने सर पर ले लिया।

ग़ारे सौर में ख़िदमते नबवी

उसके बाद हज़रत अबूबक्र ने घर के सब लोगों के ज़िम्मे काम लगा दिए। अपने बेटे अब्दुर्रहमान से कहा कि तुम सारा दिन क़ुरैश मक्का की बातें सुनना और हमें रात के वक़्त ग़ारे सौर में आकर हालात बता देना। बीवी से कहा कि घर में खाना बना देना। अपनी बेटी अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा कि तुम छोटी हो, तुम यह खाना हमें ग़ारे सौर में पहुँचा देना और अपने ग़ुलाम से कहा कि तुम बकरियाँ चराने के बहाने हमें दूध पिला जाना। गोया पूरे घराने को ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत के लिए मशग़ूल कर दिया और ख़ुद भी साथ चले गए।

हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा के समझदारी

सैय्यदना सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास चालीस हज़ार दिरहम व दीनार थे जिनमें से पाँच हज़ार बच गए थे। जाते हुए सिद्दीके अकबर वह भी साथ ले गए कि मुमकिन है कि नबी अलैहिस्सलाम को उनकी भी ज़रूरत पेश आ जाए। जब वह सब

रक़म लेकर चले गए तो उनके बाद उनके वालिद अबूक़हाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु आ गए। उन्होंने पूछा, अबूबक्र कहाँ है? जवाब मिला कि वह तो सफ़र पर चले गए। वह परेशान हो गए कि पता नहीं कि वह घर में कुछ छोड़कर भी गए हैं या नहीं। हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा बड़ी समझदार थीं। उन्होंने कपड़े में बहुत से पत्थर भर दिए और अपने दादा के सामने रखकर कहा, दादा जान! इस कपड़े में कितना कुछ है जो पीछे छोड़ गए हैं। वह आँखों से नाबीना थे। चुनाँचे जब उन्होंने ऊपर से हाथ लगाया तो उन्हें कोई सख़्त चीज़ महसूस हुई। वह समझे कि उसमें माल पैसा है। कहने लगे कि कोई बात नहीं अगर वह सफ़र पर चले गए हैं तो हमारे लिए भी तो कुछ छोड़ गए हैं। अल्लाह तआला ने बच्चों के ईमान को भी इतना मज़बूत कर दिया था कि उन्होंने अपने दादा को तसल्ली दे दी और यह कह दिया कि अगर नबी अलैहिस्सलाम के साथ हमारे अब्बू सफ़र पर गए है तो अल्लाह तआला हमें उनके पीछे ज़ाए नहीं करेगा।

इस्तिक़ामत हो तो ऐसी

हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को पहले दिन खाना पहुँचा आयीं। जब दूसरे दिन पहुँचाने के लिए गयीं तो रिवायत में आता है कि उनके माथे पर ज़ख़्म था और कुछ ग़मगीन सी थीं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने देखा तो पूछा असमा! आज मुझे तुम परेशान और ग़मज़दा नज़र आती हो। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा तो उनकी आँखों से आँसू आ गए। पूछा असमा! क्या बात है?

अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! कल जब मैं आपको खाना

देकर वापस गई तो रास्ते में अबूजहल मिल गया। उसने मुझे पकड़ लिया और कहने लगा ऐ अबूबक्र की बेटी! तुझे पता होगा कि तेरे वालिद और तुम्हारे पैग़म्बर कहाँ हैं? मैंने जवाब में कह दिया कि हाँ मुझे पता है। वह कहने लगा मुझे बताओ। मैंने कहा मैं नहीं बताऊँगी। उसने मुझे धमकाया और डराया और कहने लगा कि अगर तुम नहीं बताओगी तो मैं तुम्हें बहुत मारूंगा, सख़्त सज़ा दूँगा। मैंने कहा मैं हर्गिज़ नहीं बताऊँगी। ऐ अल्लाह के महबूब उसने मुझे एकदम ज़ोर का थप्पड़ लगाया तो मैं नीचे गिरी, पत्थर पर मेरा माथा लगा, उससे ख़ून निकल आया और मेरी आँखों में से आँसू निकल आए। फिर उसने मुझे बालों से पकड़कर खड़ा किया और कहा कि बता दो वरना तुझे और मारूंगा। ऐ अल्लाह के नबी मैंने उसे कहा ऐ अबूजहल! मेरी जान तो तेरे हवाले है मगर मैं मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तेरे हवाले नहीं करूंगी।

सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़िराजे तहसीन

यह वह वक़्त था जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, अबूबक्र मैंने दुनिया में सब के एहसानात के बदले चुका दिए मगर तेरे एहसान का बदला क़यामत के दिन अल्लाह देगा। सुब्हानअल्लाह एहसान करने वाले ने भी क्या हद कर दी कि महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन अलफ़ाज़ में तारीफ़ करना पड़ी।

वफ़ा की इंतिहा

जब ग़ारे सौर में पहुँचने के लिए पहाड़ पर चढ़ने का वक़्त था

तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाँव के पंजे लगा रहे थे और हाथों के बल ऊपर चढ़ रहे थे। पूरा पाँव नहीं लगा रहे थे। इस तरह चढ़ने का मक़सद यह था कि क़दमों के निशान न लगें ताकि दुश्मन क़दमों के निशान देखकर पीछे न आ जाएं। जब हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह देखा कि महबूब ज़मीन पर पाँव नहीं लगा रहे हैं सिर्फ़ पंजे लगा रहे हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! अबूबक्र हाज़िर है, मेहरबानी फ़रमाइए। आप मेरे कंधों पर सवार हो जाइए। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम उनके कंधों पर सवार हुए और वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेकर ग़ारे सौर तक पहुँचे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की पेशकश

जब मक्का फ़तेह हुआ तो उस वक़्त बैतुल्लाह शरीफ़ में तीन सौ साठ बुत रखे हुए थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि इन बुतों को तोड़ दिया जाए। कुछ बुत ऊँचे लटके हुए थे। उनको तोड़ने के लिए ऊँचाई की ज़रूरत थी। उस वक़्त हज़रत अली ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! मैं यहाँ रुकू की हालत में खड़ा होता हूँ। आप मेरी पीठ पर चढ़कर इन बुतों को तोड़ दीजिए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ﴿انك لا تسطيع حمل ثقل نبوة يا على﴾ तू नुबुव्वत का बोझ अपनी पीठ के ऊपर नहीं उठा सकता, सुब्हानअल्लाह। जब हज़रत अली मुर्तज़ा ने पेशकश की तो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाकर इंकार कर दिया लेकिन जब सिद्दीक़े अकबर ने कहा तो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके कंधों पर सवार

हुए और उन्होंने इस बोझ को उठाकर ग़ारे सौर तक पहुँचा दिया।

महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त

नबी अकरम और सिद्दीके अकबर जैसे ही ग़ारे सौर में दाख़िल हुए मकड़ी ने आकर ग़ारे सौर के मुँह पर जाला बुन दिया और कबूतरी ने अंडे दे दिए ताकि अगर दुश्नम क़रीब भी आएं तो वे यह समझकर वापस हो जाएं कि यहाँ तो कोई भी नहीं और हुआ भी यही कि जब दुश्मन ग़ारे सौर के दहाने पर पहुँचे तो वे आपस में कहने लगे कि ग़ार के अंदर तो कोई नहीं होगा क्योंकि मकड़ी ने जाला बना हुआ है। ये सब कुछ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त के लिए हो रहा था।

इमाम बूसेरी रह० का इज़्हारे अक़ीदत

इमाम बूसेरी रह० ने इस वाक़िए का मंज़र यूँ खींचा है–

فالصدق في الغار والصديق لم يربا

وهم يقولون ما بالغار من ارم

ظنور الحمام وظنوا العنكبوت على

خير البرية لم تنسج ولم تحم

وقاية الله اغنت عن مضاعفة

من الدروع و عن عال من الاطم

किसी ने इन शे'रों का उर्दू ज़बान में क्या ही ख़ूब नज़्म में तर्जुमा किया है–

सिद्क़ और सिद्दीक़े अकबर ग़ार ही में थे छिपे
ग़ार में कोई नहीं कुफ़्फ़ार कहते थे बाहम
देखकर अंडे कबूतर के इधर मकड़ी का जाल
था गुमाँ कुफ़्फ़ार को वाँ तो नहीं शाहे उमम
की हिफ़ाज़त आप की ऐसी ख़ुदाए पाक ने
ज़िरह और कलऊन से मुस्तग़नी हुए शाहे उमम

हुस्ने रसूल और इश्क़े सिद्दीक़ का हसीन मिलन

जब ग़ार के अंदर दाख़िल हुए तो हज़रत अबूबक्र ने पूरी ग़ार में नज़र दौड़ाई। उन्हें ग़ार में कुछ सुराख़ नज़र आए। उन्होंने सब सुराख़ कपड़े से बंद कर दिए मगर एक सुराख़ को बंद करने के लिए कोई चीज़ न मिली। चुनाँचे सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर इस तरह बैठे कि उन्होंने अपना पाँव सुराख़ के ऊपर रख दिया। अब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके साथ अबूबक्र हैं। यह अजीब मंज़र हुआ। दुनिया ने ऐसा मंज़र कभी नहीं देखा होगा। मुहिब्ब भी है और महबूब भी है और उस ग़ार की तन्हाई भी है। आशिक़ों की तमन्ना होती है–

हम ही हम हों तेरी महफ़िल में कोई और न हो

सुब्हानअल्लाह हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने यह मौक़ा अता फ़रमा दिया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको यह नेमत दी कि एक तरफ़ हुस्ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है और दूसरी तरफ़ इश्क़े सिद्दीक़ है। नबी अकरम सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की गोद में अपना सर मुबारक रखकर आराम फ़रमाने लगे। सुब्हानअल्लाह, किसी शायर ने इस

मंज़र को अजीब अलफ़ाज़ में कहा–

यह हुस्न साथ इश्क़ के क्या लाजवाब है
रखी हुई रहल पे ख़ुदा की किताब है

यानी यूँ लगता था कि सैय्यदना अबूबक्र की गोद रहल की तरह है और नबी अलैहिस्सलाम का चेहरए मुबारक उस रहल पर रखे हुए क़ुरआन की तरह है। यह तो अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के नसीब हैं। मालूम नहीं कि उन्होंने वहाँ इस क़ुरआन को कितना पढ़ा होगा। जी भरकर महबूब का दीदार किया होगा। आशिक़ों के इमाम को अल्लाह तआला ने कितना बुलन्द मक़ाम अता फ़रमा दिया कि तन्हाई है और महबूब का चेहरए अक़्दस उनकी गोद में है और अबूबक्र सिद्दीक़ की निगाहें महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे पर लगी हुई हैं। आज तो इश्क़ वाले कहते हैं कि हम कोई किताब पढ़ने बैठें तो हमें किताब के बजाए महबूब का चेहरा नज़र आता है मगर ऐ आशिक़ों के इमाम! तेरी अज़्मत को सलाम कि तू अपने चेहरए अक़्दस को किताब की तरह पढ़ रहा है। कहने वाले ने कहा–

किताब खोलकर बैठूं तो आँख रोती है
वर्क़ वर्क़ तेरा चेहरा दिखाई देता है

जिसको मुहब्बत हो उसको तो आम किताब में भी महबूब का चेहरा दिखाई देता है और वहाँ तो इश्क़ हक़ीक़ी का मामला था। उस वक़्त सिद्दीके अकबर की अजीब कैफ़ियत होगी। उन्होंने नबी अलैहिस्सलाम के दीदार से अपनी आँखों को जी भरकर ठंडा किया होगा, सुब्हानअल्लाह।

इश्के रसूल की एक लाजवाब मिसाल

दीदारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हसरत तो सहाबा किराम को रहा करती थी। हदीस पाक में आया है कि एक सहाबी नबी अलैहिस्सलाम की मज्लिसों में हाज़िर होते थे। वह ख़ामोशी से आते, बैठे रहते और फिर चले जाते। उन्होंने कभी कोई सवाल नहीं पूछा था। नबी अलैहिस्सलाम ने उनकी इस बात पर हैरान हुए और एक दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ मेरे सहाबी! तुम आते हो और महफ़िल में ख़ामोश बैठकर चले जाते हो, तुमने कभी कोई बात नहीं पूछी, आख़िर क्या वजह है? वह कहने लगे, ऐ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं एक मक़सद लेकर आता हूँ और उस मक़सद को पूरा करके चला जाता हूँ। नबी अलैहिस्सलाम ने पूछा, तुम्हारे आने का मक़सद क्या होता है? उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मैं घर से चलते हुए दिल में यह मक़सद लेकर आता हूँ कि मैं जाऊँगा और अल्लाह के महबूब के चेहरे का दीदार करके आऊँगा। लिहाज़ा मैं जितनी देर आप की सोहबत में बैठता हूँ, बस आपके चेहरए अनवर को देखता रहता हूँ। इस तरह मेरा मक़सद पूरा हो जाता है और फिर मैं वापस चला जाता हूँ। जब उन सहाबी ने यह कहा तो नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, अच्छा! अगर तुम इस मक़सद के लिए आते हो कि मेरा दीदार करके जाओ तो फिर सुन लो कि जिसने मुहब्बत की नज़र के साथ मेरे चेहरे का दीदार कर लिया अल्लाह उस बंदे पर जहन्नम की आग को हराम फ़रमा देते हैं।

हज़रत अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० का इज़्हारे अक़ीदत

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु भी तन्हाई में दीदार के मज़े ले रहे हैं। इसी लिए हज़रत अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० ने और बाज़ किताबों में लिखा है कि यह बात शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० ने लिखी जो सैय्यद अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० नक़ल करते थे। वह फ़रमाते हैं कि "ऐ अबूबक्र! मैं जब तसव्वुर की आँख से देखता हूँ तो मुझे यूँ महसूस होता है कि तेरी गोद एक रहल की मानिन्द है और मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरए अक़्दस क़ुरआन की मानिन्द है। ऐ अबूबक्र! तू मुझे क़ारी नज़र आता है जो उस ग़ार की तन्हाई में बैठा उस क़ुरआन को पढ़ रहा है।" सुब्हानअल्लाह, उस वक़्त क्या फ़ैज़ मिला होगा, क्या नूर सीने में आया होगा, यह तो सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ही जानते हैं।

एक अहम नुक्ता

यहाँ एक नुक्ता निकला कि अगर अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ को सज्दा करवाना होता तो फिर कमली वाले से ज़्यादा हसीने खुदा कोई न होता और अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ार की तन्हाई में कमली वाले को सज्दा करते। इससे मालूम हुआ कि सज्दा मख़्लूक़ के लिए नहीं बल्कि सज्दा ख़ुदा तआला के लिए है।

गुलाब के फूल पर शबनम

इस दौरान यह हुआ कि जिस सूराख़ पर सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर ने पाँव रखा हुआ था उसमें एक साँप था। उसने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पाँव मुबारक पर काट लिया। जैसे

ही साँप ने काटा, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को तकलीफ़ हुई और ज़हर ने असर किया। अदब की वजह से ज़बान से कोई लफ़्ज़ न निकाला कि कहीं मेरे महबूब सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम की नींद में ख़लल न आ जाए लेकिन दर्द की वजह से आँखों से आँसू आ गए और यह सआदत भी अल्लाह तआला ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को देनी थी कि जब आँसू गिरा तो ज़मीन पर नहीं बल्कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुबारक गाल पर गिरा। चेहरए अक्दस पर आँसू पड़ते ही नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँख खुल गई। आपने पूछा ﴿مايبكيك يا ابابكر﴾ ऐ अबूबक्र! तू क्यों रोता है। अरे रहमतुल्लिल-आलमीन तो तेरी गोद में है, इस हाल में भी रोता है, इसकी क्या वजह है? सैय्यदना हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखों में आँसू थे। बता दिया कि ऐ अल्लाह के महबूब! मेरा पाँव इस सुराख़ पर था। किसी ज़हरीली चीज़ ने काट लिया है। जिसके ज़हर की वजह से आँसू निकल आए और आँसू भी गिरे तो कहाँ गिरे। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के चेहरए अनवर पर गिरे। किसी शायर ने इस पर भी मज़मून बाँध दिया—

आँसू गिरा है रुए रिसालते मआब पर
क़ुर्बान होने आई है शबनम गुलाब पर

सुब्हानअल्लाह! हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का आँसू शबनम की तरह और मेरे आक़ा महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रुख़्सार गुलाब की तरह। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पूछा, अबूबक्र! क्यों रोते हो? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! इस ज़हर की वजह से तकलीफ़ ज़्यादा है, इसलिए रो रहा हूँ। लिहाज़ा ताजदारे मदीना सरवरे काइनात फ़ख़्रे मौजूदात

सैय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने लुआबे मुबारक को उस ज़ख़्म के ऊपर लगाया जिसकी वजह से तकलीफ़ भी जाती रही और ज़ख़्म भी ठीक हो गया।

लुआबे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मोजिज़ात

मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लुआबे दहन वह मुबारक लुआब है जो नमकीन पानी के कुँए में पड़ता है तो उस कुँए का पानी मीठा हो जाता है। जो अली मुर्तज़ा की मुबारक आँखों पर लगता है तो बीमार आँखें ठीक हो जाती हैं। जो चौदह आदमियों के खाने में पड़ता है तो चौदह सौ आदमियों के लिए काफ़ी हो जाता है, अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु की निकली हुई आँख पर पड़ता है तो वह आँख दुबारा ठीक हो जाती है, वह लुआब अगर जिब्रील अमीन को भी मिल जाता है तो वह भी उसको आँखों का सुरमा बना लेते हैं, अबूबक्र! तेरी क़िस्मत भी अजीब है कि महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद अपना लुआब मुबारक तेरे पाँव पर लगा रहे हैं।

नूरी रफ़ीक़ और बशरी रफ़ीक़ के मुक़ामात

नबी अलैहिस्सलाम का एक मेराज का सफ़र है और एक हिजरत का। मेराज के सफ़र में भी रफ़ीक़े सफ़र हैं और हिजरत के सफ़र में भी रफ़ीक़ सफ़र हैं। मगर दोनों में एक बात बड़ी अजीब है कि जो मेराज के सफ़र का रफ़ीक़ था, वह फ़रिश्तों का इमाम बना और जो हिजरत के सफ़र का रफ़ीक़ था वह सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु का इमाम बना यानी जो मेराज के सफ़र का रफ़ीक़ था उसे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मलाइका की इमामत का ताज पहना दिया

और जो हिजरत के सफ़र का रफ़ीक़ था अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उसको सहाबा किराम में ख़िलाफ़त का ताज पहना दिया।

मंज़िले मक़सूद तक साथ

लेकिन एक फ़र्क़ और भी है कि जो मेराज के सफ़र का रफ़ीक़ थे वह साथ तो चले मगर एक जगह पर पहुँचकर उन्होंने कह दिया ऐ अल्लाह के महबूब! इससे आगे मैं नहीं जा सकता। चुनाँचे उसी जगह रुक गए और उससे आगे नबी अलैहिस्सलाम ख़ुद अकेले तशरीफ़ ले गए। मगर जो हिजरत के सफ़र के रफ़ीक़ थे वह जहाँ से चले, वहाँ से लेकर मंज़िल पर पहुँचने तक महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहे। पंजाबी ज़बान में कहते हैं, इक मोड़ दा साथी ते इक तोड़ दा साथी।" यानी कोई साथी तो थोड़ा सा साथ देता है और कोई साथी मंज़िले मक़सूद तक साथ देता है।

एक और नुक्ता

यहाँ पर एक नुक्ता और भी है। वह यह कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेराज की शब सफ़र पर तशरीफ़ ले गए तो रफ़ीके सफ़र बुलाने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरे अक़्दस पर उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा के घर पर हाज़िर हुआ लेकिन जब हिजरत का सफ़र पेश था तो बुलाने के लिए महबूब अपने रफ़ीक़ के घर ख़ुद तशरीफ़ लाए।

मर्तबे में सबसे आगे

एक बात और भी ज़हन में रखिए कि जब नबी अलैहिस्सलाम भी बच्चे थे और हलीमा साअदिया अपने घर ले जाने लगीं तो

उनकी सवारी अगरचे बीमार सी थी, सबसे पीछे रह गई थी लेकिन जब नबी अलैहिस्सलाम उस पर सवार हुए तो वह सवारी इतनी तेज़ दौड़ने लगी कि सब सवारियों से आगे निकल गई। यहाँ से एक नुक्ता यह निकला कि नबी अलैहिस्सलाम जिस सवारी पर सवार हुए वह दूसरी सवारियों से आगे निकल गई और हिजरत के सफ़र में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के कंधों पर सवार हुए तो अबूबक्र भी सब सहाबा किराम से मर्तबे में सबसे आगे निकल गए।

अमानते इलाही की हिफ़ाज़त

हिजरत की रात नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सैय्यदना अली रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि लोगों की मेरे पास कुछ अमानतें हैं जो उन्हें लौटानी है। आप वे अमानते अपने पास रख लीजिए और सुबह ये लोगों को पहुँचा देना। यहाँ उलमा ने एक नुक्ता निकाला। वे फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने लोगों की अमानतें उन तक पहुँचाने के लिए अली रज़ियल्लाहु अन्हु को चुन लिया कि ऐ अली! लोगों की अमानतें उन तक पहुँचा देना और अबूबक्र सिद्दीक़ को चुन लिया कि अबूबक्र! तुम मेरी अमानत को मक्का से मदीना पहुँचा देना।

क़ब्र का साथ

नबी अलैहिस्सलाम ने अली रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि तुम मेरी चारपाई पर सो जाना। चुनाँचे हज़रत अली को यह सआदत मिली कि नबी अलैहिस्सलाम की चारपाई पर आधी रात तक आराम किया लेकिन जो रफ़ीक़े सफ़र बने उनको अल्लाह

तआला ने उनकी वफ़ात से लेकर क़ियामत तक अपने महबूब के साथ सोने की सआदत अता फ़रमा दी।

मईयते इलाही की खुशख़बरी

एक अजीब बात यह भी है कि ग़ारे हिरा में नबी अलैहिस्सलाम को नुबुव्वत की खुशख़बरी मिली थी और ग़ारे सौर में अबूबक्र सिद्दीक़ को मईयते इलाही की खुशख़बरी मिली। ﴿لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا﴾ यहाँ पर कुछ लोग इश्काल पेश करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो कहना पड़ा कि ﴿لَا تَحْزَنْ﴾ घबराओ नहीं तो इससे मालूम हुआ कि अबूबकक्र कमज़ोर दिल होने की वजह से जल्दी डर गए थे। उलमा ने इसका जवाब दिया कि उनका यह हुज़्न व ग़म अपनी ज़ात के लिए नहीं था बल्कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए था कि कहीं ऐसा न हो कि कुफ़्फ़ार आ जाएं और वे नबी अलैहिस्सलाम को तकलीफ़ पहुँचाएं। इसकी दलील क़ुरआन पाक से मिलती है। हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम अपने बेटों को फ़रमाते हैं कि तुम चाहते हो कि तुम यूसुफ़ को ले जाओ मगर ﴿إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ﴾ कि मुझे डर है कि तुम इसे लेकर जाओ और इसको भेड़िया खा जाए। हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम को उस वक़्त किस चीज़ का ग़म था? अपना ग़म था या हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का था? हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वजह से ग़म था। तो मालूम हुआ कि जैसे हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वजह से हुज़्न था। इसी तरह हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी नबी अलैहिस्सलाम की वजह से हुज़्न था कि उनको कहीं कोई तकलीफ़ न पहुँचा दे।

एक और मिसाल पर ग़ौर करें कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की मौजूदगी में कहा ﴿إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ﴾ मेरा रब मेरे साथ है। वह ज़रूर मेरी रहनुमाई करेगा। लेकिन मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने रफ़ीक़े सफ़र की मौजूदगी में यह नहीं कहा कि मेरा रब मेरे साथ है बल्कि फ़रमाया, ﴿إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا﴾ बेशक अल्लाह तआला हमारे साथ है। इससे उनको मईयते इलाही की बशारत नसीब हुई। इसको "मईयते कुबरा" कहते हैं। यह खुशख़बरी अल्लाह तआला ने सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को अता फ़रमा दी और इसका इज़्हार नबी अलैहिस्सलाम की ज़बान फ़ैज़े तर्जुमान से करवा दिया गया।

"सानी-इस्नैन" का लक़ब

सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर को सानी-इस्नैन कहा गया यानी दो में से दूसरा क्योंकि जहाँ नबी अलैहिस्सलाम पहले बने वहाँ सिद्दीक़े अकबर दूसरे बने। ईमान लाने में दूसरे, ग़ारे सौर में दूसरे, ख़िलाफ़त मिलने में दूसरे, तबलीग़ करने में दूसरे, रौज़ए अक़्दस में दफ़न होने में दूसरे, महशर के दिन खड़े होने में दूसरे और क़ियामत के दिन जन्नत में दाख़िल होने में दूसरे होंगे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के नज़दीक तीन रातों का मुक़ाम

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी ज़िन्दगी में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा करते थे आप मेरी सारी ज़िन्दगी की नेकियाँ ले लीजिए और मुझे ग़ारे सौर वाली तीन रातों

की नेकियाँ दे दीजिए क्योंकि मुझे उन तीन रातों की नेकियाँ अपनी सारी ज़िन्दगी की नेकियों से ज़्यादा नज़र आती हैं।

एक दफ़ा हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा आराम फ़रमा रही थीं। आसमान पर सितारे चमक रहे थे। उनके दिल में ख़्याल आया कि आसमान पर जितने सितारे हैं उतनी नेकियाँ भी किसी की होंगी। उन्होंने यही सवाल नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पूछा कि क्या किसी की नेकियाँ भी सितारों के बराबर होंगी? नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि हाँ उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की होंगी। यह सुनकर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ख़ामोश हो गयीं। फिर थोड़ी देर के बाद नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने खुद पूछा, आएशा! तुम सोच रही होगी कि मेरे वालिद का नाम नहीं लिया। कहने लगीं, जी हाँ बिल्कुल यही सोच रही थी, फ़रमाया, आएशा! उनकी बात क्या पूछती हो उनकी तो ग़ारे सौर में गुज़ारी हुई एक रात की नेकियाँ आसमान के सितारों से भी ज़्यादा हैं, सुब्हानअल्लाह।

हज़रत अबूबक्र के ईमान का वज़न

बैहकी की रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि अगर पूरी उम्मत के ईमान को अबूबक्र के ईमान के साथ तोला जाए तो अबूबक्र का ईमान बढ़ जाएगा। अल्लाह तआला ने उनको ऐसा ईमान अता फ़रमा दिया था।

सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के सीने में अनवाराते नबुव्वत

एक हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿مَا صَبَّ اللّٰهُ فِیْ صَدْرِیْ اِلَّا وَقَدْ صَبَبْتُهٗ فِیْ صَدْرِ اَبِیْ بَکْرٍ﴾

अल्लाह तआला ने मेरे सीने में जो कुछ भी डाला है मैंने उसे अबूबक्र के सीने में डाल दिया है।

निस्बत की बरकतें

इस निस्बत की क़द्र कीजिए क्योंकि यह निस्बत बहुत ही मज़बूत निस्बत है। इसलिए दिलों को बदलने में इसकी अजीब तासीर है। क्या आप नहीं देखते कि सिलसिले में बैअत होने से पहले कई लोग ग़फ़लत में पड़े होते हैं मगर बैअत होने के बाद अल्लाह तआला उनकी सुबह व शाम को बदल देते हैं। उनके किरदार, उनकी बातचीत हत्ताकि कि उनकी रफ़्तार में भी तब्दीली आ जाती है। ये निस्बत की बरकतें होती हैं। जैसे कोई बंजर ज़मीन को पानी देकर दाना डाल दे तो फिर उसमें फल फूल निकलना शुरू हो जाते हैं। यह निस्बत भी इसी तरह है कि जिस बंदे को भी ताल्लुक़ नसीब होता है उस बंदे में से नेक आमाल के फल फूल निकलना शुरू हो जाते हैं।

सिद्दीक़े अकबर और फ़नाए कामिल

नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

مَنْ اَرَادَ اَنْ یَّنْظُرَ اِلٰی مَیِّتٍ یَّمْشِیْ عَلٰی وَجْہِ
الْاَرْضِ فَلْیَنْظُرْ اِلٰی اِبْنِ اَبِیْ قُحَافَۃَ

जो आदमी चाहे कि वह ज़मीन पर चलती हुई लाश को देखे तो उसको चाहिए कि वह अबूक़हाफ़ा के बेटे अबूबक्र को देख ले।

यानी उनकी फ़ना इतनी कामिल थी कि वह सतहे ज़मीन पर तो चल रहे होते थे मगर उनको दुनिया से कोई ताल्लुक़ नहीं होता था। अल्लाह तआला ने उनको मख़्लूक़ से बेताल्लुक़ी इतनी अता की हुई थी कि वह चल तो फ़र्श पर रहे होते थे मगर दिल अर्श वाले के साथ अटका हुआ होता था।

सिद्दीक़े अकबर और तजल्ली ख़ास

हज़रत सैय्यद ज़व्वार हुसैन शाह रह० ने मुख़्तलिफ़ सनदों के साथ यह रिवायत नक़ल की है कि नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿إِنَّ اللّٰهَ يَتَجَلّٰى لِلْخَلْقِ عَامَّةً وَّلٰكِنْ لِّاَبِىْ بَكْرٍ خَاصَّةً﴾

क़ियामत के दिन अल्लाह तआला सब लोगों के लिए आम तजल्ली फ़रमाएंगे लेकिन अबूबक्र के लिए ख़ास तजल्ली फ़रमाएंगे। इसलिए कि हज़रत अबूबक्र ने अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथ दिया। ख़ास तजल्ली का मतलब यह है कि अल्लाह तआला अबूबक्र को मुस्कुरा कर मुहब्बत भरी निगाह से देखेंगे। सुब्हानअल्लाह! इसलिए क़ियामत के दिन कुछ ऐसे भी खुशनसीब होंगे कि वे अल्लाह तआला को देखकर मुस्कुराएंगे और अल्लाह तआला उन्हें देखकर मुस्कुराएंगे।

निस्बतों का एहतिराम

हम तमाम निस्बतों का एहतिराम करते हैं क्योंकि जो भी साहिबे निस्बत मशाइख़ होते हैं चाहे वे किसी भी सिलसिले के हों उनका इकराम करना लाज़मी और ज़रूरी होता है। जिस तरह नबी

अलैहिस्सलाम पर ईमान तो लाए मगर हम तमाम अंबिया किराम की भी इज़्ज़त करते हैं क्योंकि किसी के बारे में भी कोई गुस्ताख़ी करेगा तो इस्लाम से ख़ारिज हो जाएगा। इसी तरह हम तमाम साहिबे निस्बत मशाइख़ की इज़्ज़त करते हैं लेकिन हमारे मशाइख़ का रंग ही कुछ और है–

ہر گل را رنگ و بوئے دیگر است

हर फूल का रंग और उसकी ख़ुशबू जुदा होती है।

सिलसिला नक़्शबंदिया की ख़ासियत

हमारे सिलसिलए आलिया में मशाइख़ के अंदर इत्तिबाए सुन्नत बहुत ज़्यादा होती है। इसी इत्तिबाए सुन्नत की वजह से अल्लाह तआला ने उनकी महबूबियत रखी होती है। इस सिलसिले में 'हू' 'हा' नहीं होती। इसलिए आपने देखा होगा कि बहुत ज़्यादा शे'र व अश'आर और नारेबाज़ी हमारे मशाइख़ में नहीं होती बल्कि ख़ामोशी होती है लेकिन ख़ामोशी के बाद दिलों के अंदर एक उबाल आ रहा होता है।

सरसब्ज़ पेड़ में से आग

हमारे सिलसिलए आलिया के एक बुज़ुर्ग के पास एक सालिक आया और कहने लगा कि सिलसिला नक़्शबंदिया के बुज़ुर्ग बहुत ठंडे होते हैं। बस चुपचाप रहते हैं। ज़िक्र करते हैं तो पता ही नहीं चलता। उन्होंने उसकी तरफ़ देखा और सिर्फ़ क़ुरआन मजीद की आयत पढ़ दी :

﴿هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا﴾

वह ज़ात जिसने तुम्हारे लिए सब्ज़ दरख़्त में से आग निकाल दी।

मतलब यह था कि जिस तरह अल्लाह तआला हरे पेड़ में से आग निकाल सकता है इसी तरह वह देखने में इन ठंडे बुज़ुर्गों में से भी फ़ैज़ की आग निकाल सकता है। इन हज़रात की तवज्जुहात बहुत कवी होती हैं।

निस्बतों की बरकत का एक हैरतअंगेज़ वाकिआ

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० के बड़े ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्माईल वाडी दामत बरकतुहुम इंगलैंड में हैं। उन्होंने खुद एक वाकिआ सुनाया। चूँकि उन्होंने यह वाकिआ खुद सुनाया इसलिए यह आजिज़ भी आपको सुनाने की हिम्मत कर रहा है। यह वाकिआ सुनते हुए निस्बत की बरकत का ख़्याल रखिएगा।

फ़रमाने लगे कि मेरा एक बेटा मुहम्मद कासिम (इस आजिज़ की उनसे भी मुलाकात हुई) कहने लगे कि वह अंग्रेज़ी पढ़कर युनीवर्सिटी में प्रोफ़ेसर बन गया। प्रोफ़ेसर बनने के बाद उसके ख़्यालात दहरियत की तरफ़ चले गए। जब यहाँ तक नौबत पहुँच जाए तो फिर नमाज़ रोज़ा तो दूर की बात होती है। जिसको वजूदे बारी तआला में ही शक पड़ जाए, दीन में ही शक पड़ जाए तो फिर आमाल करना तो दूर की बात रह जाती है। घर के सारे बच्चे हाफ़िज़, कारी और आलिम और बेटियाँ भी हाफ़िज़ा, आलिमा, फ़ाज़िला मगर उनका यह बेटा दूसरों से ज़रा अनोखा बना क्योंकि युनीवर्सिटी के माहौल में तालीम हासिल की थी। वह डार्विन थ्योरी के पीछे लग गए जिससे उन्हें वजूदे बारी तआला के बारे में शक पड़ गया और ज़िन्दगी में ग़फ़लत आ गई।

फ़रमाने लगे मैंने एक दिन हज़रत मुर्शिदे आलम रह० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, हज़रत! सारा घराना उलमा का है, बच्चियाँ भी आलिमा, फ़ाज़िला हैं मगर यह बच्चा घर में ऐसा बन गया कि इसका अजीब हाल है। हमारे दिल में हर वक़्त दुख और ग़म है, इसकी वालिदा भी रोती है और मैं भी रोता हूँ। मेहरबानी फ़रमाकर कोई ऐसी दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह तआला उसके दिल को बदल दे। हज़रत मुर्शिदे आलम रह० ने फ़रमाया कि उससे कहो कि वह मुझसे बैअत कर ले। अब उसकी वालिदा ने समझाया, बेटा! तुम बैअत कर लो। उसने जवाब दिया जब मैंने नमाज़ ही नहीं पढ़नी तो मुझे बैअत होने का क्या फ़ायदा? मौलाना ने हज़रत की ख़िदमत में फिर अर्ज़ किया कि हज़रत! मेरा बेटा कहता है कि जब न नमाज़ पढ़ना है और न क़ुरआन पढ़ना है तो फिर बैअत का क्या फ़ायदा? हज़रत ने फ़रमाया कि क्या मैंने उसे कहा है कि वह नमाज़ पढ़े और क़ुरआन पढ़े, मैंने तो सिर्फ़ यह कहा है कि बैअत कर ले। यह अजीब बात है जो आम आदमी को समझ में नहीं आती।

अगले दिन उसकी वालिद ने फिर कहा, बेटा! यह बुज़ुर्ग हमारे यहाँ तशरीफ़ लाते हैं, तुम्हारी सब बहनें और भाई उनसे बैअत हैं, मैं भी बैअत हूँ, तुम भी बैअत हो जाओ। इस तरह घर के सारे अफ़राद बैअत हो जाएंगे। उसने कहा अब्बू! मैंने करना तो कुछ नहीं है। बाप ने कहा बेटा! तुम कुछ न करना, सिर्फ़ बैअत हो जाओ। उसने दिल में सोचा चलो अब्बू राज़ी हो जाएंगे इसलिए बैअत ही हो जाता हूँ। अब उस नौजवान को क्या पता था कि किसी अल्लाह वाले के हाथ में हाथ देकर जो कुछ कलिमात पढ़

लिए जाते हैं वह बंदे के दिल की दुनिया बदलकर रख दिया करते हैं। वह इस राज़ से वाक़िफ़ नहीं था। इसलिए कहने लगा अच्छा जी मैं बैअत हो जाता हूँ। उसने अगले दिन हज़रत के हाथ पर बैअत कर ली।

बैअत होने के बाद उसके दिल की सोच बदलना शुरू हो गई। उस ने हज़रत की सोहबत में बैठना शुरू कर दिया। हज़रत से मुहब्बत होना शुरू हो गई, नमाज़ें भी शुरू हो गयीं, तिलावत भी शुरू हो गई, ज़िन्दगी के दिन व रात बदलने शुरू हो गए यहाँ तक कि उसने इल्म पढ़ना शुरू कर दिया, तहज्जुद गुज़ार हो गया, इतना ज़ाकिर शाग़िल बना कि उसको कुछ सालों के बाद हज़रत ने ख़िलाफ़त अता फ़रमा दी। वह नौजवान जो दहरिया था, खुदा बेज़ार ज़हनियत का मालिक था उस पर सिर्फ़ बैअत के कुछ कलिमात पढ़ने का इतना असर हुआ कि उसके दिल में इश्क़े इलाही का ऐसा शोला पैदा हुआ कि आख़िरकार हमारे हज़रत रह० ने उसको इजाज़त व ख़िलाफ़त अता फ़रमा दी। इस आजिज़ की उनसे मुलाक़ात हुई। और वहाँ रियूनियन लोगों ने बताया कि उनकी वजह से सैकड़ों नौजवान कुफ़्र से तौबा करके इस्लाम के अंदर दाख़िल हो चुके हैं।

मेरे दोस्तो! जो लोग कलिमा भी नहीं पढ़े होते उनके दिलों पर इन कलिमात का इतना असर होता है तो जो कलिमा गो हों और दिल में तलब व तड़प रखने वाले हों, घरों से चलकर आए हों, अगर वे यह कलिमात पढ़ेंगे और वह निस्बत का ताल्लुक़ हासिल करेंगे तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनके दिल की दुनिया को कैसे नहीं बदलेंगे।

ख़ात्मा बिल ख़ैर की बशारत

हमारे दादा पीर हज़रत फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० फ़रमाया करते थे कि जिस दिल पर यह उंगली लग गई उसको कलिमे के सिवा मौत नहीं आ सकती क्योंकि यह सिद्दीक़ी निस्बत है। इसकी बड़ी बरकतें हैं और अल्लाह तआला के हाँ इसका बड़ा मक़ाम है। मेरे दोस्तो! आज का इंसान दोस्त के घर के कुत्ते का भी लिहाज़ कर जाता है तो क्या अल्लाह तआला अपने प्यारों के साथ ताल्लुक़ रखने वालों का लिहाज़ नहीं फ़रमाएंगे?

सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की बात ही कुछ और है

हम तमाम मशाइख़ का इकराम करते हैं मगर सिद्दीक़ी निस्बत का रंग ही कुछ और है। जिस तरह फूल तो सब ख़ुशनुमा होते हैं मगर गुलाब की बात ही कुछ और है। चाँदी तो ख़ुशनुमा होती है मगर सोने की बात ही कुछ और है। मोती तो सब क़ीमती होते हैं मगर सुर्ख़ याक़ूत की बात ही कुछ और है। दिन तो सारे अच्छे होते हैं मगर जुमा की बात ही कुछ और है, महीने तो सब अच्छे होते हैं मगर रमज़ानुल मुबारक की बात ही कुछ और है, रातें तो सब इबादत के लिए हैं मगर लैलतुल क़द्र की बात ही कुछ और है, फ़ुक़हा तो सारे बुज़ुर्ग हैं मगर इमामे आज़म रह० की बात ही कुछ और है, शहर तो सारे अच्छे मगर मक्का और मदीना की बात ही कुछ और है, फ़रिश्ते तो सब अल्लाह के मुक़र्रब हैं मगर जिब्रील अलैहिस्सलाम की बात ही कुछ और है, अंबिया किराम तो सब शान वाले हैं मगर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

बात ही कुछ और है और इसी तरह सहाबा किराम तो सब अल्लाह को प्यारे हैं मगर सिद्दीके अकबर की बात ही कुछ और है।

निस्बत के खरे होने की दलील

मेरे दोस्तो! जो ज़िक्र बताए जा रहे हैं उनको पाबन्दी के साथ कीजिए और फिर देखिए कि यह फ़ैज़ आपके सीने तक पहुँचता है या नहीं पहुँचता। अलबत्ता एक आदमी डाक्टर से नुस्ख़ा लिखवा ले मगर इस्तेमाल न करे और फिर कहे कि फ़ायदा नहीं हुआ तो इसमें डाक्टर का नहीं बल्कि उस मरीज़ का क़ुसूर होता है। आप सैंकड़ों में से नहीं बल्कि हज़ारों में से कोई बंदा ऐसा दिखा दें जो कहे कि मैं मामूलात करता हूँ और मुझे अपने अंदर तब्दीली नज़र नहीं आती। इस निस्बत के खरे होने की इससे बड़ी दलील और क्या हो सकती है। आप ज़िंदगी के अवक़ात से फ़ायदा उठाएं। आप यहाँ तशरीफ़ लाए हैं। अब जितना वक़्त भी बाक़ी है उसमें अपने दिल की तवज्जोह अल्लाह तआला की तरफ़ रखें। गुनाहों से सच्ची तौबा की नीयत करें और आइन्दा नेकोकारी का इरादा लेकर जाइए। फिर देखना कि निस्बत की बरकतें आपके ऊपर कैसे आएंगी और सीनों को कैसे मुनव्वर करेंगी।

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० का मुक़ाम

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० से किसी ने एक बार कह दिया हज़रत! हाजी साहब को अल्लाह तआला ने इसलिए बड़ी शान अता फ़रमाई कि आप जैसे बड़े-बड़े उलमा उनसे बैअत हैं। हज़रत थानवी रह० यह सुनकर सख़्त नाराज़ हुए

और फ़रमाया कि तुम्हारी अक़्ल उलटी है और तुमने उलटी बात कह दी। अरे हाजी साहब की शान हमारी वजह से नहीं बढ़ी बल्कि हाजी साहब की वजह से अल्लाह तआला ने हम लोगों की शान बढ़ा दी वरना (मौलाना) क़ासिम (साहब) को कौन पूछता और (मौलाना) रशीद अहमद गंगोही (साहब) को कौन पूछता। यह हाजी साहब की निस्बत की वजह से अल्लाह तआला ने उनको शान अता फ़रमा दी।

फ़रमांबरदारी वाली ज़िंदगी अपनाना

हमें चाहिए कि हम निस्बत के हासिल होने के लिए दुआएं भी मांगे, तक़्वा भी अख़्तियार करें, गुनाहों से भी जान छुड़ाएं और अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी वाली ज़िंदगी को भी अपनाएं ताकि ज़िंदगी के आने वाले दिन हम अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी और नबी अलैहिस्सलाम की सुन्नत के मुताबिक़ गुज़ारे जाएं।

निस्बत हासिल करने के ज़रिए

हमें चाहिए कि हम सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की रविश अपनाएं। वह आमाल करने में सबसे आगे होते थे। अल्लाह तआला बड़े क़द्रदान हैं। यह निस्बत असर किए बग़ैर नहीं रहती। अगर पत्थर दिल भी हो तो वह उससे पार कर जाती है और आख़िर अपना रास्ता बना लिया करती है। हमने अपनी आँखों से इस निस्बत की अजीब बरकतें देखी हैं। अल्लाह तआला सबको अपनी आँखों से देखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें। इसका आसान तरीक़ा यह है कि हम पाबन्दी से मामूलात करें, अपना

राब्ता रखें और इत्तिबाए सुन्नत करें। इन तीन कामों के करने से अल्लाह तआला बंदे के सीने में नूरे निस्बत अता फ़रमा देते हैं। उसके आमाल की कैफ़ियत पहले से बेहतर हो जाती है। तवाज़ो आ जाती है और इंसान अल्लाह के लिए इबादत करता है।

ख़ामोश ख़िदमत

सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में ग़रीबों, नादारों और बेवाओं की ख़िदमत करने के लिए आदमियों को मुकर्रर किया हुआ था। एक दफ़ा हज़रत्त उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह फ़हरिस्त देखी तो एक बुढ़िया के नाम के सामने उसकी ख़िदमत करने के लिए किसी का नाम नहीं था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु समझे कि शायद यह काम किसी ने अपने ज़िम्मे नहीं लिया। उन्होंने दिल में सोचा कि उनका काम मैं कर दूंगा। चुनाँचे अगले दिन फ़ज्र पढ़कर उस औरत के घर गए तो देखा कि झाड़ू भी दी हुई है और पानी भी भरा हुआ है। पूछा, अम्मा! यह ख़िदमत कौन कर गया? कहने लगी कि कोई आता है और वह पानी भी भर जाता है और झाड़ू भी दे जाता है। मुझे आज तक उसके नाम का पता नहीं है। न मैंने पूछा और न कभी उसने बताया है।

उन्होंने सोचा कि अच्छा अगली दफ़ा फ़ज्र से पहले जाऊँगा। जब फ़ज्र से पहले गए तो देखा कि सब काम हुआ पड़ा है। फिर उन्होंने सोचा कि मैं अब तहज्जुद पढ़ते ही जाऊँगा। चुनाँचे तहज्जुद के वक़्त आए तो देखा कि झाड़ू भी दिया हुआ है और पानी भी भरा हुआ है। वह भी उमर बिन ख़त्ताब थे। कहने लगे कि अच्छा मैं कल देखूंगा। चुनाँचे अगले दिन उन्होंने इशा की

नमाज़ पढ़ी और रास्ते में एक जगह छिपकर बैठ गए ताकि देख सकें कि बुढ़िया के घर में कौन जाता है।

जब आधी रात का वक़्त हुआ और अंधेरा गहरा हो गया तो देखा कि एक आदमी जिसके पाँव में जूते नहीं थे, नंगे पाँव आहिस्ता आहिस्ता चलता हुआ उस बुढ़िया के घर जा रहा है। हज़रत उमर उसको देखकर खड़े हो गए और पूछने लगे ﴿من انت﴾ तू कौन है? जवाब मिला कि मैं अबूबक्र हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैरान होकर पूछने लगे ऐ अमीरुल मुमिनीन! रात के अंधेरे और तन्हाई में आप इस बुढ़िया की ख़िदमत करने जा रहे हैं? और फिर पूछा आपके पाँव में तो जूते भी नहीं हैं। इस तरह नंगे पाँव क्यों चल रहे हैं? आपने जवाब दिया, उमर! मैंने इसलिए जूते नहीं पहने कि ऐसा न हो कि मेरे पाँव के जूते की वजह से किसी सोने वाले की नींद में ख़लल आ जाए और किसी को मेरे इस अमल का पता चल जाए। मेरे अज़ीज़ दोस्तो! हमें भी चाहिए कि हम भी जो काम करें ख़ालिस अल्लाह के लिए करें। फिर देखना कि अल्लाह तआला हम पर किस तरह मेहरबानी फ़रमाएंगे।

सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की अजीब वसीयत

जब सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो अपनी बेटी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को बुलाया और वसीयत फ़रमाई कि जब मैं फ़ौत हो जाऊँ तो मेरी इन्हीं दो चादरों को धोकर मेरा कफ़न बना देना। सैय्यदा आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, अब्बा जान! हम इतने भी नहीं कि आपके कफ़न की चादरें भी न ख़रीद सकें। मगर आप फ़रमाने लगे, नई चादरें

तो मुर्दा बदन की निस्बत ज़िंदा बंदे के लिए ज़्यादा बेहतर हैं। अंदाज़ा कीजिए कि दिल में कितनी तवाज़ो है कि अपने कफ़न के लिए पुरानी चादरों की वसीयत करके जा रहे हैं।

सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु और ख़शियते इलाही

उनको अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जन्नत की बशारतें दी हुई थीं मगर इसके बावजूद अल्लाह तआला की जलालते शान से डरते थे। बैठकर कहते थे कि ऐ काश! मुझे मेरी माँ ने जना ही न होता, मैं किसी मोमिन के बदन का बाल होता, मैं परिन्दा होता, मैं घास का कोई तिनका होता। हमारे दिलों में भी अल्लाह तआला का ख़ौफ़ होना चाहिए ताकि हम गुनाहों से बचकर नेकी की ज़िंदगी गुज़ार सकें।

फ़िक्र की घड़ी

मेरे अज़ीज़ दोस्तो! हम अपनी पहली ज़िंदगी जैसे गुज़ार चुके हैं सो गुज़ार चुके। वह वक़्त कब आएगा जब हम सच्ची तौबा करेंगे। अपने मालिक के सामने अपने दिल के अंदर से यह अहद करेंगे कि परवरदिगार! आज हम तमाम गुनाहों से बरी होते हैं। तौबा करते हैं, माफ़ी चाहते हैं। मेरे मालिक! सर पर बहुत बोझ इकठ्ठे कर चुके हैं। अल्लाह! आज हम सच्चे मानों में तौबा करके आपसे माफ़ी चाहते हैं। मेरे मालिक! हम घरों के अंदर गुनाहों भरी ज़िंदगी गुज़ारते रहे। ये तेरे नेक बंदों की महफ़िल है। कोई अपनी ज़िंदगी की तहज्जुद लेकर आया है, कोई मुराक़बे लेकर आया, तहलील लिसानी, तहलील ख़फ़ी लेकर आया, इनकी

बरकत से हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे। या अल्लाह! इस महफ़िल में बाज वे दोस्त भी हैं जो ख़त लिखते हैं कि हज़रत सत्ताईस साल से अव्वाबीन क़ज़ा नहीं हुई। वे लोग भी हैं जिनकी ग्यारह-ग्यारह साल से तहज्जुद क़ज़ा नहीं हुई। वे लोग भी हैं जिनका रोज़ाना दस हज़ार मर्तबा कलिमे का ज़िक्र करने का मामूल बना हुआ है बल्कि एक ख़ुशनसीब ऐसे भी हैं जिन्होंने ख़त लिखा, हज़रत! मेरा कोई हफ़्ता नबी अलैहिस्सलाम के दीदार से ख़ाली नहीं गुज़रता। या रब्बे करीम! इन हज़रात की बरकत से हमारे गुनाहों को नेकियों में तब्दील फ़रमा दें।

अगर आज की इस महफ़िल में हम अपने गुनाहों की माफ़ी मांगे तो हमारी बिगड़ी बन जाएगी। घर जाकर माफ़ी मांगेगे तो एक मुलज़िम माफ़ी मांग रहा होगा। मालूम नहीं कि इतने गुनाहों को माफ़ करेंगे या नहीं करेंगे लेकिन यहाँ तो नेक लोग मौजूद हैं। नेकों की बस्ती में चलकर जाने वाला अगर रास्ते में मर जाता है तो अल्लाह तआला उसकी भी मग़फ़िरत कर देते हैं और हम तो चलकर यहाँ पहुँच चुके हैं। हमें चाहिए कि हम दिल की गहराईयों से कहें कि ऐ मेरे मौला! हमारी इस हाज़िरी को क़बूल कर लीजिए और हमारी तौबा को क़बूल फ़रमाकर हमें आइन्दा नेकी और परहेज़गारी की ज़िंदगी नसीब फ़रमाइए।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

उलमाए देवबंद का तारीख़ी पसमंज़र

इस आजिज़ को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने चालीस से ज़्यादा मुल्कों में सफ़र करने का मौक़ा अता किया। मश्रिक़ भी देखा, मग़रिब भी देखा, अमरीका भी देखा, अफ़्रीक़ा भी देखा। ऐसी जगह पर भी गया जहाँ हुकूमत ने लिखा हुआ था कि यह दुनिया का आख़िरी किनारा है। ऐसे इलाक़ों में भी हाज़िर हुआ जहाँ छः महीने दिन और छः महीने रात हुआ करती है। इतना सफ़र करने की तौफ़ीक़ मिली मगर एक बात देखने में आई कि हर जगह जहाँ पर आजिज़ पहुँचा कोई न कोई उलमाए देवबंद का रूहानी बेटा बैठा काम करता हुआ नज़र आया।

उलमाए देवबंद का तारीख़ी पसमंज़र

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

وَالرَّبَّانِيُّوْنَ وَ الْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَ كَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ○

وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ آخَرَ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا○ وَقَالَ

اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ آخَرَ يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

دَرَجٰتٍ ○سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

ज़ाहिरी और बातिनी उलूम का संगम

उलमाए किराम के इस इज्तिमा में अपने असलाफ़ के बारे में बातें करने का इरादा है। जिस तरह हमारा रूहानी रिश्ता सीना-ब-सीना नबी अलैहिस्सलाम तक पहुँचता है और शजरा कहलाता है, इसी तरह हमारा इल्मी सिलसिला भी है जो अकाबिरीन उलमाए देवबंद से होता हुआ नबी अलैहिस्सलाम तक पहुँचता है। हमारे अकाबिरीन उलमाए देवबंद इल्मी और रूहानी दोनों निस्बतें कामिल तौर पर रखते थे। जब दर्से हदीस देने बैठते तो अस्क़लानी और क़स्तलानी रह० नज़र आ रहे होते थे और जब

कभी मसनदे इर्शाद पर बैठते थे तो जुनैद और बायज़ीद रह० नज़र आते थे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको दोनों उलूम से नवाज़ा था। वे हक़ीक़त में ﴿مرج البحرين﴾ थे। वे ज़ाहिरी उलूम और बातिनी उलूम का संगम थे। उनकी क़ुर्बानियों की वजह से अंग्रेज़ के दौर में भी दीन महफ़ूज़ रहा है। इसी वजह से आज हम इस दीन पर अमल करने के क़ाबिल हैं।

इल्मी विरासत की हिफ़ाज़त

दुनिया के दूसरे मुल्कों को देखिए अलबानिया, बूसीनिया और कोसोवा जहाँ ग़ैर-मुस्लिम हावी हुए वहाँ मुसलमानों की ज़िंदगियों में इल्म बिल्कुल ख़त्म हो गया था। यहाँ तक कि वहाँ लोगों को कलिमा पढ़ना भी नहीं आता था। जबकि हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों की दो सौ साल हुकूमत भी हम से इल्मी विरासत छीन न सकी। यह दीन वाली नेमत बाक़ी रहीं और अल्लाह का शुक्र है आज हम इस दीन के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं।

फ़िरंगी (अंग्रेज़ी) तहज़ीब के ख़िलाफ़ कार्रवाइयाँ

यह हिफ़ाज़त भला कैसे हुई? उसके पीछे लाखों उलमा की क़ुर्बानियाँ मौजूद हैं। कुछ आशिक़ तो ऐसे थे जो जान के नज़राने पेश कर गए और कुछ वे थे कि जिन्होंने फ़िरंगी तहज़ीब के ख़िलाफ़ ज़िंदगी गुज़ारकर या बेड़ियों को डलवाकर मुश्किलात में ज़िंदगी गुज़ार दी मगर दीन को अपने सीने से लगाए रखा। चटाइयों पर बैठने वाले इन हज़रात ने अपने लिए भी ग़रीबी को बर्दाश्त किया और अपनी औलाद के लिए भी मगर दीन की हिफ़ाज़त कर गए। हर तालिब इल्म को अपने असलाफ़ की इस

तारीख़ का इल्म होना ज़रूरी है। उलमा हज़रात तो पहले ही जानते हैं, फिर भी अपना सबक़ याद करने की ख़ातिर यह आजिज़ आज अपने उन असलाफ़ की बातें अर्ज़ करेगा।

ईस्ट इंडिया कंपनी की बुनियाद

1601 ई० में अंग्रेज़ों का क़ाफ़िला वास्कोडिगामा की सरबराही में बंबई के साहिल पर उतरा और उसने मुग़ल बादशाहों से कहा कि हम यहाँ पर तिजारत करना चाहते हैं। उनकी माद्दी तरक़्क़ी ने वक़्त के हुक्मरानों को बड़ा मुतास्सिर किया। चुनाँचे उन्होंने दिल खोलकर उनका इस्तिक़बाल किया। ईस्ट इंडिया कंपनी के नाम पर एक फर्म बनी जिसके दफ़्तर मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में खोले गए। 100 साल के अरसे में उसकी तिजारत इतनी चमकी कि ज़्यादातर तिजारती मामलात उनकी मुठ्ठी में आ गए।

इंतिज़ामी काम और दख़लअंदाज़ी

जब अंग्रेज़ों ने देखा कि तिजारत पर उसने क़ाबू पा लिया है तो उसने इंतिज़ामी कामों में भी अमल दख़ल शुरू कर दिया। 1701 ई० में तक हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में ईस्ट इंडिया कंपनी के झंडे लहरा रहे थे। अंग्रेज़ छोटे छोटे इलाक़ों का निज़ाम अपने हाथ में ले रहा था। ज़ाहिर में तिजारत थी लेकिन अंदर नीयत यह थी कि आख़िर इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करना है। फिरंगी इन कामों को इतनी चालाकी, मक्कारी और होशियारी से कर रहा था कि हुक्मरानों ने इसको महसूस न किया। 1740 ई० तक अंग्रेज़ चार मुख़्तलिफ़ सूबों का गवर्नर बन चुका था। क़ुदरत के कुछ फ़ैसले होते हैं।

शाह वलीउल्लाह रह० की विलादत

एक तरफ़ फ़िरंगी कोशिशें इतनी ज़्यादा हो रही थीं कि रब्बे करीम ने दूसरी तरफ़ उनका मुक़ाबला करने वाले अपने एक बंदे को पैदा किया। चुनाँचे देहली के बुज़ुर्ग आलिम शाह अब्दुर्रहीम साहब रह० के हाँ एक बेटा हुआ जिनका नाम उन्होंने वलीउल्लाह रखा। 1702 ई० में शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० की विलादत हुई। अंग्रेज़ों के इस मुल्क में आने के पूरे एक सौ साल बाद शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० पैदा हुए।

इल्म हासिल करना

जब अपनी जवानी की उम्र को पहुँचे तो मक़ामी उलमा से जो इल्म हासिल करना था वह हासिल करके मदीना तश्रीफ़ ले गए और उन्होंने वहाँ शेख़ हज़रत अबूताहिर मदनी रह० से इल्म हासिल किया। हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस रह० वह आलिमे दीन हैं जिन्होंने सबसे पहले क़ुरआन मजीद का फ़ारसी में तर्जुमा किया जिनकी किताबें "हुज्जतुल्लाहिल-बालिग़ा", "तफ़हीमाते-इलाहिया", "फ़्यूज़ुल-हरमैन" अक्सर उलमा की नज़रों से गुज़री होंगी। उन्होंने हरमैन शरीफ़ैन से वापस हिन्दुस्तान आकर बाक़ायदा दीन की तालीम व तदरीस का सिलसिला शुरू कर दिया।

शाह वलीउल्लाह रह० के बेटे

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उन्हें फ़रज़ंद अता किए। शाह अब्दुल अज़ीज़ रह०, शाह अब्दुल क़ादिर रह०, शाह अब्दुल ग़नी रह० और शाह रफ़ीउद्दीन रह०। ये सब आफ़ताब व महताब थे। "ईं ख़ाना हमा आफ़ताब अस्त" की तरह थे। शाह रफ़ीउद्दीन रह०

और शाह अब्दुल क़ादिर रह० ने उर्दू ज़बान में क़ुरआन पाक का तर्जुमा किया। 1762 ई० में शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी की वफ़ात हुई।

अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जिहाद का फ़तवा

उसके बाद उनके बड़े बेटे शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० उनकी मसनद पर बैठे। शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० को अल्लाह तआला ने फ़िरासते मोमिनाना अता की थी। ﴿اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَاِنَّهٗ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰهِ﴾ उन्होंने महसूस कर लिया कि फ़िरंगियों के इरादे ख़तरनाक हैं। ये हम से सिर्फ़ हमारी दुनिया ही नहीं लेना चाहते बल्कि हमारा दीन भी छीनना चाहते हैं। चुनाँचे 1772 ई० में शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब रह० ने फ़िरंगियों के ख़िलाफ़ जिहाद का फ़तवा दे दिया कि इनको मुल्क से निकालो और आज़ादी हासिल करो क्योंकि यह मुसलमानों के ऊपर फ़र्ज़ हो चुका है।

फ़तवे का नतीजा

चुनाँचे 1772 ई० के इस फ़तवे के बाद जितनी भी आज़ादी की तहरीकें चलीं वे दरअसल इस फ़तवे का नतीजा था। तहरीक रेशमी रूमाल, जंगे आज़ादी, तहरीक तर्के मवालात और तहरीक बालाकोट या इस तरह की जितनी भी कोशिशें थीं वे सब शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब रह० के फ़तवे का नतीजा थीं। मुसलमानों के अंदर एक शुऊर पैदा होना शुरू हो गया कि फ़िरंगी लोग सिर्फ़ अपनी तिजारत ही चमकाना नहीं चाहते बल्कि अपनी तहज़ीब को भी यहाँ ठूंसकर अपना तर्ज़े ज़िंदगी भी देना चाहते हैं। इस शुऊर के पैदा होने के बाद दूसरे उलमाए किराम ने भी इस हक़ीक़त को

महसूस किया कि हमें भी फ़िरंगी से नजात हासिल करना ज़रूरी है।

मारका सरंगापट्टम

चुनाँचे 1792 में सरंगपट्टम में हैदर अली के बेटे सुल्तान टीपू ने अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जंग लड़ी। यह दिल में दीन का दर्द रखने वाला बंदा था। वह अपने कई फ़ौजियों को लेकर अंग्रेज़ से भिड़ा मगर उसकी फ़ौज के अंदर एक मुनाफ़िक़ था जिसका नाम मीर सादिक़ था। अंग्रेज़ों ने मीर सादिक़ को 900 मुरब्बअ ज़मीन देने का वादा किया। चुनाँचे मीर सादिक़ की मुनाफ़क़त की वजह से सुल्तान टीपू को शहादत नसीब हुई और मुसलमानों को फ़तेह नसीब न हो सकी।

जंगे प्लासी

जब अंग्रेज़ों ने मैसूर पर क़ब्ज़ा कर लिया तो वे बड़े मुतमइन हुए कि चलो मसअला हल हो गया। मगर उसके कुछ अरसे बाद नवाब सिराजुद्दौला ने अंग्रेज़ के साथ प्लासी की जंग लड़ी। उसकी फ़ौज में भी एक मुनाफ़िक़ था। जिसका नाम मीर जाफ़र था। उसको अंग्रेज़ ने आदत के मुताबिक़ माल व दौलत का लालच दिया तो उसने सारे राज़ उनको बता दिए। चुनाँचे 22 घंटे के अंदर यह जंगे प्लासी भी अपने अंजाम को पहुँची और अंग्रेज़ इसमें भी ग़ालिब रहा।

रंजीत सिंह तैनाती

जब अंग्रेज़ ने मैसूर और प्लासी की ये जंगे जीत लीं तो उसने

सोचना शुरू कर दिया कि ये तहरीकें क्यों खड़ी हो रही हैं। इनका कुछ पक्का बंदोबस्त करना चाहिए ताकि आइन्दा हमारे ख़िलाफ़ कोई तहरीक खड़ी न हो सके। चुनाँचे उसने मुसलमानों के ऊपर अपना शिकंजा कसना शुरू कर दिया। लेकिन उसने यह भी महसूस किया कि अगर मैं मुसलमानों पर सीधे-सीधे ज़ुल्म ढाऊँगा तो वे अंग्रेज़ों के और ज़्यादा मुख़ालिफ़ बन जाएंगे। चुनाँचे 1824 ई० में उसने रंजीत सिंह को पंजाब का गवर्नर बना दिया।

रंजीत सिंह के ज़ुल्म

रंजीत सिंह ने अंग्रेज़ के इशारे पर मुसलमानों का वह बुरा हश्र किया कि जिसको पढ़कर इंसान के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उलमा को क़त्ल किया, मुसलमानों की औरतों को बेआबरू किया। उनकी ज़मीन और जायदादों को अपने क़ब्ज़े में ले लिया। जिस तरह से भी वह मुसलमानों को परेशान कर सकता था उसने करने में कोई कमी न की। दो साल तक यह सिलसिला जारी रहा।

सैय्यद अहमद शहीद रह० का जिहाद

आख़िर दिल में दीन का दर्द रखने वाले एक बुज़ुर्ग सैय्यद अहमद शहीद रह० ने देखा अब किसी न किसी को क़ुर्बानी देनी होगी ताकि मुसलमानों को इन मुसीबतों से छुटकारा मिल सके। लिहाज़ा वह और उनके शागिर्द शाह इस्माईल शहीद रह० जिनके साथ तक़रीबन 900 के क़रीब मुजाहिदीन और दस हज़ार मुरीदीन थे। उन्होंने अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ क़दम उठाने का फ़ैसला किया और दुर्रे ख़ैबर के रास्ते पेशावर के अंदर दाख़िल हुए। पहले हमले में सैय्यद अहमद शहीद रह० ने पेशावर को फ़तेह कर लिया।

शाह इस्माईल रह० का जिहाद

उसके बाद शाह इस्माईल रह० ने पेशावर के चौक पर खड़े होकर शरीअत के लागू होने का एलान किया, शराब की बंदिश का एलान किया। यह पहली मई इतवार का दिन था। अजीब बात यह है कि 1972 ई० में हज़रत मुफ़्ती महमूद रह० जो उन्हीं के रूहानी बेटे थे जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको वहाँ का चीफ़ मिनिस्टर बनाया तो उन्होंने भी पेशावर की इसी जगह पर शराब की बंदिश का एलान किया। वह भी पहली मई और इतवार का दिन था। पेशावर पर फ़तेह हासिल करने के बाद सैय्यद अहमद शहीद रह० का यह क़ाफ़िला आगे बढ़ा। शंकियारी और अकोड़ा को फ़तेह करते हुए बालाकोट की तरफ़ बढ़ा।

सैय्यद अहमद शहीद रह० का दो टूक जवाब

पंजाब के गवर्नर रंजीत सिंह ने पैग़ाम भेजा कि अटक से इधर का इलाक़ा तुम संभालो। इधर का इलाक़ा हम संभाल लेते हैं। सैय्यद अहमद शहीद रह० ने फ़रमाया कि मुझे ज़मीन की ज़रूरत नहीं बल्कि मुझे तो लोगों के दीन की ज़रूरत है। मैं तो दीन की हिफ़ाज़त के लिए यह क़दम उठा चुका हूँ। मैं अपने क़दम बढ़ाऊँगा, या तो मुझे फ़तेह नसीब होगी या फिर मुझे शहादत नसीब होगी।

दो जर्नलों की शहादत

चुनाँचे अंग्रेज़ों के इशारे पर रंजीत सिंह अपनी फ़ौज लेकर वहाँ मुक़ाबले के लिए आ गया। बालाकोट के क़रीब सैय्यद अहमद शहीद रह० ने पड़ाव डाला हुआ था। अंग्रेज़ ने मक़ामी

देहातियों को लालच देकर उनसे मालूमात हासिल कीं और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते हुए सैय्यद अहमद शहीद रह० को शहीद कर दिया। 5 मई को सैय्यद अहमद शहीद रह० की शहादत हुई तो शाह इस्माईल रह० ने फिर अंग्रेज़ से जंग शुरू कर दी। चार दिन यह मारका होता रहा। यहाँ तक कि 9 मई को शाह इस्माईल शहीद रह० भी शहीद कर दिए गए। यह वे हज़रात हैं जिनकी क़ब्रें आज भी बालाकोट में मौजूद हैं।

शाह इस्माईल रह० की करामत

तारीख़ में एक अजीब वाक़िआ लिखा है कि जब हज़रत शाह इस्माईल शहीद रह० चारों तरफ़ से घेर लिए गए तो एक सिख ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की शान में गुस्ताख़ी के अलफ़ाज़ कहे और दूसरे ने उन पर तलवार तान ली। शाह इस्माईल रह० के दिल में इश्क़े रिसालत की ऐसी कैफ़ियत थी कि आप ग़लत अलफ़ाज़ सुनकर तड़प उठे और आपने क़सम खाई कि मैं उस वक़्त नहीं मरूंगा जब तक तेरा काम तमाम नहीं कर लूँगा। यह कहकर आपने उसके ऊपर ख़ंजर लहराया मगर दूसरे सिख ने आप पर तलवार का वार किया। आप का सर तन से जुदा हो गया और जुदा होकर गिर गया। अजीब बात है क्योंकि बदन हरकत में आ चुका था और हाथ में ख़ंजर था। लिहाज़ा बदन बग़ैर सर के उसके पीछे भागता रहा। जब सिख ने देखा कि बग़ैर सर के यह बदन मेरी तरफ़ भाग रहा है तो वह डर के मारे पीछे गिरा। आप उस के ऊपर गिरे और आपका ख़ंजर उसके सीने में पेवस्त हो गया। इस तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने आपकी क़सम पूरी फ़रमा दी। हदीसे पाक में आता है कि अल्लाह के कुछ बंदे ऐसे होते हैं

कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ उनका वह मक़ाम होता है कि जब वह क़सम खा लिया करते हैं तो ﴿لواقسم على الله لابره.﴾ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनकी क़सम को पूरा कर दिया करता है।

शाह इस्माईल रह० की किताबें

चुनाँचे शाह इस्माईल रह० की किताब "तक्वियतुल ईमान" और "मंसबे इमामत" आपके यक़ीने कामिल की निशानियाँ हैं। आपका नातिया कलाम "सलक नूर" अब छप चुका है और आपके दिल में जो इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम था उसका अंदाज़ा इस नातिया कलाम को पढ़कर होता है।

अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ उलमाए देवबंद का मशवरा

जब अंग्रेज़ इस मैदान भी ग़ालिब आ गया तो बक़िया उलमा ने 1856 ई० में आपस में मशवरा किया कि अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ हमें कोई और क़दम उठाना चाहिए। चुनाँचे इसमें मौलाना जाफ़र थांसेरी, हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० हज़रत मौलान रशीद अहमद गंगोही रह०, हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानूतवी रह० वग़ैरह हज़रात मौजूद थे। मशवरे में यह बात पाई कि हमारी अफ़रादी क़ुव्वत बहुत कम है। हम अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ कैसे लड़ सकते हैं। इस मौक़े हज़रत मौलाना क़ासिम नानूतवी रह० अल्लाह ने खड़े होकर कहा कि क्या हमारी तादाद ग़ाज़ियान बदर से भी थोड़ी है? आपके इन अलफ़ाज़ से दूसरे उलमा के अंदर भी शहादत का जज़्बा जाग उठा चूँकि ये तीन सौ तेरह की तादाद से तो ज़्यादा थे। चुनाँचे फ़ैसला हुआ कि जो मर्ज़ी हो हमें अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ जिहाद करना है।

जंगे आज़ादी

साल भर इस मशवरे पर अमल करने की तैयारी होती रही। चुनाँचे 1857 ई० में जंगे आज़ादी लड़ी गई। इसके दो मोर्चे बनाए गए। एक मोर्चा अंबाला में जिसके लीडर मौलाना जाफ़र थांसेरी रह० थे और दूसरा मोर्चा शामली में जिसके सिपाहसालार हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० थे। मुक़ाबला हुआ। हाफ़िज़ ज़ामिन साहब शहीद रह० को शहादत भी मिली। हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० को भी ज़ख़्म आए। क्योंकि अंग्रेज़ तादाद में बहुत ज़्यादा थे। इसलिए अंग्रेज़ का पल्ला भारी रहा और उलमा को फिर भी फ़तेह नसीब न हो सकी–

शकिस्त ओ फ़तेह नसीबों से है वले ऐ मीर
मुक़ाबला तो दिले ना तवाँ ने ख़ूब किया

तीन बड़ी रुकावटें

जब ये मुख़्तलिफ़ वाक़िआत पेश आए तो वाइसराए से बर्तानिया के हुक्मरान ने यह पूछा कि आख़िर क्या बात है कि कुछ दिनों के बाद कोई न कोई तहरीक शुरू हो जाती है। मुझे इसकी वजूहात बताओ ताकि इसको हमेशा के लिए ख़त्म किया जा सके। चुनाँचे उन्होंने बर्तानिया से अपने संजीदा और समझदार क़िस्म के लोग बुलाए जिन्होंने आकर हालात का जाइज़ा लिया और कहा उस वक़्त तहरीकें उठती रहेंगी जब तक उनकी तीन चीज़ों को ख़त्म न कर दिया जाए।

1. सब से पहले क़ुरआन मजीद को ख़त्म करना चाहिए,
2. उलमा किराम का क़त्लेआम,

3. जिहाद के जज़्बे को ख़त्म करना चाहिए,

ये तीन बातें निचोड़ थीं।

लिहाज़ा अंग्रेज़ ने इस पर अमल करना शुरू कर दिया। तीन साल के अंदर क़ुरआन पाक के तीन लाख नुस्ख़े आग की नज़र कर दिए और चौदह हज़ार उलमा किराम को फांसी दी गई।

थामसन अपनी तारीख़ में लिखता है कि देहली से लेकर पेशावर तक मेन सड़क के दोनों तरफ़ कोई बड़ा पेड़ ऐसा नहीं था जिस पर किसी आलिम की लाश लटकती नज़र न आ रही हो। बादशाही मस्जिद में फांसी का फंदा लटका दिया गया और दूसरी मस्जिदों के अंदर उलमा किराम को फांसी दी गई।

थामसन अपनी यादृदाश्त में लिखता है कि मैं देहली गया तो कैंप में ठहरा हुआ था। मुझे वहाँ इंसानी गोश्त के जलने की बदबू महसूस हुई। मैं परेशान होकर उठा कि यह क्या मामला है? जब कैंप के पीछे जाकर देखा तो कुछ अंग्रेज़ों ने अंगारे जलाए हुए थे और चालीस उलमा को बेलिबास करके उन अंगारों के पास खड़ा किया हुआ था और उन्हें यह कहा जा रहा था कि तुम हमेशा के लिए हमारा साथ देने का वादा करो नहीं तो तुम्हें अंगारों पर लिटा देंगे। उन्होंने इंकार किया तो चालीस उलमा को अंगारों पर लिटा दिया गया। यह उनके गोश्त जलने की बदबू थी जो ख़ेमों में भी महसूस हो रही थी। वह कहता है कि इसी तरह चालीस उलमा शहीद हो गए तो फिर और चालीस उलमा को भी इसी तरह आग के ऊपर लिटा दिया गया।

मौलाना अहमदुल्लाह गुजराती रह० का जवाब

मौलाना अहमदुल्लाह गुजराती रह० बहुत बड़े आलिम थे। एक

अंग्रेज़ ने उनसे कुछ अरबी सीखी थी। वह अंग्रेज़ उस वक़्त उन लोगों में से था जो मुसलमान उलमा को फांसी दे रहे थे। उसने मौलाना अहमदुल्लाह गुजराती रह० से कहा कि आप मेरे उस्ताद हैं आप सिर्फ़ ज़बान से कह दें कि मैं इस तहरीक आज़ादी में शरीक न था। मैं आपका नाम फांसी देने वालों में से निकाल दूंगा। अहमदुल्लाह गुजराती रह० ने जवाब दिया कि यह बात करके अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के दफ़्तर से नाम निकलवाना नहीं चाहता। सुब्हानअल्लाह तो इन हज़रात ने अपनी जान के नज़राने तो पेश कर दिए मगर अंग्रेज़ का साथ देने पर तैयार न हुए।

ज़ुल्म की इंतिहा

मौलाना जाफ़र थांसेरी रह० अपनी किताब "तारीख़ काला पानी" में लिखते हैं कि हम कई उलमा थे जिनको गिरफ़्तार करके अमृतसर जेल में रखा गया था। फिर फ़ैसला किया कि इनको लाहौर भेज दिया जाए। जब लाहौर भेज दिया गया तो यहाँ के हुक्मरानों ने फ़ैसला किया कि इनको ऐसी सज़ा दी जाए ताकि इनकी वजह से दूसरों को भी इबरत हासिल हो। वहाँ का अंग्रेज़ हुक्मरान इतना ज़ालिम था कि उसने लोहे के पिंजरे बनवाए जिनके चारों तरफ़ उसने लोहे की कीलें लगवायीं और उसके अंदर जगह इतनी थोड़ी थी कि उसमें एक आदमी सिर्फ़ बैठ सकता था। जब आदमी अंदर बैठता तो उसके चारों तरफ़ कीलें होतीं। उलमए किराम को उन पिंजरों के अंदर बंद करके रेल के डिब्बे में इन पिंजरों को रख दिया गया। इस तरह उनको लाहौर से मुल्तान तक पहुँचाया गया। फ़रमाते हैं कि रेल के डिब्बे को झटके लगते तो हम कभी इधर गिरते, कभी उधर गिरते तो हमारे कभी इस

तरफ़ कीलें चुभतीं और कभी उस तरफ़। जिस्म के चारों तरफ़ कीलों की वजह से ज़ख़्म बन गए जिनसे ख़ून जारी रहता।

तीन महीने के अंदर हमें लाहौर से मुल्तान पहुँचाया गया। कई-कई हफ़्ता ये बोगियाँ खड़ी रहतीं और हमारी परवाह ही न की जाती। हम गर्मी में पसीने की वजह से परेशान होते। कभी गर्मी में प्यास की शिद्दत की वजह से तड़पते और कभी अपने ज़ख़्मों की वजह से परेशान होते। लगाने के लिए मरहम भी कोई नहीं होती थी। और हमें इतनी तकलीफ़ में रखा गया कि हम उसकी हक़ीक़त अलफ़ाज़ में बयान नहीं कर सकते।

तीन महीना इन कीलों वाले पिंजरों में रहकर आख़िर हम मुल्तान पहुँचे। वहाँ हमें अंग्रेज़ ने निकाला और बता दिया गया कि हमारे लिए फांसी का हुक्म हो चुका है। जब हमने फांसी का हुक्म सुना तो हमारे चेहरों पर ताज़गी आ गई कि अलहम्दुलिल्लाह अब मंज़िल क़रीब है।

अगले दिन जब अंग्रेज़ आया तो उसने देखा कि उलमए किराम के चेहरों पर बड़ी ताज़गी और बड़ा इत्मीनान है। उसने पूछा किस वजह से आज तुम्हारे चेहरे बड़े पुरसुकून नज़र आ रहे हैं? एक आलिम ने कहा, इसलिए कि हमारी शहादत का वक़्त क़रीब है। जब उसने यह सुना तो वह सोचने लग गया। चुनाँचे उसने फ़ौरन अपने अफ़सर से राब्ता किया कि इनको फांसी देंगे तो इस पर ये खुशियाँ मना रहे हैं और हम इन उलमा को खुश नहीं देख सकते। चुनाँचे फ़ैसला किया गया कि इनको सारी उम्र के लिए काला पानी के अंदर नज़रबंद किया जाए। चुनाँचे एलान हुआ कि फांसी का फ़ैसला वापस लिया जाता है। इस मौक़े पर

मौलाना जाफ़र थांसेरी रह० ने एक अजीब शे'र लिखा—

मुस्तहिक़े दार को हुक्म नज़रबंदी मिला
क्या कहूँ कैसे रिहाई होते होते रह गई

कि अगर शहादत नसीब हो जाती तो रिहाई हो जाती। सुब्हानअल्लाह शहादत की ख़ातिर कितना तड़पने वाले लोग थे।

जिहाद का जज़्बा ख़त्म करने की नाकाम कोशिश

चुनाँचे अंग्रेज़ ने उलमा को फांसी देने के बाद तीसरा काम यह किया कि इस मुल्क के अंदर कुछ ऐसे फ़िरक़े दीन के नाम पर पैदा किए जिन्होंने फ़तवा दिया कि अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ जिहाद करना हराम है। इस तारीख़ के पसमंज़र में ये सब बातें आपको समझना आसान हो जाएंगी कि अंग्रेज़ का साथ देने वाले कौन थे यानी मीर जाफ़र और मीर सादिक़ कौन थे जिन्हें ज़मीनें अलाट हो गयीं। आपको बड़े-बड़े ज़मींदार मिलेंगे जिनकी तारीख़ अंग्रेज़ों तक मिलेगी। और जो हज़रात क़ुर्बानियाँ देने वाले मिलेंगे उनकी तारीख़ हमारे असलाफ़ के साथ जाकर मिलेगी। चुनाँचे अंग्रेज़ ने इन तीनों बातों पर अमल किया। क़ुरआन मजीद के नुस्ख़े ज़ाए किए, उलमए किराम को शहीद किया और इस उम्मत से जज़्बए जिहाद को ख़त्म करने के लिए जिहाद की हुरमत पर फ़तवे जारी करवाए।

दस हज़ार मदरसे बंद

मुख़्तलिफ़ मदरसे उस वक़्त वक़्फ़ की जाइदाद से चला करते थे। चुनाँचे अंग्रेज़ ने वक़्फ़ की तमाम जाइदादों को अपने क़ब्ज़े में ले लिया और यूँ इस तरह मदरसों की रगे जान को काट दिया

गया। चुनाँचे सिर्फ़ देहली शहर में एक हज़ार मदरसे बंद हो गए। बड़े मदरसों की तादाद दस हज़ार थी जिनको बंद कर दिया गया। हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० के मदरसे पर बुलडोज़र फेर दिया गया और बिल्कुल बराबर कर दिया गया। अंग्रेज़ अपनी तरफ़ से पूरा बंदोबस्त कर चुका था। इसमें उसको कई साल लगे।

दारुलउलूम देवबंद का क़ियाम

1861 ई० में फिर अल्लाह के एक मक़्बूल बंदे हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानूतवी रह० के दिल में यह ख़्याल आया कि मुसलमानों से उनकी दुनिया तो छीन ली गई। यह कोई इतना बड़ा नुक़सान नहीं है लेकिन मुसलमानों से तो अब उनका दीन छीना जा रहा है। यह बहुत बड़ा नुक़सान है। लिहाज़ा उसकी तलाफ़ी की कोई सूरत होनी चाहिए। उनकी ससुराल देवबंद में थी और यह छोटी सी बस्ती थी। चुनाँचे 1867 ई० में उन्होंने इस छोटी सी बस्ती में एक दारुलउलूम की बुनियाद रखी। छोटी बस्ती को इसलिए चुना कि बड़े शहर की सरगर्मियाँ हुकूमत की नज़र में फ़ौरन आ जाती हैं। छोटी बस्ती से काम शुरू करेंगे तो किसी की नज़र में नहीं आएंगे। वाक़ई उनकी बात सच्ची निकली। 1867 ई० में जब उन्होंने यह काम शुरू किया तो 30 मई का दिन था और 15 मुहर्रम की तारीख़ बनती थी जब दारुलउलूम का संगे बुनियाद रखा गया। अनार के एक पेड़ के नीचे एक उस्ताद और शागिर्द, पढ़ाने वाले का नाम मुल्ला महमूद रह० और पढ़ने वाला का नाम महमूद हसन रह०। कोई नहीं जानता था कि यह पहला क़दम जो उठाया गया है आख़िर इसने कितना बड़ा इल्मी मर्कज़

बनना है। हज़ारों नहीं लाखों लोगों के दिलों को इल्मी मआरिफ़ से सैराब करना है।

दारुलउलूम देवबंद का जब संगे बुनियाद रखा जाने लगा तो हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानूतवी रह० ने यह एलान फ़रमा दिया कि मैं आज दारुलउलूम का संगे बुनियाद एक ऐसी हस्ती से रखवाऊँगा जिसने अपनी ज़िंदगी में कबीरा गुनाह तो क्या करना दिल में कभी कबीरा गुनाह करने का पक्का इरादा भी नहीं किया।

शाह हुसैन अहमद रह० का तक़्वा

हज़रत मौलाना असग़र हुसैन कांधलवी रह० के मामू शाह हुसैन अहमद मुन्ने शाह के नाम से मशहूर थे। देखने में उनका क़द छोटा था। लेकिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ उनका क़द बहुत बड़ा था। उनकी ज़िंदगी माली लिहाज़ से बहुत मामूली सी थी। वह घास काटकर बेचा करते थे। और रोज़ाना थोड़े-थोड़े से पैसे बचाते रहते। यहाँ तक कि पूरे साल में इतने पैसे बच जाते कि वह एक बार दारुलउलूम के उस्तादों की दावत करते थे। उस्ताद लोग फ़रमाते थे कि हम सारा साल उनकी दावत के मुन्तज़िर रहते क्योंकि हम जिस दिन उनके घर से खाना खा लेते थे उसके बाद चालीस दिन तक हमारी नमाज़ की हुज़ूरी में इज़ाफ़ा हो जाता था। ऐसे परहेज़गार इंसान ने दारुलउलूम देवबंद का संगे बुनियाद रखा।

आबिद के यक़ीं से रोशन है सादात का सच्चा साफ़ अमल
आँखों ने कहाँ देखा होगा इख़्लास का ऐसा ताजमहल

यह इख़्लास का ऐसा ताजमहल बना दिया कि दुनिया में इसकी कोई मिसाल नहीं मिलती।

ये वे पाकीज़ा हस्तियाँ हैं जिनके हाथों से रखी गई ईंट में इतनी बरकत पैदा हुई कि इस दारुलउलूम को अल्लाह तआला ने ऐसी युनिवर्सिटी बनाया कि आज मश्रिक़ व मग़रिब, शुमाल व जुनूब ग़र्ज़ हर तरफ़ दारुलउलूम का फ़ैज़ नज़र आता है।

दारुलउलूम देवबंद का फ़ैज़

इस आजिज़ को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने चालीस से ज़्यादा मुल्कों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ बख़्शी।। उस जगह भी गए जहाँ छः महीने दिन और छः महीने रात होती है। साइबेरिया में भी गए जहाँ हर तरफ़ यख़ बस्ता हवाएं और बर्फ़ ही बर्फ़ नज़र आई। हमने बर्फ़ पर नमाज़ें भी पढ़ीं। ऐसी जगह भी देखी जिसको दुनिया का आख़िरी किनारा कहते हैं। हुकूमत ने यह बात वहाँ लिखी हुई है। क्योंकि जून के महीने में एक ऐसा दिन आता है जब वहाँ तक़रीबन एक लाख सय्याह (ट्यूरिस्ट) जमा होते हैं। वहाँ पर एक दिलचस्प मंज़र यह होता है कि सूरज डूबने के लिए समुन्दर के पानी के क़रीब आता है और डूबने के बजाए दुबारा उगना शुरू हो जाता है। इसलिए साइंसदान इस जगह को दुनिया का आख़िरी किनारा कहते हैं। अफ़्रीक़ा के जंगल भी देखे और अमरीका की दुनिया भी देखी। लेकिन एक बात अर्ज़ कर दूं कि यह आजिज़ जहाँ भी गया, आबादी थी या जंगल था, पहाड़ों को चोटियाँ थीं या ज़मीन की पस्तियाँ थीं। वहाँ पर दारुलउलूम का कोई न कोई रूहानी बेटा दीन का काम करता नज़र आया। दारुलउलूम देवबंद को इतनी क़बूलियत हासिल हो चुकी है।

जिबाले इल्म

अल्हम्दुलिल्लाह यह क़बूलियत अल्लाह की तरफ़ से है कि दुनिया के कोने-कोने में इस मादरे इल्मी के रूहानी सपूत बैठे हुए दीन का काम कर रहे हैं। बहरहाल उलमए देवबंद ने इलमी काम जो शुरू किया तो यहाँ से निकलने वाले तलबा जिबाले इल्म (इल्म के पहाड़) बन गए। एक-एक तालिबे इल्म ऐसा था जो अपने वक़्त का आफ़ताब और महताब साबित हुआ। यह सिलसिला इस तरह ही चलता रहा यहाँ तक कि हज़रत शेख़ुल हिन्द रह० ने अपने असलाफ़ के इस इल्मी व अमली सिलसिले को जारी रखा। अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ जिहाद की सरगर्मियाँ जारी रखीं।

दारुलउलूम देवबंद बमुक़ाबले अलीगढ़ कालेज

मौलाना ममलूक अली रह० के दो शागिर्द थे। एक का नाम था (मौलाना) क़ासिम नानूतवी रह०। उन्होंने दारुलउलूम की बुनियाद रखी और दूसरे का नाम था अहमद ख़ान जो सरसैय्यद अहमद ख़ाँ के नाम से मशहूर हुआ। बाद में उसने एक कालेज की बुनियाद रखी। अलीगढ़ में उसी ने अंग्रेज़ी ज़बान सिखाने को ज़्यादा तरजीह दी जबकि दारुलउलूम में सिर्फ़ दीनी उलूम पढ़ाने को ज़्यादा तरजीह दी गई। तो ये दोनों बड़ी दर्सगाहें उस वक़्त थीं। अलीगढ़ ने कलर्क पैदा किए लेकिन देवबंद ने मुहद्दिसीन व मुफ़स्सिरीन पैदा किए और मिंबर और मेहराब को सलामत रखा।

शेख़ुलहिन्द रह० की अलीगढ़ आमद

1920 ई० में शेख़ुल हिन्द रह० अलीगढ़ तशरीफ़ ले गए तो आपने वहाँ जाकर अपने असलाफ़ की इस तारीख़ को बयान

किया। इसको सुनकर अलीगढ़ के तलबा में दीन का दर्द पैदा हुआ और उसके बाद वहाँ मौलाना मुहम्मद अली जौहर रह०, मौलाना शौकत अली और शिबली नोमानी रह० जैसी हस्तियाँ पैदा हुईं। ये असल में शेखुल हिन्द रह० का वह जज़्बा जिहाद था जिसने तलबा के दिलों को इश्क़ की आग से भर दिया था। जब आपने तक़रीर कर ली तो कुछ तालिब इल्मों ने एक सवाल पूछा कि आप अंग्रेज़ के साथ सुलह क्यों नहीं कर लेते? हज़रत शेखुल हिन्द रह० ने इस मौक़े पर अजीब शे'र पढ़ा–

हाय ये सिर्फ़ तमन्ना की ज़बान से दूरियाँ
इस क़द्र ये सख़्तियाँ दुश्वारियाँ मजबूरियाँ

यादे अय्यामे जफ़ा आख़िर भुलाएं किस तरह
दिल फ़िरंगी से लगाएं तो लगाएं किस तरह

उसके बाद उन तलबा को पता चला कि हमारे रास्ते जुदा हैं। हमारा एक दूसरे के साथ इकठ्ठा होना मुश्किल है। उनका दीन और है और हमारा दीन और है।

हज़रत मौलाना क़ासिम नानूतवी रह० का इल्मी फ़ैज़

दारुलउलूम देवबंद में हज़रत मौलाना क़ासिम नानूतवी रह० की जलीलुक़द्र हस्ती का इल्मी फ़ैज़ बहुत ज़्यादा था। शाहजहाँपुर में एक बहस हुआ करती थी जिसमें हिन्दू और ईसाई सब मज़हबों के लोग आते थे। हज़रत ने वहाँ जाकर इस्लाम के उनवान पर बयान किया। यहाँ तक कि ग़ैर-मुस्लिमों को लाजवाब कर दिया। आजकल मुबाहिसा शाहजहाँपूर के नाम से बाज़ारों में छोटा सा पम्फ़लेट मिलता है। अल्लाह तआला ने फ़लसफ़ा और मंतिक़ का

वह इल्म दिया था कि कोई उनके सामने ठहर नहीं सकता था।

शोरिश कश्मीरी रह० का इज़्हारे अक़ीदत

शोरिश ने हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानूतवी रह० के बारे में लिखा है—

शाफ़ेअ कौन ओ मकाँ की राह दिखलाता रहा
गुमराहाने शिर्क को तौहीद सिखलाता रहा

इस सदी में अस्रे हाज़िर का फ़क़ीह बेमिसाल
सुन्नते ख़ैरुल वरा के ज़मज़मे गाता रहा

परचमे इस्लाम अबरे दरख़शाँ के रूप में
बुतकदों की चार दीवारी पे लहराता रहा

मौलाना क़ासिम नानूतवी रह० और इश्क़े रसूल

दिल में इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस क़द्र था कि उनका नातिया कलाम पढ़ते हैं तो हैरान हो जाते हैं। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम की शान में अजीब अश'आर लिखते हैं—

सबसे पहले मशीयत के अनवार से
नक़्श रूए मुहम्मद बनाया गया

फिर उसी नूर से मांग कर रोशनी
बज़्म कौनो मकाँ को सजाया गया

वो मुहम्मद भी अहमद भी महमूद भी
हुस्ने फ़ितरत का शाहिद भी मशहूद भी

इल्म ओ हिकमत में वो ग़ैर महदूद भी
ज़ाहिरन उम्मियों में उठाया गया

नबी अलैहिस्सलाम की शान में अजीब अश'आर कहा करते थे। हज पर हाज़िर हुए तो उन्होंने अपने जूते उतार दिए। नाज़ुक बदन थे किसी ने कहा, हज़रत आपके पाँव ज़ख़्मी हो जाएंगे। फ़रमाया, हाँ मैंने जूते इसलिए उतार दिए हैं कि ऐसा न हो कि जिस जगह पर मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक क़दम लगे हों क़ासिम नानूतवी का जूतों वाला पाँव ऐन उसी जगह पर पड़ जाए। चुनाँचे फ़रमाते हैं–

उम्मीदें लाखों हैं लेकिन बड़ी उम्मीद है यह
के हो सुगाने मदीना में मेरा नाम शुमार

जियूँ तो साथ सुगाने हरम के तेरे फिरूं
मरूं तो खाएं मदीना के मुझ को मुर्ग़ ओ मार

सुब्हानअल्लाह इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उन का दिल भरा हुआ था।

एक बार रौज़ए अनवर तशरीफ़ ले गए तो वहाँ जाकर अजीब शे'र कहे–

दमकता रहे तेरे रौज़े का मंज़र
चमकती रहे तेरे रौज़े की जाली

हमें भी अता हो वो जज़्बए अबूज़र
हमें भी अता हो वो रूहे बिलाली

एक बार आपको हुजूरे मुबारक के अंदर जाने का मौक़ा मिला। जब हुजरे मुबारक के अंदर गए तो वापसी पर आपके ऊपर एक अजीब कैफ़ियत थी। लोगों ने देखा कि बड़ा पुरनूर चेहरा और अजीब कैफ़ियत है तो किसी शागिर्द ने पूछा कि हज़रत! अंदर कैफ़ियत क्या थी? तो हज़रत ने अश'आर में जवाब

दे दिया, फ़रमाया–

मेरे आक़ा का मुझ पर तो इतना करम था
भर दिया मेरा दामन फैलाने से पहले
यह इतने करम का अजब सिलसिला था
नशा रंग लाया पिलाने से पहले

जब मदीना तैय्यबा से वापस होने लगे और आख़िरी वक़्त आपने रौज़ए अनवर पर नज़र डाली तो उस वक़्त आपने यह शे'र पढ़ा–

हज़ारों बार तुझ पर ऐ मदीना मैं फ़िदा होता
जो बस चलता तो मरकर भी न मैं तुझसे जुदा होता

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत उनके दिल में समाई हुई थी।

इत्तिबाए सुन्नत

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की इस मुहब्बत की वजह से एक एक सुन्नत पर उनका अमल था। एक बार हज़रत नानूतवी रह० की गिरफ़्तारी के वारन्ट जारी कर दिए गए। जब पता चला तो आप रुपोश हो गए। रुपोश होने के पूरे तीन दिन बाद आप बाहर निकल आए। किसी ने कहा हज़रत! अंग्रेज़ आपको ढूंढ रहा है और आपकी गिरफ़्तारी के वारन्ट जारी हैं। आपने फ़रमाया, मैंने अपने आक़ा की ज़िन्दगी पर ग़ौर किया, मुझे ग़ारे सौर में रुपोशी के तीन दिन नज़र आते हैं। लिहाज़ा मैं भी तीन दिन ग़ायब रहा, इसके बाद बाहर निकल आया हूँ। अंग्रेज़ अगर पकड़ लेंगे तो मैं अपनी जान का नज़राना अल्लाह के सिपुर्द कर

जाऊँगा। सुन्नत का इतना लिहाज़ और ख़्याल रखा करते थे।

मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० और इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० इस दारुलउलूम देवबंद के दूसरे सपूत थे। अपने वक़्त के बेमिसाल फ़क़ीह थे। फ़तावा रशीदिया अक्सर उलमा की नज़रों से गुज़रता रहता है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको क़ुतबुल इर्शाद बना दिया। चालीस साल तक हदीस पाक का दर्स दिया और इतनी मुहब्बत के साथ दिया कि एक बार तलबा को हदीस पाक पढ़ा रहे थे कि अचानक बारिश शुरू हो गई। तलबा ने फ़ौरन अपनी किताबें बग़ल में दबायीं और अपने कमरों की तरफ़ भागे। उनके जूते वहीं रह गए। हज़रत रह० ने अपने रूमाल को वहीं बिछाया और उन तलबा के जूते उस रूमाल के अंदर रखे। गठरी बनाई और अपने सर पर रखकर कमरे में ले आए। जब तलबा ने देखा तो उनकी चीख़ें निकल गयीं। कहने लगे, हज़रत! आप हमारे जूते उठाकर ले आए, हम ख़ुद उठा लेते। आपने बड़ी सादगी से जवाब दिया कि जो लोग क़ालल्लाहु और क़ालर्रसूल पढ़ते हैं उनके जूते नहीं उठाउँगा तो फिर और क्या करूंगा। अंदाज़ा लगाइए कि इन हज़रात को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कैसी मुहब्बत थी।

किसी ने मस्जिदे नबवी से थोड़ी सी मिट्टी लाकर दी और कहा कि हुजरे की सफ़ाई करते हुए यह मिट्टी लेकर आया हूँ तो आपने उसको अपनी सुर्मे की शीशी में डाल दिया। फ़रमाया,

अच्छा अगर यह रौज़े अनवर की मिट्टी है तो हम इसे अपनी आँखों का सुर्मा बना लेंगे।

आप रह० को एक बार मदीना तैय्यबा की खजूरें मिलीं। आपने शागिर्द से कहा कि मेरे जितने दोस्त हैं उनकी फ़हरिस्त बनाओ और खजूरों के उतने हिस्से करो ताकि सबको हदिया भेजें। उसने कहा, हज़रत! यह खजूर का टुकड़ा तो बहुत छोटा है। फ़रमाया, अगर शरीअत में इजाज़त होती तो मैं तुझसे बोलना छोड़ देता। इसलिए कि मदीना की खजूर के टुकड़े को तूने छोटा कह दिया। यह छोटे का लफ़्ज़ इस्तेमाल क्यों किया। इतनी मुहब्बत थी। चुनाँचे जब खजूर खा लेते तो गुठली को पीसकर उसका बुरादा मुँह में लेकर ऊपर से पानी पी लिया करते थे ताकि वह भी बदन का हिस्सा बन जाए।

हज़रत शेखुलहिन्द रह० और ख़ौफ़े ख़ुदा

हज़रत शेखुलहिंद रह० दारुलउलूम देवबंद के सपूत थे जिन्होंने अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ आज़ादी हासिल करने के लिए बहुत नुमाया काम किया। उनके बारे में शोरिश कश्मीरी लिखते हैं–

गर्दिशे दौरां की संगीनी से टकराता रहा
माल्टा में नग़मए महर ओ वफ़ा गाता रहा

माल्टा में आपको क़ैद कर दिया गया, बेड़ियों में क़ैद रहे। उनके कुछ और शागिर्द हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह०, हज़रत मौलाना अज़ीज़ गुल वग़ैरह भी साथ थे। अंग्रेज़ ने उन पर बहुत सख़्तियाँ कीं मगर ये अपनी बात पर डटे रहे।

एक अजीब वाक़िआ किताबों में पढ़ा है कि जब अंग्रेज़ ने यह

फ़ैसला कर दिया कि उनको फांसी दे दी जाए तो यह इत्तिला मिलने के बाद हज़रत शेख़ुल हिंद रह० पर बहुत गिरया तारी रहता था। आपने बहुत ज़्यादा रोना शुरू कर दिया। आपके शागिर्द हैरान होते कि हमें फांसी का हुक्म हो गया तो यह ख़ुशी की बात है लेकिन जब अपने शेख़ को देखते तो वह ख़ूब कसरत के साथ रोते और रोना-धोना सुबह व शाम करते नज़र आते हैं। दिल इतना नरम हो चुका था कि ज़रा ज़रा सी बात पर रोने लग जाते यहाँ तक कि हज़रत मौलाना मदनी रह० और हज़रत मौलाना अज़ीज़गुल रह० ने दिल में सोचा कि हम किसी वक़्त हज़रत की ख़िदमत में अर्ज़ करेंगे कि हज़रत इतना रोने की क्या वजह है? अगर फांसी का हुक्म आ चुका है तो यह ख़ुशी की बात है, इसमें घबराने की कोई बात नहीं।

लिहाज़ा एक मौके पर खाने से पहले उन्होंने अर्ज़ किया कि हज़रत! आप आजकल बहुत ज़्यादा रोते हैं, आपके ऊपर बहुत ज़्यादा गिरया तारी होता है, आख़िर क्या वजह है? फांसी का हुक्म हो चुका है तो यह ख़ुशी की बात है। अल्लाह तआला हमारी जान को अपने रास्ते में क़बूल कर लेंगे यह तो कोई ऐसी रोने वाली बात नहीं है। जब उन्होंने यह बात कही तो हज़रत शेख़ुल हिंद रह० ने उस वक़्त उनको ज़रा रौब भरी नज़रों से देखा। कहते हैं कि हमारे तो उस वक़्त पसीने छूट गए कि हज़रत इतने जलाल से हमें देख रहे हैं और फिर उसके बाद फ़रमाया कि तुम क्या समझते हो कि मैं मौत के ख़ौफ़ से या फांसी के ख़ौफ़ से रोता हूँ, नहीं बल्कि मेरे ज़हन में कोई और बात है। उन्होंने अर्ज़ किया, हज़रत! फिर कुछ हमें भी बता दीजिए। हज़रत ने फ़रमाया, मेरे दिल में यह बात आ गई कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त

बेनियाज़ हैं। मैं उसकी शाने बेनियाज़ी की वजह से रोता हूँ, इसलिए कि कभी-कभी वह बंदे से जान भी लिया करता है और उसकी जान को क़बूल भी नहीं किया करता। मैं तो इसलिए रोता हूँ कि ऐ अल्लाह! अगर तूने जान लेने का फ़ैसला कर लिया है तो मेरे मौला! उसको क़बूल भी फ़रमा लेना।

हकीम अजमल ख़ान आपके मुरीदों में से था। आप बीमार थे और उसके हाँ इलाज के लिए आए हुए थे। वहीं सन् 1920 ई० में आपकी वफ़ात हुई और वहीं से जनाज़ा उठाया गया। जब आपको ग़ुस्ल दिया जाने लगा तो ग़ुस्ल देने वाले ने देखा कि आपकी पीठ के ऊपर गहरे ज़ख़्म के निशान मौजूद हैं। ऐसी पीठ कभी नहीं देखी थी। लोग परेशान थे कि आख़िर यह बात क्या थी कि आपकी पीठ पर इतने गहरे निशान हैं।

हज़रत मदनी रह० उस वक़्त कलकत्ता में थे। वह भी वफ़ात की ख़बर सुनकर वहाँ पहुँचे। जब उनसे पूछा गया तो हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० ने उस वक़्त राज़ खोला और कहा कि असल में माल्टा में उनको आग के अंगारों पर लिटाया जाता और अंग्रेज़ कहता कि तुम हमारे साथ वफ़ादारी का अहद करो और हमारे हक़ में फ़तवा दो वरना हम तुम्हें आग के अंगारों पर लिटाए रखेंगे। हज़रत के ख़ून से आग के अंगारे बुझते। इतनी तकलीफ़ उठाते मगर अंग्रेज़ से कहते रहते, अंग्रेज़! मैं कभी तेरे हक़ में फ़तवा नहीं दे सकता। अरे मैं बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु का वारिस हूँ, जिनको रेत के ऊपर लिटाया जाता था और सीने पर चट्टाने रख दी जाती थीं, मैं तो ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु का वारिस हूँ जिनकी कमर के ऊपर ज़ख़्मों के निशानात थे, मैं तो इमाम मालिक रह० का वारिस हूँ जिनके चेहरे पर स्याही मलकर उनको

मदीना भर में फिराया गया था, मैं तो इमाम अबूहनीफ़ा रह० का वारिस हूँ जिनका जनाज़ा जेल से निकला था, मैं तो इमाम अहमद बिन हंबल रह० का वारिस हूँ जिनको सत्तर कोड़े लगाए गए थे, मैं इल्मी वारिस हूँ हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० का, मैं रूहानी बेटा हूँ शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० का, भला मैं तुम्हारी बात कैसे क़बूल कर सकता हूँ। लिहाज़ा सब तकलीफ़ों को बर्दाश्त कर लेते थे मगर ज़बान से अंग्रेज़ के हक़ में कोई बात नहीं कहते थे। ये उनकी क़ुर्बानियाँ थीं। आख़िर अंग्रेज़ को पीछे हटना पड़ा। अंग्रेज़ ने पहले फ़ैसला किया था कि उनको फांसी पर लटका दिया जाए। आख़िर उसने फ़ैसला किया कि फांसी नहीं देते, चलो छोड़ देते हैं। लिहाज़ा अंग्रेज़ को फ़ैसला बदलना पड़ा। अल्लाह तआला ने उनके अज़्म व इस्तिक़ामत की वजह से उनको कामयाबी अता फ़रमा दी। कितनी अजीब बात कही–

हालात के क़दमों में क़लंदर नहीं गिरता
टूटे जो सितारा तो ज़मीं पर नहीं गिरता

गिरते हैं समन्दर में बड़े शौक़ से दरिया
लेकिन किसी दरिया में समन्दर नहीं गिरता

आप तो समन्दर थे भला दरिया में कैसे गिर सकते थे। आपके इस अज़्म व इस्तिक़ामत को सलाम करना चाहिए। इस वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने आपको यह अज़मत अता फ़रमाई कि अल्लाह का शुक्र है कि आपका इल्मी फ़ैज़ भी ख़ूब फैला।

मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० का इल्मी मक़ाम

हज़रत अक़्दस थानवी रह० भी इस मादरे इल्मी के फ़रज़न्द

अरजुमंद थे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको इल्म का वह मक़ाम अता फ़रमा दिया था कि एक ही वक़्त में मुफ़स्सिर भी थे, फ़क़ीह भी थे और सूफ़ी भी थे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने दीन के हर शोबे में उनको बुलन्द मक़ाम अता फ़रमा दिया था। तालिब इल्मी के ज़माने से जौहर नज़र आ रहे थे। चुनाँचे फ़ारिग़ हुए तो दारुलउलूम की इंतिज़ामिया ने फ़ैसला किया कि इन तलबा की दस्तारबंदी की जाए। आप अपने कुछ तलबा साथियों को साथ लेकर हज़रत शेखुल हिन्द रह० के पास गए और कहने लगे कि हज़रत हम एक फ़रियाद लेकर आए हैं। आप उसे पूरा कर दीजिए। पूछा, कौन सी बात है? अर्ज़ करने लगे कि हज़रत! हमने किताबें तो पूरी कर लीं, हमें मालूम हुआ है कि मदरसे की इंतिज़ामिया हमारी दस्तारबंदी करवाना चाहती है। हम इसलिए हाज़िर हुए हैं कि हम इस क़ाबिल नहीं, अगर हमारी दस्तारबंदी करवा दी गई तो दारुलउलूम की बदनामी हो जाएगी कि ऐसे नालायक़ तलबा की दस्तारबंदी करवा दी है। आप मेहरबानी फ़रमाइए और दस्तारबंदी न करवाइए। जब उन्होंने यह बात कही तो शेखुल हिन्द रह० को जलाल आ गया। फ़रमाया, अशरफ़ अली! तुम अपने उस्तादों के सामने रहते हो इसलिए तुम्हें अपना आप नज़र नहीं आता। जब हम नहीं होंगे तो फिर तुम ही तुम होगे। और वाक़ई वही हुआ कि जब ये उस्ताद फ़ौत हो गए तो फिर हज़रत थानवी रह० के उलूम का डंका बजा करता था। सुब्हानअल्लाह थानाभवन की ख़ानक़ाह इस्लाह के लिए अपनी मिसाल आप थी।

किताबों की तादाद

एक साहब ने हज़रत थानवी रह० की शख़्सियत के ऊपर

पीएचडी की। उसने हज़रत थानवी रह० की 2800 किताबों की फ़हरिस्त बनाई जिन्हें आपने अपनी ज़िंदगी में खुद लिखा या हिदायत देकर अपने शागिर्दों से लिखवायीं।

हज़रत कश्मीरी रह० का बेमिसाल हाफ़िज़ा

हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० के बारे में तो आप जानते हैं कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको वह क़ुव्वते हाफ़िज़ा अता की थी कि उसकी मिसाल क़रीब के दौर में कहीं नहीं मिलती। मिर्ज़ाइयों ने बहावलपूर में जब अंग्रेज़ की अदालत के अंदर मुक़दमा लड़ा। उस वक़्त उन्होंने एक तहरीर पेश की जिसकी तहरीर को पढ़कर यही महसूस होता था कि उनकी बात सच्ची है। अंग्रेज़ जज ने हज़रत कश्मीरी रह० से कहा यह तो जो बात कर रहे हैं उसकी दलील भी दे रहे हैं। तो हज़रत ने फ़रमाया, ज़रा यह किताब मुझे दिखा दें। आपने किताब देखी और फ़रमाया कि ये लोग धोका देना चाहते हैं। मैं धोके में आने वाला नहीं हूँ। मैंने आज से सत्ताइस साल पहले यह किताब देखी थी और मुझे इबारत आज भी याद है। इन्होंने बीच से एक लाइन को ग़ायब कर दिया है, लिहाज़ा दूसरा नुस्ख़ा मंगाया जाए। चुनाँचे दूसरा नुस्ख़ा मंगावाया तो उसमें वह लाइन वाक़ई मौजूद थी जिससे मतलब मुसलमानों के हक़ में आता था और उन मिर्ज़ाइयों की धोका दही बेनक़ाब हो गई। लोग हैरान हुए कि सत्ताइस साल पहले देखी हुई किताब का मतन इस वक़्त तक ज़बानी याद था। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने बेमिसाल क़ुव्वते हाफ़िज़ा उनको अता फ़रमाई थी।

हिन्दुओं का इस्लाम क़बूल करना

कुछ हिन्दू आपके हाथ पर मुसलमान हो गए। लोगों ने हिन्दुओं से कहा कि तुम मुसलमान क्यों हो गए तो उन्होंने अनवर शाह कश्मीरी रह० की तरफ़ इशारा किया कि यह चेहरा झूठे इंसान का नहीं हो सकता। हमने यह चेहरा देखकर इस्लाम क़बूल कर लिया है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ऐसा कमाल अता किया था।

हज़रत मदनी रह० और इश्के रसूल

हज़रत हुसैन अहमद मदनी रह० के दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इश्के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ूब भर दिया था। उनके हालात ज़िंदगी में लिखा है कि ज़िलहिज्जा के जब पहले दस दिन आते तो उनकी तबीयत के अंदर बेक़रारी आती। चुनाँचे ज़िलहिज्जा के दस दिनों में जिस्म यहाँ होता मगर दिल वहाँ होता। सारा दिन वहीं के बारे में सोचते रहते। यहाँ तक कि दस्तरख़्वान पर रोटी खाने बैठते तो कभी-कभी रोटी खाते उठ जाते और खड़े होकर कहते, मालूम नहीं उश्शाक़ क्या कर रहे होंगे। कोई ग़िलाफ़े काबा पकड़कर दुआएं मांग रहा होगा। कोई मक़ामे इब्राहीम पर सज्दा रेज़ होगा। तो आप उनका तसव्वुर ज़हन में लाकर कहते मालूम नहीं आशिक़ लोग क्या कर रहे होंगे। इस तरह आपको खाना अच्छा न लगता, कभी आसमान की तरफ़ देखकर कहते, मालूम नहीं आशिक़ लोग क्या कर रहे होंगे।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को यह बात पसन्द आई तो अल्लाह तआला ने हरमैन शरीफ़ैन का दरवाज़ा उनके लिए खोल दिया। एक बार आप मदीना तैय्यबा तशरीफ़ ले गए। आप हिन्दुस्तान के

उन बरगुज़ीदा उलमा में से हैं जिनको अठ्ठारह साल मस्जिदे नबवी में दर्से हदीस देने की तौफ़ीक़ नसीब हुई। सुब्हानअल्लाह वहाँ हदीस पढ़ाते हुए, गुंबदे ख़िज़रा की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया करते थे, "क़ाला हाज़न्नबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।"

जुरअत हो तो ऐसी

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने दिल में जुरअत इतनी दी थी कि जब वीना हाल कराची में अंग्रेज़ ने उनको अदालत के अंदर हाज़िर किया तो अंग्रेज़ ने कहा, हुसैन अहमद! तुम्हें पता है कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ फ़तवा दिया है, इसका नतीजा क्या है? आपने फ़रमाया, "हाँ मुझे पता है।" उसने कहा, क्या पता है? आपने अपने कंधे की सफ़ेद चादर उसे दिखा दी। अंग्रेज़ ने कहा, यह क्या है? फ़रमाया, "यह मेरा कफ़न है जो मैं अपने कंधे पर लिए फिरता हूँ। ज़्यादा से ज़्यादा यह होगा कि मेरी मौत का हुक्म सादिर हो जाएगा। मुझे फाँसी चढ़ा दी जाएगी तो मुझे किसी से अपना कफ़न मांगने की भी ज़रूरत नहीं होगी।"

फ़ना फ़िल्लाह की तह में बक़ा का राज़ मुज़मर है
जिसे मरना नहीं आता उसे जीना नहीं आता

ये वे लोग थे जिन्होंने नबियों के वारिस होने का हक़ अदा कर दिया।

मुतक़द्दिमीन (पिछलों) का क़ाफ़िला

उलमाए देवबंद के बारे में शाह जी रह० फ़रमाया करते थे–

"सहाबा किराम का क़ाफ़िला जा रहा था, उनमें से चंद रूहों को अल्लाह तआला ने पीछे रोक लिया। ये वही रूहें थीं

जिनको इस दौर के अंदर पैदा कर दिया ताकि बाद में आने वाले मुताख़्ख़िरीन मुतक़द्दिमीन की ज़िंदगी के नमूने अपनी आँखों से देख लें।"

और वाक़ई उनकी इत्तिबाए सुन्नत देखें, उनके तक़्वे को देखें तो यही नज़र आता है कि सर के बालों से लेकर पाँव के नाख़ूनों तक ये हज़रात नबी अलैहिस्सलाम की सुन्नतों से सजे हुए थे।

अल्लाह तआला की तरफ़ से चुनाव

यह कोई इत्तिफ़ाक़ी बात नहीं थी बल्कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से चुनाव मालूम होता है। देखिए एक रिवायत में आता है कि हर सदी के आख़िर पर अल्लाह तआला एक बंदे को पैदा फ़रमाता है जो मुजद्दिद होता है जो दीन की तजदीद (ताज़ा करने) का काम करता है। जो शिर्क व बिदआत व रस्मों को ख़त्म कर देता है और नबी अलैहिस्सलाम की सुन्नतों को दुबारा ज़िंदा कर देता है तो सौ साल के बारे में हदीस पाक में भी ज़िक्र है। उलमाए देवबंद चुने हुए लोग थे। अगर उनकी ज़िंदगियों का जाइज़ा लें तो उनकी ज़िंदगियों में अजीब तनासुब (बैलेन्स) नज़र आता है। आपके सामने दो तीन मिसालें बयान की जाती हैं।

आप ज़रा ग़ौर कीजिएगा कि शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० की वफ़ात 1239 हि० में हुई और शेख़ुल हिन्द रह० की वफ़ात 1337 हि० में हुई। तक़रीबन सौ साल का फ़र्क़ है। शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० भी मुजाहिद थे, शेख़ुल हिन्द रह० भी मुजाहिद थे। शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० ने अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ जिहाद का फ़तवा दिया था। और शेख़ुलहिंद रह० ने उस फ़तवे के ऊपर अमल करके दिखा दिया था। तक़रीबन एक सौ साल के बाद उनकी वफ़ात हो

रही है। सौ साल का वक़्फ़ा इत्तिफ़ाक़ी बात नहीं थी बल्कि यह क़ुदरत का चुनाव नज़र आता है।

हज़रत मौलाना ख़लील अहमद सहारनपुरी रह० की वफ़ात 1346 हि० में हुई और शाह इस्माईल साहब रह० की वफ़ात 1246 हि० में हुई। हज़रत मौलाना ख़लील अहमद रह० ने शिर्क व बिदअत को ख़त्म किया तो शाह इस्माईल रह० ने "तक़्वियतुल ईमान" लिखकर शिर्क की जड़ें काट कर रख दीं। मौलाना ख़लील अहमद सहारनपूरी रह० ने भी बिदअत का सफ़ाया किया। इन दोनों की वफ़ात में भी सौ साल का फ़र्क़ बनता है।

अल्लामा शामी रह० की वफ़ात 1252 हि० में हुई तो अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० की वफ़ात 1352 हि० में हुई। अल्लामा शामी रह० भी इल्म के समुन्दर थे और हज़रत कश्मीरी रह० भी इल्म के समुन्दर थे। यूँ लगता था कि अल्लाह तआला का एक चुनाव है। एक बंदा जब दुनिया से रुख़्सत होता था अल्लाह तआला दूसरे बंदे को पैदा फ़रमा देते थे। और आइन्दा आने वाले सौ साल में वह बंदा काम करता था।

अल्लाह तआला ने उलमाए अहले सुन्नत देवबंद से दीन का काम लिया तो हमारा उनके साथ रूहानी इल्मी ताल्लुक़ है। अल्लाह का शुक्र है आज उन हज़रात के इल्मी फ़रज़ंद मौजूद हैं। जिन हज़रात ने नबी अलैहिस्सलाम की एक-एक सुन्नत पर अमल किया और उन्होंने दीन के परचम लहरा दिए। अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ जिहाद किया जिसकी वजह से आज हम आज़ादी का सांस ले रहे हैं। हमारा इल्मी रिश्ता उनसे लेकर नबी अलैहिस्सलाम तक पहुँचता है।

हम टपके के आम नहीं

हम कोई टपके के आम नहीं हैं। आपने ये अलफ़ाज़ पहले भी सुने होंगे कि आम का बाग़ होता है तो उसमें मुख़्तलिफ़ नस्ल के आम होते हैं। बाग़ का माली जिस पेड़ से वह आम तोड़ता है तो वह टोकरी में डालकर नाम लिख देता है कि ये फ़लाँ नस्ल के आम हैं। चुनाँचे मंडी में आकर आम नस्ल के नाम से बिकते हैं। नाम से बिकने की वजह से उनकी क़ीमत ज़्यादा लगती है। लेकिन कुछ आम ऐसे होते हैं कि जिनको परिन्दे ख़ुद तोड़कर फेंक देते हैं। वे बहुत सारे आपस में मिल जाते हैं तो उनका कोई पता नहीं चलता कि ये किस नस्ल के हैं। उनको बाग़ वाला आदमी टोकरी में भर देता है और लिख देता है कि ये टपके के आम हैं। मुझे इनकी नस्ल का पता नहीं है। टपके के आम ख़रीदने के लिए कोई तैयार नहीं होता।

मुक़द्दस इल्मी रिश्ता

हम रात के अंधेरे में नहीं बल्कि दिन की रोशनी में कहते हैं कि हम टपके के आम नहीं बल्कि हमारा इल्मी रिश्ता नबी अलैहिस्सलाम तक पहुँचता है। उलमाए देवबंद को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जो इल्मी कमालात अता किए अल्लाह का शुक्र है उन इल्मी कमालात का रिश्ता नबी अलैहिस्सलाम तक पहुँचता है। उलमए देवबंद के असल इमाम हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानूतवी रह० थे।

- हज़रत मौलाना क़ासिम साहब रह० ने दीन सीखा हज़रत शाह अब्दुलग़नी रह० से,

- हज़रत शाह अब्दुलग़नी रह० ने दीन सीखा हज़रत मौलाना शाह इस्हाक़ रह० से,
- हज़रत शाह इस्हाक़ साहब रह० ने दीन सीखा शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब रह० से,
- हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० ने दीन सीखा हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० से,
- हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० ने दीन सीखा अबूताहिर मदनी रह० से,
- हज़रत शेख़ अबूताहिर मदनी रह० ने दीन सीखा हज़रत हिसामुद्दीन रह० से,
- हज़रत हिसामुद्दीन रह० ने दीन सीखा हज़रत रबीअ बिन सअद रह० से,
- हज़रत रबीअ बिन सअद रह० ने दीन सीखा हज़रत अबूइस्हाक़ मदनी रह० से,
- हज़रत अबूइस्हाक़ मदनी रह० ने दीन सीखा इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी रह० से,
- हज़रत इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी रह० ने दीन सीखा इमाम मुहद्दिस याह्या बिन मईन रह० से,
- हज़रत इमाम याह्या बिन मईन रह० ने दीन सीखा इमाम अबूयूसुफ़ रह० से,
- हज़रत इमाम अबूयूसुफ़ रह० ने दीन सीखा इमाम आज़म अबूहनीफ़ा रह० से,
- हज़रत इमाम अबूहनीफ़ा रह० ने दीन सीखा इमाम हम्माद रह० से,

- हज़रत इमाम हम्माद रह० ने दीन सीखा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से,
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने दीन सीखा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से।

अल्हम्दुलिल्लाह सुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह कि हमारी यह इल्मी और रूहानी निस्बत नबी अलैहिस्सलाम के साथ जाकर मिलती है।

ज़िक्र की बुनियादी वजह

हज़रत थानवी रह० फ़रमाते थे कि ज़िक्र का बुनियादी मक़सद यह होता है कि इंसान के रग व रेशे से गुनाहों का खोट निकल जाए। जो अज़्कार बताए जाते हैं और नफ़्स के तज़्किए की जो मेहनत करवाई जाती है उसका बुनियादी मक़सद यही है कि इस ज़िक्र करने से अंदर ऐसी कैफ़ियत आ जाती है कि दिल मुनव्वर हो जाता है। फिर अल्लाह तआला उलूम मआरिफ़ की बारिशें कर दिया करते हैं।

उलूम व मआरिफ़ की बारिश

हज़रत थानवी रह० अपने बारे में ख़ुद फ़रमाते हैं कि हम शेख़ुलहिन्द रह० से जलालैन पढ़ा करते थे और मैं तकरार के वक़्त तलबा का मानीटर था। मेरे ज़िम्मे तकरार होती थी। एक दफ़ा तकरार करते हुए एक इश्काल वारिद हुआ जो हल नहीं होता था। सब तलबा ने सोचा मगर किसी के ज़हन में जवाब नहीं आया। आख़िर तलबा ने कहा कि तुम चूँकि ज़िम्मेदार हो इसलिए कल दर्स से पहले हज़रत से इसका जवाब पूछ लें। मैंने कहा बहुत अच्छा। अगले दिन मैंने जलालैन शरीफ़ अपनी बग़ल

में ली और फ़ज्र की नमाज़ के लिए मस्जिद में आ गया।

सर्दी का मौसम था, मैंने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ते ही हज़रत शेखुल हिन्द रह० के क़रीब जाने की कोशिश की। मस्जिद के साथ उनका हुजरा था। मेरे जाने से पहले वह हुजरे में तशरीफ़ ले गए और दरवाज़े की कुंडी बंद कर ली। मैं देर से पहुँचा। मैंने दिल में सोचा कि अशरफ़ अली! तुझे अपने नफ़्स को सज़ा देनी चाहिए कि निकलने में देर क्यों की। चुनाँचे सर्दी के मौसम में दरवाज़े के बाहर खड़ा हो गया कि जब हज़रत इशराक़ पढ़कर निकलेंगे तो मैं हज़रत से उनका जवाब पूछ लूंगा। फ़रमाते हैं कि मैं सर्दी में ठिठुर रहा था लेकिन ज़रा कान जो लगाए तो अंदर हज़रत बैठे "ला इलाहा" का ज़िक्र कर रहे थे। फ़रमाया, ज़िक्र तो हज़रत कर रहे थे लेकिन सुनकर मज़ा मुझे आ रहा था। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको वह ज़ौक़ अता किया था कि "ला इलाहा इल्लल्लाह की ज़बाँ से सुनने वालों को वज्द आ जाता था।

हज़रत ने इशराक़ पढ़ी तो उसके बाद दरवाज़ा खोला। मैं हैरान हुआ कि सर्दी के मौसम में शेखुलहिन्द रह० की पेशानी पर पसीने के क़तरे थे। ज़िक्र की हरारत पेशानी पर पसीने की शक्ल में ज़ाहिर हो रही थी। मुझे देखकर फ़रमाया, अशरफ़ अली तुम यहाँ कैसे खड़े हो? मैंने कहा, हज़रत एक बात पूछनी है। मैंने किताब खोल दी। हज़रत ने देखा तो उसके बारे में तक़रीर फ़रमानी शुरू कर दी। कहते हैं कि हज़रत फ़रमाते रहे। अलफ़ाज़ भी मेरे लिए अनजाने थे और मानी भी कुछ समझ में नहीं आ रहे थे। हज़रत ने तक़रीर फ़रमाकर कहा, अशरफ़ अली! तुम समझ गए हो। मैंने कहा, हज़रत कुछ समझ नहीं आई। मैंने दिल में कहा, हज़रत कुछ

नुज़ूल फ़रमाइए ताकि मुझे भी बात समझ में आ सके। हज़रत ने दुबारा तक़रीर करनी शुरू कर दी। दुबारा जब तक़रीर की तो अल्फ़ाज़ तो मुझे कुछ जाने पहचाने महसूस होते थे, सुने हुए थे लेकिन मतलब फिर भी समझ में नहीं आ रहा था। हज़रत ने तक़रीर मुकम्मल की। दूसरी मर्तबा फ़रमाया, अशरफ़ अली तुम्हें बात समझ में आई। मैंने कहा, हज़रत! अब भी समझ में नहीं आई। हज़रत ने फ़रमाया, अशरफ़ अली! मेरी इस वक़्त की बातें तुम्हारे समझ-बूझ से बाहर हैं। लिहाज़ा किसी और वक़्त में मुझसे पूछ लेना।

अलहम्दुलिल्लाह हम उन उस्तादों के शागिर्द हैं जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का ज़िक्र करते थे तो उलूम व मआरिफ़ की इतनी बारिश होती थी कि एक ही मज़मून को कई-कई अंदाज़ से बयान करते थे मगर समझने वालों के फ़हम और समझ से ऊँची हुआ करती थीं।

اولئك آبائی فجعنی بمثلهم اذا جمعتنا یا جریر المجامع

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें इन असलाफ़ के नक़्शे क़दम पर ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे। हमें अपने आप पर मेहनत करने और अपने इल्म पर अमल करने की, अपने अंदर से दरिन्दगी ख़त्म करने की और अपने अंदर गुनाहों को ख़त्म करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे। (आमीन सुम्मा आमीन)

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

इस्लाही बातें

जो इंसान ज़मीन और आसमान के दर्मियान ज़िंदगी गुज़ारते हुए हकीकी मानों में इंसान न बन सकेगा या अपनी इस्लाह की कोशिश नहीं करेगा और वह बने बग़ैर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर पहुँचेगा तो वहाँ जाकर उसकी रूहानियत नहीं बन सकेगी क्योंकि ज़मीन व आसमान का पेट रूहानियत बनाने की जगह है। इसलिए हम में से हर बंदा क्या छोटा क्या बड़ा, क्या मर्द क्या औरत हर एक को अपनी इस्लाह की कोशिश करनी चाहिए।

इस्लाही बातें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا

وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ○ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا○ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ

الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

ज़मीन और पहाड़ की माअज़रत

क़ुरआन पाक में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं कि इस क़ुरआन को आसमानों और पहाड़ों के सामने पेश किया गया, उन्होंने इस बारे अमानत को उठाने से माज़रत की और इससे डर गए कि यह बोझ बहुत बड़ा है इसलिए हम इसको नहीं उठा सकते लेकिन इंसान ने इस बोझ को उठा लिया, ﴿اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا﴾ वह बड़ा ज़ालिम और जाहिल था।

इंसान की दो खुफ़िया सिफ़ात

यहाँ पर दो लफ़्ज़ इस्तेमाल किए गए, एक "ज़लूमन" और दूसरा "जहूला"। ये दोनों मुबालग़े के सेग़े हैं। "ज़लूमन" बाबे ज़-र-ब यज़रिबु से है और "जहूला" बाब म-न-अ यमनउ से है। ज़ाहिर में नज़र आता है कि इन अलफ़ाज़ के इस्तेमाल से इंसान

की बुराई बयान की गई है लेकिन इसके अंदर इंसान की दो सिफ़ात छिपी हुई हैं क्योंकि जो इंसान ज़ालिम हो सकता है वह अगर अपने आपको संवार ले तो वही आदिल भी बन सकता है और जो इंसान जाहिल है वह अगर अपने आप पर मेहनत करे तो वही आलिम भी बन सकता है। गोया इस आयत में इंसान के अंदर अदल और इल्म हासिल करने की इस्तेदाद का इशारा किया गया है।

रूहानियत बनाने की जगह

कोई भी इंसान माँ के पेट से बन संवरकर नहीं आता बल्कि इस दुनिया में आकर बनता है। माँ का पेट इंसान के जिस्म के बनने की जगह है और ज़मीन व आसमान का पेट इंसान की रूहानियत बनने की जगह है। जिस तरह माँ के पेट से कोई बच्चा इस हालत में पैदा हो कि उसकी आँखें ठीक नहीं तो दुनिया में आकर उसकी आँखें ठीक नहीं हो सकतीं। डाक्टर जितना मर्ज़ी ज़ोर लगा लें। वे आख़िर यही कहेंगे कि यह एक पैदाइशी नुक़्स है, इसलिए ठीक नहीं हो सकता। इस तरह जो इंसान ज़मीन और आसमान के बीच ज़िंदगी गुज़ारते हुए सही मानों में इंसान न बन सकेगा यानी अपने ऊपर मेहनत नहीं करेगा या अपनी इस्लाह की कोशिश नहीं करेगा और बने बग़ैर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर पहुँचेगा तो वहाँ जाकर क़ियामत के दिन इस इंसान की रूहानियत नहीं बन सकेगी। क्योंकि ज़मीन व आसमान का पेट रूहानियत के बनाने की जगह है। इसलिए हम में से हर बंदा क्या छोटा क्या बड़ा, क्या मर्द, क्या औरत हर एक को अपनी इस्लाह की कोशिश करनी चाहिए।

एक अहम नुक्ता

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अमानत का बोझ बंदे के सर पर रखा तो बंदे ने उठा लिया। ग़ौर करने वाली बात है कि बोझ उठाने वाले के भी कुछ हक़ होते हैं। मिसाल के तौर पर अल्लाह तआला ने गधे को बोझ उठाने के लिए पैदा किया तो उसका गोश्त हराम क़रार दे दिया ताकि इंसान उसके गले पर छुरी न चला सके। इसी तरह अगर किसी की बांदी हमल से हो तो उसके मालिक को अख़्तियार नहीं होता कि वह उसे बेच सके क्योंकि वह एक बोझ उठा चुकी होती है। अब इस उम्मे वलद बांदी का उस बंदे पर हक़ हो जाता है जिसकी वजह से वह उसे अपने पास रखे या आज़ाद कर देगा, वह उसे बेच नहीं सकेगा। खुलासा बातचीत का यह है कि गधे ने बोझ उठाया तो उसका हक़ तसलीम किया गया, बांदी ने बोझ उठाया तो उसका हक़ तसलीम किया गया। इसी तरह जो इंसान इस दुनिया में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के बारे अमानत को उठाएगा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़ियामत के दिन उसके हक़ को तसलीम फ़रमा लेंगे और उसे जहन्नम का ईंधन नहीं बनाएंगे।

रहमतों के फ़ैसले

अगर हम अपने घर काम करने के लिए कोई मज़दूर लाएं जो सारा दिन काम करे और पसीना बहाए तो शाम को जाते हुए उसको मज़दूरी ज़रूर देते हैं हालाँकि हमारे अंदर सैंकड़ों बुराईयाँ मौजूद होती हैं। हिर्स भी है, लालच भी है, कंजूसी भी है लेकिन इस सब के बावजूद थोड़ी सी शराफ़ते नफ़्स रखी हुई है उसकी

वजह से दिल नहीं चाहता कि जिस बंदे ने सारा दिन हमारी ख़ातिर पसीना बहाया, हम उस बंदे को मज़दूरी दिए बग़ैर भेज दें। तो क्या ख़्याल है कि जो बंदा सारी ज़िंदगी इस बारे अमानत को उठाने की मेहनत करेगा तो क्या क़ियामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसको अज्र व सवाब अता नहीं फ़रमाएंगे। लिहाज़ा जिस बंदे की ज़िंदगी शरीअत व सुन्नत के मुताबिक़ बन जाएगी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से उस बंदे के लिए रहमतों के फ़ैसले हो जाएंगे।

एक क़ीमती बात

यह बात ज़हन में रहे कि अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ को अज़ाब के लिएं पैदा नहीं किया बल्कि सवाब के लिए पैदा किया है। अज़ाब तो हम खुद ख़रीद रहे होते हैं। यह हमारी नादानी होती है कि हम अपने आपको गुनाहों के अंदर धंसा देते हैं जिसकी वजह से मुसीबतें आती हैं। अगर हम अपनी ज़िंदगी को अपनी फ़ितरत और शरीअत व सुन्नत के मुताबिक़ गुज़ारें तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें दुनिया के अंदर भी इज़्ज़तें देंगे और आख़िरत के अंदर भी हमें इज़्ज़तें अता फ़रमाएंगे। इसीलिए इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ﴾

तुम्हें सुस्त होने की ज़रूरत नहीं, तुम्हें ग़म खाने की ज़रूरत नहीं, तुम्हीं आला व बाला रहोगे अगर ईमान वाले हो।

गोया अगर हम अपने आप पर मेहनत करेंगे तो दुनिया में भी राज मिलेगा।

मुसख़्ख़र (क़ाबू) करने का मतलब

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ﴾

जो कुछ भी आसमान और ज़मीन में है हमने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया।

इमाम राग़िब अस्फ़हानी रह० "अलमुफ़र्रिदातुल-क़ुरआन" में लिखते हैं कि मुसख़्ख़र करने का मतलब यह होता है कि बंदा किसी जानवर की लगाम पकड़कर अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल करेगा। गोया अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ज़मीन व आसमान के अंदर जो कुछ भी रखा है उसकी लगाम इंसान के हाथ में थमा दी। अब अगर हम सही मानों में इंसान बन जाएं और हमारे जिस्म पर अल्लाह तआला का हुक्म चले तो हम यक़ीनन काएनात को मुसख़्ख़र कर लेंगे।

जिस्म पर दिल का हुक्म

बंदे के दिल का हुक्म उसके जिस्म पर चलता है। मसलन एक आदमी किसी की तरफ़ देखता ही नहीं। अगर कोई उससे पूछे कि आप मेरी तरफ़ देखते ही नहीं तो वह कहता है कि मेरा दिल नहीं करता। हालाँकि देखना तो आँखों का काम है। लेकिन जवाब यह मिलता है कि दिल नहीं करता। इसी तरह एक आदमी किसी की बात ही नहीं सुनता। अगर कोई आदमी उससे कहे कि भई! तुम तो मेरी बात ही नहीं सुनते तो वह कहता है कि मेरा दिल ही नहीं करता। मालूम हुआ कि अगर दिल चाहे तो आँख और कान अमल करते हैं और अगर दिल न चाहे तो आँख और कान अमल

नहीं करते। गोया जिस्म पर दिल का राज है। लिहाज़ा जिस दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का राज आ जाता है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसको ज़मीन व आसमान के बीच की चीज़ों पर राज अता फ़रमा देते हैं।

मक़ामे तस्ख़ीर

मक़ामे तस्ख़ीर यह होता है कि ज़बान से बात निकलती है, तो अल्लाह तआला उस बात को पूरा कर दिया करते हैं। जी हाँ जो सही मानों में इंसान बनता है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसकी लाज रख लेते हैं। मगर अल्लाह वाले अल्लाह तआला की मर्ज़ी को देखते हैं इसलिए ऐसी कोई बात ज़बान से नहीं निकालते जो अल्लाह तआला की मशियत के ख़िलाफ़ हो।

ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० और मक़ामे तसख़ीर

इमामुल उलमा व सुल्हा हज़रत ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० मजमे में फ़रमाया करते थे कि अगर मैं चाहूँ तो एक लम्हे में इस मजमे को तड़पाकर रख दूँ मगर मुझे ऊपर से ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।

मक़ामे तस्ख़ीर और तसलीम व रज़ा

जब तातार का फ़ितना उठा तो ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन अत्तार रह० को इत्तिला मिली कि तातारी इस शहर पर हल्ला बोलने वाले हैं। उन्होंने उठकर दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! हमें इस फ़ित्ने से महफ़ूज़ फ़रमा। जो लश्कर शहर की तरफ़ चला था इस दुआ की बरकत से रास्ता भूल गया और किसी तरफ़ जा निकला। चुनाँचे अल्लाह

तआला ने पूरे शहर को बचा लिया। अगले साल तातारियों ने फिर शहर का रुख़ किया तो इस बार ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन रह० ने दिल में इरादा किया कि मैं दुआ मांगू। मगर इल्हाम कर दिया गया कि मेरे बंदे! यह मेरी मशियत है। अब सर झुकाना पड़ेगा। आपने पहले दुआ मांगी थी जिसे हमने क़बूल कर लिया। अब मत हाथ उठाना। यह क़ज़ा व क़द्र के फ़ैसले हैं, इसे होकर रहना है। चुनाँचे हज़रत रह० ने दुआ न मांगी और नतीजा यह निकला कि तातार आए और पूरे शहर को तहस-नहस कर दिया। उसी दौरान ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन रह० भी उन्हीं के हाथों शहीद हो गए।

सैय्यद अहमद दरबंदी रह० और मक़ामे तस्ख़ीर

तातारी फ़ौज एक शहर 'दरबंद' में पहुँची। वहाँ एक बुज़ुर्ग सैय्यद अहमद दरबंदी रह० रहते थे। तातारियों की ख़बर सुनते ही मुसलमानों ने सारे शहर को ख़ाली कर दिया सिर्फ़ सैय्यद अहमद दरबंदी रह० और उनके एक ख़लीफ़ा मस्जिद के अन्दर मौजूद रहे। तातारी शहज़ादे ने कहा जाओ पता करो कि कोई इन्सान इस शहर के अन्दर मौजूद है या नहीं। बताया गया कि दो बन्दे मस्जिद के अन्दर बैठे हुए हैं। उसने कहा गिरफ़्तार करके और बेड़ियाँ पहनाकर मेरे सामने पेश करो। हुक्म के मुताबिक़ उनको गिरफ़्तार करके उस शहज़ादे के सामने पेश किया गया। तातारी शहज़ादे ने कहा क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मैं आ रहा हूँ? उन्होंने कहा पता था। शहज़ादे ने कहा जब सारे मुसलमान चले गए थे तो फिर तुम क्यों नहीं गए? उन्होंने फ़रमाया कि हम अपने परवरदिगार के घर में बैठे थे और उस घर में से हमें कोई नहीं निकाल सकता। शहज़ादे ने कहा कि तुम कैसी बातें करते हो?

हमने तुम्हें निकाला है, हमने तुम्हें बेड़ियाँ पहनायीं और हमने तुम्हें मुजरिमों की तरह सामने खड़ा कर दिया है। शेख़ सैय्यद अहमद दरबंदी रह० कहने लगे कि ये बेड़ियाँ क्या चीज़ हैं। सैय्यद अहमद दरबंदी रह० ने उस वक़्त ज़ोर से कहा 'अल्लाह', उनका यह कहना था कि ज़ंजीरे टूट कर नीचे गिर गयीं।

तातारी शहज़ादे का क़बूले इस्लाम

यह देखकर तातारी शहज़ादे के दिल पर हैबत बैठ गई। कहने लगा कि मैं आपको इस शहर में रहने की इजाज़त देता हूँ। लिहाज़ा शेख़ सैय्यद अहमद दरबंदी रह० ने वहाँ रहना शुरू कर दिया। तातारी शहज़ादा भी कभी कभी उनसे खुफ़िया मुलाक़ात करने के लिए आता। अल्लाह तआला ने नूरे फ़िरासत से शेख़ सैय्यद अहमद दरबंदी रह० को बता दिया कि एक ऐसा वक़्त आएगा कि यह शहज़ादा पूरे मुल्क का हुक्मरान बनेगा। शेख़ ने शहज़ादे से कहा कि तुम मुसलमान हो जाओ। उसने कहा अगर मैं मुसलमान हो भी जाऊँ तो अपने ईमान का इज़्हार नहीं कर सकता अगर करूंगा तो मुझे क़त्ल कर दिया जाएगा। शेख़ सैय्यद अहमद दरबंदी रह० ने फ़रमाया कि तुम अपने ईमान का उस वक़्त इज़्हार कर देना जब अल्लाह तआला तुम्हें हुक्मरान बना देंगे। शहज़ादे ने हैरान होकर पूछा कि क्या मुझे हुकूमत भी मिलेगी? फ़रमाया हाँ मेरे बातिन का नूर बताता है कि तुम्हें हुकूमत मिलेगी। लिहाज़ा शहज़ादे ने वादा कर लिया कि जिस वक़्त मुझे हुकूमत मिलेगी मैं अपने इस्लाम लाने का एलान कर दूँगा। अल्लाह तआला की शान देखिए कि तीस साल के बाद उस शहज़ादे को हुकूमत मिली तो उसने इस्लाम क़बूल करने का एलान किया। इस तरह

पूरी दुनिया में ख़िलाफ़त और हुकूमत मुसलमानों के हाथ में आ गई। इसी पर अल्लामा इक़बाल रह० ने कहा:

है अयां शोरिश तातार के अफ़साने से
पासबां मिल गए काबे को सनम ख़ाने से

ज़बान से निकले हुए अलफ़ाज़ की लाज

मुअज़्ज़ज़ सामेईन! जिस बंदे के चंद फ़िट जिस्म पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का हुक्म लागू हो जाए तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उस बंदे की ज़बान से निकले हुए अलफ़ाज़ की लाज रख लेते हैं। हमें अगर किसी से दोस्ती हो तो हम उसकी बात को रद्द नहीं करते। ख़ाविन्द प्यार की वजह से बीवी की बात को रद्द नहीं करता और माँ प्यार की वजह से बेटे की बात को रद्द नहीं करती। इसी तरह अल्लाह रब्बुइलज़्ज़त को अपने जिन बंदों से प्यार होता है अल्लाह तआला उन बंदों की बातों को भी रद्द नहीं फ़रमाया करते। क्योंकि हम ने ऐसी ज़िंदगियाँ अभी क़रीब से नहीं देखीं इसलिए अंदाज़ा नहीं होता।

बोरिया नशीनी में लज़्ज़त

ये मिसालें तो आपने पढ़ी होंगी कि लोग तख़्त व ताज को छोड़कर बोरिया नशीन बन गए मगर आपने आज तक ऐसी कोई एक मिसाल भी नहीं पढ़ी होगी कि किसी बोरिया नशीन ने तख़्त व ताज क़बूल कर लिया हो। मालूम हुआ कि इस बोरिया नशीनी में कोई ऐसी लज़्ज़त है जो तख़्त व ताज में भी नसीब नहीं होती।

फ़ाक़ों के मज़े

एक दफ़ा हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रह० फ़ाक़ों की

फ़ज़ीलत बयान कर रहे थे। एक आदमी ने कहा, हज़रत! आप कैसी बातें कर रहे हैं। भूख और फ़ाक़े भी कोई फ़ज़ीलत वाली चीज़ें हैं? फ़रमाया, ऐ भाई! तुम्हें इनकी क़द्र का क्या पता, हम से पूछो जिन्होंने बलख़ की बादशाही देकर इन फ़ाक़ों को ख़रीदा है।

दिलों में इतना सुकून

एक दफ़ा आप रह० ने फ़रमाया कि अगर वक़्त के बादशाहों को पता चल जाए कि हमारे दिलों में कितना सुकून है तो वह अपनी फ़ौजें लेकर हमारे ऊपर चढ़ाई शुरू कर दें। ज़ाहिर में नज़र आता है कि इन अल्लाह वालों के लिबास मामूली हैं, ये बोरियों पर बैठने वाले हैं और दुनिया में इनकी कोई हैसियत नहीं है मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ इनका बड़ा मक़ाम है।

इमाम शाफ़ई रह० का मुक़ाम

इमाम शाफ़ई रह० एक बार किसी नाई के पास बाल कटवाने के लिए गए। उसने देखा कि आपने मैले से कपड़े पहने हुए हैं। उसी दौरान कोई अच्छे लिबास वाला दुनियादार सा आदमी उसके पास बाल कटवाने आया। नाई को उम्मीद थी कि इधर से ज़्यादा पैसे मिलेंगे इसलिए उसने इमाम शाफ़ई रह० के बाल काटने से इंकार कर दिया कि मैं तो पहले इसके बाल काटूंगा। आपने अपने ग़ुलाम से पूछा बताओ तुम्हारे पास कुछ पैसे हैं? अर्ज़ किया, जी तीन सौ दीनार हैं। आप रह० ने फ़रमाया यह पैसे इसको वैसे ही दे दो हालाँकि बाल कटवाने के लिए एक या दो दीनार लगते होंगे जब आपने वैसे ही तीन सौ दीनार दिए और बाल भी न कटवाए तो वह बड़ा हैरान हुआ। वह कहने लगा मैं तो समझा था कि आपके ऊपर सिर्फ़ गुदड़ी है मगर सच तो यह है कि गुदड़ी में

लाल छिपा हुआ था। उसकी बात सुनकर इमाम शाफ़ई रह० बाहर निकल आए और यादगार शे'र इर्शाद फ़रमाए–

علی ثیاب لو یباع جمیعها   بفلس لکان الفلس منهن اکثرا

अगर तुम मेरे जिस्म के कपड़ों की क़ीमत का अंदाज़ा लगाओगे तो उनकी क़ीमत तो एक दिरहम भी नहीं बनेगी लेकिन अगर इन कपड़ों में छिपे हुए बंदे की क़ीमत लगाओगे तो पूरी दुनिया भी मिलकर इस बंदे की क़ीमत नहीं बन सकती।

शाह वलीउल्लाह रह० के दिल की क़ीमत

एक बार शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० ने देहली की जामा मस्जिद में मिंबर पर खड़े होकर कहा था, ओ मुग़ल बादशाहो! तुम्हारे ख़ज़ाने हीरे और मोतियों से भरे हुए हैं लेकिन वलीउल्लाह के सीने में ऐसा दिल है कि तुम्हारे सारे ख़ज़ाने मिल कर भी इस दिल की क़ीमत नहीं बन सकते। इसलिए कि उसके दिल में अल्लाह समाया हुआ है, उसके दिल में अल्लाह आया हुआ है बल्कि उसके दिल में अल्लाह छाया हुआ है, सुब्हानअल्लाह।

इताअत ही इताअत

जब इंसान के जिस्म पर अल्लाह तआला के अहकाम लागू हो जाते हैं तो फिर अल्लाह तआला उसके हुक्म को मख़्लूक़ पर लागू कर देते हैं। ऐसे बंदे की इताअत हुआ करती है। ऐसे बंदे की इताअत पानी करता है, ऐसे बंदे की इताअत ज़मीन करती है, ऐसे बंदे की इताअत जंगल के जानवर करते हैं। अरे! इंसानों की क्या बात है अल्लाह तआला अपनी तमाम मख़्लूक़ को उनका मातहत बना देते हैं।

सैय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रजि० और मक़ामे तस्ख़ीर

सैय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु मिम्बर पर खड़े होकर फ़रमाते हैं ﴿يَا سَارِيَةُ الْجَبَلَ﴾ और हवा उस पैग़ाम को सैंकड़ो मील दूर तक पहुँचा रही है। आपने दरियाए नील को ख़त लिखा तो उसके पानी ने चलना शुरू कर दिया। आज भी दरियाए नील चल रहा है और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की अज़मतों की गवाही दे रहा है। एक बार मदीना मुनव्वरा में ज़लज़ला आता है। आप पाँव की ठोकर मारकर ज़मीन को फ़रमाते हैं कि ऐ ज़मीन! तू क्यों हिलती है क्या उमर ने तेरे ऊपर अद्ल को क़ायम नहीं किया? उसी वक़्त ज़मीन का ज़लज़ला रुक जाता है। मदीना मुनव्वरा के क़रीबी पहाड़ से आग निकलती है जो मदीना की तरफ़ बढ़ती है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजते हैं कि जाकर उसे बुझाइए। उन्होंने दो रकअत नफ़ल पढ़े और फिर अपने कपड़े को ऐसे बनाया जैसे किसी जानवर को मारने के लिए चाबुक होता है। उसके साथ ही आग को मारते रहे। आग पीछे हटती रही यहाँ तक कि जिस ग़ार से निकली थी उसी ग़ार में वापस दाख़िल हो गई।

बरबर क़ौम का क़ुबूले इस्लाम

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम जब अफ़्रीक़ा के जंगलों में पहुँचे तो बरबर क़ौम कहने लगी कि यहाँ पर तो ख़तरनाक दरिन्दे हैं। वे रात के अंधेरे में तुम्हारी तिक्का बोटी कर देंगे। एक सहाबी ने खड़े होकर एलान किया, ऐ जंगल के दरिन्दो! आज यहाँ नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के गुलामों का बसेरा है इसलिए जंगल

ख़ाली करो। यह एलान होना था कि सहाबा किराम ने देखा कि शेरनी बच्चों को लेकर जा रही है और हाथियों के झुंड जा रहे हैं और सारे दरिन्दे जंगल ख़ाली करके जा रहे हैं। मुक़ामी लोगों ने पूछा कि तुमने यह काम कैसे सीखा? उन्होंने बताया कि हमारे प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें ऐसी ज़िन्दगी के तरीक़े सिखाए। वह कहने लगे फिर हमें भी अपने जैसा बना लीजिए। लिहाज़ा वह अफ़्रीक़न क़ौम जंगल के दरिन्दों की इताअत को देखकर बग़ैर किसी लड़ाई के मुसलमान हो गई।

हिम्मत की कोताही

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हर मोमिन को मक़ामे तस्ख़ीर अता करने का एलान कर दिया। मगर हमारे रास्ते में हमारा छः फ़िट का जिस्म रुकावट है। मौलाना रूम रह० एक जगह लिखते हैं, "ऐ दोस्त! तेरे रास्ते में रुकावट तेरा छः फ़िट का जिस्म है यानी तेरा नफ़्स है और फिर फ़रमाते हैं कि यह छः फ़िट की दीवार इतनी ऊँची नहीं, ज़रा हिम्मत करके इसे फ़लांग जा।" सच्ची बात यह है कि हम पूरी ज़िंदगी इस छः फ़िट की दीवार को नहीं फलांग सकते। यह हमारे और हमारे परवरदिगार के रास्ते में रुकावट बनी हुई है। हम इसके ऊपर पाँव रखकर आगे नहीं जा सकते–

न शाख़ गुल ही ऊँची थी न दीवार चमन बुलबुल!
तेरी हिम्मत की कोताही तेरी क़िस्मत की पस्ती है

दरअसल हिम्मत कोताह होती है लेकिन हम कहते हैं कि क़िस्मत पस्त है। याद रखिए कि जो बुलन्द हिम्मत होते हैं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनके लिए रास्ते हमवार कर देते हैं।

बारे अमानत के बारे में पूछताछ

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का ताल्लुक़ हासिल करनें के लिए हमें इस दुनिया में मेहनत करनी है। इसी मक़सद के लिए हम यहाँ इकट्ठे हुए हैं। यह बारे अमानत हमारे सर पर रख दिया गया है। मर्द हो या औरत हम में से हर एक ने इसको उठाना है। अगर इसको उठाने में कोई कमी कोताही की तो क़ियामत के दिन हम से पूछा जाएगा। और जिसने उठा लिया अल्लाह तआला उस बंदे को अपनी तरफ़ से अज्र और बदला अता फ़रमाएंगे।

तीन बुनियादी गुनाह

इंसान की ज़िंदगी में तीन गुनाह बुनियादी हैसियत रखते हैं। उनकी तफ़्सील इस तरह है :

1. पहला गुनाह

पहला गुनाह शहवत है। शहवत का लफ़्ज़ निकला है इश्तिहा से। अरबी ज़बान में इश्तिहा किसी चीज़ की तलब और भूख को कहते हैं। जब इंसान भूखा होता है तो गोया उसको रोटी की शहवत होती है। प्यासे बंदे को पानी की शहवत होती है। कई लोगों को अच्छे खाने की शहवत होती है। कई लोगों को अच्छे से अच्छा लिबास पहनने की शहवत होती है। इसी तरह जब इंसान जवानी की उम्र को पहुँचता है तो उसे बीवी की ज़रूरत होती है। इसके लिए भी शवहत का लफ़्ज़ इस्तेमाल करते हैं। इस तरह शहवत के मफ़हूम में बड़ी वुसअत है। बच्चों के अंदर मीठी चीज़ें

खाने की शहवत होती है। माँ-बाप चीविंगम और टॉफ़ी खाने से मना भी करते रहें तो फिर भी वह छिप-छिप कर खाते रहते हैं। उनके अंदर मीठी चीज़ों की इश्तिहा रख दी गई है। कुछ लोगों को खाने पीने की रग़बत इतनी ज़्यादा होती है कि वह बेचारे खाने के चटोरे बने फिरते हैं। उनको हर वक़्त खाने पीने की फ़िक्र रहती है। एक दिन अच्छा मिल जाए तो उसी की तलाश में रहते हैं। कुछ लोगों को दुनिया में हुकूमत करने की इश्तिहा होती है। वे बेचारे उसकी ख़ातिर ज़िंदगी बर्बाद कर बैठते हैं। कुछ तो पा लेते हैं और कुछ महरूम रहते हैं।

जमाल और माल के फंदे

नौवजवान मर्दों के अंदर औरत की शहवत ज़्यादा होती है जबकि औरत के दिल में कपड़ों वग़ैरह की नुमाइश का रुज्हान ज़्यादा होता है। हर एक के अंदर अलग-अलग बीमारियाँ होती हैं। आजकल मर्दों को जमाल ने बर्बाद किया हुआ है और औरतों को माल ने बर्बाद कर दिया है। गोया पूरी दुनिया के मुसलमान माल और जमाल के हाथों बर्बाद हुए पड़े हैं। मर्द नेक हो, शरीफ़ हो या सूफ़ी हो, जमाल उसकी कमज़ोरी है। इसीलिए आँखें क़ाबू में नहीं रहतीं। इस मर्ज़ से छुटकारा पाने के लिए कहीं आकर ज़र्बें लगानी पड़ती हैं। कहीं आकर रगड़े खाने पड़ते हैं तब जाकर फ़िक्र की गंदगी दूर होती है।

ख़ानक़ाहों का बुनियादी मक़सद

याद रखें कि फ़िक्र की गंदगी ज़िक्र से दूर होती है। जब हम ज़िक्र ही नहीं करेंगे तो फ़िक्र पाक ही नहीं होगी। फिर भले हम

दीन का या दुनिया का जो काम भी करते फिरेंगे लेकिन हमारे अंदर का इंसान और होगा और ऊपर का इंसान और होगा। हम दो रंगी ज़िंदगी गुज़ार रहे होंगे। अगर हम चाहें कि यह क़ील व क़ाल का फ़र्क़ ख़त्म हो जाए या क़ाल व हाल का फ़र्क़ ख़त्म हो जाए तो इसके लिए किसी के ज़ेरे साए रहकर तर्बियत हासिल करनी पड़ेगी। इन ख़ानक़ाहों का बुनियादी मक़सद यही है।

ज़िक्र के माहौल की ज़रूरत

जब एक आदमी बिस्कुट बनाता है, वह सारी चीज़ों को मिला कर एक ख़ास टेम्प्रेचर पर रख देता है। इस तरह बिस्कुट तैयार हो जाता है। आप जानते हैं कि बिस्कुट कितना मज़ेदार बन जाता है। इसी तरह जब इंसान के दिल को ज़िक्र की गर्मी में कुछ वक़्त के लिए रखा जाता है। तब उसका दिल भी बिस्कुट की मानिन्द लज़ीज़ बन जाता है और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ क़बूलियत पा लेता है। इसलिए ज़िक्र के माहौल में हर सालिक को रहकर मेहनत करनी पड़ती है ताकि उसे अपने पर क़ाबू आ जाए और उसकी ज़िंदगी में शरीअत व सुन्नत के अहकाम लागू हो जाएं।

दिल जारी होना

इसी को कुछ मशाइख़ ने "दिल का जारी होना" कहा है। कुछ सालिक समझ लेते हैं कि दिल का जारी होना दिल की कोई ज़ाहिरी धड़कन होती है। जी हाँ, दिल की अल्लाह अल्लाह भी महसूस होती है। मगर सिर्फ़ अल्लाह अल्लाह की कैफ़ियत मतलूब नहीं जब तक कि आज़ा इसका सबूत नहीं देते। अगर कोई सालिक कहे कि मुझे अल्लाह अल्लाह की कैफ़ियत तो हासिल है मगर वह अपने जिस्म से शरीअत व सुन्नत के ख़िलाफ़ करता है तो उसकी

इस अल्लाह अल्लाह वाली कैफ़ियत का कोई एतिबार नहीं किया जाएगा। तसव्वुफ़ की इब्तिदा यह है कि इंसान को अपने दिल में अल्लाह अल्लाह का इदराक महसूस हो और इसकी इंतिहा यह है कि उसके जिस्म पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के अहकाम जारी हो जाएं। गोया उसका जिस्म उसके दिल पर क़ाबू में आ जाए। फिर यह कहा जाएगा कि इस बंदे का क़ल्ब जारी हो गया यानी इस बंदे के क़ल्ब का हुक्म जिस्म पर जारी हो गया है।

अवराद व वज़ाईफ़ की अहमियत

हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने फ़रमाया कि ज़िक्र का असल मक़सद यह है कि इंसान की रग रग और रेशे रेशे से गुनाहों का खोट निकल जाए। आजकल के अक्सर सालिकीन मामूलात में सुस्ती करते हैं। मुराक़बे के बारे में पूछें तो कहते हैं कि जी पाँच या दस मिनट करते हैं। सोचने की बात है कि जिस दिल को बिगाड़ने में उम्र गुज़र गई वह पाँच या दस मिनट में तो नहीं संवरेगा। लिहाज़ा हर सालिक को अपने मामूलात की पाबन्दी करनी ज़रूरी है। हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया, ﴿مَنْ لَا وِرْدَ لَهُ لَا وَارِدَ لَهُ﴾ जो आदमी विर्द व वज़ाइफ़ नहीं करेगा उसके ऊपर कोई वारदात और कैफ़ियात नहीं आ सकतीं। सालिकीन मुराक़बा तो करते नहीं और समझते हैं कि शेख़ की दुआ से ही दिल जारी हो जाएंगे। अजीब बात है कि दुनिया के सारे काम हम खुद करते फिरते हैं। जबकि दीन का यह काम हमने दूसरे लोगों के ज़िम्मे लगाया होता है।

सालिक की कैफ़ियात पर शेख़ की नज़र

शेख़ की यह ज़िम्मेदारी होती है कि सालिक के ऊपर जो

कैफ़ियात हों उनके बारे में इसकी रहबरी करे। अच्छी तरह वाज़ेह करे कि तुम्हारी यह कैफ़ियत रहमानी है और यह कैफ़ियत शैतानी है क्योंकि शैतान भी तो कैफ़ियतें बना बनाकर इंसान को धोका देता रहता है।

शैतान का चक्कर

एक बार शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० जंगल में मुराक़बा कर रहे थे। अचानक एक नूर ज़ाहिर हुआ जिसने माहौल को मुनव्वर करके रख दिया। हज़रत रह० मुतव्वजेह हुए तो आवाज़ आई, ऐ अब्दुल क़ादिर जीलानी! हम तेरी इबादत से इतने ख़ुश हैं कि हम ने तुम से क़लम उठा लिया। अब तू जो चाहे कर। तेरे गुनाह तेरे आमालनामे में नहीं लिखे जाएंगे। जब शैख़ अब्दुल क़ादिर रह० ने यह बात सुनी तो आपने इस बात को क़ुरआन व हदीस पर पेश किया जो सच्चे गवाह हैं। एक आयत सामने आई कि अल्लाह तआला ने अपने महूबब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाया,

﴿وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ﴾

ऐ महबूब! आप इबादत करते रहिए हत्ताकि आप इसी हाल में पर्दा फ़रमा जाएं।

शैख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी रह० ने सोचा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तो यह हुक्म दिया गया है।

फिर अब्दुल क़ादिर जीलानी की यह मजाल कहाँ कि उससे क़लम हटा लिया जाए। लिहाज़ा समझ गए कि यह तो शैतान का चक्कर है। उन्होंने फ़ौरन पढ़ा *"ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह।"* यह कलिमात शैतान के लिए तोप के गोले की तरह

हैं। चुनाँचे जब यह गोला लगा तो वह भाग खड़ा हुआ मगर भागते हुए दूसरा फ़ायर कर गया क्योंकि वह बड़ा ख़तरनाक दुश्मन है। कहने लगा, अब्दुलक़ादिर जीलानी! मैंने अपनी इस चाल से हज़ारों औलिया को धोका दिया है मगर तू अपने इल्म से बच गया। आप रह० ने फिर फ़रमाया, '*ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह*।" कि ओ मरदूद! मैं अपने इल्म की वजह से नहीं बचा बल्कि मैं अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल की वजह से बचा हूँ।

मोहतरम सामेईन! जब इतने बड़े-बड़े औलिया किराम पर भी शैतान वार करने से बाज़ नहीं आता तो फिर हम ज़िक्र पर वक़्त लगाए बग़ैर उस पर कैसे क़ाबू पाएंगे। इसलिए यह बात ज़हन में बिठा लीजिए कि हमें सुबह व शाम ज़िक्रे इलाही करना है क्योंकि फ़रमाने ख़ुदावंदी है :

وَاذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيفَةً وَّدُوْنَ
الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ.

ज़िक्रे इलाही को हमें इसी तरह अपनी ज़िंदगी का ज़रूरी हिस्सा बनाना चाहिए जिस तरह हम खाना खाना ज़रूरी समझते हैं। आप खाने को क़ुर्बान कर दीजिए मगर मुराक़बे को क़ुर्बान न होने दीजिए।

लेटकर मुराक़बा करना

अल्लाह तआला ने बड़ी आसानी कर दी कि अगर आदमी दफ़्तर से थका हुआ आए और बैठ न सके तो सोफ़े पर टेक लगाकर मुराक़बा कर सकता है। अगर इस तरह भी मुराक़बा नहीं कर सकते तो चलो लेटकर ही कर लें। कुछ लोग कहते हैं कि हम

जब लेटकर मुराक़बे की नीयत करते हैं तो नींद आ जाती है। हमारे मशाइख़ ने लिखा है कि जो आदमी लेटकर मुराक़बे की नीयत करेगा, उसे जितनी देर नींद आएगी, अल्लाह तआला उसके आमालनामे में उतनी देर मुराक़बा करने का अज्र व सवाब लिखेंगे।

क़ुर्बे इलाही का चोर दरवाज़ा

सिलसिला आलिया नक़्शबंदिया में वक़ूफ़ क़ल्बी की जो तालीम दी जाती है उसका बुनियादी मक़सद यही है। हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि वक़ूफ़ क़ल्बी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त तक पहुँचने का चोर दरवाज़ा है। वक़ूफ़ क़ल्बी यह होता है कि इंसान की तवज्जोह हर वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ रहे।

इल्म का अज्र भी, ज़िक्र का अज्र भी

यहाँ एक नुक्ता समझ लीजिए। उलमा और तलबा समझते हैं कि हम किताबें पढ़ते रहते हैं। इसलिए हमें ज़िक्र का वक़्त नहीं मिलता। हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद मासूम रह० मक्तूबाते मासूमिया में लिखते हैं कि जब कोई तालिब इल्म मुताला करने के लिए बैठे तो बैठने से पहले चंद लम्हे वह अपनी तवज्जुह को अल्लाह तआला की तरफ़ यकसू कर ले। उसके बाद जितना वक़्त मुताला करेगा वह इल्म का अज्र भी पाएगा और उसे ज़िक्र का अज्र भी दिया जाएगा।

ज़िक्रे इलाही हर हाल में ज़रूरी है

हमने ज़िक्र हर हाल में करना है। चाहे हमारे ऊपर ख़ुशी की

हालत हो या ग़म की हालत हो। अगर ख़ुशी और ग़मी के इंतिज़ार में रहेंगे कि जी ख़ुशी का वक़्त गुज़ारकर फिर ज़िक्र करना शुरू करेंगे या कोई बंदा कहे कि जी कुछ ग़म की कैफ़ियत है, कारोबारी परेशानी है, इसको गुज़ारकर ज़िक्र करेंगे। याद रखना कि आप ख़ुद गुज़र जाएंगे मगर ग़म और ख़ुशी के हालात नहीं गुज़रेंगे। हर हाल में हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को याद करना है। यह हक़ीक़त है कि बंदा दिल में ठान ले कि हर हाल में अल्लाह को याद करना है तो फिर उसको वक़्त भी मिल जाता है।

शैतान की एक अजीब चाल

अक्सर अवक़ात शैतान दिल में यह फ़रेब डालता है कि तुमने मुराक़बे तो करना है मगर फ़लाँ काम ठीक हो ले फिर कर लेना यानी वह काम से मना नहीं करता बल्कि काम में रुकावट डाल देता है। बंदा इस मौक़े के इंतिज़ार में रहता है कि जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इस मौक़े से पहले मलकुल मौत को मौक़ा अता फ़रमा देते हैं। इसलिए हमें हर हाल में अपने परवरदिगार को याद रखना है।

उलझे सुलझे इसी काकुल के गिरफ़्तार रहो

हम जिस हाल में भी रहें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद में रहें:

गो मैं रहा रहीने सितमे हाए रोज़गार
लेकिन तेरे ख़्याल से ग़ाफ़िल नहीं रहा

एक तजरिबेशुदा बात

अल्लाह तआला का ज़िक्र दिल में उतारने के लिए शेख़ से राब्ता रखना बहुत ज़रूरी है। हमारा तजरिबा है कि अगर बंदा

बाक़ायदगी के साथ ज़िक्र व मुराक़बा करे तो फिर अगर उसे पूरे साल में भी एक दिन शेख़ की सोहबत मिल जाए तो उसके दिल को ज़िंदा करने करने के लिए वह एक दिन की सोहबत काफ़ी होती है।

एक घंटे की सोहबत का फ़ैज़

इस आजिज़ की पहली बैअत हज़रत मौलाना सैय्यद ज़व्वार हुसैन शाह साहब रह० से थी। हज़रत रह० कराची में मुक़ीम थे और हम फ़ुक़रा इंजीनियरिंग युनिर्वसिटी लाहौर में पढ़ते थे। साल में सिर्फ़ एक बार मिस्कीनपूर शरीफ़ के इज्तिमा के मौक़े पर हज़रत रह० की ज़ियारत होती थी। वहाँ पर हज़रत रह० को इज्तिमा की मसरूफ़ियतें भी होती थीं। इसलिए युनिर्वसिटी के तलबा के लिए हज़रत रह० सिर्फ़ एक घंटा इनायत फ़रमाते थे। इस एक घंटे में अगर कोई फ़क़ीर एक सवाल पूछ लेता तो उस सवाल का इतना तफ़्सीली जवाब इर्शाद फ़रमाते थे कि पूरा घंटा गुज़र जाता था। वह एक दिन की सोहबत ऐसी होती थी जो हमें पूरा साल जगाए बल्कि तड़पाए रखती थी। जी हाँ अगर पहले ही से ज़मीन को तैयार किया गया हो तो एक दिन की सोहबत भी काफ़ी होती है और अगर ज़मीन तैयार नहीं की गई तो कई दिन की सोहबत भी असर नहीं दिखाएगी।

बैअत के साथ ही इजाज़त व ख़िलाफ़त

शेख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी रह० के पास एक आदमी आया। हज़रत रह० ने उसे एक दिन अपने पास रखा तौजीहात दीं और दूसरे दिन उसको इजाज़त व ख़िलाफ़त दे दी। जो लोग सालों से

रह रहे थे वे कहने लगे हज़रत! हम तो आपकी ख़िदमत में कई कई सालों से मौजूद हैं लेकिन आप की मेहरबानी उस पर हो गई। हज़रत रह० ने फ़रमाया, हाँ वह अपने तेल और बत्ती को ठीक करके आया था, मैंने तो सिर्फ़ उसके चिराग़ को रोशन किया है। आजकल के सालिक तो ऐसे हैं कि वे कहते हैं कि तेल भी पीर डाले और बत्ती भी पीर लाए, हमारा यह एहसान काफ़ी है कि हम ने बैअत कर ली है।

शेख़ के एहसान का बदला

याद रखें कि अगर सारी ज़िंदगी अपने शेख़ की ख़िदमत करते रहें तो आप उसके एहसान का बदला नहीं दे सकते क्योंकि वह आपके लिए अल्लाह तआला के क़रीब होने का ज़रिया बन रहा होता है। 'आदाबुल मुरीदीन' में भी यही लिखा है और बाअदब बानसीब में भी मशाइख़ से मंक़ूल यही बात लिखी गई है। हम किसी की वजह से एक क़दम भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के क़रीब हो जाएं तो भला इसकी कोई क़ीमत हो सकती है। इसकी कोई क़ीमत नहीं हो सकती।

शेख़ की तवज्जुह का सालिकीन पर असर

ज़िक्र से इंसान की फ़िक्र की गंदगी दूर होती है और उसे अहवाल और कैफ़ियतें नसीब होती हैं। सूरज तो एक ही है मगर सूरज की गर्मी से फल को अंदर ज़ाएक़ा बढ़ रहा होता है और लज़्ज़त भी पैदा हो रही होती है। फूल के अंदर अच्छा रंग पैदा हो रहा होता है और सब्ज़ी का साइज़ भी बढ़ रहा होता है। सूरज तो एक है मगर फल ने अपने नसीब का हिस्सा पाया, फूल ने अपने

नसीब का हिस्सा और सब्ज़ी ने अपने नसीब का। इसी तरह शेख़ की तवज्जुह तमाम सालिकीन के दिलों पर एक ही वक़्त पड़ रही होती है। मगर हर आदमी अपनी तलब और इख़्लास के बक़द्र उनसे हिस्सा पा रहा होता है–

इश्क़ की चोट तो पड़ती है सभी पर यकसाँ
ज़र्फ़ के फ़र्क़ से आवाज़ बदल जाती है

अक़ाइद का फ़साद

हमारे सिलसिला नक़्शबंदिया के एक बुज़ुर्ग ख़्वाजा अहमद सईद रह० फ़रमाते थे कि मैं कभी-कभी अपने शहर के ताल्लुक़ रखने वालों पर तवज्जुह डालता हूँ तो कुछ दिलों में तो वह तवज्जुह चली जाती है लेकिन कुछ ऐसे लोग होते हैं कि उनके दिलों से वह नूर और फ़ैज़ टकराकर वापस आ जाता है और मुझे आवाज़ आती है कि हमारे लिए इस दिल के अंदर कोई जगह नहीं है। दरअसल वे लोग अक़ाइद के फ़साद में मुब्तला होते हैं।

तो फिर क़ुसूर किसका?

अगर हम दिल की ज़मीन को ठीक कर लें तो हम जहाँ भी होंगे हमें मशाइख़ का फ़ैज़ पहुँचेगा, कैफ़ियात मिलेंगी और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का क़ुर्ब मिलेगा। आप एक ही शेख़ के साथ ताल्लुक़ रखने वाले लोग हैं। किसी की ग्यारह साल से तहज्जुद क़ज़ा नहीं हुई, किसी की आठ साल से क़ज़ा नहीं हुई। और अगर किसी बंदे को तकबीरे ऊला भी नसीब नहीं होती तो मालूम हुआ कि क़ुसूर उसका अपना है वरना अगर दूसरों को अल्लाह तआला ने इस्तिक़ामत अता की है तो आपको भी इस्तिक़ामत मिल सकती

है। लेकिन ऐसे लोग मेहनत ही नहीं करते और अवराद व वज़ाईफ़ को मामूली समझते हैं।

सज़ा के दर्जे

हमारे मशाइख़ ने लिखा है कि आम मोमिन को उस वक़्त सज़ा मिलती है जब वे कबीरा गुनाह करता है, सालिक को उस वक़्त सज़ा दी जाती है जब वे अपने अवराद व वज़ाइफ़ को छोड़ देता है और मुक़र्रिबीन को उस वक़्त सज़ा दी जाती है जब उनके दिल में ज़रा सा भी ग़ैर की तरफ़ झुकाव पैदा हो जाता है। इसी लिए कहते हैं ﴿حَسَنَاتُ الْاَبْرَارِ سَيِّئَاتُ الْمُقَرَّبِيْنَ﴾ कि अबरार की नेकियाँ मुक़र्रिबीन के लिए गुनाहों की मानिन्द होती हैं।

2. दूसरा गुनाह

दूसरा बुनियादी गुनाह "ग़ज़ब" है यानी ग़ुस्सा। यह गुनाह भी अक्सर लोगों के दिलों में पाया जाता है। ग़ुस्सा आग की मानिन्द होता है। एक साहब किसी बूढ़े के पास गए। कहने लगे, बड़े मियाँ थोड़ी सी आग दे दें। उसने कहा, मेरे पास नहीं है। फिर कहने लगा, बस थोड़ी सी आग लेने आया हूँ। वह ग़ुस्से में कहने लगा, अरे तू सुनता नहीं। कहने लगा, बड़े मियाँ! मैं धुवाँ तो सुलगता हुआ देख रहा हूँ। वह कहने लगा, मेरे कहने पर तुझे यक़ीन नहीं आता? कहने लगा, बड़े मियाँ थोड़ी-थोड़ी आग भी जलती देख रहा हूँ। कहने लगा, तू बेवक़ूफ़ है, तुझे मेरी बात समझ में नहीं आती। कहने लगा बड़े मियाँ! अब तो अंगारे भी बनना शुरू हो गए हैं। बड़े मियाँ ने ग़ुस्से में आकर कहा, निकल

जा यहाँ से, दफ़ा हो जा। वह कहने लगा, हज़रत! यही तो वह आग थी जिसकी आपको ख़बर देने के लिए आया था।

3. तीसरा गुनाह

तीसरा बुनियादी गुनाह "हवा परस्ती" है। तीनों गुनाहों के अपने अपने बुरे असरात होते हैं।

तीनों गुनाहों के नुक़सानात

- याद रखें कि शहवत की वजह से बंदा अपनी जान पर ज़ुल्म करता है।
- ग़ुस्से की वजह से बंदा दूसरों पर ज़ुल्म करता है।
- और हवा परस्ती की वजह से इंसान इस्लाम की हदों से ख़ारिज होकर कुफ़्र और शिर्क कर बैठता है।

इसीलिए

- जिस में शहवत होगी उसके अंदर बुख़्ल और हिर्स ज़्यादा होगा।
- जिसके अंदर गुस्सा ज़्यादा होगा उसके अंदर ख़ुदबीनी होगी यानी वह किसी को भी अपने जैसा नहीं समझेगा। वह अपने को बड़ा समझेगा।
- और जिसके अंदर हवा परस्ती होगी उस बंदे के अंदर बिदआत की तरफ़ रुज्हान होगा। वह तबअन बिदअत को पसन्द करेगा। वह बिदअत का वकील बनकर ज़िंदगी गुज़ारेगा। अगर उसके सामने बिदअत का रद किया जाए तो

उसे दुख होगा। हालाँकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम बिदअती को आता देखो तो तुम रास्ता ही बदलकर चले जाओ। फ़रमाया, जिसने बिदअती की ताज़ीम की उसने इस्लाम की बुनियाद को गिराने में मदद की और फ़रमाया कि जो क़ौम किसी बिदअत पर अमल कर लेती है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उस बिदअत के मुक़ाबले में एक सुन्नत को उठा लेते हैं और क़ियामत तक उन लोगों को वह सुन्नत दुबारा अता नहीं फ़रमाते।

तीनों गुनाहों का अंजाम

इन तीनों गुनाहों का अंजाम देख लीजिए। शहवत की वजह से जो गुनाह किए जाएंगे वे जल्दी माफ़ कर दिए जाएंगे। इसलिए कि जब शहवत ग़ालिब होती है तो उस वक़्त अक़्ल काम करना छोड़ देती है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْءَ بِجَهَالَةٍ﴾

उन लोगों की तौबा क़ुबूल करना अल्लाह तआला के ज़िम्मे है जो जिहालत की वजह गुनाह का काम कर बैठते हैं।

यहाँ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि जब किसी के ऊपर जज़्बात और ख़्वाहिशात का ग़लबा होगा तो इस आदमी को उस वक़्त जाहिल कहा जाएगा। इसलिए शहवतों की वजह से गुनाह होंगे। अगर इंसान तौबा करेगा तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त बहुत जल्दी उन गुनाहों की माफ़ी अता फ़रमा देंगे।

गुस्से की वजह से होने वाले गुनाह क्योंकि बंदों के हक़ों से

मुताल्लिक़ होते हैं इसलिए सिर्फ़ माफ़ी मांगने से ये गुनाह माफ़ नहीं होंगे बल्कि जिनके हुक़ूक़ को दबाया है उन लोगों से माफ़ी मांगनी पड़ेगी या उनके हुक़ूक़ अदा करने पड़ेंगे। फिर वे गुनाह माफ़ होंगे।

और हवा परस्ती के गुनाह नाक़ाबिले माफ़ी होंगे। इसलिए कि जो इंसान कुफ़्र और शिर्क की वजह से इस्लाम के दायरे से बाहर होगा, क़ियामत के दिन उसको हमेशा-हमेशा के लिए जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

हसद बुरी बला है

जब ये तीनों गुनाह मिल जाते हैं तो इस माजून मुरक्कब का नाम "हसद" बनता है। ऐसे आदमी के अंदर हसद बहुत ज़्यादा होगा। हर क़िस्म के कामों में हसद पैदा हो जाता है। हसद ऐसी बुरी बला है कि अगर किसी के बारे में पैदा हो जाए तो फिर उस बंदे की नेकी भी अच्छी नहीं लगती और उसकी नेकनामी भी अच्छी नहीं लगती। वह अल्लाह तआला के क़रीब होने वाले काम करेगा तो यह इस पर भी परेशान होगा कि वह क्यों कर रहा है। अल्लाह तआला ने इंसान के अंदर जितने शर रखे उन तमाम का मजमूआ हसद बनता है। अल्लाह तआला ने सूरः फ़लक़ में इसका यूँ तज़्किरा फ़रमाया ﴿وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ﴾ मैं पनाह मांगता हूँ हासिद के हसद से। इंसान को यूँ अल्लाह तआला ने हसद से बचने की तालीम दी है।

शैतानी वसवसे

शैतान की तरफ़ से हमले होते हैं उनको "वसाविसे शैतानिया" कहा जाता है। शैतान के अंदर जितना भी शर है उसका नतीजा

वसाविस की शक्ल में निकलता है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक की आख़िरी सूरत में इसका भी तज़्किरा फ़रमा दिया ﴿الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ﴾ हसद और वसाविस ही दो चीज़ें हैं जो इंसान की बर्बादी का सबब बनती हैं। वसाविस शैतान की तरफ़ से होते हैं और हसद इंसान की तरफ़ से होता है। अल्लाह तआला हमें इन दोनों तरह के दुश्मनों से महफ़ूज़ फ़रमा लें।

हसद की पैदा की हुई बीमारियाँ

आज अमलियात का जितनी कारोबार चमक रहा है और अदालतों में जितनी भीड़ होती है उसके पीछे हसद का हाथ होता है। सब एक दूसरे के साथ हसद रखने वाले होते हैं ये सब मुक़दमे बाज़ियाँ अदावतें हसद की वजह से पैदा होती हैं।

आँखों की हिफ़ाज़त

यह उसूल याद रखें कि दिल की हिफ़ाज़त के लिए आँखों की हिफ़ाज़त ज़रूरी है। इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० फ़रमाते हैं कि इंसान आँख से देखता है, दिल उसकी तमा करता है और फिर शर्मगाह उसकी तस्दीक़ कर देती है। इसलिए यह बात ज़हन में बिठा लें कि शहवतों वाले गुनाह की इब्तिदा हमेशा आँख से होती है। लिहाज़ा जो बंदा अपनी निगाह नीची रखने और ग़ैर-महरम से अपनी निगाह को बचाने का आदी होगा। वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हिफ़ाज़त में आ जाएगा यानी अल्लाह तआला उसकी कबीरा गुनाहों से हिफ़ाज़त फ़रमा लेंगे।

ज़िना का पहला क़दम

याद रखिए कि आँख का गुनाह पहला क़दम है। इससे आगे

ज़िना के रास्ते हमवार होते हैं। इसलिए इस पहले क़दम को ही रोक लीजिए। जो इंसान यह कहे कि मैं सिर्फ़ इधर-उधर देखता हूँ और अमल बिल्कुल नहीं करता तो यह मुमकिन ही नहीं क्योंकि जब आँख देखेगी तो जी चाहेगा और फिर जिस्म उस पर अमल करेगा। इसलिए सालिक पर लाज़मी है कि वह अपनी आँखें को ग़ैर-महरम औरतों से महफ़ूज़ रखे। हमारे मशाइख़ ने तो यहाँ तक कह दिया—

چشم بند و گوش بند و لب بہ بند ۔ گر نہ بینی سرِ حق بر ما بخند

यानी तू अपनी आँखों को बंद कर ले, कानों को बंद कर ले और ज़बान को बंद कर ले। फिर भी अगर तुझे हक़ का राज़ न मिले तो मेरे ऊपर हंसी उड़ाते फिरना।

हम ये तीनों काम नहीं करते। न आँख बंद होती है, न कान बंद होते हैं और न ज़बान बंद होती है। जब हम से ये तीनों काम नहीं होते तो फिर हमें हक़ का राज़ कैसे मिलेगा?

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम व ज़ुलेख़ा और नज़र की हिफ़ाज़त

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपनी नज़र की हिफ़ाज़त की तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको कामयाब फ़रमा दिया और ज़ुलेख़ा अपनी नज़र की हिफ़ाज़त न कर सकी जिसकी वजह से शैतान ने उसको गुनाह में फंसा दिया।

अम्मा हव्वा से भूल होने की वजह

अम्मा हव्वा अगर शजरे ममनूआ की तरफ़ न निगाह न करतीं

तो उनसे कभी भूल न होती। क्योंकि उन्होंने उस पेड़ को देख लिया था इसलिए शैतान को वरग़लाने का मौक़ा मिल गया।

शेख़ की नज़र

मालूम हुआ कि यह नज़र ही है जो इंसान की गिरावट का सबब बनती है। और फिर शेख़ की नज़र ही है जो इंसान की तरक़्क़ी का ज़रिया बन जाती है।

तेरा इलाज नज़र के सिवा कुछ और नहीं

जब हम ग़ैर-महरमों पर नज़र डालते से बचेंगे तो फिर शेख़ की नज़र हम पर असर करना शुरू कर देगी। शेख़ की नज़र भी क्या असर करेगी जब अपनी ही नज़रें हवस के साथ इधर-उधर पड़ रही हों।

जमाल और माल से नज़र हटाने का हुक्म

तलबा तवज्जुह फ़रमाएं कि अल्लाह तआला ने हमें दो चीज़ों की तरफ़ नज़र करने से मना फ़रमा दिया है। पहली चीज़ ग़ैर-महरम की तरफ़ नज़र उठाना है। यह तो आप अक्सर सुनते ही रहते हैं, एक और दूसरी चीज़ की तरफ़ नज़र करने से भी मना फ़रमा दिया। अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे महबूब!

﴿وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا﴾

आप इन कुफ़्फ़ार की ज़ाहिरी चमक दमक और माल व दौलत की तरफ़ निगाह ही न करें क्योंकि उनको तो दुनिया का थोड़ा सा हिस्सा दिया गया है।

मालूम हुआ कि हमें दो चीज़ों से निगाह हटानी है, एक जमाल से और दूसरे माल से क्योंकि यही चीज़ें इंसान की बर्बादी का ज़रिया बनी हुई हैं। मर्दों की नज़र जमाल से नहीं हटती और औरतों की नज़र माल से नहीं हटती। यह बहुत ही अजीब फ़ितने हैं। सच्ची बात यह है कि शैतान ने हर हर बंदे को उलझाया हुआ है। मशाइख़े इज़ाम इन गुनाहों को वाज़ेह करके सामने करते हैं ताकि इंसान के लिए इन से बचना और तौबा करना आसान हो जाए।

आम औरतों में यहूदियों की तीन सिफ़ात

उलमा ने लिखा है कि आम औरतों में तीन बातें यहूदियों वाली होती हैं :

1. पहली बात यह कि खुद ज़ुल्म करती हैं मगर लोगों के सामने मज़लूम बन जाती हैं। ज़्यादती उनकी होती है मगर कहानी ऐसी बना लेती हैं कि फ़रियादी नज़र आती हैं।
2. दूसरी बात यह कि मुजरिम होती हैं मगर दूसरों को यक़ीन दिलाने के लिए झूठी क़स्में खाती रहती हैं।
3. तीसरी बात यह कि किसी बात के लिए दिल से तैयार होती हैं मगर ज़बान से नाँ नाँ कर रही होती हैं। खुद अपना दिल चाह रहा होता है कि ख़ाविन्द यह काम कर ले मगर ज़बान से नहीं नहीं कहती रहेंगी। इसलिए कि अगर काम ठीक हो गया तो मैं ख़ामोश रहूँगी और अगर काम उलट हो गया तो कहूँगी कि देखा मैंने मश्वरा नहीं दिया था।

ये तीनों बातें यहूदियों में पाई जाती थीं जो आजकल की आम औरतों में आ चुकी हैं।

नेक औरत के अज्र व सवाब में इज़ाफ़ा

अगर यही औरत ज़िक्र व फ़िक्र करके नेक बन जाए तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ उसका बड़ा दर्जा होता है। हदीस मुबारक में नेक औरत के बड़े फ़ज़ाइल बयान किए गए हैं। यहाँ तक फ़रमाया गया कि जो औरत घर के अंदर पड़ी हुई हो किसी बेतर्तीब चीज़ को तर्तीब से रख देती है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उस को एक नेकी अता करते हैं और एक गुनाह माफ़ फ़रमा दिया करते हैं। औरतें रोज़ाना कितनी बेतर्तीब चीज़ों को तर्तीब से रखती हैं।

चरख़े की आवाज़ पर अल्लाहु अकबर कहने का सवाब

सैय्यदा आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि जब कोई औरत अपने चरख़ को कातती है तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उस चरख़े की आवाज़ पर अल्लाहु अकबर कहने का सवाब उसके आमालनामे में लिखवाते हैं। अब जितनी देर चरख़ा कात रही होती है उतनी देर तक अल्लाहु अकबर कहने का अज्र उसके आमालनामे में लिखा जा रहा होता है। पहले ज़माने में तो चरख़ा होता था। आज के दौर में मशीने आ गयी हैं।

ख़ाविन्द को लिबास मुहैय्या करने पर अज्र

सैय्यदा आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से यह भी रिवायत है कि जो औरत अपने काते हुए सूत से कपड़ा बनाकर अपने ख़ाविन्द को लिबास पहनाए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हर हर धागे और तार के बदले उसको एक लाख नेकियाँ अता फ़रमाते हैं। आजकल घरों में

कपड़ा बुन तो नहीं सकते लेकिन घरों में आकर सिल तो सकता है या जिन औरतों को यह सीने का फ़न भी नहीं आता और वे अपनी मुहब्बत की वजह से सिलवाकर दे देती हैं तो वे भी इस अज्र व सवाब में शामिल हो जाती हैं। देखिए कि घर के अंदर मुहब्बत व प्यार की ज़िंदगी गुज़ारने पर इंसान को कितना अज्र मिल रहा होता है।

एक अजीब बात

फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़ंदी रहमतुल्लाहि अलैहि ने एक अजीब बात लिखी है कि जो औरत नमाज़ पढ़े लेकिन वह नमाज़ में अपने ख़ाविन्द के लिए दुआ न मांगे, उसकी नमाज़ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ क़बूल नहीं होती। गोया दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहना चाहिए कि जो औरत नमाज़ पढ़ेगी और उस नमाज़ में अपने ख़ाविन्द के लिए दुआ मांगेगी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसकी नमाज़ को क़बूल फ़रमा लेंगे।

एक बहुत बड़ी ग़लतफ़हमी

यह नहीं कि ऐसे काम सिर्फ़ औरत ही के करने हैं मर्दों के ज़िम्मे भी कुछ काम हैं। आजकल के सूफ़ियों में एक अजीब बीमारी देखी गई है कि ज़रा ज़िक्र व अज़्कार करने शुरू करें तो घर के कामों से जान छुड़ाने की कोशिश करते हैं और उसे तवक्कुल के ख़िलाफ़ समझते हैं। यह बहुत बड़ी ग़लतफ़हमी है।

घर के कामों में हाथ बटाना

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के पैग़ंबर हैं।

उनकी बीवी उम्मीद से थीं। वह उनके लिए आग ढूंढने के लिए निकले और अपनी बीवी से फ़रमाया :

﴿اٰتِیْکُمْ مِنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَی النَّارِ هُدًی﴾

जब वक़्त के नबी अलैहिस्सलाम अपनी बीवी के लिए आग ढूंढते फिरते हैं तो मालूम हुआ कि काम करना मर्द की ज़िम्मेदारी भी होती है और इस पर अल्लाह तआला की तरफ़ से अज्र मिलता है। नबी अलैहिस्सलाम भी घर के कामों में शरीक हुआ करते थे। कभी बकरी का दूध दूह लेते और कभी आटा गूंध देते थे।

सत्तर साल के गुनाह माफ़

हदीस पाक में आया है कि जो मर्द अपने घरवालों के लिए चीज़ें ख़रीदता है और लाकर अपने घर के अंदर रखता है तो अल्लाह तआला इतने ख़ुश होते हैं कि उसके सत्तर साल के गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं।

बीच का रास्ता

शरीअत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला को जो रास्ता जाता है वह जंगलों और ग़ारों से होकर नहीं जाता बल्कि इन्हीं गली कूचों और बाज़ारों से होकर जाता है। याद रखें कि ज़िक्र व अज़्कार के ज़रिए किसी को लूला लंगड़ा नहीं बनाना होता कि न हाथ काम करें और न पाँव काम करें। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारे मशाइख़ को हमारी तरफ़ से जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए, उन्होंने हमें एतिदाल का ऐसा रास्ता दिखाया कि कमी-ज़्यादती से बचकर सीधा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ पहुँचने वाला है।

उल्टे काम

गुनाहों से बचना और ज़िक्र करना दोनों काम हम पर लाज़िम हैं। आजकल हम उल्टे काम कर रहे होते हैं। जो काम करना है वह करते नहीं और जो नहीं करना चाहिए वह कर रहे होते हैं। हमारी मिसाल उस बीमार की सी है जो दवाई तो खा नहीं रहा होता और नज़ला ज़ुकाम का मरीज़ होने के बावजूद आचार खा रहा होता है। उस आदमी का नज़ला कैसे ठीक होगा। अवराद व वज़ाइफ़ का मामूल बनाइए और अपने आपको गुनाहों से बचाइए फिर देखना कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत कैसे जोश मारेगी।

एक इल्मी नुक्ता

एक इल्मी नुक्ता ज़हन में रखिए कि क़ुरआन पाक में इंसान के लिए तीन अलफ़ाज़ इस्तेमाल होते हैं। एक ज़ालिम, दूसरे ज़लूम और तीसरा ज़ल्लाम। इन तीनों अलफ़ाज़ के मुक़ाबले में अल्लाह तआला के तीन नाम हैं। ज़लूम के मुक़ाबले में ग़फ़ूर, ज़ालिम के मुक़ाबले में ग़ाफ़िर और ज़ल्लाम के मुक़ाबले में गफ़्फ़ार। मालूम हुआ कि अगर हम ज़ुल्म की किसी भी हैसियत में हैं, ज़ालिम हैं या ज़लूम हैं या ज़ल्लाम हैं, किसी भी दर्जे में हैं फिर भी हमारे गुनाह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत से ज़्यादा नहीं हैं। परवरदिगार की रहमत ज़्यादा है जिसने हर हर दर्जे के मुक़ाबले में अपना नाम बता दिया कि मेरे बंदे! तू ज़ालिम है तो मैं ग़ाफ़िर हूँ, तू ज़लूम है तो मैं ग़फ़ूर हूँ, तू ज़ल्लाम है तो मैं ग़फ़्फ़ार हूँ, आकर तौबा कर ले मैं तेरे सारे गुनाहों को माफ़ कर दूंगा।

राबिया बसरिया रह० और ख़ौफ़े ख़ुदा

राबिया बसरिया रह० एक दफ़ा कहीं बैठी थीं। क़रीब ही एक आदमी भुना हुआ गोश्त खा रहा था। उन्होंने जब उसे देखा तो रोना शुरू कर दिया। वह आदमी समझा कि उन्हें भूख लगी है और यह चाहती हैं कि मुझे भी खाने को दिया जाए। उसने पूछा कि क्या आप भी खाएंगी? फ़रमाने लगीं नहीं, मैं इसलिए नहीं रो रही हूँ बल्कि मैं किसी और बात पर रो रही हूँ। उसने पूछा कि वह कौन सी बात है? फ़रमाने लगीं कि मैं इस बात पर रो रही हूँ कि जानवरों और परिन्दों को आग पर भूनने से पहले उन्हें मार दिया जाता है और ज़िब्ह किए हुए जानवर को भूनते हैं। मैं क़ियामत के दिन को सोच रही हूँ कि जब ज़िंदा इंसानों को आग में डालकर भून दिया जाएगा। मैंने भुने हुए मुर्ग़ को देखा तो मुझे क़ियामत का दिन याद आ गया। मुझे वह रात याद आ गई जिसकी सुबह को क़ियामत होगी। ऐ बंदे! तू भुने मुर्ग़ खाने का आदी है, कबाब और तिक्के मंगवा-मंगवा कर खाता है। सोचा करें कि हम जो उसका गोश्त भून-भूनकर खा रहे हैं उसे तो ज़िब्ह करके भूना गया। अगर हम गुनाह करेंगे तो फ़रिश्ते हम ज़िंदों को भूनेंगे। इसलिए हमें गुनाहों से ज़रूर बचना चाहिए।

ईनाम में दो जन्नतें

अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाते हैं ﴿وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتٰنِ﴾ (जो अपने रब के सामने खड़ा होने से डर गया उसके लिए दो जन्नतें हैं।) इन दो जन्नतों की तफ़सील भी बड़ी अजीब है। अल्लाह तआला ने हर इंसान का एक घर जन्नत में और एक

घर जहन्नम में बनाया है। चाहे मुसलमान हो चाहे काफ़िर। लेकिन मुसलमान होगा तो जन्नत वाले घर में जाएगा और काफ़िर होगा तो जहन्नम वाले घर में जाएगा। इसलिए काफ़िर की मौत के वक़्त जन्नत का घर दिखाते हैं और कहा जाता है कि अगर तू ईमान वाला होता तो तेरे लिए यह घर था लेकिन अब तुझे यह घर नहीं दिया जाएगा। फिर उसे जहन्नम का घर दिखाते हैं। चूँकि ईमान वालों को जन्नत में घर मिलेंगे और काफ़िरों को जहन्नम में मिलेंगे। लिहाज़ा उन काफ़िरों के जन्नत के जो मकान बचेंगे अल्लाह तआला काफ़िरों के मकानों को ईमान वालों में बांट देंगे। इस तरह ईमान वालों को जन्नत में दो घर मिल जाएंगे। दुनिया में इंसान दो कोठियाँ हों तो वह ख़ुश होता है कि जी मेरी फ़लाँ जगह भी कोठी है और फ़लाँ जगह भी। इसी तरह जब जन्नत में ईमान वालों को दो घर मिलेंगे तो वह भी बहुत ख़ुश होंगे।

मग़फ़िरत का अजीब अंदाज़

याह्या बिन अक्सम रह० को उनकी वफ़ात के बाद किसी ने ख़्वाब में देखा। पूछा हज़रत आगे क्या बना? फ़रमाया कि अल्लाह तआला के हुज़ूर मेरी पेशी हुई। मुझे अल्लाह तआला ने फ़रमाया, याह्या! तुम मेरे पास क्या लाए हो? मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मेरे पास आमाल का ज़ख़ीरा तो है नहीं। अल्लाह पाक एक हदीस मुबारक मैंने सुनी है। पूछा कौनसी हदीस? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! मैंने अपने उस्ताद मअमर से सुना, उन्होंने ज़ोहरी से सुना, उन्होंने उरवा से सुना, उन्होंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से सुना, उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, उन्होंने जिब्रील अलैहिस्सलाम से सुना और जिब्रील ने आपसे

सुना कि आपने फ़रमाया कि मेरा वह बंदा जो कलिमागो हों और उसके बाल सफ़ेद हो जाएं और इस हाल में वह मेरे सामने पेश कर दिया जाए तो उसके सफ़ेद बालों को देखकर मुझे हया आती है और मैं ऐसे बंदे को अज़ाब नहीं दिया करता। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि तुमने भी ठीक सुना, मअमर ने भी ठीक सुना, ज़ोहरी ने भी ठीक सुना, उरवा ने भी ठीक कहा, आइशा सिद्दीक़ा ने भी ठीक कहा मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी ठीक कहा, जिब्रील ने भी ठीक कहा और हम ने भी सच कहा, मुझे सफ़ेद बालों वाले मोमिन से वाक़ई हया आती है। याह्या, तेरे सफ़ेद बालों को देखकर मैंने जहन्नम की आग को तेरे ऊपर हराम कर दिया।

रहमते खुदावंदी का अजीब वाक़िआ

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक बड़ा ही गुनाहगार आदमी था। उसने कभी नेकी नहीं की थी। वह हर वक़्त जवानी वाले शहवानी कामों में लगा रहता था यानी दिन रात नफ़्सानी ख़्वाहिशात को पूरा करने में लगा रहता था। गोया रात दिन वह शैतान बनकर काम करता रहता था। उसके दिल में अल्लाह तआला की तरफ़ ध्यान ही नहीं जाता था। वह ज़हनी ख़्वाहिशात में इतना मस्त था कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ "वही" नाज़िल फ़रमाई कि ऐ मेरे प्यारे मूसा! फ़लाँ बंदे को जाकर मेरा पैग़ाम दे दो कि तुम्हें मैंने बंदगी के लिए भेजा था मगर तुमने दुनिया में जाकर नाफ़रमानी की। तुमने इतने बड़े गुनाह किए कि गुनाहों ने तुम्हें घेर लिया है। अब मैं तुमसे नाराज़ हूँ। इसलिए मैं तुम्हें नहीं बख़्शूंगा और क़ियामत के दिन तुम्हें

जहन्नम का अज़ाब दूंगा। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब यह पैग़ाम सुनाया कि तूने इतने गुनाह किए हैं कि अल्लाह तआला तुझसे नाराज़ हैं और फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे बंदे मैं तुझ पर गुस्सा हूँ। तूने क़दम-क़दम पर मेरे हुक्मों को तोड़ा है और मेरे पैग़ंबर अलैहिस्सलाम की सुन्नतों को छोड़ा। लिहाज़ा मैं तुझ से ख़फ़ा हूं। अब मैं तुझे नहीं बख़्शूंगा और तुझे जहन्नम में डालूंगा। उस बंदे ने जब यह बात सुनी तो उस बंदे के दिल में अजीब तरह की कैफ़ियत पैदा हुई। वह सोचने लगा कि ओहो! मैं इतना गुनाहगार हूं कि परवरदिगार मुझ से नाराज़ हो गए हैं। और अल्लाह ने अपने पैग़ंबर अलैहिस्सलाम के ज़रिए पैग़ाम भेज दिया कि मैं तुझसे ख़फ़ा हूँ। तुझसे राज़ी नहीं हूँगा और तुझे जहन्नम की आग में डालूंगा। वह यही बातें सोचते-सोचते जंगल की तरफ़ निकल गया। वह वीराने में जाकर अपने परवरदिगार से मुनाजात करने लगा कि ऐ अल्लाह! मैं अपने गुनाहों का इक़रार करता हूं। मैंने बड़े-बड़े गुनाह किए, कोई वक़्त नहीं छोड़ा। दिन में भी किए, रात में भी किए, महफ़िल में भी किए और तन्हाई में भी किए। ऐ अल्लाह! मैंने गुनाह में कोई कसर नहीं छोड़ी। मैंने सर पर गुनाहों के बड़े-बड़े बोझ लाद लिए हैं मगर ऐ अल्लाह! अगर मेरे पास गुनाहों के बोझ हैं तो तेरे पास भी अफ़ुव्व (माफ़ी) व दरगुज़र के ख़ज़ाने हैं। अल्लाह क्या मेरे गुनाह इतने हो गए कि तेरी अफ़ुव्व व दरगुज़र के ख़ज़ानों से भी ज़्यादा हैं? मेरे मौला! अगर तू किसी को पीछे धकेलेगा तो फिर कौन ग़म धोने वाला होगा। ऐ बकसों के दस्तगीर! मैं तेरे सामने फ़रियाद करता हूँ। तू मुझे मायूस न फ़रमा। तेरी रहमत मेरे गुनाहों से ज़्यादा है और मेरे गुनाह तेरी

रहमत से थोड़े हैं। आख़िर उसने यहाँ तक कह दिया, ऐ परवरदिगार! अगर मेरे गुनाह इतने ज़्यादा हैं कि बख़्शिश के क़ाबिल नहीं हैं तो फिर मेरी एक फ़रियाद सुन ले कि तेरी जितनी मख़्लूक़ है उन सब मख़्लूक़ के गुनाह तू मेरे सर डाल दे। मुझे क़ियामत के दिन अज़ाब दे देना मगर अपने बाक़ी बंदों को माफ़ कर देना।

उसके ये बोल अल्लाह तआला को पसन्द आ गए। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने फ़ौरन मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ "वही" नाज़िल की कि ऐ मेरे पैग़म्बर! उस बंदे को बता दीजिए कि जब तुमने मेरी रहमत का इतना सहारा लिया तो सुन लो कि मैं हन्नान हूँ, मन्नान हूँ, रहीम हूँ, करीम हूँ। लिहाज़ा मैंने तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर दिया बल्कि तुम्हारे गुनाहों को नेकियों में बदल दिया।

मेरे दोस्तो! जो रब्बे करीम इतना मेहरबान हो तो हम क्यों न इन महफ़िलों में बैठकर उस परवरदिगार की रहमतों से हिस्सा पाएं। अपने गुनाहों को बख़्शवाएं और आइन्दा नेकोकारी व परहेज़गारी की ज़िंदगी गुज़ारने का इरादा करें। परवरदिगार हमें सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

बरकत या कसरत

आज का आम इंसान इस ग़लतफ़हमी का शिकार है कि मेरे मसाइल का हल कसरत में है। कोई हुकूमत वाला है तो वह समझता है कि अवाम की कसरत मेरे साथ होगी तो मसअले हल हो जाएंगे, कोई माल वाला है तो वह समझता है कि माल ज़्यादा आएगा तो मसअले हल हो जाएंगे। कोई फ़ैक्ट्री वाला है तो वह समझता है कि प्रोडक्शन ज़्यादा होगी तो मसअले हल जो जाएंगे। लेकिन हक़ीक़त यह है कि कसरत से मसाइल हल नहीं होते बल्कि बरकत से मसाइल हल हुआ करते हैं।

बरकत या कसरत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِo سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَo وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَo وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo

अरबी ज़बान के दो अलफ़ाज़ उर्दू ज़बान में भी बहुत कसरत से इस्तेमाल होते हैं। एक कसरत दूसरा बरकत। कसरत कहते हैं मिक्दार की ज़्यादती को मसलन एक आदमी के पास माल बहुत ज़्यादा हो, उम्र बड़ी लंबी हो, औलाद ज़्यादा हो, यह औलाद की कसरत, माल की कसरत और उम्र की कसरत कहलाएगी। बरकत का यह मतलब है कि चीज़ ज़रूरत के लिए काफ़ी हो जाए। दोनों अल्फ़ाज़ की हक़ीक़त को समझने की ज़रूरत है।

एक ग़लतफ़हमी का इज़ाला

आजकल हम यह समझते हैं कि हमारी परेशानियों का हल कसरत में है। हमारे पास माल ज़्यादा होगा तो मसअले हल हो जाएंगे। उम्र लंबी होगी तो हमारे मसअले हल हो जाएंगे। औलाद ज़्यादा होगी तो मसअले हल हो जाएंगे। हमें अपनी परेशानियों का

हल कसरत में नज़र आता है हालाँकि यह हमारी बहुत बड़ी ग़लतफ़हमी है। अगर कसरत मसाइल का हल होता तो लखपति, करोड़पति और अरबपति लोगों की ज़िंदगी में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए थी। वे सबके सब मुतमइन ज़िंदगी गुज़ारने वाले होते। हम देखते हैं कि एक मज़दूर पेड़ के साए तले मीठी नींद सो रहा होता है जबकि अमीरों को एयरकंडीशन कमरों में भी नींद नहीं आती। मज़दूर आदमी ज़मीन के ऊपर बग़ैर बिस्तर के आराम की नींद सो लेता है लेकिन अमीरों को नरम गद्दों के ऊपर भी नींद नहीं आती। जो आदमी दाल साग खाता है वह इत्मिनान की ज़िंदगी गुज़ारता है जबकि इन मनमर्ज़ी की ग़िज़ाएं खाने वालों को डाक्टर के पास जाना पड़ता है।

मसाइल जूँ के तूँ

आजकल एक ऐसी रूटीन बन गई है कि हर बंदा कसरत मांगता है। जिसकी तंख़्वाह पाँच हज़ार रुपए हो वह समझता है कि छः हज़ार हो जाती तो मसअले हल हो जाते। अगर छः हो जाए तो समझता है कि सात हज़ार हो जाती तो मसअले हल हो जाते। दस हज़ार हो तो वह कहता है क पंद्रह हज़ार होती तो मुश्किलात हल हो जातीं। जिसकी बीस हज़ार हो वह कहता है कि पच्चीस हज़ार होती तो परेशानियाँ ख़त्म हो जातीं। इसलिए दुआएं भी करवाते हैं कि दुआ करो मेरी तंख़्वाह बढ़ जाए, अगला ग्रेड मिल जाए। यह समझते हैं कि इस तरह हमारे मसअले हल हो जाएंगे हालाँकि मसअले जूँ के तूँ रहते हैं क्योंकि तंख़्वाह बढ़ने के साथ-साथ ख़र्च भी बढ़ते चले जाते हैं। सोचने की बात है कि आख़िर इसकी वजह क्या है? हमारे मशाइख़ ने इस बात को

अच्छी तरह समझाया है। वह फ़रमाते हैं कि कसरत में मसाइल का हल नहीं है। अल्लाह तआला बंदे को जितने पैसे देंगे परेशानियाँ उसी हिसाब से बढ़ाकर देंगे, जिसकी वजह से वह बेचारा हर वक़्त परेशान रहेगा।

एक औरत की परेशानी

एक बार फ़ैसलाबाद से एक औरत आई। मेरी बीवी ने मुझे कहा कि इसकी बात ज़रूर सुनें, बड़ी पेरशान है और जब से आई है रो रही है, उसको टाइम दिया। पर्दे में बैठकर बात करने लगी कि मेरा शौहर बड़ी मील का मालिक है, अमीर आदमी है, खुला पैसा है, शादी के सात आठ सालों में कोई औलाद नहीं है मगर यह कोई परेशानी की बात नहीं है क्योंकि शौहर मेरे साथ खुशी की ज़िन्दगी गुज़ार रहा है। हम दोनों को इसकी वजह से कोई परेशानी नहीं है, क़िस्मत में हुई तो हो जाएगी नहीं तो जो अल्लाह को मन्ज़ूर, ख़ाविन्द मुझे बहुत चाहता है। मुहब्बतों वाली ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। घर का सारा ख़र्च शौहर ने अपने ज़िम्मे लिया हुआ है, नौकरों का ख़र्चा, बावर्ची का ख़र्चा, गार्ड का ख़र्चा, माली का खर्चा ये तमाम खर्चे सब मेरा शौहर अदा करता है, जितने घर के बिल आते हैं, टेलीफ़ोन, बिजली, गैस, वग़ैरह वे सब मेरा ख़ाविन्द अदा करता है। गाड़ियाँ हैं, ड्राइवर हैं, कारें हैं, बहारें हैं, रोटी हैं, बोटी है। अल्लाह ने यूँ तो ज़िन्दगी में हर सहूलत दी है। मेरी परेशानी यह है कि मेरा शौहर मेरे ज़ाती ख़र्च के लिए हर महीने सिर्फ़ पचास हज़ार रुपए देता है। जिससे मेरे ख़र्चे पूरे नहीं होते। यह कहकर वह औरत रोने लग गई कि शायद मेरा जैसा परेशान दुनिया में कोई नहीं होगा। वह ऐसे ज़ार व क़तार रो रही थी जैसे

किसी की वफ़ात पर कोई रोया करता है।

उस औरत को इस आजिज़ ने यह बात समझाई कि आपकी परेशानी ख़त्म होने वानी नज़र नहीं आती। आपका शौहर आपको पचास हज़ार रुपए के बजाए एक लाख रुपया माहाना भी देना शुरू कर दे फिर भी आपकी परेशानी ख़त्म नहीं होगी, दो लाख भी दे दे फिर भी ख़त्म नहीं होगी। पाँच लाख भी हर महीने दे दे फिर भी परेशानियाँ ख़त्म नहीं होंगी। वह बड़ी हैरान होकर कहने लगी कि पीर साहब! आप मुझे बात समझाएं क्योंकि मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रही कि आप क्या कह रहे हैं। आजिज़ ने कहा बीबी! जिस रास्ते से आप परेशानियों का हल ढूंढना चाहती हैं उस रास्ते से परेशानियों का हल होता ही नहीं। कहने लगी चाहती तो हूँ कि परेशानियाँ ख़त्म हों। आजिज़ ने कहा कि अगर आप चाहती हो तो अपनी ज़िन्दगी को शरीअत के मुताबिक़ ढालें, गुनाहों से ख़ाली ज़िन्दगी इख़्तियार करें, आपने गुनाहों से भरी ज़िन्दगी से अल्लाह तआला को नाराज़ कर लिया है। आइन्दा आप सुन्नत वाली ज़िन्दगी को अपना कर अपने ख़ालिक़ हक़ीक़ी को राज़ी कर लें। आप के माल में बरकत आएगी तो आपकी परेशानियाँ अपने आप दूर हो जाएंगी। आप कसरत मांग रही हैं कि वह पचास हज़ार देता है तो एक लाख देना शुरू कर दे लेकिन याद रखना कि फिर भी परेशानियाँ रहेंगी। ख़ैर आजिज़ ने यह बात कही तो अल्लाह तआला ने बात में बरकत रख दी। लिहाज़ा कहने लगी कि मैं सच्ची तौबा करना चाहती हूँ। आजिज़ ने उसको तौबा के कलिमात पढ़ाकर रुख़्सत किया। अलहम्दुलिल्लाह तीन चार महीनों के बाद उसने फोन के ज़रिए

कहा कि अब तो मैं नमाज़ की पाबन्द हो गई हूँ, बुर्क़ा मैंने कर लिया है, टीवी छोड़ दिया है। वह औरत कहने लगी कि अब तो मैं अच्छी ख़ासी मौलवी बन गई हूँ लेकिन एक बात बड़ी अजीब है कि अब मेरे महीने के ख़र्चे पंद्रह हज़ार रुपए में पूरे हो जाते हैं और मेरी बाक़ी रक़म यतीमों और बेवाओं के ऊपर ख़र्च होती है।

बरकत से मसाइल का हल

आज का आम इंसान इस ग़लतफ़हमी का शिकार है कि मेरे मसाइल का हल कसरत में है। कोई हुकूमत वाला है तो वह समझता है कि अवाम की कसरत मेरे साथ होगी तो मसअले हल हो जाएंगे, कोई माल वाला है तो वह समझता है कि माल ज़्यादा आएगा तो मसअले हल हो जाएंगे। कोई फ़ैक्ट्री वाला है तो वह समझता है कि प्रोडक्शन ज़्यादा होगी तो मसअले हल जो जाएंगे। लेकिन हक़ीक़त यह है कि कसरत से मसाइल हल नहीं होते बल्कि बरकत से मसाइल हल हुआ करते हैं।

हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानूतवी रह० की रिज़्क़ में बरकत

हमारे असलाफ़ की ज़िंदगियों में बरकत थी। हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानूतवी रह० को मदरसे से तीन रुपए माहाना तंख़्वाह मिला करती थी। उस ज़माने में बहावलपुर के नवाब साहब ने एक बड़ा जामिया बनाया, युनिवर्सिटी बनाई। उलमा से मश्वरा किया तो उलमा ने कहा, बिल्डिंग आप बना दें फिर हम आपको एक ऐसी हस्ती बताएंगे। उस हस्ती को अगर आप यहाँ ले आएं तो जामिया आबाद हो जाएगा। उसने कहा ठीक है, हीरा

तुम चुन लेना दाम मैं लगा दूंगा। क्योंकि नवाब साहब को अपने ख़ज़ाने पर बड़ा मान था।

जब युनिवर्सिटी बन गई तो उसने उलमा को बुलाया और कहा कि आप किस आलिम को इस जामिया का सरबराह बनाना चाहते हैं? उन्होंने कहा कि हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानूतवी रह० को जो कि दारुलउलूम देवबंद के बानी हैं। उसने पूछा कि उनकी वहाँ कितनी तंख़्वाह होगी? कहने लगे कि मदरसे में तो तीन रुपए हैं। कहने लगा कि वफ़्द बनकर जाएं और मेरी तरफ़ से जाकर कहें कि यहाँ आपको रहने सहने और उठने बैठने की हर सहूलत मौजूद होगी और आपकी हर महीने की तंख़्वाह सौ रुपए होगी। तैंतीस गुना तंख़्वाह बढ़ जाएगी। यूँ समझिए कि जैसे कोई तीन सौ ले रहा हो और उसे कह दिया जाए कि आज से आपकी तंख़्वाह तीन लाख हो जाएगी। उलमा कहने लगे कि नवाब साहब! अब तो हम उन्हें किसी न किसी तरह ले ही आएंगे। चुनाँचे उलमा बड़े शौक़ और दिल की ख़ुशी के साथ वहाँ से चले कि हज़रत नानूतवी रह० को लेकर ही आएंगे। बस हमारे बताने की देर होगी। वहाँ गए, मिले, बैठे और कहने लगे, हज़रत! हम एक अज़ीम मक़सद के लिए हाज़िर हुए हैं। पूछा, क्या मक़सद है? अर्ज़ किया कि नवाब साहब ने एक जामिया बनाया है और उन्होंने कहा है कि कम से कम एक लाख किताबों की लाएब्रेरी बना दूंगा। आपको इल्म से बड़ा लगाव है। इतनी किताबें तो और कहीं एक जगह मिल भी नहीं सकतीं। आपको पूरा अख़्तियार होगा और आपकी तंख़्वाह भी सौ रुपए होगी।

हज़रत रह० ने बात सुनी तो फ़रमाया, मैं तो बिल्कुल नहीं आ

सकता। उन्होंने पूछा, हज़रत क्यों? हज़रत रह० ने फ़रमाया कि तीन रुपए इस वक़्त मेरी दारुलउलूम में तंख़्वाह है और तीन रुपए में से दो रुपए में मैं अपने बीवी-बच्चों पर ख़र्च करता हूँ और एक रुपया मैं यतीमों, बेवाओं और ग़रीबों पर ख़र्च करता हूँ। इस एक रुपए के मुस्तहिक़ लोगों को ढूंढने पर भी मुझे वक़्त लगाना पड़ता है। अगर मैं बहावलपुर आ गया और मेरी तंख़्वाह 100 रुपए हो गई तो मेरा ख़र्चा तो दो ही रुपए रहेगा और मुझे 98 रुपए लोगों पर ख़र्च करने पड़ेंगे। इस तरह तो मुझे सारे महीना ज़रूरतमंदों को ढूंढने में लग जाएगा। इसलिए मैं वहाँ नहीं आ सकता। ऐसा जवाब दिया कि फिर उनको बात करने की हिम्मत ही न हुई, सुब्हानअल्लाह।

हमारी हालत

आख़िर क्या वजह थी उनके सामने सौ रुपए वाली नौकरी आई थी तो उन्होंने धक्के दे दिए जबकि हम रो रो कर दुआएं मांग रहे होते हैं कि अल्लाह! दो रुपए दिए हैं अब मुझे तीन रुपए देना शुरू कर दीजिए। इस तरह न तो पैसे मिलते हैं न ही मसअले हल होते हैं। कहीं न कहीं फ़र्क़ ज़रूर है। हमारे दिमाग़ों में यह बात बैठ चुकी है कि कसरत से मसअले हल होंगे और यह ग़लतफ़हमी है। जब तक यह ग़लतफ़हमी ज़हन से नहीं निकलेगी तब तक अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमते और बरकतें नहीं आएंगी।

एक चपाती खाने का बदला

चुनाँचे दुनिया में एक बड़ा अमीर आदमी था। उसकी बीवी

बीमार हो गई और बीमारी ऐसी थी कि डाक्टर ने उसको रोटी खाने से मना कर दिया। उसके घर में खाने पकते थे, घर के अंदर मेहमानवाज़ियाँ होती थीं। दावतें होती थीं, सब कुछ अपनी आँखों से देख सकती थी। उसने अख़बार में ख़बर निकलवाई कि मैं इतने करोड़ रुपए उस डाक्टर को दूंगी जो मेरा इतना इलाज करे कि मैं दाल चपाती दिन में एक बार खा लिया करूं।

ग़ैरों की मुहताजी

हम हर चीज़ की कसरत मांगते हैं। मसलन हम कहते हैं कि शाला उम्र दराज़ होवी (अल्लाह करे आपकी उम्र लंबी हो जाए) अच्छा अगर अल्लाह तआला उम्र तो दे एक सौ साल की मगर पचास साल की उम्र घुटनों का दर्द शुरू हो जाए तो बाक़ी पचास साल कैसे गुज़रेंगे। कई ऐसे होते हैं कि पचास बरस की उम्र में ही रुकू से उठते हुए "समिअल्लाह" की जगह उनके मुँह से "उई अल्लाह" निकलता है। इस आदमी ने उम्र मांगी सौ साल की मगर पचास साल में जोड़ों के दर्द का मरीज़ बन गया। इस तरह पचास साल के लिए दूसरों का मुहताज हो गया। उम्र हुई सौ साल मगर सत्तर साल की उम्र में फ़ालिज हो गया। अपना सतर ढांपने में भी दूसरों को मुहताज हो जाएगा। इस सौ साल को क्या करना है। मालूम हुआ कि कसरत में हमारा हल नहीं बरकत में हमारा हल है।

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० की सेहत में बरकत

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ऐसी सेहत अता फ़रमाई थी कि हम जैसे लोग उनके सामने चूज़े लगते

थे। नव्वे साल की उम्र में निगाह इतनी तेज़ थी कि अगर ख़त पढ़ना होता था तो ऐनक हटाकर पढ़ते थे। नज़दीक की बीनाई इतनी सही थी। नव्वे साल की उम्र में भी सुनने के लिए कोई मशीन नहीं लगाया करते थे। कमरे के कोने में भी कोई कानाफूसी करता तो हज़रत सुन लिया करते थे। नव्वे साल की उम्र में आपके बत्तीस दांतों में से एक दांत भी नहीं गिरा था। ताक़त ऐसी थी कि कभी कंधे पर हाथ रख देते तो हम दबाव की वजह से नीचे बैठते थे। कई मर्तबा फ़रमाते थे कि मजमे में कोई है मेरी उम्र वाला? अक्सर मज्लिसों में तो कोई इतनी उम्र का होता ही नहीं था। अगर कभी कोई होता भी था तो उसकी न बीनाई, न सुनवाई बल्कि कमर टेढ़ी हुई होती थी। हज़रत फ़रमाते थे देखो और अजीब बात कि हज़रत को शूगर की बीमारी थी।

वुज़ू की हिफ़ाज़त

हमारे हज़रत रह० रमज़ानुल मुबारक के दिन मरी में गुज़ारा करते थे। हज़रत रह० ने एक बार रोज़ा इफ़्तार किया, खाना खाया और खाने के बाद मस्जिद के बाहर तशरीफ़ ले आए। वहाँ इशा की नमाज़ पढ़ी, लंबी तरावीह थी। नमाज़ के बाद कुछ क़ारी हज़रात आए हुए थे। उन्होंने क़ुरआन सुनाना था। एक मुसल्लाह वहाँ ऐसा था कि जिसके बारे में बताया गया कि इस मुसल्ले पर 36 साल गुज़र गए आज तक किसी क़ारी को मुतशाबह (भूल) नहीं लगा। ऐसे ऐसे हज़रात वहाँ क़ुरआन पढ़ने आते थे और हज़रत रह० तो फिर क़ुरआन पाक के आशिक़ थे। हज़रत रह० नफ़्ल की नीयत से पीछे खड़े हो गए यहाँ तक कि सहरी का वक़्त हो गया।

मस्जिद में सहरी का खाना खाया गया। हज़रत रह० ने सबके साथ मिलकर खाना खाया। खाना खाकर हम लोग तो भागे और वुज़ू करके जल्दी वापस आ गए। जब हज़रत रह० से पूछा कि हज़रत! फ़ज्र की नमाज़ में अभी आधा घंटा बाक़ी है, आप ताज़ा वुज़ू फ़रमा लीजिए। फ़रमाने लगे, मेरा वुज़ू कोई कच्चा धागा है। शूगर की बीमारी के बावजूद मग़रिब के बाद खाना खाकर वुज़ू किया और सहरी के खाने के बाद फ़रमाया कि मेरा वुज़ू कोई कच्चा धागा है। इसी वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। फिर उसी वुज़ू से दर्स क़ुरआन दिया। इतना लंबा दर्स क़ुरआन कि इश्राक़ का वक़्त हो गया। उसी वुज़ू से इश्राक़ की नमाज़ पढ़ी और नमाज़ के बाद होटल के कमरे में आकर वुज़ू को ताज़ा किया।

सेहत में बरकत

इस आजिज़ ने एक बार हज़रत मुर्शिदे आलम से पूछा कि हज़रत! आपकी यह सेहत हमारी समझ से बाहर है। कुछ इसके बारे में हमें फ़रमा दें। हज़रत रह० फ़रमाने लगे कि मैंने एक बार लैलातुल क़द्र पाई और दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मेरी उम्र में बरकत अता फ़रमा दे। यह बरकत ही है जिसने ज़िंदगी के आख़िरी हिस्से में भी मेरी सेहत को अच्छा कर दिया है।

मौअज़्ज़ज़ सामेईन! आप बताएं कि हमें कसरत चाहिए या बरकत? अगरचे सत्तर साल की उम्र हो मगर ऐसी सेहत हो कि बंदा किसी का मुहताज न हो और इबादत में कोई रुकावट न आए।

उम्र में बरकत का अजीब वाक़िआ

हम लोग एक बार क़ज़ाकिस्तान गए तो हमारे साथ अमरीका

के भी कुछ दोस्त थे। एक जगह मेज़बान ने उलमा को दावत दी। उसने एक बकरा ज़िब्ह करके गोश्त भूनकर सब के सामने रखा। अब भुना हुआ गोश्त अच्छा तो बड़ा लगता है मगर चर्बी साथ थी। चर्बी से तो आजकल नौजवान भी घबराते हैं और डाक्टर भी मना करते हैं। हम तो चुन चुन के वह बोटियाँ ढूंढते जिनके साथ चर्बी बिल्कुल न होती। हमारे साथ एक आलिम आकर बैठ गए जिनकी उम्र कहीं माशाअल्लाह पिच्चानवे साल थी और वह सिर्फ़ चर्बी खा रहे थे। हम लोग जो चर्बी उतारकर रखते वह उसको उठाकर खा लेते। हमारे लिए इस बात को बरदाश्त करना मुश्किल हो गया कि इतनी चर्बी? जब हम परेशान हो गए तो उन्होंने चम्मच उठाई और जो चर्बी नीचे शोरबे में थी वह भर-भर कर पीना शुरू कर दी। चर्बी की बोटी खाते और ऊपर से चर्बी की चम्मच भी पी लेते। या अल्लाह अब तो हमारे सब्र का दामन हाथ से छूट गया। इस आजिज़ ने पहले उनसे सलाम दुआ तो किया ही था। अब ज़रा थोड़ी सी बात भी बढ़ाई और उनसे पूछा कि आप की उम्र कितनी होगी? कहने लगे पिच्चानवे साल। आजिज़ ने पूछा कि सेहत ठीक रहती है? फ़रमाने लगे पिच्चानवे साल की उम्र में आज तक मैंने अपने हाथों से एक गोली भी अपने मुँह में नहीं डाली। मैंने आज तक किसी डाक्टर को अपना हाथ नहीं दिखाया। हम लोग उनका मुँह तकते रह गए। यह उम्र में बरकत हैं।

करोड़ोंपति लोगों के क़र्ज़े

जब अल्लाह तआला माल में बरकत देता है तो जितना माल होता है थोड़ा या ज़्यादा वह उसकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए काफ़ी हो जाता है। चुनाँचे आप कई लोगों को देखेंगे कि छः

सात बच्चे हैं, दो तीन हज़ार रुपए कमाते हैं लेकिन उन्होंने किसी का क़र्ज़ा नहीं देना होता। दूसरी तरफ़ बाज़ करोड़ोंपति हैं मगर उन्होंने बैंकों के करोड़ों के क़र्ज़े देने होते हैं।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के हाफ़िज़े की बरकत

आज क़ुव्वते हाफ़िज़ा है तो सही मगर क़ुव्वत हाफ़िज़ा की बरकत नहीं है। हमारे असलाफ़ को अल्लाह तआला ने क़ुव्वते हाफ़िज़ा में बरकत अता फ़रमा दी थी। चुनाँचे मरवान बिन हकम ने एक बार सोचा कि अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कसरत से अहादीस की रिवायत करते हैं तो हम भी उनसे कुछ हदीसें सुनें। उसने दावत दी और दावत के बाद हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु जहाँ बैठे हुए थे। उसने दो बंदों को काग़ज़ क़लम देकर पर्दे के पीछे बिठा दिया और कहा कि हम कुछ अहादीस सुनेंगे आप दोनों वे तमाम अहादीस काग़ज़ पर लिख लेना। दो आदमी इसलिए बिठाए कि लिखने वाले को भी ग़लती पेश न आए। चुनाँचे सैय्यदना अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस महफ़िल में सौ से ज़्यादा हदीसें सुनायीं और वापस तशरीफ़ ले गए।

एक साल गुज़रने के बाद उसने फिर हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत दी। खाने के बाद इसी तरह बिठाया और जिन लोगों ने पिछले साल लिखा था उनको कह दिया कि कि अब फिर लिखें। फिर हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाइश की हम तो वही हदीसें सुनेंगे जो आपने पिछले साल सुनाई थीं। हज़रत वही एक सौ हदीसें सुनाएं। दो बंदों ने काग़ज़ पर लिखी हुई अहादीस के साथ उनको मिलाया तो एक हर्फ़ का भी फ़र्क़ नज़र न आया।

यह क़ुव्वते हाफ़िज़ा में बरकत है हालाँकि यह जंगे ख़ैबर के बाद मुसलमान हुए थे और शुरू शुरू में भूल भी जाया करते थे। उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया ऐ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में भूल जाता हूँ। तो आपने फ़रमाया कि चादर फैलाओ और फिर अपने दस्ते मुबारक से ऐसे इशारा किया जैसे कोई चीज़ डाली। फिर कपड़े को ऐसे किया जैसे कोई गठरी बांध लेता है। हज़रत अबूहुरैरह फ़रमाते थे कि मैंने अपने महबूब से इल्म के दो बर्तन हासिल किए। यह बरकत थी जो अल्लाह तआला ने उनको क़ुव्वते हाफ़िज़ा में अता फ़रमाई थी।

अब्दुल्लाह बिन अबेदाऊद रह० का हाफ़िज़ा

यही क़ुव्वते हाफ़िज़ा की नेमत मुहद्दिसीन को नसीब हुई। अब्दुल्लाह बिन अबिदाऊद रह० एक बार अस्फ़हान पहुँचे तो वहाँ के उलमा ने एक बळड़े मुहद्दिस का बेटा समझकर उनका इस्तिक़बाल किया और फिर कहा कि हमें कुछ अहादीस सुना दीजिए। चुनाँचे महफ़िलें जारी रहीं और उन्होंने अपनी याद्दाश्त से पैंतीस हज़ार हदीसें उनको सुना दीं।

इमाम अस्साल रह० का हाफ़िज़ा

इमाम अस्साल रिजालुल हदीस में से हैं। फ़रमाया करते थे कि मुझे क़ुरआन पाक की क़िराअत व तजवीद से मुताल्लिक़ पचास हज़ार रिवायतें ज़बानी याद हैं।

हज़रत अबूज़ुरआ रह० का हाफ़िज़ा

अबू ज़ुरआ रह० एक मुहद्दिस गुज़रे हैं उनकी महफ़िल में एक

शागिर्द आया करता था। उसकी नई नई शादी हुई। एक दिन महफ़िल ज़रा लंबी हो गई तो उसके घर जाने में देर हो गई। जब वह रात देर से घर पहुँचा तो बीवी उलझ पड़ी कि मैं इंतिज़ार में थी तुम ने आने में देर क्यों की? उसने समझाया कि मैं वक़्त ज़ाए नहीं कर रहा था। मैं तो हज़रत के पास था। वह कुछ ज़्यादा ग़ुस्से में थी। वह ग़ुस्से में कह बैठी कि तेरे हज़रत को कुछ नहीं आता, तुझे क्या आएगा? उस्ताद के बारे में बात सुनकर तो यह नौजवान भी भड़क उठा। नौजवान लोग तो होते ही आग हैं, तेल लगाने की ज़रूरत होती है। जैसे माचिस की डिबिया होती है बस रगड़ने की देर होती है। आग तो पहले से अंदर होती है। नौजवान का नफ़्स भी ऐसा ही होता है कि बेचारे बाज़ार से गुज़रते हैं, आँख उठते ही बस रगड़ लगती है और शहवत की आग भड़क उठती है।

जब बीवी ने यह कहा कि तेरे उस्ताद को कुछ नहीं आता तुझे क्या आएगा तो यह सुनकर नौजवान को भी ग़ुस्सा आ गया और कहने लगा कि अगर मेरे उस्ताद को एक लाख हदीसें याद न हों तो तुझे मेरी तरफ़ से तीन तलाक़ हैं। अब ग़ुस्से में फ़ायरिंग तो दोनों तरफ़ से हो गई। ठीक-ठीक निशाने लगाए गए।

सुबह उठकर ज़रा दिमाग़ ठंडा हुआ तो सोचने लगे कि हम ने तो बहुत बड़ी बेवक़ूफ़ी की। बीवी ने ख़ाविन्द से पूछा कि मेरी तलाक़ मशरूत थी। अब बताएं कि यह तलाक़ वाक़ेअ हो गई या नहीं। उसने कहा यह तो उस्ताद साहब से पूछना पड़ेगा। उसने कहा कि जाएं और उस्ताद साहब से पता करके आएं। लिहाज़ा यह नौजवान अपने उस्ताद के पास पहुँचा और कहा रात यह

वाक़िआ पेश आया। अब आप बताएं कि निकाह सलामत रहा या तलाक़ वाक़ेअ हो चुकी है। उनके उस्ताद यह बात सुनकर मुस्कराए और फ़रमाने लगे कि जाओ तुम मियाँ-बीवी वाली ज़िंदगी गुज़ारो क्योंकि एक लाख अहादीस मुझे इस तरह याद हैं कि जिस तरह लोगों को सूरः फ़ातिहा याद होती है, सुब्हानअल्लाह। यह क़ुव्वते हाफ़्ज़ा की बरकत थी जो अल्लाह तआला ने अता कर दी थी।

इमाम शाफ़ई रह० का ज़ौक़े इबादत

इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि एक बार मैं मिना के बाज़ार में जा रहा था। एक बूढे आदमी ने मुझे देखा तो कहने लगा कि तुझे अल्लाह का वास्ता, तू मेरी दावत को क़बूल कर ले। फ़रमाते हैं कि मैं नौजवान था, उठती जवानी थी। मैंने दावत क़बूल कर ली। उस बूढ़े ने उसी वक़्त अपनी गठरी खोली और उसमें से जो कुछ भी गुड़ वग़ैरह था उठाकर दस्तरख़्वान पर रख दिया। कहने लगा कि खाएं। फ़रमाते हैं कि मैंने बेतकल्लुफ़ी से खाना शुरू कर दिया। वह बड़े मियाँ थोड़ी देर मुझे देखते रहे। फिर कहने लगे, लगता है कि तू क़ुरैशी है। मैंने कहा, हूँ तो सही लेकिन आपको कैसे पता चला? कहने लगा कि क़ुरैशी लोग दावत देने में भी बेतकल्लुफ़ होते हैं और क़बूल करने में भी बेतकल्लुफ़ होते हैं। मैंने कहा, ठीक है।

मैंने खाने के दौरान उनसे पूछा कि आप कहाँ से आए है? कहने लगे, मदीना से हज करने आए हैं। मैंने इमाम मालिक रह० की बातें पूछीं। उन्होंने कुछ सुनायीं। जब उन्होंने इमाम मालिक रह० के बारे में मेरा शौक़ और जज़्बा देखा तो मुझे कहने लगे,

क्या आप चाहते हैं कि इमाम मालिक रह० की ज़ियारत करें? मैंने कहा, हाँ। कहने लगे कि यह जो पीले रंग का ऊँट खड़ा है यह ख़ाली है। हमने कल मदीना जाना है। अगर आप चाहते हैं तो यह ऊँट हम आपके हवाले कर देते हैं। आप आराम से मदीना पहुँच जाएंगे। इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि मैंने भी इरादा कर लिया। मैं उस ऊँट पर सवार होकर मदीना की तरफ़ रवाना हुआ। मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा जाने में हमें सोलह दिन लगे और सोलह दिन में मेरे सोलह क़ुरआन मजीद मुकम्मल हो गए। आजकल कई लोगों को परेशानी होती है कि एक दिन में एक क़ुरआन कैसे पढ़ लिया।

रोज़ाना तीस पारों की तिलावत

क़रीब के ज़माने की बात सुन लें। हज़रत शेखुल हदीस रह० ने खुद "यादे अय्याम" में अपने बारे में लिखवाया है कि जिन दिनों महराब (मुसल्ला) सुनाता था यानी तरावीह पढ़ाता था तो मेरा मामूल था कि जो पारा पढ़ना होता था मैं उसे दिन में तीस मर्तबा पढ़ लिया करता था। इस तरह एक क़ुरआन पाक की तिलावत के बराबर तिलावत हो जाती। यह तो क़रीब के ज़माने के लोग हैं जिनकी इन गुनाहगार आँखों ने भी ज़ियारत की है।

इमाम शाफ़ई रह० का बेमिसाल हाफ़िज़ा

आजकल तो हाजी हज़रात आठ दिन मस्जिदे नबवी में गुज़ार कर आते हैं और एक क़ुरआन पाक पढ़कर महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तोहफ़ा देकर नहीं आते। बेअमली का यह हाल है। इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि जब मैं मस्जिदे नबवी पहुँचा

तो देखा कि नमाज़ के बाद एक बड़ी उम्र के आदमी एक ऊँची जगह पर बैठ गए। उन्होंने एक चादर बांधी हुई थी और दूसरी ऊपर लपेटी हुई थी। उन्होंने क़ाला क़ाला रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहना शुरू कर दिया। मैं समझ गया कि यही इमाम मालिक रह० हैं। ये वे दिन थे जब इमाम मालिक रह० अहादीस का इमला करवा रहे थे। मैं भी बैठ गया। मेरे पास लिखने के लिए कुछ भी नहीं था। मैंने सुनना शुरू कर दिया। मुझे अपने सामने एक तिनका पड़ा नज़र आया तो मैंने तिनका उठा लिया और तिनके से अपनी हथेली के ऊपर वही अलफ़ाज़ लिखने शुरू कर दिए। दूसरे लोग तो क़लम के साथ कागज़ पर लिख रहे थे और मैं उस तिनके के साथ अपनी हथेली पर लिख रहा था। कभी-कभी मैं वह तिनका ज़बान से लगा लेता जैसे क़लम को दवात में डालकर स्याही लगाते हैं।

इमाम मालिक रह० ने एक सौ सत्ताइस हदीसें उस महफ़िल में लिखवायीं यहाँ तक कि अगली नमाज़ का वक़्त क़रीब हो गया तो उन्होंने महफ़िल मौक़ूफ़ कर दी। मैं क्योंकि उनके क़रीब बैठा हुआ था और मेरे ऊपर उनकी नज़र भी थी इसलिए उन्होंने मुझे इशारे से अपनी तरफ़ बुलाया। जब मैं क़रीब आया तो पूछा नौजवान! आप कहाँ से आए हैं? मैंने बताया कि मक्का मुकर्रमा से आया हूँ। मेरा नाम मुहम्मद बिन इदरीस है। पूछने लगे कि आप हथेली पर क्या लिख रहे थे? अर्ज़ किया हदीस पाक। कहने लगे, दिखाओ। जब हथेली देखी तो साफ़, कुछ भी नज़र न आया। कहने लगे कि इस पर तो कुछ नहीं लिखा हुआ। मैंने कहा, मैं तो अपने मुँह से नमी लेकर उसके साथ लिख रहा था। फ़रमाने लगे

कि यह तो हदीस पाक के अदब के ख़िलाफ़ है। मैंने कहा कि हज़रत बात यह है कि मैं मुसाफ़िर हूँ, मेरे पास न काग़ज़ है न क़लम। मैं ज़ाहिर में एक अमल कर रहा था कि जैसे इमला कर रहा हूँ मगर हक़ीक़त में तो मैं अपने दिल पर लिख रहा था। हज़रत इमाम मालिक रह० ने फ़रमाया, यह तो तब मानें जब उनमें से दस हदीसे सही मतन और सनद के साथ सुना दो। फ़रमाते हैं कि मैंने पहली हदीस से सुनाना शुरू किया। एक सौ सत्ताइस हदीसें मतन, सनद और उसी तर्तीब के साथ सुना डालीं। तो यह क्या चीज़ थी? यह क़ुव्वते हाफ़िज़ा में बरकत थी। एक बार सुनने से ही हदीसें ज़बानी याद हो गयीं।

हज़रत शेखुल हिन्द रह० का हाफ़िज़ा

क़रीब के ज़माने में हमारे अकाबिरीन उलमा देवबंद अरजुमंद के उलूम में अल्लाह तआला ने बहुत बरकत अता की थी। एक बार शेख़ुलहिंद मौलाना महमूदुल हसन रह० ने अपने शागिर्द से फ़रमाया कि बारिश का मौसम अभी ख़त्म हुआ है और बारिश के मौसम में किताबों को नमी की वजह से दीमक लगने का ख़तरा बढ़ जाता है तो बेहतर है कि हम ये किताबें बाहर धूप में रख दें। अच्छी तरह धूप लग जाएगी तो अंदर रख देंगे। अगर किसी की जिल्द ख़राब हुई और सफ़्हा सही न हुआ तो उसे भी ठीक करेंगे। लिहाज़ा वह शागिर्द यह काम करने लग गया।

उस ज़माने में ज़्यादा किताबें मख़्तूता (हाथ की लिखी हुई) होती थीं। शागिर्द ने एक किताब निकाली और कहने लगा, हज़रत! इसके तो पाँच छः सफ़्हे दीमक ने चाट लिए। हज़रत ने फ़रमाया कि उस जगह पाँच छः सफ़्हे सफ़ेद लगा दो। उसने सफ़ेद

काग़ज़ लगाकर धूप में रख दिया। जब सूख गए तो कहने लगा, हज़रत! अब क्या करूं? फ़रमाने लगे, भई! जो इबारत मौजूद नहीं वह उस पर लिख दो। उसने कहा, हज़रत! मैंने तो यह किताब पिछले साल पढ़ी थी। मुझे तो ज़बानी याद नहीं है। हज़रत ने पूछा, बताओ कौन सी किताब है? उसने कहा 'मेबज़ी'। हालाँकि यह किताब छोटी सी है लेकिन मुश्किल किताबों में से है। हज़रत रह० ने फ़रमाया : कहाँ से किताब की इबारत ख़त्म हुई है? उसने आख़िरी लफ़्ज़ बता दिया। हज़रत रह० ने आगे लिखवाना शुरू कर दिया। उसी जगह बैठे हुए इबारत के कुछ सफ़्हे अपनी याद्दाश्त से ज़बानी लिखवा दिए। यह इल्म की बरकत थी। किताब पढ़े हुए सालों गुज़र जाते थे मगर इबारत याद रहती थी।

एक दीनार की बरकत

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० का एक मुरीद बड़ा परेशान होकर कहने लगा हज़रत! हज का इरादा है लेकिन कुछ पास नहीं है। फ़रमाया, हज पर जाओ और मेरी तरफ़ से ये दीनार लेकर जाओ। उसने कहा बहुत अच्छा। वह हज़रत से दीनार लेकर बाहर निकला। अभी बस्ती के किनारे पर पहुँचा ही था तो देखा कि एक क़ाफ़िला जा रहा है। उसने क़ाफ़िले वालों को सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया। पूछा भाई बताओ कहाँ का इरादा है? उन्होंने कहा हज पर जा रहे हैं। मैंने कहा मैं भी हज पर जा रहा हूँ मगर मैं तो पैदल चलूँगा। वह कहने लगा एक आदमी ने हमारे साथ जाना था वह बीमार हो गया। जिसकी वजह से वह पीछे रह गया है। उसका ऊँट ख़ाली है, आप उस पर सवार हो जाइए। यह आदमी ऊँट पर बैठ गया। अब जहाँ क़ाफ़िले वाले रुकते और

खाना पकाते, उसको मेहमान समझ कर साथ खिलाते। पूरा हज का सफ़र इसी तरह तय किया। आख़िर उनके साथ हज करके वापस आया और बस्ती के किनारे पर उन्होंने वापस उतार दिया। उसको कहीं भी ख़र्च करने की नौबत पेश नहीं आई। शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ कहने लगा हज़रत! अजीब हज किया, मैं तो मेहमान ही बनकर फिरता रहा और अब यहाँ पहुँच गया हूँ। हज़रत ने फ़रमाया कि तुम्हारा कुछ ख़र्च हुआ? अर्ज़ किया कुछ भी नहीं ख़र्च नहीं हुआ। फ़रमाने लगे मेरा दीनार वापस कर दो। अल्लाह वालों का एक दीनार भी ख़र्च नहीं होता। बरकत ऐसी चीज़ होती है। अल्लाह तआला इस दीनार को ख़र्च ही नहीं होने देते। यह माल में बरकत थी जो अल्लाह तआला ने अता फ़रमा दी थी।

एक सबक़ आमोज़ वाक़िआ

हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद अब्दुल मलिक रह० चौक क़ुरैशीवाले अपने आपको बकड़वाल कहा करते थे। बहुत बड़े शेख़ थे उन्होंने यह वाक़िआ मस्जिद में बैठकर बा-वुज़ू सुनाया और इस आजिज़ ने मस्जिद में बैठकर बा वुज़ू सुना। अब मस्जिद में बा वुज़ू आपको सुना रहा हूँ। पूरी ज़िम्मेदारी के साथ, अलफ़ाज़ में तब्दीली हो सकती है, ख़ुलासे में तब्दीली नहीं हो सकती। समझ गए तो यह रिवायत बिलमानी है कि ख़ुलासा बिल्कुल वही होगा और अलफ़ाज़ अपने होंगे।

फ़रमाने लगे कि मैं अल्लाह! अल्लाह! किया करता था और अपने शेख़ की बकरियाँ चराया करता था। बकरियाँ ख़ुद भी खाती और मैं भी उनको घास तोड़ तोड़ कर उनको ख़िलाता। जब

बकरियाँ वापस आतीं तो मैं शाम को घास की एक गठरी भी सर पर ले आता कि रात को भी बकरियाँ घास खाएं। मेरे दोस्त अहबाब तो हज़रत रह० की सोहबत में बैठते और मैं हज़रत रह० की बकरियाँ चराया करता था।

एक दफ़ा ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० को अल्लाह तआला की तरफ़ से इशारा हुआ कि अब्दुल मलिक को ख़िलाफ़त दे दो। फ़रमाते हैं कि जब ख़िलाफ़त मिली तो मैं बहुत हैरान हुआ कि मैं तो इस क़ाबिल नहीं था। एक दो घंटे तो रोता ही रहा, दूसरे ख़लीफ़ाओं ने तसल्ली दी कि जब अल्लाह तआला ने एक बोझ सर पर रखा है तो उठाने की तौफ़ीक़ भी देंगे। कहने लगे कि मैंने दिल अपने दिल में नीयत कर ली कि मैं तो कुछ भी नहीं हूँ। अगरचे हज़रत रह० ने यह अमानत दे दी है मगर मैं यह आगे किसी को देने का अहल नहीं। इसलिए मैं किसी आदमी को बैअत नहीं करूंगा। इस तरह हज़रत की ख़िदमत में एक साल गुज़र गया।

एक दफ़ा सर्दियों के मौसम में आग सेंक रहे थे कि मेरी तरफ़ ग़ुस्से से देखा। मेरे तो पाँव के नीचे से ज़मीन निकल गई। मैंने पूछा हज़रत! ख़ैरियत तो है? फ़रमाने लगे अभी अभी मुझे कश्फ़ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार नसीब हुआ है। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अब्दुल मालिक से कहो कि इस नेमत को तक़सीम करे वरना हम इस नेमत को वापस ले लेंगे और क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से यह हुक्म हुआ है इसलिए अपना बिस्तर उठाओ और जैसे ही अंधेरा ख़त्म हो अपने घर जाओ। वहाँ जाकर लोगों को अल्लाह अल्लाह सिखाओ। मैं तो रोता रह गया और हज़रत ने

मेरा सामान मेरे सर पर रखा और ख़ानक़ाह से रुख़्सत कर दिया। फ़रमाने लगे मैंने निकलते निकलते कहा हज़रत! मैं अब कोई काम करने के क़ाबिल नहीं हूँ क्योंकि इतने साल ज़िक्र करने में गुज़ार दिए इसलिए मेरे लिए रिज़्क़ की दुआ फ़रमा दें। फ़रमाया कि ﴿إن الله مع الصابرين﴾ अल्लाह सब्र वालों के साथ है। मेरे क़रीबी ताल्लुक़दारों और रिश्तेदारों में कोई एक रिश्ता घर वालों ने पहले ही तय किया हुआ था। लिहाज़ा घर आते ही माँ-बाप ने मेरी शादी कर दी। शादी भी अजीब कि उसके बाद हमारे पास खाने के लिए कुछ होता ही नहीं था। बीवी मुझे ऐसी साबिरा मिली कि वह मुझे कहती कि आप पेड़ के पत्ते ही ले आएं। मैं पेड़ के पत्ते लाता वह भी खा लेती मैं भी खा लेता और एक वक़्त का गुज़ारा कर लेते।

एक दिन मेरा एक पीर भाई मेरे घर आया। वह हज़रत रह० के पास गया हुआ था। जब वह आने लगा तो हज़रत रह० ने उसे एक छोटी सी दस किलो गेहूँ की बोरी दी और एक पर्ची दी और फ़रमाया कि यह अब्दुल मालिक को दे देना।

वह दोपहर को मेरे घर पहुँचा और दरवाज़ा खटखटाया, पसीने में तर, बोरी सर पर उठाई हुई थी। मैंने पूछा सुनाओ भाई कहाँ जा रहे हो? उसने कहा ख़ानक़ाह शरीफ़। वह यह समझा कि पूछ रहे हैं कि कहाँ से आ रहे हो? अब मैं कुछ पूछ रहा था वह कुछ बता रहा था। मैंने उसे बिठाया कि यह ख़ानक़ाह शरीफ़ जा रहा है और लंगर के लिए गेहूँ लेकर जा रहा है। घर आकर बीवी से कहा कि मेहमान के लिए खाना दो। उसने कहा घर में तो कुछ नहीं है। मगर बीवी समझदार थी। उसने मुझे कहा कि अगर वह हज़रत की ख़ानक़ाह के लिए गेहूँ ले जा रहा है तू उससे जाकर

इजाज़त मांग लो कि हम इस गेहूँ में से थोड़ी सी पीस लें, फिर उस आटे की रोटी पकाकर उसको खिला देते हैं। कहने लगे भला इसमें कौन सी शर्म की बात है। मैंने उसे कहा कि अगर इजाज़त हो तो इसी गेहूँ में से थोड़ी सी रोटी बना दी जाए। वह फ़रमाने लगे कि मैं यह समझा कि गेहूँ तो घर में भी पड़ी है लेकिन क्योंकि आप मेरे हज़रत से लाए हैं तो बरकत के लिए हम इस में से रोटी पका देते हैं। कहने लगे हाँ इसी में से पका दें। मैंने उसमें से थोड़े से गेहूँ लिए, बीवी को दी, उसने चक्की में डाले और आटा निकालकर और चक्की के पाटों को अच्छी तरह साफ़ करके पूरे आटे की रोटी पकाकर सामने रख दी।

जब मेहमान ने रोटी खा ली तो हम ने उसे लस्सी पिलाकर सुला दिया। सोने के बाद जब वह उठा तो उसने एक पर्ची दी। मैंने पूछा यह क्या है? उसने कहा यह भी हज़रत ने दी है। तब बात समझ में आई कि हज़रत रह० ने वह गेहूँ की छोटी सी बोरी इस आजिज़ की ख़ानक़ाह के लिए दी थी। कहने लगे मैं ख़ानक़ाह का लफ़्ज़ सुनकर हैरान हुआ। ख़ुद खाने को मिलता नहीं और लंगर के लिए बोरी आई है। मैंने बीवी को जाकर बताया, कहने लगी पढ़ो तो सही क्या लिखा है। मैंने पढ़ा तो लिखा हुआ था कि अब्दुल मालिक! तुम अल्लाह अल्लाह करो और करवाओ और इस गेहूँ को किसी बंद जगह में डाल दो और इस पर्ची को भी उसी में डाल देना और एक सुराख़ बना लेना और उसमें से तुम गेहूँ निकाल कर इस्तेमाल करते रहना। यह तुम्हारे लंगर के लिए है। नीचे लिखा था,

﴿ان الله مع الصابرين﴾

अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

मेरी बीवी ने एक बंद जगह में गेहूँ डाल दी और ऊपर से ढकना अच्छी तरह से बंद कर दिया। मेरी बीवी ने उसके नीचे गेहूँ निकालने के लिए सुराख़ बना दिया। वक़्त-वक़्त पर उसमें से कुछ गेहूँ निकालती और इस्तेमाल करती। अल्लाह का शुक्र है आज उस गेहूँ को इस्तेमाल करते हुए हमें चालीस साल गुज़र गए हैं। आज भी मेरी ख़ानक़ाह में दो तीन सौ सालिकीन तक का रोज़ाना मजमा रहता है और साल के आख़िर पर हज़ार से ज़्यादा लोग इज्तिमा में शरीक होते हैं। चालीस साल से हम लोग उसी गेहूँ को इस्तेमाल कर रहे हैं।

बरकत में कमी

आज बरकत की कमी की वजह से हम मारे-मारे फिरते हैं। हमारे आमाल में और माल में बरकत नहीं होती। बाज़ लोग अपने कारोबार की बात करते हुए कहते हैं कि हज़रत! पहले तो मिट्टी को हाथ लगाते थे तो सोना बन जाती थी और अब तो सोने को हाथ लगाते हैं तो मिट्टी बन जाता है। एक वक़्त था लाखों रुपए लोगों से लेने थे मगर आज लाखों देने हैं।

एक इबरतनाक वाक़िआ

एक आदमी को अल्लाह तआला ने इतनी बड़ी खेतीबाड़ी दी थी कि तीन रेलवे स्टेशन उसकी ज़मीन में बने हुए थे यानी पहला रेलवे स्टेशन भी उसकी ज़मीन में, दूसरा भी उसकी ज़मीन में और तीसरा भी उसकी ज़मीन में था। इतनी जागीर का मालिक, करोड़ोंपति बंदा था। एक बार दोस्तों के साथ शहर के मेन चौक में खड़ा बातें कर रहा था। दोस्तों ने कहा कि कारोबार में कुछ

परेशानियाँ हैं। वह ज़रा मूड में आकर कहने लगा, ओ भूखे नंगो! तुम्हारे पल्ले है ही क्या। कभी- कभी जब पेट भरकर खाने को मिल जाता है तो वह बंदा खुदा के लहजे में बोलना शुरू कर देता है। उसने दोस्तों को कहा, तुम परेशान रहते हो कि आएगा कहाँ से और मैं तो परेशान फिरता हूँ कि लगाऊँगा कहाँ पे। बस यह उज्ब का बोल अल्लाह तआला को नापसन्द आ गया। बीमार हो गया। कुछ महीनों बाद खुद तो दुनिया से रुख़सत हुआ और एक बेटा पीछे छोड़ गया। जवान उम्र बेटा जब सर पर बाप नहीं और करोड़ों का सरमाया हाथ में है तो उसके कई उल्टे सीधे दोस्त बन गए। उसको उन्होंने शराब और शबाब वाले कामों में लगा दिया। अब जवानी भी लुट रही है और माल भी लुटा रहा है। वह अपनी मस्तियाँ उड़ा रहा है किसी ने उसको यहाँ से लाहौर का रास्ता दिखा दिया। फिर किसी ने लाहौर से कराची का रास्ता दिखा दिया। किसी ने उसको जूए का रास्ता दिखा दिया। किसी ने कहा कि क्या तुम पाकिस्तान में पड़े हो चलो बाहर किसी मुल्क में चलते हैं। उसने उसे बैंकाक का रास्ता दिखा दिया। पानी की तरह से पैसा बहाया और जूएं में भी करोड़ों हारे यहाँ तक कि जितना बैंक में था सारा लग गया। ज़मीनें बिकना शुरू हुईं। आहिस्ता-आहिस्ता एक-एक मरब्बा ज़मीन बिकती गई और वह लगाता गया। एक वह वक़्त आया कि जब सारी ज़मीनें बिक गयीं। फिर वह वक़्त आया कि वह नौजवान जिस घर में रहता था उसको वह घर भी बेचना पड़ा। अब उसके पास न रहने के लिए घर था, खाने के लिए उसके पास कुछ नहीं था। जिस जगह पर उसके बाप ने बड़ा बोल बोला था उसका बेटा उसी जगह पर आकर खड़ा होता

और लोगों से भीख मांगा करता था, अल्लाहु अकबर कबीरा।

﴿اللهم انا نعوذبك من شرور انفسنا ومن سيآت اعمالنا.﴾

रिज़्क़ की बरकत की एक अजीब मिसाल

अच्छी तरह समझ लें कि हमारे मसाइल का हल बरकत में है। माल की बरकत, रिज़्क में बरकत, उम्र की बरकत, वक़्त की बरकत, इल्म की बरकत ग़र्ज़ जिस चीज़ में भी अल्लाह तआला बरकत दे देंगे वह चीज़ उसकी ज़रूरत से ज़्यादा हो जाएगी। चुनाँचे हमारे एक बुज़ुर्ग थे उनके बेटे ने कहा कि अब्बा जी! बकरत का लफ़्ज़ तो बड़ा सुनते रहते हैं मुझे वज़ाहत से समझाएं कि यह बरकत है क्या? फ़रमाने लगे कि इधर आओ। चुनाँचे वह उसे ले गए और अपने घर का गीज़र दिखाया। फ़रमाने लगे कि यह बरकत है। वह गीज़र देखकर बड़ा हैरान हुआ। कहने लगा, अब्बा जी! यह बरकत कैसे हो गई? वह कहने लगे कि बेटा! आप की उम्र बीस साल है और आपकी पैदाइश से पहले मैंने ये गीज़र लगवाया था। आज तक इसमें ख़राबी नहीं आई। इसी को रिज़्क़ में बरकत कहते हैं। तीस-तीस साल तक चीज़ें ख़राब ही नहीं होतीं। डाक्टर के पास जाना बंदे को याद नहीं होता। कभी सर में दर्द ही नहीं होता। यह रिज़्क़ में बरकत होती है।

असलाफ़ की ज़िंदगियों में बरकत

हमारे असलाफ़ की ज़िंदगियों में बरकत थी। इसलिए उनको दो रुपए काफ़ी होते थे और तीसरा रुपया जो मदरसे से मिलता था वह भी ग़रीबों में सदक़ा कर देते थे या वह भी उसी दारुलउलूम में वापस कर दिया करते थे और आज तो सुलेमान अलैहिस्सलाम

की मछली की तरह हमने मुँह खोले हुए हैं। बस रिज़्क़ डाला जा रहा है और हम कहते हैं ﴿هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ﴾ और है? और है?

सहाबा किराम के रिज़्क़ में बरकत

सहाबा किराम के माल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इतनी बरकत दी थी कि एक बंदा मदीना में अपने माल की ज़कात लेकर निकलता है कि किसी मुस्तहिक़ को दे सकूँ। सारा मदीने में फिरता, लोगों से पता करता मगर उसे एक बंदा भी ज़कात का मुस्तहिक़ नज़र नहीं आता था। अल्लाह तआला ने सब के रिज़्क़ में बरकतें दे रखी थीं। सब लेने की बजाए देने वाले थे।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के रिज़्क़ और औलाद में बरकत

हज़रत अनस फ़रमाते हैं कि नबी अलैहिस्सलाम ने मुझे दुआ दी कि अल्लाह! इसके रिज़्क़ और औलाद में बरकत अता फ़रमा। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ ऐसी पूरी हुई कि मेरे पास इतना माल था कि सोने की ईंटों को मैं लकड़ी काटने वाले कुल्हाड़े से तोड़ा करता था, माशाअल्लाह। फ़रमाते थे कि मेरे घर में दिरहम व दीनार का इतना ढेर लग जाया करता था कि उसके पीछे बंदा छिप जाया करता था। अल्लाह तेरी शान, औलाद इतनी कि मैंने अपनी ज़िंदगी में एक सौ ज़्यादा पोते पोतियाँ, नवासे, नवासियाँ अपनी आँखों से देखीं, सुब्हानअल्लाह।

बरकतों का हासिल होना कैसे मुमकिन है?

अगला सवाल यह ज़हन में आता है कि यह बरकत हमारी

ज़िंदगी में कैसे आएगी? अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا﴾ अगर ये बस्ती वाले ईमाल लाते और तक़्वा अख़्तियार करते ﴿لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ﴾ हम आसमान और ज़मीन से उनके लिए बरकतों के दरवाज़ों को खोल देते। तो मालूम हुआ कि तक़्वा और परहेज़गारी से इंसान की ज़िंदगी में बरकतें आती हैं। और जब इंसान परहेज़गारी के बजाए गुनाहगार बन जाता है तो फिर बरकतों के दरवाज़े बंद हो जाते हैं। अब इस दरवाज़े को खोलने का स्विच हमारे हाथ में है। इस दरवाज़े को खोलने की कुंजी हमारे हाथ में है। हम अगर गुनाहों वाली ज़िंदगी गुज़ारेंगे तो दरवाज़ा बंद हो जाएगा और अगर हम परहेज़गारी वाली ज़िंदगी गुज़ारेंगे तो दरवाज़ा खुल जाएगा–

हम इल्ज़ाम उनको देते थे क़ुसूर अपना निकल आया

शिकवे अल्लाह तआला के करते फिरते हैं और यह पता नहीं कि बरकतों को तो हमने रोका हुआ है। अल्लाह तआला बरकतें देते हैं लेकिन गुनाह उन बरकतों को पीछे हटा देते हैं।

परेशानियों की बारिश

यूँ समझिए कि परेशानियों की बारिश हो रही है और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत की चादर ने हमें परेशानियों की इस बारिश से बचाया हुआ है। लेकिन जब हम गुनाह करते है। तो इस चादर में एक सुराख़ हो जाता है। जितने गुनाह करते हैं उतने सुराख़ होते जाते हैं। इतने सुराख़ों से परेशानियाँ हमारे ऊपर आती हैं। कई लोगों ने तो इसको छलनी बनाया हुआ है और वे कहते हैं कि परेशानियों की बारिश बड़ी तेज़ है। हज़रत! अल्लाह तआला

हमारी दुआ सुनता नहीं, परेशानियों के अंदर हम तो हर वक़्त डूबे रहते हैं।

बरकत मांगने का तरीक़ा

इंसान सच्ची तौबा करे, अपने गुनाहों से माफ़ी मांगे, परवरदिगार आलम के दर पे आकर रोए, माफ़ी मांगे कि रब्बे करीम! मुझसे ख़ता हुई, मैं भूला रहा, मेरे मालिक मुझे माफ़ कर दीजिए, मैं बहुत परेशान हाल हूँ, मैं किस-किस को अपने दुखड़े सुनाऊँगा। मेरे परवरदिगार! मख़्लूक़ के सामने ज़लील होने से बचा लीजिए और अपने दर पर ही मुझे अता फ़रमा दीजिए। जब इंसान इस तरह तवज्जोह के साथ और मुहब्बत के साथ अल्लाह तआला से मांगेगा फिर अल्लाह तआला उसके पिछले गुनाहों को माफ़ कर देंगे ताकि आइंदा उसकी ज़िंदगी में बरकत अता फ़रमाएं।

हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने आज की इस महफ़िल में सच्ची तौबा करनी है। माफ़ी मांगनी है ताकि हम दीन का काम करें, नेकी का काम करें, तक़्वे और तहारत की ज़िंदगी गुज़ारें, अपने रब की याद वाली ज़िंदगी गुज़ारें और दर-दर धक्के खाने से हमारी जान छूट जाए।

दुआ मांगने की शर्त

मांगने की भी कुछ शर्ते होती हैं। अगर एक आदमी किसी के सामने हाथ फैला दे और अपना मुँह दूसरी तरफ़ कर ले तो वह कुछ देगा? नहीं बल्कि उसके मुँह पे एक थप्पड़ मारेगा। हमारा हाल यही होता है कि हम दुआ पढ़ रहे होते हैं और दिल की तवज्जोह कहीं और होती है। याद रखें! दुआएं पढ़ने से क़बूल

नहीं होतीं, दुआएं मांगने से कबूल हुआ करती हैं। आज हम में अक्सर दुआएं पढ़ने वाले हैं।

दुआ मांगना इसे कहते हैं कि जब दिल से निकल रही हो। याद रखना ﴿اِنَّ رَبِّیْ لَسَمِیْعُ الدُّعَا﴾ मेरा परवरदिगार दुआ को यक़ीनी बात है कि सुनता है बल्कि ज़बान से निकले हुए अलफ़ाज़ को ही नहीं वह दिल से निकली हुई दुआ को भी सुना करता है। परवरदिगार सुनता है खुदा के बंदो! इंसानों के दिल गूंगे होते हैं। वह परवरदिगार से कुछ मांगते ही नहीं। जब दिल मांगेगा परवरदिगार उसी वक़्त अता करेगा–

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है
पर नहीं ताक़ते परवाज़ मगर रखती है

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ.﴾

हिफ़ाज़ते क़ुरआन

"क़ुरआन" ऐसी किताब को कहते हैं जो बार-बार पढ़ी जाती हो जबकि "किताब" ऐसे कलाम को कहते हैं जो कि कागज़ पर लिखा हुआ किताबी शक्ल में महफ़ूज़ हो। क़ुरआन की हिफ़ाज़त भी इन्हीं दो तरीक़ों से होगी। एक बार-बार पढ़ने से सीने में क़ुरआन महफ़ूज़ होगा दूसरे लिखा हुआ क़ुरआन किताब के सफ़ीनों में महफ़ूज़ होगा।

हिफ़ाज़त क़ुरआन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ○ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا

يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

क़ुरआन मजीद के दो ज़ाती नाम

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का इर्शाद है :

﴿اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ○﴾

इस नसीहतनामे को हमने नाज़िल किया और इसकी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार भी हम हैं।

उलमा किराम ने क़ुरआने मजीद के पचपन सिफ़ाती नाम गिनवाए हैं मगर क़ुरआन मजीद के दो नाम ज़ाती हैं जो क़ुरआन ही से साबित हैं। एक नाम क़ुरआन जैसा ﴿لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ﴾ और दूसरा ﴿ذٰلِكَ الْكِتٰبُ﴾। क़ुरआन मजीद के ये दो नाम ज़ाती नाम हैं। अजीब बात तो यह है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने एक ही आयत में इन दोनों नामों को इकठ्ठा भी इर्शाद फ़रमाया है :

﴿اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ○ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ○ لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ○﴾

क़ुरआन मजीद के ये दोनों नाम हमें पैग़ाम दे रहे हैं कि इसकी

हिफ़ाज़त के दो तरीक़े हैं।

दो तरीक़ों से क़ुरआन मजीद की हिफ़ाज़त

"क़ुरआन" ऐसी किताब को कहते हैं जो बार-बार पढ़ी जाती हो, बहुत ज़्यादा पढ़ी जाती हो, जिसका ताल्लुक़ पढ़ने से हो जबकि "किताब" ऐसे कलाम को कहते हैं जो काग़ज़ के ऊपर लिखा हुआ किताबी शक्ल में महफ़ूज़ हो। क़ुरआन मजीद की हिफ़ाज़त भी इन्हीं दो तरीक़ों से होगी। एक बार-बार पढ़ने से सीने में क़ुरआन महफ़ूज़ होगा दूसरे लिखा हुआ क़ुरआन किताब के सफ़ीनों में महफ़ूज़ होगा।

तातारी फ़ितने में मुसलमानों का क़त्लेआम

इस उम्मत में क़ुरआन मजीद शुरू से लेकर आज तक महफ़ूज़ रहा है। इस दौरान मुसलमानों पर ज़वाल का वक़्त भी आया कि जब पूरी दुनिया में उनके पास हुकूमत नहीं थी। तातारी फ़ितने के अंदर बग़दाद के अंदर एक दिन में दो लाख से ज़्यादा मुसलमानों को ज़िब्ह किया गया। दरियाओं के पानी का रंग सुर्ख़ हो गया था। दरियाए फ़रात और दरियाए दजला में इतनी किताबें डाली गयीं कि एक महीने तक पानी काले रंग का होकर चलता रहा। इतनी किताबें डालीं गयीं कि किताबों का एक पुल बन गया। जिसके ऊपर से उनकी सवारियाँ गुज़रा करती थीं। दरिया में किताबों का पुल बन जाना कोई छोटी सी बात तो नहीं। कितनी ही किताबें डाली गई होंगीं?

नूर का ख़ज़ीना

इस दौरान काफ़िरों ने बड़ी कोशिश की कि मुसलमानों से

उनकी किताब (क़ुरआन मजीद) को छीन लिया जाए। लेकिन वे यह देखकर हैरान हुए कि काग़ज़ पर लिखी हुई किताब को तो उन्होंने दरिया में डाल दिया मगर सात साल का एक बच्चा खड़ा हुआ उसने "बिस्मिल्लाह" से पढ़ना शुरू किया और "वन्नास" तक पढ़ता चला गया। अब उनको परेशानी हुई कि बच्चे के सीने से क़ुरआन मजीद को कैसे निकालें? बच्चे का सीना नूर का ख़ज़ीना बन चुका था।

ईसाई और यहूदी आलिम की हार

इस आजिज़ को बैरून मुल्क में ऐसी जगहों पर बैठने का मौक़ा मिला जहाँ ईसाइयों का पादरी भी बैठा होता था, यहूदियों का रुबाई भी होता था और हिन्दुओं का पंडित भी होता था। गोया मुख़्तलिफ़ मज़हबों के आलिम होते थे और हर एक ने अपने अपने मज़हब के बारे में बात करनी होती थी।

एक बार एक ईसाई ने पूछा कि आइन्दा जब हमारी महफ़िल होगी तो हमें उस वक़्त क्या करना चाहिए? इस आजिज़ ने कहा कि हर-हर मज़हब वाले के पास जो "अल्लाह का कलाम" है उसकी तिलावत करनी चाहिए और पढ़कर समझाना भी चाहिए कि इसका क्या खुलासा है। इस बात पर सब तैयार हो गए।

चुनाँचे जब अगली दफ़ा पहुँचे तो उन्होंने सबसे पहले मुझे ही कहा कि आप ही इब्तिदा करें। इस आजिज़ ने सूरः फ़ातिहा पढ़ी और उसका खुलासा भी उनको समझाया क्योंकि यह फ़ातिहतुल किताब है। आजिज़ के बाद ईसाई की बारी थी। उसने बाइबल पढ़नी शुरू की। जब उसने बाइबल पढ़ी तो मैंने उससे कहा कि मुझे एक बात की वज़ाहत चाहिए। वह कहने लगा, क्या वज़ाहत

चाहते हैं? मैंने कहा, आप बाइबल किस ज़बान में पढ़ रहे हैं? कहने लगा, अंग्रेज़ी ज़बान में। मैंने कहा, आप अल्लाह का कलाम पढ़ें, अल्लाह का कलाम अंग्रेज़ी ज़बान में तो नाज़िल नहीं हुआ था क्योंकि यह बात तय थी कि हर मज़हब वाले के पास जो अल्लाह का कलाम है, वह पढ़ेंगे, इसलिए आप अल्लाह का कलाम पढ़ें। वह कहने लगा, जी यह तो हमारे पास नहीं है। हमारे पास तो सिर्फ़ अंग्रेज़ी तर्जुमा है जोकि इंसानों के अलफ़ाज़ हैं। आगे यहूदी बैठा था। वह कहने लगा फिर तो हमारे पास भी अल्लाह का कलाम नहीं है। मैंने पूछा क्यों? वह कहने लगा कि जिस ज़बान में हमारी यह किताब नाज़िल हुई है आज वह ज़बान भी दुनिया में कहीं मौजूद नहीं है। इस ज़बान को पढ़ने और समझने वाले ही मौजूद नहीं तो वह किताब कैसे पढ़ें।

आख़िर सबने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया कि पूरी दुनिया में सिर्फ़ दीन इस्लाम वाले लोग ऐसे हैं जिनके पास अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का कलाम सही शक्ल में आज तक मौजूद है। जब इस आजिज़ ने उन्हें बताया कि इस किताब के हमारे हाँ हाफ़िज़ भी मौजूद हैं तो वे बड़े हैरान हुए। आजिज़ ने कहा कि आपकी किताब के किसी एक सफ़हे का कोई हाफ़िज़ मुझे दिखाएं। अव्वल तो किताब ही महफ़ूज़ नहीं और जो कुछ मौजूद है उसके एक सफ़हे का भी कोई हाफ़िज़ नहीं। यह शर्फ़ अल्लाह तआला ने दीने इस्लाम को बख़्शा है।

एक पादरी का शौक़

एक पादरी साहब थे। उनको शौक़ हुआ कि मैं क़ुरआन मजीद का हाफ़िज़ देखूँ। अल्लाह तआला की शान देखिए कि इस

आजिज़ का बेटा हबीबुल्लाह भी वहाँ पहुँचा हुआ था। आजिज़ ने उसे बताया कि यह बच्चा इस वक़्त आधे क़ुरआन मजीद को हिफ़्ज़ कर चुका है और बाक़ी आधा क़ुरआन भी हिफ़्ज़ कर लेगा। वह बड़ा हैरान होकर देखने लगा। आख़िर उसने कहा कि मैं सुनना चाहता हूँ कि यह कैसे पढ़ता है। आजिज़ ने हबीबुल्लाह से कहा तुम दो रकअत में एक पारा पढ़कर सुनाओ। चुनाँचे बच्चे ने दो रकअत की नीयत बांधी और उसने एक पारा दो रकअत के अंदर पढ़ा।

उस पादरी की बीवी भी साथ थी। वे दोनों मियाँ-बीवी हैरान होकर देखते रहे कि यह तो किताब को बिल्कुल ही नहीं देख रहा है। इसके तो हाथ में भी कुछ नहीं है। इसके बावजूद बड़ी रवानी से पढ़ रहा है। उनको समझ ही न आए कि किस तरह एक बच्चा बिन देखे पूरे के पूरे एक पारे की नमाज़ के अंदर तिलावत कर रहा है। उस वक़्त एहसास हुआ कि वाक़ई दीने इस्लाम में कैसी बरकत है कि अगरचे वे लोग अपने मज़हब के पादरी थे मगर उस के बावजूद घुटने टेकने पर मजबूर हो गए।

पाँच साला हाफ़िज़ क़ुरआन

हारून रशीद के ज़माने में एक पाँच साला बच्चे को पेश किया गया। उसके बाप ने बताया कि यह बच्चा क़ुरआन मजीद का हाफ़िज़ है। हारून रशीद ख़ुद भी क़ुरआन पाक का हाफ़िज़ था। उसने कहा मैं बच्चे से क़ुरआन मजीद सुनूंगा। लिहाज़ा बाप ने बेटे से कहा, बेटा! क़ुरआन सुनाओ। वह बच्चा इतना छोटा था कि ज़िद करने लगा कि अब्बू! पहले मेरे साथ वादा करो कि आप मुझे गुड़ लेकर देंगे। उस ज़माने मे गुड़ ही चिविंगम होता था। बेटे

के इसरार पर बाप ने वादा किया कि हाँ मैं तुम्हें गुड़ की डली लेकर दूंगा। उसने कहा, अच्छा सुनाता हूँ। हारून रशीद ने पाँच जगहों से उससे क़ुरआन पाक सुना और उसने पाँचों जगहों से क़ुरआन पाक सही सही सुना दिया, सुब्हानअल्लाह।

नव्वे साल की उम्र में हिफ़्ज़े क़ुरआन

एक साहब का इस आजिज़ के साथ ताल्लुक़ है। कुछ अरसे पहले उन्होंने क़ुरआन मजीद का हिफ़्ज़ मुकम्मल किया। वह इस आजिज़ को फ़रमाने लगे कि दस्तारबंदी आपसे करवानी है। यह आजिज़ उनके हुक्म पर वहाँ पहुँच गया। जब उनकी दस्तारबंदी करवाई तो इस आजिज़ ने उनके सर के बाल, उनकी दाढ़ी के बाल, उनकी भवों, पलकों, मूंछों, बाज़ुओं और हाथों के बालों को देखा, आजिज़ को उनके पूरे जिस्म पर कहीं कोई काला बाल नज़र नहीं आ रहा था। नव्वे साल की उम्र में तो बंदा दुनिया की कई बातें भूल जाता है मगर इस उम्र में भी वह बूढ़ा क़ुरआन मजीद का हाफ़िज़ बन गया।

फ़ौरी बदला

जो बंदा क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ कर ले उसे फ़ख़्र नहीं करना चाहिए क्योंकि अल्लाह तआला को उजब बहुत नापसन्द है। किसी और गुनाह का फ़ौरी बदला मिले या न मिले। क़ुरआन मजीद का हाफ़िज़ अगर उजब करेगा यानी "मैं" दिखाएगा तो अल्लाह तआला उसको तो फ़ौरन ही बदला दे देंगे।

एक अजीब वाक़िआ

मौलाना मुफ़्ती जस्टिस तक़ी उस्मानी साहब दामत बरकातुहुम

ने अपनी किताब "तराशे" में एक अजीब वाक़िआ लिखा है कि एक आलिम फ़रमाया करते थे कि मुझ से दो काम ऐसे हुए कि कोई भी नहीं कर सकता। एक अच्छा और एक बुरा। अच्छा काम ऐसा हुआ कि कोई कर नहीं सकता और बुरा काम भी ऐसा हुआ कि कोई कर नहीं सकता। लोगों ने पूछा, कौन से काम? वह कहने लगे कि एक दफ़ा उलमा की महिफ़ल में तज़्किरा हुआ कि फ़ला हाफ़िज़, फ़ला हाफ़िज़ और मेरे बारे में कहा यह आलिम तो बड़ा भारी है मगर हाफ़िज़ नहीं है। मैंने यह सुना तो मुझे ख़्याल आया कि मैं आज से ही हिफ़्ज़ शुरू करता हूँ। चुनाँचे उसी वक़्त मैंने क़ुरआन पाक के पारों को याद करना शुरू कर दिया और अल्लाह का शुक्र है कि मैंने तीन दिन के अंदर क़ुरआन पाक का हिफ़्ज़ मुकम्मल कर लिया, यह ख़ैर का काम ऐसा हुआ कि कोई कर नहीं सकता और एक बुरा काम भी मुझ से हुआ वह यह कि एक दफ़ा महफ़िल में बैठे बैठे मेरे बारे में बात चल पड़ी कि यह बड़ा अक़्लमंद है और कुछ ख़ूबियों का ज़िक्र हुआ। यह सुनकर मेरे अंदर भी ख़ुदपसंदी आ गई कि हाँ वाक़ई मेरे जैसा तो कोई अक़्लमंद है ही नहीं। मेरे अंदर जो ख़ुदपसन्दी और उजब की थोड़ी सी कैफ़ियत आई जिसका नतीजा मुझे यह मिला कि जुमा का दिन था, मैं जुमा की तैयारी करने के लिए घर गया, तैयारी के दौरान ख़्याल आया कि मैं अपने बाल और नाख़ुन काटूँ। जब मैंने नाख़ून काट लिए तो मैंने सोचा कि मेरी दाढ़ी के बाल काफ़ी बढ़ गए हैं, मैं उनको सुन्नत के मुताबिक़ नीचे से बराबर कर दूँ क्योंकि एक मुठ्ठी के बराबर बाल रखना सुन्नत है। इससे बड़े हो जाएं तो काटे जा सकते हैं। वह कहने लगे कि कि मैं एक मुठ्ठी भर अपने बाल काटने लगा तो बेख़्याली में नीचे से काटने के

बजाए ऊपर से काट बैठा। जब मस्जिद में आया तो मुझे बहुत शर्मिन्दगी हुई। हर बंदा पूछ रहा था और मैं बता रहा था कि मैं भूल गया हूँ। जिस बंदे के तीन दिन में क़ुरान मजीद हिफ़्ज़ करने के चर्चे दुनिया में थे उसकी बेवक़ूफ़ी की यह बात इस क़द्र मशहूर हुई कि उसकी हर जगह बदनामी हुई।

खुदपसन्दी की सज़ा

इस आजिज़ की अपनी ज़िंदगी का एक वाक़िआ है। हमारे मुहल्ले में एक हकीम साहब थे। कोने पर उनकी दुकान थी। उनका नाम अहमद बख़्श था। वह क़ुरआन पाक के बड़े अच्छे हाफ़िज़ थे और ख़ूब पढ़ते थे। हम उस वक़्त छोटे-छोटे थे। रमज़ानुल मुबारक का दिन था। किसी ने उनसे कहा कि आज सत्ताइस की रात होगी। अगर आज रात पूरा क़ुरआन सुना दें तो बड़ा मज़ा आएगा। उनका हिफ़्ज़ भी बड़ा पक्का था। वह कहने लगे अच्छा मैं आऊँगा। मस्जिद कौसर में उन्होंने सुनाना था।

उस वक़्त इस आजिज़ की उम्र नौ साल के क़रीब थी। आजिज़ भी वहाँ गया। हाफ़िज़ साहब ने दो रकअत की नीयत बांध ली। उन्होंने एक रकअत में 29 पारे पढ़े। उन 29 पारों में उनकी कोई ग़लती भी न आई। पीछे आठ दस हाफ़िज़ खड़े थे। वे सब चुप रहे। कहीं कोई अटकन भी पेश नहीं आई कि पीछे से कोई लुक़्मा मिल जाता। पढ़ते चले गए। 29 पारों के बाद उन्होंने रुकू किया। फिर दूसरी रकअत के लिए खड़े हुए। अल्लाह तआला की शान देखिए कि उन्होंने आख़िरी पारा भी काफ़ी पढ़ लिया। जब सूरः इख़्लास यानी क़ुल हुवल्लाहु अहद पढ़ने लगे तो भूल गए, कोई मुताशाबह लग गया। वह इस सूरत से निकलना चाहते थे मगर

निकल नहीं पाते। जब दो तीन दफ़ा उसको लौटाया और आगे न निकल सके तो उस वक़्त एक ग़ैर हाफ़िज़ बंदे ने उनको लुक़्मा दिया और हाफ़िज़ ने ग़ैर हाफ़िज़ से लुक़्मा लेकर सूरः इख़्लास पूरी की।

नमाज़ के बाद लोग बड़े ख़ुश थे मगर क़ारी साहब को पसीना आया हुआ था। जब उठकर जाने लगे तो किसी ने पूछा हज़रत! क्या बना? कहने लगे, न पूछो। 29 पारे पढ़ लिए तो ख़ुशी हुई। जब सूरः लहब पढ़ रहा था तो उस वक़्त दिल में ख़ुदपसन्दी की कैफ़ियत पैदा हुई कि इस वक़्त मेरे जैसा बंदा पूरे शहर में कोई नहीं होगा जो दो रकअत में क़ुरआन सुना सके। मेरे दिल में यह बात पैदा हुई तो अल्लाह तआला ने मुझे सूरः इख़्लास में भूल लगवा दी। यह बता दिया कि यह तेरा कमाल नहीं, यह तो मेरा कमाल है। यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का कमाल होता है कि वह अपने बंदे के लिए क़ुरआन पाक का याद करना आसान फ़रमा देते हैं। इसलिए हाफ़िज़ों को अल्लाह तआला का एहसान मानना चाहिए।

एक मिसाली मदरसे का होनहार तालिबे इल्म

पाकिस्तान के एक तहफ़ीज़ुल क़ुरआन के मदरसे के उस्ताद, नाज़िम और मोहतमिम का इस आजिज़ से ताल्लुक़ है। उन्होंने अपने हाँ आने की दावत दी। उनके मदरसे के बारे में मश्हूर है कि जो बच्चा वहाँ गरदान कर लेता है तो वह सारी ज़िंदगी क़ुरआन पाक नहीं भूलता। उनकी अपनी एक तर्तीब है जिससे वह याद करवाते हैं। ख़ैर जब वहाँ गए तो देखा कि वहाँ बच्चों के चेहरों पर वाक़ई क़ुरआन का नूर था।

आजिज़ ने उनसे पूछा कि आप बच्चों का इम्तिहान कैसे लेते हैं? वह कहने लगे कि हमारे हाँ तो सादा सा दस्तूर है। हम बच्चों का इम्तिहान लेने के लिए पाँच उस्ताद बिठा देते हैं और हर एक के पास अपना रजिस्टर होता है। बच्चे को सामने बिठाकर कहते हैं कि बच्चे! हमें पूरा क़ुरआन सुनाओ। छोटा सा सवाल पूछते हैं। बच्चा जब सुनाना शुरू करता है तो भी टाइम नोट किया जाता है और जब ख़त्म करता है तब भी टाइम नोट किया जाता है। जहाँ अटकता है वह भी लिखते हैं और जहाँ मुतशाबह लगता है वह भी लिखते हैं। वे हर-हर चीज़ लिख रहे होते हैं। पूरे क़ुरआन पाक का रिकार्ड बन रहा होता है। आजिज़ ने कहा, अच्छा रिकार्ड दिखाएं। उन्होंने रिकार्ड दिखाया। उसके बाद उन्होंने एक बच्चा दिखाया जिसकी उम्र आठ नौ साल होगी। वह कहने लगे, इस बच्चे ने अभी चंद दिन पहले क़ुरआन मजीद सुनाया है और अल्लाह तआला की शान देखें कि इस बच्चे ने अलहम्दुलिल्लाह से पढ़ना शुरू किया और एक महफ़िल के अंदर पढ़ते पढ़ते चार घंटे पैंतीस मिनट में उसने पूरा क़ुरआन मजीद पढ़ दिया और पूरे क़ुरआन मजीद में एक भी ग़लती नहीं आई। पाँच उस्ताद मिलकर बैठे और उनमें से कोई उस्ताद भी उसकी एक ग़लती न निकाल सका।

आलमी रिकार्ड में इन्दराज (एन्ट्री)

जीनियस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड में एक बच्चे का नाम दर्ज है कि उसने छः घंटे और कुछ मिनटों में क़ुरआन मजीद पढ़ा था। इस किताब में अगर उस बच्चे का नाम आ सकता है तो चार घंटे पैंतीस मिनट में पढ़ने वाले बच्चे का नाम क्यों नहीं आ सकता। आलमी रिकार्ड में इसकी एन्ट्री भी होनी चाहिए।

ख़ुदाई फ़ौज

यह अल्लाह तआला का कितना बड़ा करम है कि इस उम्मत में उसने इस तरह के बच्चे पैदा कर दिए। यह ख़ुदाई फ़ौज है। ये हिज़्बुर्रहमान हैं। इसीलिए फ़रमाया ﴿ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا﴾ (फिर हमने उन लोगों को किताब का वारिस बना दिया जो हमारे चुने हुए बंदे थे।) जो हमारे प्यारे थे, जो बड़े लाडले थे। ये क़ुरआन पाक के हाफ़िज़ बच्चे अल्लाह तआला के फ़ौजी हैं जिन्होंने क़ुरआन पाक को अपने सीनों के अंदर महफ़ूज़ किया।

हाफ़िज़े क़ुरआन की शफ़ाअत

हाफ़िज़े क़ुरआन को रोज़े महशर दस ऐसे आदमियों की शफ़ाअत करने की इजाज़त दी जाएगी जो अपने गुनाहों की वजह से जहन्नम में जाने के क़ाबिल होंगे। उसकी शफ़ाअत से अल्लाह तआला उनको जहन्नम से निकालकर जन्नत अता फ़रमा देंगे।

एक मिसाल से वज़ाहत

इसकी मिसाल आप यूँ समझें कि आपने हज पर जाने के लिए अपनी बुकिंग करवा ली लेकिन आपको जहाज़ की सीट न मिल रही हो और एक दिन बाक़ी रह जाए पता चले कि कल आख़िरी जहाज़ जाएगा। आप भाग दौड़ करते हैं कि भई कहीं से मुझे भी जहाज़ की सीट मिल जाए। आप मैनेजर के पास पहुँचें मगर वह कहे कि सीट तो कोई भी ख़ाली नहीं। आपका कितना दिल करेगा कि मैं किसी तरह पहुँच जाऊँ क्योंकि पैसे भी दे दिए हैं, टिकट भी बनवाई हुई है। जहाज़ में सीट न मिलने की वजह से मैं तो हज से महरूम हो जाऊँगा। अब ऐसे में अगर वह मैनेजर कह दे

कि वह जो फ़लाँ बड़ा अफ़सर बैठा है उसके अख़्तियार में दस सीटें हैं, वह अपनी मर्ज़ी से दस बंदों को भेज सकता है। तुम उसकी मिन्नत कर लो। वह तुम्हें भेज सकता है। अब यह बंदा जब उसके पास जाएगा तो कितनी मिन्नत समाजत करेगा। वह उसके पाँव पकड़ने से भी नहीं झिझकेगा। उसको अगर बता दिया जाए कि जनाब! वह आपका बेटा है तो उसके दिल में कितनी खुशी होगी कि अच्छा मेरे बेटे के पास दस सीटें हैं। फिर तो मुझे आसानी से सीटें मिल जाएंगी।

अब क़ियामत के दिन का तसव्वुर कीजिए कि जब आदमी को आँखों से नज़र आ रहा होगा कि अभी मुझे जहन्नम में डाल दिया जाएगा। उसके सामने आमाल खुले हुए होंगे, बचने की कोई सूरत नज़र नहीं आती होगी और जहन्नमियों का इबरतनाक अंजाम देख रहा होगा। ऐसे वक़्त में जब उससे कहा जाएगा कि तेरे बेटे के पास दस बंदों को बख़्शवाने की गुंजाइश मौजूद है तो उस वक़्त उसके दिल में बेटे की क़्या क़द्र आएगी। जब उसे एहसास होगा क्योंकि चीज़ की उस वक़्त क़द्र आती है जब उसकी ज़रूरत पड़ती है। जब ज़रूरत नहीं होती तो उसकी क़द्र भी नहीं आती। जब आग सामने देखेगा, जहन्नमियों को जलता देखेगा और फ़रिश्तों को देखेगा और कहेगा कि हाँ वह मुझे जहन्नम में डालने के लिए पकड़कर ले जा रहे हैं और ऐसे वक़्त में उसे वह बेटा नज़र आएगा जिसको अल्लाह तआला ने दस बंदों की शफ़ाअत की इजाज़त दी होगी और वह शफ़ाअत करेगा कि यह मेरे अब्बू हैं, इनको जन्नत में जाने की इजाज़त दी जाए। उस वक़्त कितना बड़ा ग़म हट जाएगा और कितनी बड़ी मुसीबत कट जाएगी। उस वक़्त बंदा एहसास करेगा कि काश! मेरे सोर बच्चे हाफ़िज़ होते।

औलाद के लिए तर्बियती क़ायदा

जिन लोगों ने अपने बच्चों को दुनिया का इल्म पढ़ाया लेकिन दीन से अंजान रखा वह हसरत और अफ़सोस के साथ हाथ मलेंगे कि काश हमने भी किसी बेटे या बेटी को हाफ़िज़ बनाया होता है, हमने भी आगे कोई इंतिज़ाम किया होता। लिहाज़ा आज वक़्त है अपने बच्चे को हाफ़िज़, बच्ची को हाफ़िज़ा बनाएं। हम कब कहते हैं कि उनको अंग्रेज़ी स्कूलों में न भेजो या कालेजों में न पढ़ाओ। इतना कहते हैं कि उनको पहले मुसलमान बनाओ, फिर बेशक जिस काम में मर्ज़ी लगाओ। यह तो कोई दस्तूर नहीं कि बच्चे को इस्लाम और दीन सिखाने के बजाए हम शुरू से ही टिट-मिट सिखानी शुरू कर दें। यह तो नाइंसाफ़ी की बात है।

आप अपने बच्चों को पाँच जमाअतें पढ़ाइए और उसके बाद हमारे मदरसों में भेजिए। हमारे पास वे बच्चे कम व बेश दो साल में क़ुरआन पाक के हाफ़िज़ बन जाते हैं। जब पाँच जमाअत पास बच्चा दो साल में हाफ़िज़ बन जाएगा तो तीसरे साल में उस बच्चे को साथ-साथ ट्यूशन पढ़ा दें। वह अपने स्कूल के साथियों के साथ मिडिल का इम्तिहान पास कर लेगा क्योंकि अल्लाह पाक ने उसके हाफ़िज़े की क़ुव्वत को बढ़ा दिया होगा। फिर उसको मैट्रिक करवाने के बाद दुबारा हमारे मदरसे में भेजें ताकि हम उसको इब्तिदाई उलूम पढ़ा सकें। दिन में वह बेशक स्कूल जाए और शाम को हमारे पास आए। दो साल तक कॉलेज में भी पढ़े और मदरसे में भी पढ़े। फिर आप उसको चार साल के लिए फ़ारिग़ कर दें। यह चार साल मदरसे में लगाकर बुख़ारी शरीफ़ तक दर्से निज़ामी का कोर्स कर सकता है। फिर अल्लाह तआला की शान

देखिए कि पाकिस्तान के क़ानून के मुताबिक़ अगर वह बी०ए० की इंगलिश का इम्तिहान दे दे तो उसका वफ़ाक़ुल मदारिस का सर्टिफ़िकेट एम०ए० के बराबर समझा जाता है। इस तरह एम०ए० की तालीम भी मुकम्मल हो जाएगी और आपका बेटा आलिम भी बन जाएगा। आप इस तरह अपने बच्चे को दीन भी सिखाते रहें।

पी०एच०डी० डाक्टर की परेशानी

एक पी०एच०डी० डाक्टर साहब अपने बाप का जनाज़ा पढ़ने लगे तो वह बहुत रो रहे थे। किसी ने कहा, क्यों इतना रोते हो? कहने लगे कि बाप ने मुझे पी०एच०डी० डाक्टर तो बना दिया मगर रोता इस बात पर हूँ कि मुझे उसका जनाज़ा पढ़ना भी नहीं आता था। मैं अपने सगे बाप की नमाज़ जनाज़ा भी न पढ़ सका। अगर आप भी बच्चे को पी०एच०डी० करवा लेंगे और वह आपका जनाज़ा भी नहीं पढ़ सकेगा तो फिर क्या फ़ायदा होगा।

दुगना अज़ाब और लानतों की बारिश

वे बच्चे जिनको आप दुनिया के लिए भेजेंगे, दीन नहीं सिखाएंगे तो फिर कल क़ियामत के दिन वे आप पर मुक़दमा दायर करेंगे। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि वे अल्लाह के हुज़ूर में खड़े होकर कहेंगे :

﴿رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا﴾

ऐ हमारे परवरदिगार! हम ने अपने बड़ों की पैरवी की और उन्होंने हमें रास्ते से गुमराह कर दिया।

उन्होंने कहा था इंजीनियर बनना, डाक्टर बनना, पायलेट बनना, हमने बनकर दिखा दिया। हमें तो दीन की तरफ़ किसी ने मोड़ा ही नहीं था। ऐ अल्लाह! यह इनका क़सूर है। अगर ये दीन की तरफ़ मोड़ते तो हम लग जाते। ﴿رَبَّنَا اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ﴾ (एक परवरदिगार हमारे इन माँ-बापों को दुगना अज़ाब दीजिए।) ﴿وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا﴾ (और इन पर बहुत ज़्यादा लानतों की बारिश कर दीजिए।) यूँ औलाद माँ-बाप पर मुक़दमा करेगी कि ऐ अल्लाह! हमें इन्होंने भटकाया था। हमें सीधे रास्ते पर डालते तो हम लग जाते। मगर इन्होंने दुनिया कमाने पर लगा दिया और दीन से बेख़बर रखा, आप इन्हें दुगना अज़ाब भी दीजिए और इन पर लानतों की बारिश बरसाइए। अल्लाह तआला जवाब में फ़रमाएंगे ﴿لِكُلٍّ ضِعْفٌ﴾ तुम सबको दुगना अज़ाब दिया जाएगा। अल्लाह तआला हमें आख़िरत के अज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमाए और अपनी औलादों को अंग्रेज़ी तहज़ीब की भट्टी में झोंकने के बजाए दीने इस्लाम की ख़िदमत में लगाने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। (अमीन सुम्मा आमीन)

﴿وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

ताइदे ग़ैबी

हम अगर अल्लाह से अपना ताल्लुक़ मज़बूत कर लेंगे तो रब्बे करीम हमारी भी मदद फ़रमाएंगे। याद रखिए दुनिया की कोई ताक़त हमारी तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देख सकती। इन काफ़िरों की गीदड़ भपकियों से डरना मुसलमान का शेवा नहीं। डर तब लगता है जब दिल में चोर होता है। तारीख़ इस बात पर गवाह है कि ईमान वाले थोड़े थे या बहुत अमीर थे या ग़रीब थे, गोरे थे या काले थे, पहाड़ की चोटियों पर रहते थे या ज़मीन की पस्तियों में, जिस हाल में भी थे रब्बे करीम ने उनको हमेशा कामयाब फ़रमाया।

ताइदे ग़ैबी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ○ وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِىْ مَقَامٍ اٰخَرَ اِنْ

تَنْصُرُوْا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ○ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ

عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

ज़िद्दैन का मजमूआ

अल्लाह तआला अपनी सिफ़ात में कामिल है। बंदा अपनी सिफ़ात में नाक़िस है। इंसान को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ऐसे आज़ा से बनाया जो एक दूसरे की ज़िद हैं। मसलन आँख देख सकती है यानी बीना है बक़िया पूरा जिस्म नाबीना है। ये एक दूसरे की ज़िद हुए। कान सुन सकता है बाक़ी पूरा जिस्म सुन नहीं सकता। यह एक दूसरे की ज़िद हुए। ज़बान बोल सकती है बक़िया पूरा जिस्म बोल नहीं सकता। ये एक दूसरे की ज़िद हुए। दिमाग़ सोच सकता है बाक़ी पूरा जिस्म नहीं सोच सकता। ये एक दूसरे की ज़िद हुए। तो यह इंसान ज़िद्दैन का मजमूआ है। गोया इंसान ऐसे आज़ा से मिलकर बना है कि हर-हर अज़्व की अपना अकेलापन है और इन तमाम के मिलने से इंसान बनता है।

रूह की हैसियत

इस ज़िद्दैन के मजमूए में अल्लाह तआला ने एक ऐसी चीज़ को पैदा फ़रमाया है जिसे रूह कहते हैं। इस रूह की बदौलत ये सब ज़िद्दैन एक बनकर काम करते हैं। ये आज़ा अपनी ज़ात व सिफ़ात में एक दूसरे के मुख़ालिफ़ सही मगर रूह की मौजूदगी में ये जिस्मे वाहिद बनकर काम कर रहे होते हैं। अगर किसी इंसान को सर में दर्द महसूस हो रहा हो तो पाँव कभी डाक्टर के पास चलकर जाने से इंकार नहीं करेंगे। आँख कभी यह नहीं कहेगी कि मैं तो सो रही हूँ, यह मेरी प्रोबलम नहीं है, यह तो सर की प्रोबलम है। ज़िंदा इंसान के सर में तकलीफ़ होगी मगर पूरा जिस्म बेआराम होगा। पूरा जिस्म उसकी बेचैनी को महसूस कर रहा होगा।

अगर कोई दुश्मन सर पर वार करने की कोशिश करेगा तो हाथ फ़ौरन बचाव के लिए उठेंगे। पाँव भागकर जान बचाने की कोशिश करेंगे। हाथ और पाँव कभी सर को अकेला नहीं छोड़ेंगे कि यह हमारी प्रोबलम नहीं है, यह तुम्हारी प्रोबलम है। अगरचे जिस्म मुख़्तलिफ़ आज़ा से मिलकर बना है जो एक दूसरे की ज़िद हैं मगर रूह ने सब को एक कर दिया है यहाँ तक कि इसको जिस्मे वाहिद कहा जाता है।

रूह की मिसाल

अगर इस मिसाल को अच्छी तरह ज़हन में बिठा लें और हम अपने घर को देखें तो हमारा घर ऐसे लोगों से मिलकर बनता है जो अपनी हैसियत के लिहाज़ से एक दूसरे की ज़िद होते हैं।

मसलन घर में जो बाप का मक़ाम है वह कोई दूसरा नहीं पा सकता। बाप अपने बेटे का बाप है, बेटे का भाई या बेटे का बेटा नहीं बन सकता। बेटा अपने बाप के बेटा, बाप का कुछ और नहीं हो सकता। ये एक दूसरे की ज़िद हैं। जो पोज़ीशन बाप के पास है वह बेटे की नहीं और जो बेटे के पास है वह बाप के पास नहीं। इसी तरह जो हैसियत माँ के पास है वह बेटी के पास नहीं और जो बेटी के पास है वह माँ के पास नहीं। जो भाई के पास है वह बहन के पास नहीं। जो बहन के पास है वह भाई के पास नहीं। अपनी हैसियत से ये सब एक दूसरे से अलग हैं या एक दूसरे की ज़िद हैं। मगर अल्लाह तआला ने उनके अंदर भी एक ऐसी रूह को उतार दिया कि उस रूह की मौजूदगी में ये सारे लोग इसी तरह एक बनकर काम करते हैं जिस तरह रूह की मौजूदगी में जिस्म के सब आज़ा एक बनकर काम करते हैं और इस रूह का नाम "इस्लाम" है।

रूह के बग़ैर जिस्म की हैसियत

आप अगर जिस्म से रूह को निकाल दें तो सारे आज़ा एक दूसरे से अजनबी बन जाएंगे। अब इस मुँह से आप ज़बान खींचकर टुकड़े भी कर दीजिए मगर आँख से एक आँसू नहीं आएगा। उसके सर पर चोट रसीद कीजिए, पाँव कभी हरकत नहीं करेंगे। इसलिए कि जिस रूह के दम से उनमें जान थी और ये एक थे वह रूह निकल चुकी है। अब यह बेजान जिस्म है। इसी तरह जिस घर के अंदर इस्लाम ज़िंदा होगा उस घर के तमाम लोग ज़िंदा जिस्म की तरह होंगे। दिलों में मुहब्बतें होंगी और अगर घर का एक आदमी बीमार होगा तो दूसरे रातों को जागकर तीमारदारी

कर रहे होंगे। एक आदमी का ग़म सब का ग़म बनेगा। एक की ख़ुशी सबकी ख़ुशी बनेगी। आपस में मुहब्बतें होंगी और दिल एक दूसरे से पेवस्त होंगे। यह जिस्मे वाहिद की मिसाल हैं और जब दीन इस घर से निकाल दिया जाएगा तो घरवाले इस तरह एक दूसरे से बेताल्लुक़ हो जाएंगे जिस तरह जिस्म के आज़ा बेजान होकर एक दूसरे से अजनबी बन जाते हैं।

इस्लाम के बग़ैर घर की हैसियत

एक आदमी के जिस्म से रूह निकाल ली जाए और उसके नाक को बंद करके उसके मुँह के ज़रिए हवा पम्प कर दी जाए तो क्या उस हवा के भर जाने से वह जिस्म ज़िंदा हो सकता है? हर्गिज़ नहीं हो सकता। वह लाश जल्दी गल सड़ तो सकती है मगर ज़िंदा नहीं हो सकती। इसी तरह अगर किसी घर से इस्लाम को निकाल लिया जाए और किसी इज़्म को या इंसान के बने हुए किसी ज़िंदगी गुज़ारने के तरीक़े को घर में दाख़िल कर लिया जाए तो उस घर के अंदर वह मुहब्बतें और उलफ़तें ज़िंदा हो सकती हैं? कभी नहीं हो सकतीं। मुमकिन ही नहीं कि इंसान का बनाया हुआ कोई भी इज़्म घर के लोगों के अंदर मुहब्बतें पैदा कर दे जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का दीन पैदा कर देता है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला का फ़रमान है "यह जो सहाबा किराम के दिलों के अंदर मुहब्बतें पैदा कर दी ये अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का करम और एहसान है। ऐ महबूब! आप सारी दुनिया के माल व दौलत को ख़र्च कर देते तो भी दिलों में मुहब्बतें पैदा नहीं कर सकते थे। ये मुहब्बतें सिर्फ़ अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमा दीं हैं।"

क़ुरआन पाक का एजाज़

दीन हमारे मआशरे के हर घर के लिए रूह की तरह है। जिस घर से दीन के अहकाम निकल गए यूँ समझिए कि उस घर से इंसानियत की रूह निकल गई। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने महबूब को भेजा और वह किताबे हिदायत लेकर आए। वह नुस्ख़ा शिफ़ा लेकर आए। ऐसी किताब जो सदाक़तों का मजमूआ, हक़ीक़तों का ख़ज़ाना और सच्चाइयों से भरी हुई है। Ultimate realites of the Universe. इस किताब के अंदर परवरदिगार ने सच्चाइयाँ भर दीं। इस किताब को क़ुरआन कहा जाता है। यह हक़ाइक़ से भरी हुई किताब है जो इंसान को रास्ता दिखाने के लिए आई है। फ़रमाया :

﴿كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ﴾

इस किताब को हमने आपकी तरफ़ इसलिए नाज़िल किया कि आप इंसानों को अंधेरों से निकालकर रोशनी की तरफ़ लाएं।

यह अंधेरों से निकालकर रोशनी की तरफ़ लाने वाली किताब, यह भटके हुओं को सीधा रास्ता दिखाने वाली किताब, यह ज़िल्लत के गढ़ों में पड़े हुओं को बुलन्दियों पर पहुँचाने वाली किताब और यह रब्बेकरीम से बिछड़े हुओं को अपने परवरदिगार से मिलाने वाली किताब है, सुब्हानअल्लाह।

मेरे शेख़ फ़रमाया करते थे, "यह इंसानियत के लिए दस्तूरे हयात है, इंसानियत के लिए ज़ाब्ता हयात है, इंसानियत के लिए तरीक़ा हयात है बल्कि पूरी इंसानियत के लिए आबे हयात है।"

उसकी किताब को देखना भी इबादत है। इसे सुनना भी इबादत है, इसे समझना भी इबादत है और इस किताब पर अमल करना भी इबादत है। यह अजीब किताब है, जैसे दुनिया में लोहे को खींचने के लिए चुंबक होता है कि वह लोहे को अपनी तरफ़ खींचता है। इर्शाद बारी तआला है :

﴿وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ﴾

और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो तुम सुनो उसे और ख़ामोश रहो ताकि तुम पर रहमतें बरसाई जाएं।

मालूम हुआ कि जिस जगह पर क़ुरआन पढ़ा जाता है वहाँ पर रहमतें बरसती हैं। इसको अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने भेजा और मक़सद खुद बतला दिया। फ़रमाया :

﴿هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ﴾

वह ज़ात जिसने अपने रसूल को भेजा हिदायत देकर और सच्चा दीन देकर ताकि उसको तमाम अदयान (दीनों) पर ग़ालिब कर दे।

तो दीने इस्लाम दुनिया में भेजा ही इसलिए गया है ताकि उसने ग़ालिब आकर रहना है।

दीने इस्लाम का ग़लबा

इब्तिदा में काफ़िर यूँ समझते थे कि ये कुछ मुसलमान कोंपल की तरह हैं जब चाहेंगे उखाड़ फेंकेगे। यह शमा सी जल उठी जब चाहेंगे फूंक मारकर बुझा देंगे। बड़े मान थे उनके दिलों में अपनी ताक़त, दानाई और तदबीरों का बड़ा मान था। वे सोचते थे कि हम इनके साथ नरमी कर रहे हैं, नहीं तो जब चाहेंगे हम इनकी

गुद्दी दबा देंगे। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ﴾

ये इरादा करते हैं अल्लाह तआला के जलाए हुए नूर को अपनी फूंकों से बुझा देंगे और अल्लाह तआला ने इस नूर को मुकम्मल और कामिल करना है अगरचे काफ़िरों को यह बात अच्छी न लगे।

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़ंन्दाज़न
फूंकों से यह चिराग़ बुझाया न जाएगा

चुनाँचे रब्बेकरीम सहाबा किराम पर एहसान जतलाते हैं। फ़रमाते हैं :

وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ
النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

तुम याद करो उस वक़्त को जब तुम थोड़े थे ज़मीन में, कमज़ोर थे, तुम डरते थे कि कहीं उचक न लें। उसने तुम्हें ठिकाना दिया, अपनी मदद से तुम्हें मज़बूत किया, खाने को पाकीज़ा रिज़्क़ दिया ताकि तुम उसका शुक्र अदा करते रहो।

सहाबा किराम पर भी ऐसा वक़्त आया कि शुरू में कमज़ोरी थी। रब्बे करीम ने उनकी कमज़ोरी को उनकी क़ुव्वतों से बदलकर रख दिया। काफ़िरों ने बड़ी तदबीरें कीं, रूप बदल बदल कर आए, रंग बदल बदल कर आए, लंगोट बांध-बांध कर बार-बार मैदान में उतरे, चाहते थे कि ईमान वालों को ख़त्म करके रख दें। मगर परवरदिगार आलम की मदद ऐसी थी कि हर जगह मदद फ़रमाई। आइए ज़रा जाएज़ा लें कि काफ़िर लोग कैसी-कैसी चाले चलते

थे। इस्लाम के ख़िलाफ़ कैसी साज़िशें करते थे। खुद क़ुरआन करीम में गवाही है इस बारे में। फ़रमाया :

﴿وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ﴾

ऐसी तदबीरें करते थे कि पहाड़ भी अपनी जगह से हिल जाते थे।

अल्लाह की हिफ़ाज़त

खुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में काफ़िरों ने तदबीर की। कहने लगे कि सारे क़बीलों में से एक-एक आदमी को चुन लो। सुबह के वक़्त घर के गिर्द घेरा करके खड़े हो जाएंगे। जब यह बाहर आएं तो सब मिलकर इनको शहीद कर देंगे। न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी। फिर ये किस-किस से बदला लेंगे। और आपस में सोचने लगे कि कैसी ज़बरदस्त प्लानिंग की। बहुत खुश हो रहे थे। कहने लगे, अच्छा अब इस प्लान पर अमल करते हैं। रात को घर के गिर्द घेरा करके खड़े हैं। रब्बे करीम ने अपने महबूब को उनके दर्मियान में से निकाल दिया। ऐसी मत मार दी कि उनको पता ही न चला। फ़रमाया :

وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ
وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ. وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمَاكِرِيْنَ.

मेरे महबूब! याद करो उस वक़्त को जब आपके साथ तदबीर की थी उन काफ़िरों ने कि आप को हब्से बेजा (घेरे) में रखें या आपको शहीद कर दें या आपको देस निकाला दे दिया जाए। उन्होंने भी तदबीर की, अल्लाह तआला ने भी तबदीर की और अल्लाह तआला बेहतर है तदबीर करने वालों में।

देखा यूँ अल्लाह तआला तदबीर फ़रमाते हैं। दुनिया वालों की तबदीरें धरी की धरी रह जाती हैं। रब्बेकरीम तसल्ली देते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُم مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِن فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ﴾

मेरे महबूब! इनसे पहले वालों ने भी तबदीर की। फिर अल्लाह ने उनकी तदबीरों को जड़ से उखाड़ दिया। उनकी छतें उन पर आ गिरीं। उन पर ऐसा अज़ाब आया जिसका शुऊर ही नहीं रखते थे।

इन काफ़िरों की तदबीरें सब धरी की धरी रह जाएंगी जब हमारे पलड़े में अल्लाह रब्बुइज़्ज़त की मदद का वज़न आ जाएगा। अल्लाह तआला उनकी सारी तदबीरों को ज़ीरो के बराबर कर देंगे।

जंगे अहज़ाब का वाक़िआ

एक ऐसा वक़्त आया कि जब मक्का से लेकर मदीना तक के तीस हज़ार काफ़िरों ने मिलकर चढ़ाई की। इसे जंगे अहज़ाब कहते हैं और वे समझते थे कि अब तो बस मुसलमान चंद दिन के मेहमान हैं। क्योंकि मुसलमानों की तादाद तीन हज़ार थी। काफ़िरों ने एक महीने तक घेराव किए रखा। अंजाम क्या हुआ? अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا.

और अल्लाह तआला ने रद्द कर दिया उन काफ़िरों को उनके ग़ैज़ व ग़ज़ब के साथ। उनके पल्ले कुछ नहीं आया।

दिल में बड़े इरादे लेकर आए थे मगर कुछ उनके हाथ नहीं आया और फिर मोमिनों को तसल्ली दे दी। फ़रमाया ﴿وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ﴾ (अल्लाह तआला जानता है तुम्हारे दुश्मनों को।) उसे पता है कि तुम्हारे दुश्मन कौन हैं। और फ़रमाया :

﴿وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا﴾

अल्लाह तआला हर्गिज़ हर्गिज़ काफ़िरों को मुसलमानों तक पहुँचने का रास्ता नहीं अता करेगा।

अब बताइए जब रब्बेकरीम इतनी तसल्लियाँ देते हैं कि अल्लाह तआला काफ़िरों को हर्गिज़ हर्गिज़ मुसलमानों तक आने का रास्ता नहीं देगा। अगर हम इसका अपनी ज़बान में मफ़हूम अदा करें तो जैसे कहते हैं ना "मियाँ! तुम तक कोई आएगा तो मेरी लाश से गुज़कर आएगा।" बिल्कुल यही मफ़हूम इस आयत का बन रहा है।

"हर्गिज़ हर्गिज़ अल्लाह तआला काफ़िरों को ईमान वालों तक आने का रास्ता नहीं देगा।"

क्या मक़सद? कि पहले जो मुझसे निपटेगा तो ऐ ईमान वालो! तो फिर वह तुम तक आएगा तो रब्बे करीम कितनी मदद के वादे फ़रमाते हैं :

﴿اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ﴾

हमारे ज़िम्मे है मदद अपने रसूलों की और ईमान वालों की इस दुनिया की ज़िंदगी में और जिस दिन कि गवाहियाँ दी जाएंगी।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपने ऊपर ज़िम्मे ले रहे हैं हालाँकि अल्लाह तआला पर तो कुछ ज़िम्मे नहीं है, कुछ फ़र्ज़ नहीं है मगर

इस आयत का मफ़हूम यूँ बन रहा है जैसे यूँ कहना चाहते हैं :

"हमारे ऊपर फ़र्ज़ है मदद अपने रसूलों की और ईमान वालों की।"

अब बताइए जब रब्बे करीम मदद के ऐसे वादे फ़रमा रहे हों तो फिर ईमान वालों को घबराने की क्या ज़रूरत है? इसलिए फ़रमाया :

﴿وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَ اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِيْنَ﴾

तुम सुस्त न हो और तुम घबराओ नहीं, तुम ही आला और बाला होगे अगर तुम मोमिन हो–

मोमिन के साथ ग़लबे का वादा है क़ुरआन में
तू मोमिन है और ग़ालिब नहीं तो नुक़्स है ईमान में

तो देखा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त यूँ मदद के वादे फ़रमाते हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ईमान वालों को ग़लबे का वादा फ़रमा रहे हैं। काफ़िरों की कसरत को न देखना। उनकी ताक़त को न देखना। फ़रमाया तुम्हारी निगाहें परवरदिगार की ज़ात पर रहेंगी और इसके साथ तुम्हारा ईमान व यक़ीन कामिल होगा तो रब्बेकरीम हर मैदान में तुम्हें कामयाब फ़रमा देगा।

क़ुरआन पाक से गवाही

क़ुरआन मजीद की आयत है सुनिए और ज़रा दिल के कानों से सुनिए :

﴿كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً بِاِذْنِ اللّٰهِ وَ اللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ٥﴾

कितनी बार ऐसा हुआ कि एक छोटी जमाअत एक बड़ी

जमाअत के ऊपर ग़ालिब आ गई। अल्लाह तो सब्र व ज़ब्त वालों के साथ है।

अगर समझने की ख़ातिर इस आयत का मफ़हूम अपनी ज़बान में अदा करना चाहें तो यह बनेगा :

"कितनी बार ऐसा हुआ कि अल्लाह ने चिड़ियों से बाज़ मरवा दिए। अल्लाह सब्र व ज़ब्त करने वालों के साथ हैं।"

अल्लाह तआला चिड़ियों से बाज़ मरवा देता है। इसलिए मोमिनो! क्या ज़रूरत है घबराने की जब अल्लाह तआला तुम्हारे साथ है। सुब्हानअल्लाह इसीलिए जिस दिन क़ुरआन मजीद की आख़िरी आयत उतर रही थीं। फ़रमाया :

﴿اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ﴾

आज के दिन मैंने तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दी।

उसी दिन ये आयतें भी उतरीं, फ़रमाया :

﴿اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ﴾

आज के दिन ये काफ़िर तुम्हारे दीन से नाउम्मीद हो चुके।

पहले उनके दिलों में बड़ा जोश था कि हम ग़ालिब आकर रहेंगे और इनके नाम व निशान को मिटाकर रख देंगे। तज़्किरों में इनका तज़्किरा बाक़ी नहीं रहेगा लेकिन आज यह हालत हो चुकी है कि इन काफ़िरों के दिलों में यह बात बैठ गई है कि यह मुसलमान तो लोहे के चने हैं। इन्हें चबाना कोई आसान काम नहीं है। फ़रमाया :

﴿فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي﴾

बस तुमने इनसे नहीं डरना, एक मेरी ज़ात से तुम ने डरना है।

तो जिसके दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का डर हो और फिर हिदायत के रास्ते पर उसका क़दम हो तो उसको डरने की क्या ज़रूरत है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मदद फ़रमाते हैं। अल्लाह तआला अपने महबूब से वादा फ़रमा रहे थे। फ़रमाया :

﴿إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ﴾

बेशक वह ज़ात जिसने क़ुरआन को फ़र्ज़ किया, वह तुम्हें लौटाएगी तुम्हारी असल जगह की तरफ़।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वहाँ लौटाकर दिखाया। और जब लौटे तो नबी अलैहिस्सलाम किस शान में थे। सवारी पर सवार, आजिज़ी की वजह से गर्दन इतनी झुकी हुई कि सवारी के गर्दन के बालों से पेशानी लगी जा रही है और ज़बान पर एक अजीब तराना है। फ़रमाया :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَحْدَهُ نَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهُ﴾

सब तारीफ़ उस एक अल्लाह के लिए जिसने अपने बंदे की मदद की और उस अकेले ने सारी दुश्मनों की जमाअत को शकिस्त अता कर दी।

अल्लाह की मदद का वादा

हमारे लिए भी वही पैग़ाम है। हम अगर अल्लाह से अपने ताल्लुक़ को मज़बूत करेंगे तो रब्बेकरीम हमारी मदद फ़रमाएंगे।

याद रखिए, दुनिया की कोई ताक़त हमारी तरफ़ आँख उठाकर नहीं देख सकती। इन काफ़िरों की गीदड़ भपकियों से डरना मुसलमान का शेवा नहीं। डर तब लगता है जब अपने दिल में चोर होता है। जब ख़ुद अमल नहीं होता, जब नाम के मुसलमान होते हैं, निखट्टू, नालायक़ और इस्लाम के दावे बड़े-बड़े। उस वक़्त काफ़िरों की हिम्मत हो जाती है। जब दिलों में ईमान व यक़ीन हो और परवरदिगार की मदद के वादे हों तो फिर थोड़े भी होंगे तो जिधर भी क़दम उठाएंगे कामयाबी उनको क़दम चूमेगी। तारीख़ इस बात पर गवाह है कि ईमान वाले थोड़े थे या बहुत अमीर थे या ग़रीब थे, गोरे थे या काले थे, पहाड़ की चोटियों पर रहते थे या ज़मीन की पस्तियों में, जिस हाल में भी थे रब्बे करीम ने उनको हमेशा कामयाब फ़रमाया।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के वादे ईमान वालों के साथ हैं। हमें चाहिए कि अपने दिल के इस नूर को अपने नेक आमाल के साथ अल्लाह की याद के साथ ज़्यादा बढ़ाने की कोशिश करें। अपने आप को नबी अलैहिस्सलाम की प्यारी सुन्नतों से मुज़ैय्यन करें, दिल में नूर भरता चला जाएगा और फिर परवरदिगार आलम अपनी हिफ़ाज़त अता फ़रमा देंगे। और जब रब्बेकरीम की मदद आती है तो इसकी पहचान यह होती है कि किश्ती हमेशा किनारे लग जाया करती है।

जब अल्लाह तआला की याद आती है तो इसकी पहचान यह है कि किश्ती बीच दरिया में हिचकोले नहीं खाती बल्कि हमेशा किनारे लग जाया करती है। रब्बेकरीम की मदद हमेशा ऐसी होती है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और अल्लाह तआला की मदद

देखिए अल्लाह तआला ने मोमिनीन से जब भी मदद के वादे किए सुब्हानअल्लाह अजीब अंदाज़ से पूरे करके दिखाए। एक मिसाल पेश ख़िदमत है। एक ऐसा ही वक़्त था कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के सामने कुफ़्र की बड़ी क़ुव्वत है ताक़त है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इन दोनों हज़रात को फ़िरऔन की तरफ़ भेज रहे हैं। फ़रमाया, ﴿اذْهَبْ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى﴾ जाइए फ़िरऔन की पास वह बाग़ी-ताग़ी बना हुआ है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दिल में यह बात आई कि हम दो इतने बड़े निज़ाम से टकराने जा रहे हैं तो रब्बे करीम ने फ़रमाया ﴿فَاذْهَبَا لَا تَخَافَا إِنَّنِي مَعَكُمْ﴾ (तुम दोनों जाओ, तुम दोनों मत डरो, मैं तुम दोनों के साथ हूँ।) ﴿أَسْمَعُ وَأَرَى﴾ देखने सुनने वाला। फ़िरऔन जो कहेगा मैं सुनूंगा, जो अमल करेगा, जो हरकत करे, उसे मैं देखूंगा भी सही और जब मैं तुम्हारे साथ हूँ तो तुम्हें घबराने की क्या ज़रूरत है? जाइए कामयाबी तुम्हारे क़दम चूमेगी। फिर क्या हुआ? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम को लेकर एक जगह खड़े हैं, आगे पानी का दरिया और पीछे फ़िरऔन की फ़ौज का दरिया। दो दरियाओं के दर्मियान ऐसे वक़्त में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथी घबरा गए। कहा ﴿قَالَ أَصْحٰبُ مُوسَى إِنَّا لَمُدْرَكُونَ﴾ मूसा अलैहिस्सलाम के सहाबा ने कहा कि अब तो हम पकड़े गए।

जब उन्होंने यह बात कही तो एक यक़ीन भरी आवाज़ उठी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ﴿كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ﴾ हर्गिज़ नहीं, मेरा रब मेरे साथ है। वह ज़रूर रास्ते की रहनुमाई फ़रमाएगा।

चुनाँचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को अल्लाह तआला ने दरियाए नील में से पार करवा दिया जब कि फ़िरऔन और उसके लश्कर को दरिया में ग़र्क़ कर दिया गया।

नबी अलैहिस्सलाम और अल्लाह तआला की मदद

देखिए नबी अलैहिस्सलाम मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा की तरफ़ जा रहे हैं। पूरा मक्का मुकर्रमा आपकी तलाश में चढ़ दौड़ा। रब्बे करीम ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक ग़ार के अंदर पहुँचा दिया। बाज़ रिवायतों में है कि इस ग़ार के दरवाज़े पर मकड़ी ने जाला बना दिया। अब मकड़ी का जाला कितना कमज़ोर होता है यह क़ुरआन ने खुद कह दिया ﴿إِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنكَبُوتِ﴾ घरों में सबसे कमज़ोर घर मकड़ी का जाला होता है।

दीवारों में सबसे कमज़ोर दीवार मकड़ी का जाला होती है। ग़ार के दरवाज़े पर मकड़ी का जाला तान दिया गया। सारा मक्का मिलकर नबी अलैहिस्सलाम तक न पहुँच सका। रब्बे करीम ने अपनी क़ुदरत और ताक़त का इज़्हार फ़रमा दिया कि लोगो! अगर मैं तुम्हारे सामने मकड़ी के कमज़ोर जाले की दीवार भी तान दूंगा तो सारी दुनिया मिलकर उस दीवार को नहीं तोड़ सकेगी। तो जब रब्बे करीम अपनी मदद के वादे फ़रमाते हों तो फिर ईमान वालों को घबराने और डरने की कोई ज़रूरत नहीं होती। एक अल्लाह का डर दिल में हो। चुनाँचे यही सबक़ हमें दिया गया।

काफ़िर का क़ुबूल इस्लाम

एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम एक पेड़ के नीचे आराम फ़रमा रहे हैं। एक काफ़िर ने देखा कि तलवार लटक रही है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आराम फ़रमा रहे हैं। उसने सोचा कि अच्छा मौक़ा है, कुछ काम कर दिखाऊँ। उसने आगे बढ़कर तलवार को हाथ में ले लिया उसी दौरान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जाग गए तो वह पूछता है,

﴿من يمنعك مني يا محمد﴾

ऐ मुहम्मद अब आपको मुझसे कौन बचाएगा?

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, **"अल्लाह।"** मगर इस अल्लाह के लफ़्ज़ में कोई ऐसी तासीर थी कि उस काफ़िर के दिल पर एक हैबत तारी हुई। इतना काँपा कि उसके हाथ से तलवार गिर गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तलवार ली, फ़रमाया, ﴿من يمنعك مني﴾ अब तुझे मुझसे कौन बचाएगा?

वह काफ़िर मिन्नतें करने लगा कि आप तो करीम हैं, आप तो बड़े हैं, फ़लाँ हैं और फ़लाँ हैं। आप मुझे माफ़ कर दीजिए। आपने अपने रहमतुल्लिल-आलमीन होने का सबूत दिया कि अच्छा तू ऐसे सख़ी से माफ़ी मांग रहा है जिसे रहमतुल्लिल-आलमीन कहा गया। फ़रमाया जा तुझे मैंने माफ़ कर दिया। कहने लगा हुज़ूर! आपने मुझे माफ़ कर दिया और ज़रा कलिमा पढ़ा दीजिए ताकि मुझे अल्लाह तआला भी माफ़ फ़रमा दें। मैं आज से आपके ग़ुलामों में शामिल होता हूँ।

देखिए यूँ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मदद फ़रमाते हैं। अल्लाह तआला की मदद पर भरोसा करके मोमिन जब क़दम उठा लेते हैं तो रब्बे करीम हमेशा कामयाब फ़रमाते हैं।

ज़ाहिरी असबाब इकठ्ठा करने का हुक्म

एक बात यह ज़हन में रखिए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें हुक्म दिया कि तुम मेरे हुक्मों की पाबन्दी करो और दूसरा दारुल-असबाब में रहते हो, इस दारुल-असबाब मे रहते हुए जितने वसाइल इकठ्ठे कर सकते हो उसमें कमी न करो। दोनों बातों का हुक्म दिया है। ईमान पर मेहनत करो, मज़बूत बनाओ और जितने वसाइल इकठ्ठे कर सकते हो करो क्योंकि दुनिया दारुल-असबाब है। तुम असबाब को इकठ्ठा करने में कमी न करो। इस महफ़िल के शुरू में क़ुरआन मजीद की तिलावत करते हुए हज़रत क़ारी साहब पढ़ रहे थे ﴿وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ﴾ जितनी तुम्हारे अंदर इस्तितात (हिम्मत) है तुम उसी क़द्र अपने अंदर ताक़त और क़ुव्वत पैदा कर लो।

अब कोई हद तय नहीं की गई। फ़रमाया ﴿مَا اسْتَطَعْتُمْ﴾ (जितनी इस्तितात हो) गोया जितना ज़ोर लगा सकते हो लगा लो। इसका मतलब यह हुआ कि सिर्फ़ ज़मीन की बात ही नहीं ख़ला की दरवाज़े भी खोल दिए गए, बढ़ते रहिए। भले तुम्हें ख़लाओं से गुज़रकर कहकशाओं तक जाना पड़े। तुम्हारा क़दम चाँद पर पड़ सकता है तो चाँद पर जाइए, मिर्रीख़ पर पड़ सकता है तो मिर्रीख़ पर जाइए। जितनी तुम्हारे अंदर हिम्मत है उतना अपने आपको मज़बूत कर लीजिए। सुब्हानअल्लाह आगे मक़सद बयान फ़रमा

दिया ﴿تُرۡهِبُوۡنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمۡ﴾ ऐसी क़ुव्वत हो तुम्हारे पास कि अल्लाह के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन उस ताक़त से डरते जाएं।

काफ़िरों की कासा लैसी

ऐ ईमान वालो! तुम्हें ऐसी क़ुव्वत हासिल करनी चाहिए कि जिस से काफ़िर कांप उठें। इसलिए देखिए कि कुफ़्र कभी इस्लाम के हाथ में ताक़त नहीं देख सकता। डरते हैं, मिन्नतें करते हैं कि ताक़त कहीं मुसलमान के पास न आए। कहते हैं हम पर भरोसा कर लो, हमें ख़ुदा बना लो, हम तुम्हारी हिफ़ाज़त करेंगे। हम अपने ख़ज़ानों के दरवाज़े खोल देंगे। तुम हम पर भरोसा करना, हम से सवाल करना, मुश्किल पड़े हमारी तरफ़ रुजू करना यानी तुम आज के बाद अपना ख़ुदा हमें बना लेना। अपना परवरदिगार आज के बाद हमें बना लेना। काफ़िर परेशान होकर यूँ कासा लैस करता है।

सुपर पावर की पूजा

किसी दौर में पत्थर के बुत होते थे। आज के दौर में बुतों की शक्ल बदल गई है। आज की यह बड़ी-बड़ी सुपर पावर बुत बन गई हैं। दुनिया उन्हें इस तरह पूजती है जिस तरह पहले किसी वक़्त में लात व मनात को पूजा जाता था।

काफ़िरों को अज़ाब

अल्लाह तआला की ताक़त के सामने किसी की क्या हैसियत है। वह रब्बे करीम जब हुक्म देता है तो इंसान को तिगनी का नाच नचा देता है। पिछले ज़माने में बड़े-बड़े फ़िरऔन गुज़रे हैं। उनको अपनी ताक़त का बड़ा नशा था। बड़ी क़ौमें गुज़रीं। कहते थे ﴿مَنۡ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً﴾ (हम से कौन है ज़्यादा ताक़त में?) और रब्बे

करीम ने उनकी वह हालत ख़राब कर दी, मिट्टी पलीद कर दी। फ़रमाया कि ﴿فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا﴾ हमने हवा का अज़ाब भेजा। ऐसी हवा कि ईमान वालों के लिए वह बड़ी मज़ेदार थी लेकिन काफ़िरों के लिए इतनी सख़्त कि उनको पटख़ पटख़ कर ज़मीन पर मारती थी। अगले दिन उनकी लाशें ज़मीन पर ऐसे पड़ी थीं कि ﴿كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ﴾ जैसे खजूर के तने ज़मीन के ऊपर बिखरे पड़े हुए हों।

खजूर के तनों की तरह ज़मीन पर लिटा दिया और कैसी ताक़तवर क़ौम थी! अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا﴾ पहाड़ों को खोदकर घर बनाती थी। और रब्बे करीम भी फ़रमाते हैं ﴿لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ﴾ ऐसी ताक़तवर क़ौम फिर शहरों में पैदा ही नहीं हुई। ऐसी ताक़तवर क़ौम जब अल्लाह तआला के सामने नाफ़रमान बनकर खड़ी हुई तो अल्लाह तआला ने उनके नाम व निशान को मिटा दिया।

﴿هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا﴾

है किसी की आवाज़ आती, तुम्हें किसी का बोल है समझ में आता, कहाँ गए वे लोग?

ईमान वालों का अल्लाह तआला पर यक़ीन

ऐ ईमान वालो! तुम इन काफ़िरों से डरते हो, जो अंधेरों से डरने वाले हैं, इन काफ़िरों से हम डरें। आज के काफ़िर मुल्क मुसलमान मुल्कों को डराते हैं कि अगर शरीअत लागू की तो हम पाबन्दियाँ लगा देंगे। तुम भूखे मर जाओगे। इन बेचारों को क्या पता है कि हमारा रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मे है, सुब्हानअल्लाह और

परवरदिगार ने रिज़्क़ पहुँचाना है, वह हमें पहुँचाकर रहेगा। अगर यह पाबन्दियाँ लगा देंगे तो लगाएं पाबन्दियाँ। अच्छी बात है, कुछ हमें सबक़ मिल जाएगा। हमें जीने का सलीक़ा आ जाएगा। हम तो आज तक ग़लती में रहे कि इनकी तरफ़ निगाहें उठाकर देखते रहे। शुक्र है आज तुम्हारी तरफ़ से निगाहें हटी हैं और रब्बे करीम की तरफ़ देखा है। रब्बे करीम मदद फ़रमा, अपने इन कमज़ोर बंदों को दुनिया में कामयाब व कामरान फ़रमा। वह कमज़ोरों का परवरदिगार है। वह अपने बंदों की बग़ैर असबाब के मदद करता है। हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के वादों पर भरोसा है, सुब्हानअल्लाह।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का वाक़िआ

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा के साथ अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया और उन्होंने अल्लाह तआला के वादे पर भरोसा कर लिया। नतीजा क्या हुआ? ज़रा वाक़िआ मुख़्तसर सा सुन लीजिए। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं,

﴿وَاَوْحَيْنَا اِلٰى اُمِّ مُوْسٰى اَنْ اَرْضِعِيْهِ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ﴾

हमने "वही" की मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा को कि आप इस बच्चे को दूध पिलाइए और अगर आपको इसके बारे में डर लग जाए (फ़िरऔन के सिपाही पकड़ न ले जाएं और ज़िब्ह न कर दें) तो उसको फिर पानी में डाल देना।

और इर्शाद फ़रमाया,

﴿فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّىْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ﴾

फिर इसका वह ताबूत किनारे पर आ लगेगा, इसको वह पकड़ेगा जो मेरा भी दुश्मन है और इसका भी दुश्मन है।

अब बताइए अक़्ल से पूछें। अक़्ल चीख़ेगी, चिल्लाएगी और कहेगी परवरदिगार आपने हिफ़ाज़त भी करनी है तो यह बच्चा इन सिपाहियों को नज़र ही न आए, वे सिपाही इधर आ ही न सकें, मुझे फ़रमा दें मैं कहीं गुफ़ा में छिपा आती हूँ, छत पर लिटा देती हूँ, रब्बे करीम यह क्या बात है कि इसको दरिया में डालें, बच्चा है ताबूत बनाकर डालना पड़ेगा। ताबूत में डालें तो पानी भरने का अंदेशा और अगर पानी से बचाने के लिए वाटर टाइट बनाएं तो हवा भी बंद हो जाएगी, हवा बंद होने से मरेगा। समझ नहीं आती कि क्या करें। हवा के लिए सुराख़ भी रखें तो पानी जाने का ख़तरा है और पानी से बचाने की कोशिश करें तो हवा बंद होने का ख़तरा, अक़्ल कहती है कि यह बच्चा बचता नहीं है मगर रब्बे करीम क्या फ़रमाते हैं,

﴿وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ﴾

तुमने ख़ौफ़ भी नहीं खाना और तुमने डरना भी नहीं है, हम उसे लौटाएंगे तुम्हारे पास और हमने तो उसे रसूलों में बनाना है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा ने इस बात पर यक़ीन कर लिया। लिहाज़ा बेटे को दरिया में डाल दिया। उसको फ़िरऔन के कारिन्दों ने पकड़ लिया। अब जब खोलकर देखा तो उसमें बच्चा था। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿أَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّي﴾

हमने आप पर मुहब्बत डाल दी।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि मूसा अलैहिस्सलाम की आँखें इतनी दिलकश थीं, जाज़िब थीं कि जैसे ही फ़िरऔन और उसकी बीवी

ने देखा तो वे अपना दिल दे बैठे। फ़िरऔन की बीवी कहने लगी,

﴿لَا تَقْتُلُوْهُ عَسٰى اَنْ يَّنْفَعَنَا اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا.﴾

तुमने इसे क़त्ल नहीं करना, हम इसको अपना बेटा बनाएंगे, हमें नफ़ा होगा।

फ़िरऔन कहने लगा ठीक है। लिहाज़ा शाही फ़रमान जारी हुए कि हमने इसे बेटा बना लिया। फ़िरऔन की मत मारी गई। हज़ारों बच्चों को ज़िब्ह करवाने वाला अपना दिल दे बैठा है। कहता है, ठीक है इसे क़त्ल नहीं करना। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿حَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ.﴾

हमने उन पर बाक़ी औरतों के दूध को हराम कर दिया।

अब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम दूध नहीं पीते तो फ़िरऔन खुद परेशान होता है कि बच्चा दूध नहीं पीता, क्या होगा? लिहाज़ा औरतों को बुलवाया। जो औरतें आती हैं बच्चा दूध नहीं पीता। इसी हाल में रात गुज़र गई। उधर मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा की हालत भी अजीब थी। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَا اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا.﴾

वह तो अपनी बात का इज़्हार ही कर बैठती अगर हमने उसके दिल पर गिरह न डाल दी होती।

बेचारी रो बैठती, आख़िर माँ थी, रात गुज़र गई। सोचती थी कि क्या पता मेरा बेटा किस हाल में है? रो रहा है या ख़ुश है, जाग रहा है या सोया हुआ है, किसके हाथ में है, किसके हाथ में नहीं है। माँ थी, इन ख़्यालों ने बहुत परेशान किया हुआ था। लिहाज़ा बेक़रार होकर अपनी बेटी से कहा, जाओ ज़रा भाई की

ख़बर लाओ। वह भागी गई, जाकर मन्ज़र देखती है कि बहुत सारी औरतें दूध पिलाने आ रही हैं मगर वह बच्चा किसी का दूध ही नहीं पीता। वह आगे बढ़ी और फ़िरऔन से कहा,

﴿هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نَاصِحُوْنَ.﴾

मैं तुम्हें बताऊँ ऐसे घर वालों के बारे में जो इसे दूध भी पिलाएं और इसके बड़े ख़ैर ख़्वाह होंगे।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि फ़िरऔन को यह बात खटकी। कहने लगा कौन जो इसके बड़े ख़ैरख़्वाह होंगे। वह भी नबी की बहन थीं, कहने लगीं हम आपकी रिआया हैं अगर हम आपकी ख़ैरख़्वाही नहीं करेंगे तो कौन करेगा। फ़िरऔन कहने लगा, बात समझ में आ गई, अच्छा ले जाओ। चुनाँचे बहन आई और वालिदा को ले गई। उन्होंने दूध पिलाया। जब बच्चे ने दूध पी लिया तो फ़िरऔन बहुत ख़ुश हुआ। कहने लगा बीबी! इस बच्चे को अपने घर ले जाओ। वहाँ जाकर इसे दूध पिलाना और दूध पिलाने की तन्ख़्वाह हम अपने ख़ज़ाने से भेज दिया करेंगे। रब्बे करीम फ़रमाते हैं,

فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ.

उसकी आँखें ठंडी हों और ग़मज़दा न हो और वह जान ले कि अल्लाह के वादे सच्चे हैं लेकिन अक्सर लोग इस बात को नहीं जानते।

देखा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के वादे कैसे सच्चे हैं। इसलिए फ़रमाया, ﴿وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا﴾ और कौन है अल्लाह से ज़्यादा सच्ची बात कहने में।

अल्लाह तआला की मदद का अजीब वादा

वह रब्बे करीम ऐसा सच्चा है कि बे सर व सामान बंदों की मदद करके उनको कामयाब कर देता है। आप देखिए सहाबा किराम पर ऐसा वक़्त भी आया कि जब उनके सामने कुछ ऐसे क़िले थे कि जिनको समझते थे कि हम उनको फ़तेह नहीं कर सकते। सहाबा किराम खुद भी यह समझते थे कि हम उनको फ़तेह नहीं कर सकते और काफ़िरों और यहूदियों का भी यही गुमान था। मगर अल्लाह तआला ने इस काम को भी मुसलमानों के लिए आसान बना दिया। ज़रा इस आयत को दिल के कानों से सुन लीजिए। बनू क़ुरैज़ा के यहूदी क़िले के अंदर ज़िंदगी गुज़ारते थे। बड़ी ऊँची-ऊँची दीवारें बनाई हुई थीं और दिल में उनके यह बात जम गई थी कि मुसलमान इन क़िलों को फ़तेह नहीं कर सकते और मुसलमानों के दिलों में भी यह गुमान था कि इन क़िलों को फ़तेह करना बड़ा मुश्किल काम है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि फिर हमने एक तदबीर की। उन काफ़िरों के दिलों में मुसलमानों का ऐसा रौब पैदा कर दिया। काफ़िर आपस में मिल बैठे और मश्वरा करने लगे कि मुसलमान जहाँ जाते हैं कामयाबी उनके क़दम चूमती है। ऐसा न हो कि हमारी तरफ़ भी आ जाएं तो फिर क्या बनेगा? कहने लगे कि बेहतर है कि हम पहले ही यहाँ से किसी महफ़ूज़ जगह चले जाएं। चुनाँचे उन्होंने अपना सामान बांधा और खुद ही उस जगह को छोड़कर भाग निकले।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿هُوَ الَّذِىْ﴾ वह ज़ात, ﴿هُوَ الَّذِىْ﴾ के अलफ़ाज़ के साथ अल्लाह तआला अपना तार्रुफ़ फ़रमा रहे हैं :

هُوَ الَّذِىْ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ مَا

ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْا اَنَّهُمْ مَا نِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِنَ اللّٰهِ. فَاَتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَ قَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ. يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَ اَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ فَاعْتَبِرُوْا يٰاُولِي الْاَبْصَارِ.

तुम्हें गुमान नहीं था कि तुम इन काफ़िरों को यहाँ से निकाल सकोगे और उनका अपना भी यही गुमान था। उनके ये क़िले अल्लाह के रास्ते में रुकावट बन जाएंगे। फिर अल्लाह ऐसी तरफ़ से आया कि जिसका उनको गुमान ही नहीं था। अल्लाह तआला ने उनके दिलों में मुसलमानों का रौब पैदा कर दिया। अपने हाथों से अपने घरों को ख़राब करने लगे। ईमान वालों को पता चला तो उन्होंने भी उनके भागने में मदद की और आँखों वालो! तुम इबरत हासिल करो।

मैं जब चाहता हूँ ऐसे मज़बूत क़िलों में रहने वालों को निहत्थे लोगों के हाथों से भगा दिया करता हूँ। तो देखा अल्लाह के वादे कैसे पूरे हुए। हमें चाहिए कि हम अल्लाह की मदद पर भरोसा करते हुए उस रास्ते पर चलें जिस रास्ते पर क़ुरआन ने हमें चलाया और क़ुरआन क्या कहता है, "ऐ ईमान वालो! तुम यहूद व नसारा को दोस्त मत बनाओ।"

काफ़िरों की नाइंसाफ़ी

सुपर पावर की नाइंसाफ़ी देखिए कि अगर कोई काम काफ़िर करता है तो कहते हैं अच्छा तो नहीं मगर अब क्या करें कर जो लिया। और वही काम मुसलमान करता है तो इंसाफ़ के अलमबरदार खड़े हो जाते हैं और कहते हैं कि तुम्हारा जीना हराम कर देंगे। मुसलमान मुल्कों को मश्वरा देते हैं कि तुम ख़ुद अपना डिफ़ेन्स मज़बूत न करो। कहते हैं तुम सब्र करो। तुम हमारे भरोसे

रहना ताकि हम जब चाहेंगे तो तुम्हारे दो नहीं चार टुकड़े कर देंगे। जब चाहेंगे तुम्हें उस वक़्त ज़मीन के साथ मिला देंगे। कहते हैं बस हम तुम्हारी हिफ़ाज़त करेंगे। ग़य्यूर क़ौमें ऐसे नहीं करतीं। काफ़िरों पर भरोसा नहीं करतीं। हम भरोसा अपने रब पर करेंगे।

एटमी तजिरबा करने पर अज्र

देखिए अल्लाह ने ईमान वालों को कहा है कि तुम जितनी ताक़त हासिल कर सकते हो हासिल करो और ईमान वालों को चाहिए कि आज साइंस का दौर है। इस साइंस के दौर में ज़्यादा रिसर्च करें और आगे बढ़ने की कोशिश करें।

याद रखिए मुसल्ले पर बैठकर नफ़्ली तिलावतें, नफ़्ली इबादतें और नफ़्ली तस्बीहात करने वाले को इबादत का वह अज्र नहीं मिलेगा जो किसी लैबोट्री के अंदर बैठकर किसी साइंसदान को एटमी तजिरबे करने पर नसीब हो जाएगा।

इस्लाम की फ़तेह

अल्लाह का शुक्र है हमारे मुल्क के साइंसदान इस्लाम की शान व शौकत का सबब बन गए हैं। सुब्हानअल्लाह मालूम नहीं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनको क्या अज्र देगा।

हर मैदान के अंदर आगे बढ़ने की कोशिश कीजिए। इन काफ़िरों से डरने और घबराने की क्या ज़रूरत है? देखिए हदीस पाक से हमें ख़ुद मालूम होता है कि नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात को अच्छा जाना कि मोमिन माद्दी एतिबार से भी आगे बढ़ने की कोशिश करें। चुनाँचे इसकी दलील हदीस पाक से मिलती है। नबी

अलैहिस्सलाम ने अपनी पूरी ज़िंदगी में ज़मीनी जंगें लड़ी हैं। मगर साफ़ फ़रमा दिया :

"मैं जन्नत की ख़ुशख़बरी देता हूँ उन ईमान वालों को जो सबसे पहले बहरी जिहाद इस्लाम के लिए करेंगे।"

मतलब यह था कि मैंने तो ज़मीनी जंगें लड़ी हैं। मेरे बाद आने वाले जो सबसे पहले बहरी जिहाद करेंगे, उन बहरी जिहाद करने वालों को मैं अल्लाह का पैग़ंबर जन्नत की बशारत दे रहा हूँ, माशाअल्लाह। पता क्या चलता है कि अगर दीन को इस अंदाज़ से फैलाना पड़े और कुफ़्र का रास्ता बहरी जहाज़ों के ज़रिए से जाकर रोकना पड़े तो जो इस रास्ते को रोकेगा तो मैं अल्लाह का पैग़ंबर उसको जन्नत की बशारत दे रहा हूँ, ख़ुशख़बरी दे रहा हूँ, सुब्हानअल्लाह।

इसलिए काम कीजिए, मेहनत कीजिए। हमने मुसलमान माँओं के दूध पिए हैं। मेरे दोस्तो! अल्लाह की क़सम! हम छोटे थे माँ दूध पिलाने में लगती थी तो "बिस्मिल्लाह" पढ़ती थी, माँ पालना हिलाने लगती थी तो "ला इलाहा इल्लल्लाह" पढ़ती थी, माँ हमें बिस्तर पर सुलाने लगती थी तो वह "अल्लाहु अकबर", "सुब्हानअल्लाह" पढ़ा करती थी, कभी "हस्बुनल्लाहु व नेअमल वकील" कभी "हस्बी रब्बी जल्लल्लाह माफ़ी क़ल्बि ग़ैरुल्लाह" पढ़ती थी।

अरे! ये तराने हमने अपने बचपन में अपनी माँओं से सुने हैं। ऐ काफ़िरो! इन लोगों के बारे में हम कहते हैं कि तुम निहत्थे बनकर रहो और हम तुम्हारी हिफ़ाज़त करेंगे। क्या हम अपनी हिफ़ाज़त करना नहीं जानते? जी हाँ अलहम्दुलिल्लाह अल्लाह

रब्बुलइज़्ज़त जज़ाए ख़ैर दे उन हज़रात को जिन्होंने मेहनत की और आलमे इस्लाम के लिए शान व शौकत का ज़रिया बने। आप के हाथ में भी अगर कोई चीज़ होगी तो काफ़िर ज़रा सोच समझकर क़दम उठाएंगे। यह नहीं होता कि एटब बम चलाने ही होते हैं। नहीं, अल्लाह न करे कोई ऐसा वक़्त आए कि जब इंसान ऐसी ख़तरनाक चीज़ों को इस्तेमाल करे मगर जब कुफ़्र अपने हाथों में इन चीज़ों को ले चुका है तो अब मुसलमानों को निहत्थे खड़े होने की ज़रूरत नहीं, उनके हाथों में भी उनसे बढ़कर ऐसे असबाब होने चाहिएं।

जदीद दौर की तरक़्क़ी

आज देखिए साइंसदान ने गेहूँ पर मेहनत की। एक दौर था जब ज़मीन में दाना डालते थे तो दस दाने मिलते थे। फिर पंद्रह दाने मिलने लगे, फिर तीस दाने मिले। मैक्सी पाक गेहूँ आई तो लोगों ने कहा जी एक के बदले बत्तीस दाने मिल गए। बड़ा कमाल कर लिया। भई एक के बदले बत्तीस दाने, क्या कमाल किया? क़ुरआन तो मिसाल दे रहा है कि तुम एक दाना डालोगे तो उसके ऊपर सात बालें होंगी। हर एक में गुच्छा होगा, गुच्छे में सौ दाने होंगे। यूँ एक दाने के बदले रब्बे करीम सात सौ दाने बना देंगे।

हम तो अभी बत्तीस दानों तक पहुँचे हैं और क़ुरआन बता रहा है कि हम सात सौ तक पहुँच सकते हैं। लिहाज़ा एग्रीकलचर मैदान में आगे बढ़िए और वैसे भी यह एग्रीकलचर रिसर्च इन्सटिटियूट है, सुब्हानअल्लाह।

अभी तो आप मुश्किल से पचास दानों तक पहुँचे होंगे।

सोचिए आपका सफ़र कितना लंबा है। क़ुरआन ने टारगेट कितना दिया है और आपने कितना दूर पहुँचना है। लिहाज़ा अपनी ज़िम्मेदारी का ख़्याल कीजिए और अमानत व दयानत के साथ ज़िंदगी गुज़ारिए। अल्लाह तआला आपके काम और कारोबार में बरकत देंगे। अल्लाह तआला मदद फ़रमाएंगे और अल्लाह तआला दीन व दुनिया की सुर्ख़रुई नसीब फ़रमाएंगे।

हिम्मते मर्दां मददे ख़ुदा

हाँ वक़्ती तौर पर कुछ मुश्किलात आती हैं। वे क़ौमों की ज़िंदगी में पहले भी आती रही हैं। क़ौमों के लिए ये बातें आसान हुआ करती हैं। लेकिन जब हम इस रास्ते में क़दम उठाएंगे और सबके सब अहद करेंगे कि आज के बाद हम अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करेंगे। अल्लाह के और बंदों के हुक़ूक़ दोनों को अदा करेंगे, इस्लाम की शान व शौकत के लिए ज़िंदगी गुज़ारेंगे तो रब्बे करीम हमारी मदद फ़रमाएंगे।

हदीस पाक में आया है :

﴿فَبِعِزَّتِیْ وَجَلَالِیْ لَا اُخْذِیْکُمْ وَلَا اُفْضِحُکُمْ بَیْنَ اَصْحٰبِ الْحُدُوْدِ﴾

उन मेरे मोमिनों को कह दीजिए कि मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम! मुझे अपने जलाल की क़सम! मैं तुम्हें काफ़िरों और फ़ासिक़ों के सामने ज़लील और रुसवा नहीं करूंगा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें दीन व दुनिया की सुर्ख़रुई नसीब फ़रमा दे।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ﴾

ख़ौफ़े ख़ुदा

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने एक प्यारे बंदे की तरफ़ इल्हाम फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे! लोगों से कह दो कि जब तुम गुनाह करने लगते हो तो तुम उन तमाम दरवाज़ों को तो बंद कर लेते हो जिन दरवाज़ों से मख़्लूक़ देखती है और उस दरवाज़े को बंद नहीं करते जहाँ से मैं परवरदिगार देखता हूँ। क्या अपनी तरफ़ देखने वालों में से सबसे कम दर्जे का तुम मुझे समझते हो?

ख़ौफ़े ख़ुदा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِO بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِO

وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ

الْمَاْوٰىO وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ اٰخَر. وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ

جَنَّتٰنِOسُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَO وَسَلٰمٌ عَلَى

الْمُرْسَلِيْنَO وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَO

ख़ौफ़ और उम्मीद का मफ़हूम

मोमिन के दिल में दो मुख़्तलिफ़ कैफ़ियतें होती हैं। कभी उस पर उम्मीद ग़ालिब होती है और कभी उस पर ख़ौफ़ ग़ालिब होता है। उम्मीद का यह मतलब है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत से यह उम्मीद होती है कि वह हमारी ख़ताओं को माफ़ फ़रमाएगा और हमारा अंजाम बेहतर होगा। ख़ौफ़ इसे कहते हैं कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की जलालते शान की वजह से उसकी अज़मत दिल में ऐसी बैठ जाए कि इंसान गुनाहों से दूर हो जाए और उसके रग-रग और रेशे से गुनाहों का खोट निकल जाए। इसीलिए फ़रमाया गया कि ﴿الْاِيْمَانُ بَيْنَ الْخَوْفِ وَالرَّجَاءِ﴾ यानी ईमान उम्मीद और ख़ौफ़ के दर्मियान होता है।

उम्मीद और ख़ौफ़ कब होना चाहिए

इंसान के दिल में उम्मीद कब होनी चाहिए और ख़ौफ़ कब होना चाहिए? इसके बारे में मशाइख़ ने बड़ी तफ़्सील लिखी है। इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि जवानी की उम्र में इंसान पर ख़ौफ़ ग़ालिब रहना चाहिए ताकि नफ़्स का ज़ोर टूटे और यह आदमी गुनाहों से बच जाए और बुढ़ापे के अंदर उम्मीद ग़ालिब होनी चाहिए और बीमारी के ज़माने में इंसान पर उम्मीद ग़ालिब होनी चाहिए। खुशी की हालत में इंसान पर ख़ौफ़ ग़ालिब होना चाहिए और ग़म की हालत में उसके दिल में उम्मीद ग़ालिब रहनी चाहिए।

मोमिन और फ़ासिक़ की कैफ़ियत

नवजवानों को चाहिए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से उसका ख़ौफ़ मांगा करें। यह अल्लाह की वह नेमत है जिसके हासिल होने पर इंसान नेकी का हर काम करता है और गुनाह से बचता है। जिस इंसान के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं रहता उसके लिए गुनाहों से बचना मुमकिन नहीं होता। मोमिन बंदा गुनाह को यूँ समझता है जैसे कोई पहाड़ सर के ऊपर है और अभी सर पर गिर जाएगा और फ़ासिक़ गुनाह को यूँ समझता है जैसे कोई मक्खी बैठी हुई थी जो उड़ा दी गई। हमारे समाज में गुनाह को बहुत हल्का समझा जाता है। झूठ बोलना, ग़ीबत करना, चुग़ली खाना और बदनज़री करना बिल्कुल आम हो गया है। हलाल और हराम के दर्मियान कोई फ़र्क़ नज़र नहीं आता। मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हैं और बाहर जा कर हराम काम भी करते हैं। इसकी बुनियादी वजह यह है कि दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से ख़ाली है। ज़बान से कहते हैं कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त

बड़े हैं मगर उसकी बड़ाई का दिल में ध्यान मौजूद नहीं है। हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह० ने लिखा है कि ऐ दोस्त! तू यह न देख कि गुनाह छोटा है या बड़ा बल्कि उस ज़ात की अज़्मत को देख जिसके हुक्मों की तू नाफ़रमानी कर रहा है। कितनी अजीब बात है कि नाफ़रमानी और परवरदिगार आलम की। अल्लाहु अकबर अल्लाह तआला की नाफ़रमानी कभी छोटी नहीं होती। यह तो उसकी रहमत है कि वह दरगुज़र फ़रमा देता है।

एक इबरतनाक वाक़िआ

बनी इस्राईल में एक बुज़ुर्ग दामूस रह० थे। एक बार वह अपनी बस्ती से बाहर निकले। सामने पहाड़ पर नज़र पड़ी तो सारे पहाड़ सूखे नज़र आए। उस पर हरियाली नहीं थी। यह देखकर उनके दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि कितना अच्छा होता कि इन पर हरियाली होती, झरने होते, मुर्ग़ज़ारें होतीं और ख़ूबसूरत मंज़र होता। अल्लाह तआला ने दिल में इल्हाम फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे बंदे! तूने बंदगी छोड़ दी और अब तू मेरा सलाहकार बन गया। अब तुझे मेरी तख़्लीक़ में कमी और कोताही नज़र आती है। जब यह इल्हाम हुआ तो वह घबरा गए और उन्होंने अपने दिल में यह नीयत कर ली कि जब तक अल्लाह तआला की तरफ़ से मेरे दिल में साफ़ तौर पर यह बात नहीं आएगी कि मेरी कोताही को माफ़ कर दिया गया है मैं उस वक़्त तक अपने आपको सज़ा दूंगा। यह अल्लाह वालों का तरीक़ा रहा है कि अगर कभी कोताही हो जाती तो वह अपने आप को सज़ा दिया करते थे। चुनाँचे दामूस रह० ने सज़ा के तौर पर दिल में तय कर लिया कि जब तक मेरी ग़लती माफ़ नहीं हो जाती न तो खाना खाऊँगा और न पानी पिऊँगा। बस

रोज़े की हालत में रहूंगा। यह बंदे और अल्लाह का अपना मामला होता है। हज़रत अक्दस मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० ने लिखा है कि बंदे से अगर कोई गुनाह हो जाए तो वह अपने ऊपर कोई सज़ा मुक़र्रर कर सकता है। मसलन मैं इतना पैसा सदक़ा करूंगा या मैं इतनी नफ़्ले पढ़ा करूंगा या कोई ऐसा काम कि जिस से इंसान के नफ़्स पर बोझ पड़े और वह घबराए। उन्होंने भी यही किया कि दिल में सज़ा के तौर पर यह फ़ैसला कर लिया।

दामूस रह० दो चार दिन के बाद एक क़रीबी बस्ती में गए। वहाँ कोई तक़रीब हो रही थी। बस्ती वालों ने खाना वग़ैरह पकाया हुआ था। जब दस्तरख़्वान लगा तो लोगों ने उनसे कहा कि आप भी खाएं। उन्होंनें माफ़ी चाही मगर कुछ लोग पीछे पड़ गए कि जी आप ज़रूर खाएं। उन्होंने कहा कि नहीं मुझे खाना नहीं है। उनमें से एक ने पूछा कि आख़िर वजह क्या है? उन्होंने वजह बता दी कि मुझ से यह ग़लती हुई है। वह कहने लगा, जनाब! यह कोई बड़ी बात नहीं है। हम सब बस्ती वाले मिलकर इस गुनाह का अज़ाब भुगत लेंगे। आप खाना खा लीजिए। कहने वालों ने जैसे ही यह कहा तो अल्लाह तआला ने फ़ौरन दामूस रह० के दिल में यह इल्हाम फ़रमा दिया कि मेरे प्यारे! आप इस बस्ती से फ़ौरन निकल जाएं। चुनाँचे जैसे ही वह निकले अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उस बस्ती वालों को ज़मीन में धंसा दिया।

गुनाहों से बचने की एक सूरत

इंसान को दुनिया की पुलिस गुनाहों से नहीं रोक सकती और न ही कोई दूसरे इंसान गुनाहों से रोक सकते हैं। मगर ख़ौफ़े ख़ुदा वह नेमत है कि इंसान तन्हाई में भी गुनाहों से बच रहा होता है।

आप सोचिए कि जिस इंसान के लिए फांसी पर चढ़ने का हुक्म सादिर हो चुका हो वह काल कोठरी में बैठकर फ़हश कामों की तरफ़ ध्यान नहीं देता। उसके दिल पर ग़म सवार होता है कि सुबह को मुझे सूली पर लटका दिया जाएगा जिसकी वजह से उसका फ़हश कामों की तरफ़ ध्यान ही नहीं होता। जिस तरह फांसी के ख़ौफ़ से वह गुनाहों की तरफ़ माइल नहीं होता बिल्कुल इसी तरह अल्लाह वाले अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के ख़ौफ़ की वजह से गुनाहों की तरफ़ माइल नहीं होते।

हुज़्न और ख़ौफ़ में फ़र्क़

मशाइख़ ने लिखा है कि एक हुज़्न होता है और दूसरा ख़ौफ़। हुज़्न कहते हैं अंदर के ग़म को और ख़ौफ़ कहते हैं बाहर के डर को। जब इंसान का दिल महज़ून (दिल में ग़म) होता है तो इंसान का खाना पीना छूट जाता है। आपने ग़ौर किया होगा कि जिस माँ का बेटा फ़ौत हो जाए, कई दिन तक रोटी खाने को उसका दिल नहीं करता। जो बच्चा इम्तिहान में फ़ेल हो जाए उसका रोटी खाने को दिल नहीं करता या कारोबारी आदमी जब कोई ऐसी बुरी ख़बर सुने जिससे दिल ग़मज़दा हो जाए तो खाना खाने को दिल नहीं करता। खुलासा कलाम यह है कि जब दिल में हुज़्न होता है तो इंसान का खाना पीना ख़त्म हो जाता है और जब इंसान के दिल पर अल्लाह का ख़ौफ़ होता है तो फिर उसके जिस्म से गुनाहों का होना ख़त्म हो जाता है।

दूध के प्याले की हिफ़ाज़त

एक आदमी एक बुज़ुर्ग के पास हाज़िर हुआ। वह कहने लगा, हज़रत! बाज़ार में काम करता हूँ जिसकी वजह से मैं अपनी

निगाहों को ग़ैर-महरम औरतों से नहीं बचा सकता। कोशिश भी करता हूँ कि बदनज़री न हो मगर फिर भी गुनाह हो जाता है। समझ में नहीं आता कि मैं इस गुनाह से कैसे बचूं? उन्होंने फ़रमाया, अच्छा आपको समझा देते हैं।

उसके बाद उन्होंने उस नौजवान को फ़रमाया कि मैं आपको दूध का एक प्याला देता हूँ। वह प्याला बाज़ार से गुज़रकर फ़लाँ बुज़ुर्ग को पहुँचाना मगर शर्त यह है कि मैं एक बंदा आपके साथ भेजूंगा, अगर इस प्याले में से दूध कहीं गिरा तो वह वहीं पर तुम्हें जूते लगाएगा। उसने कहा, ठीक है। चुनाँचे उन्होंने एक प्याला दूध से लबरेज़ करके उसके हाथ में थमा दिया। वह प्याले को लेकर चल भी रहा था और उस प्याले पर नज़र भी जमाए हुए था कि कहीं गिर न जाए। उसके साथ जो बंदा था वह भी माशाअल्लाह लंबा चौड़ा था।

उस नौवजवान ने खुदा-खुदा करके बाज़ार से गुज़रकर मंज़िल पर वह दूध पहुँचाया और खुशी खुशी वापस आकर बताया कि हज़रत! मैं दूध पहुँचा आया हूँ। हज़रत ने पूछा, बताओ भई! तुमने बाज़ार में कितने चेहरे देखे? वह कहने लगा, हज़रत इधर तो ध्यान ही नहीं गया। हज़रत ने पूछा ध्यान क्यों नहीं गया? वह कहने लगा, हज़रत! मुझे डर था कि अगर दूध नीचे गिर गया तो यह बंदा भरे बाज़ार में मुझे रुसवा कर देगा।

उसका यह जवाब सुनकर हज़रत फ़रमाने लगे कि अल्लाह वालों का यही हाल होता है कि उनके दिल ईमान से लबरेज़ होते हैं, उन को उसकी हिफ़ाज़त की हर वक़्त फ़िक्र होती है कि कहीं ऐसा न हो कि गुनाह करें और अल्लाह तआला क़ियामत के दिन मख़्लूक़

के सामने खड़ा करके रुसवा फ़रमा दें। अल्लाह वाले डर रहे होते हैं क्योंकि उस दिन की रुसवाई बहुत बड़ी और बहुत बुरी है।

पाकीज़ा हस्तियाँ

इमाम रब्बानी मुजदि्दद अलफ़सानी रह० फ़रमाते हैं कि इस उम्मत में ऐसी पाकीज़ा हस्तियाँ भी गुज़री हैं कि चालीस-चालीस साल तक गुनाह लिखने वाले फ़रिश्तों को उनका गुनाह लिखने का मौक़ा नसीब नहीं हुआ। शरीअत की मकरूहात उनके लिए तबीयत की मकरूहात बन गई थीं। शरीअत के ख़िलाफ़ कोई काम करने की सोच उनके दिमाग़ में नहीं आती। वे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की अज़मतों को समझते थे। वे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की जलालते शान को समझते थे और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का ख़ौफ़ उनके दिलों पर हावी था।

ख़ौफ़े ख़ुदा के लिए मसनून दुआ

हदीस पाक में नबी अलैहिस्सलाम ने यह तालीम दी कि हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से उसका ख़ौफ़ मांगें। अल्लाह के महबूब ने दुआ फ़रमाई :

﴿اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَشْيَتِكَ مَا تَحُوْلُ بِهٖ بَيْنِیْ وَ بَيْنَ مَعْصِيَتِیْ﴾

ऐ अल्लाह! मैं आपसे ऐसी ख़शियत (ख़ौफ़) मांगता हूँ जो मेरे और मेरे गुनाहों के दर्मियान आड़ बन जाए।

एक चरवाहे के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा

एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जंगल में बैठे थे। एक चरवाहा आ पहुँचा। आपने उससे फ़रमाया,

आओ हमारे साथ खाना खाओ। वह कहने लगा, ﴿انا صائم﴾ मैं रोज़ादार हूँ। आप हैरान हुए कि जंगल और वीराने में धूप पर सारा दिन फिरने वाला और बकरियों को चराने वाला, यह नौजवान रोज़े से है। आपके दिल में ख़्याल आया कि इसे आज़माते हैं। आपने उसे फ़रमाया कि एक बकरी हमारे हाथ बेच दो। हम तुम्हें पैसे देते हैं। इसको ज़िब्ह करेंगे और गोश्त भूनेंगे। हम भी खा लेंगे और तुम भी शाम को खा लेना। वह कहने लगा, जनाब! ये बकरियाँ मेरी नहीं हैं। यह तो मेरे मालिक की हैं। आपने फ़रमाया, तुम्हारा मालिक यहाँ तो नहीं है। कह देना कि भेड़िया खा गया है। जैसे ही आपने यह कहा, वह नौजवान फ़ौरन कहने लगा कि अगर मेरा मालिक इस वक़्त मौजूद नहीं है तो ﴿فاين الله﴾ अल्लाह कहाँ है? यानी अगर मेरा मालिक मौजूद नहीं है, उस मालिक का मालिक तो मौजूद है। सहाबा किराम के दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा वाली यह नेमत ऐसी उतरी हुई थी। तन्हाईयों में भी उनके दिलों में हर वक़्त यह ख़्याल रहता था कि अल्लाह तआला हमें देख रहे हैं। इसलिए वे गुनाह से बचते थे।

एक सबक़ आमोज़ वाक़िआ

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रात को गलियों के अंदर पहरा दे रहे थे। सुबह सादिक़ का वक़्त था। एक घर से औरतों के बोलने की आवाज़ आई। आप क़रीब होकर आवाज़ सुनने लगे। आपने महसूस किया कि एक बूढ़ी औरत अपनी कम उम्र लड़की से कहने लगी कि बेटी! क्या बकरी ने दूध दे दिया है? उसने कहा, जी हाँ! दे दिया है। पूछा कितना दिया? जवाब मिला, थोड़ा दिया है। उस बूढ़ी औरत ने कहा, लेने वाले आएंगे

तो वे पूरा मांगेगे। लड़की ने कहा कि बकरी ने थोड़ा दिया है। बूढ़ी औरत कहने लगी, अच्छा फिर इसमें पानी मिला दो ताकि मिक़्दार पूरी हो जाए। लड़की ने कहा, मैं क्यों पानी मिलाऊँ? बुढ़िया ने कहा, कौन सा उमर देख रहा है? उस लड़की ने जवाब दिया कि अम्मा! अगर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नहीं देख रहे हैं तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ुदा तो देख रहा है। हज़रत उमर ने यह बात सुनी तो बहुत ख़ुश हुए और वापस चले गए। सुबह होते ही आपने दोनों को बुलाया तो पता चला कि वह लड़की जवान उम्र थी। आपने अपने बेटे के लिए उसे पसन्द कर लिया और उसे अपनी बहू बना लिया। यही लड़की हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० की नानी बनी।

ख़ौफ़े ख़ुदा के दर्जात

ख़ौफ़े ख़ुदा के मुख़्तलिफ़ दर्जात हैं। इमाम ग़ज़ाली रह० ने उसकी बड़ी तफ़्सील लिखी है :

1. अवामुन्नास (आम लोगों) का ख़ौफ़

आप फ़रमाते हैं कि ख़ौफ़े ख़ुदा की जो सबसे पहली सतह होती है उसे अवामुन्नास का ख़ौफ़ कहते हैं। आम लोगों का ख़ौफ़ यह होता है कि मैं फ़लाँ करतूत करता हूँ, गुनाह करता हूँ, जिसकी वजह से मुझे मार पड़ेगी। आप फ़रमाते हैं कि इसकी मिसाल ऐसे बच्चे की तरह है जिसने कोई नुकसान किया हो या अम्मी की कोई बात न मानी हो और उसको पता हो कि जब अब्बू आएंगे तो मार पड़ेगी।

2. सालिहीन का ख़ौफ़

एक ख़ौफ़ उससे ज़रा ऊपर के दर्जे का है जिसे "सालिहीन का ख़ौफ़" कहते हैं। मतलब यह कि वे अपनी तरफ़ से तो नेकी करते हैं मगर समझते हैं कि हमने जितनी नेकी करनी थी उतनी कर नहीं सके। पता नहीं कि अल्लाह तआला ये नमाज़ क़बूल करते हैं या नहीं। गोया नमाज़े भी पढ़ते हैं और डरते भी हैं। मसलन किसी ने कहा कि आप हज करके आए हैं, आपको मुबारक हो। तो वह कहता है जी बस दुआ करें कि अल्लाह तआला क़बूल फ़रमा लें। नेकी भी करते हैं और दिल में ख़ौफ़ भी होता है कि जिसके लिए नेकी की है पता नहीं उसको क़बूल हो कि न हो। जैसे एक लड़की की शादी थी तो उसे दूसरी लड़कियाँ दुल्हन के तौर पर सजा रही थीं। जब उन्होंने सजा लिया तो एक सहेली ने कहा कि तू बड़ी ख़ूबसूरत लग रही है, तारीफ़ें शुरू कर दीं तो उस दुल्हन की आँखों में आँसू आ गए। सबने कहा कि तू इतनी ख़ूबसूरत लग रही है फिर भी रो रही है, क्या वजह है? उसने कहा कि मेरे दिल में ख़्याल आया कि तुम सब सहेलियाँ तो मेरी तारीफ़ें कर रही हो लेकिन जिसके लिए तुम मुझे सजा रही हो अगर मैं उसके पास पहुँची और उसे पसन्द न आई तो मेरा यह सारा हुस्न किस काम का होगा। असल तो यह है कि मैं उसे पसन्द आ जाऊँ। यही सालिहीन के ख़ौफ़ की मिसाल है कि नमाज़ें भी पढ़ते हैं, तिलावत भी करते हैं मगर दिल में डर होता है कि ऐ अल्लाह! बस तू इसे क़बूल कर ले।

3. आरिफ़ीन का ख़ौफ़

एक इससे भी ऊपर के दर्जे का ख़ौफ़ होता है। उसे

"आरिफ़ीन का ख़ौफ़" कहते हैं। इंसान नेकी और इबादत तो करता है मगर यह समझता है मेरी नेकी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की अज़्मतों के सामने कोई हैसियत नहीं रखती। इमाम आज़म अबूहनीफ़ा रह० ने चालीस साल तक इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और जब हरम शरीफ़ तशरीफ़ ले गए तो वहाँ मक़ामे इब्राहीम पर दो रकअत नफ़्ल पढ़कर दुआ मांगी :

﴿مَا عَبَدْنَاكَ حَقَّ عِبَادَتِكَ وَمَا عَرَفْنَاكَ حَقَّ مَعْرِفَتِكَ﴾

ऐ अल्लाह! जैसे तेरी इबादत करनी चाहिए थी वैसी कर नहीं सके और जैसी तेरी मारिफ़त हासिल करनी चाहिए थी वह मारिफ़त हासिल नहीं कर सके।

4. कामिलीन का ख़ौफ़

एक इससे भी बुलन्द दर्जे का ख़ौफ़ होता है। उसे "कामिलीन का ख़ौफ़" कहते हैं। वह क्या है कि वे हज़रात सब आमाल करते हैं मगर उसके बावजूद डर रहे होते हैं, घबरा रहे होते हैं कि कहीं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बेनियाज़ी वाली नज़र हमारी तरफ़ न उठ जाए। वे जानते थे कि हमारी इबादतें उसकी शान के सामने कोई हैसियत नहीं रखतीं। जब उसकी बेनियाज़ी वाली निगाह उठती है तो बलअम बाऔर की चार सौ साल की इबादतों को ठोकर लगा देते हैं। हमारे पल्ले तो चालीस साल की इबादत भी नहीं है। वे इस बात से डर रहे होते हैं कि कहीं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कोई ख़ुफ़िया तदबीर सामने न आ जाए और मौत के वक़्त ईमान का दामन कहीं हाथ से छूट न जाए। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़रीब क़ियामत में एक ऐसा वक़्त आएगा जब तुम देखोगे कि एक आदमी सुबह उठेगा तो ईमान वाला होगा और

शाम को सोने के लिए बिस्तर पर जाएगा तो वह ईमान से ख़ाली होगा। आज हम ऐसे ज़माने में अपनी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं।

अल्लाह तआला की जलालते शान का ख़ौफ़

एक सहाबी बैठे रो रहे थे। किसी ने पूछा, जी आप इतना क्यों रो रहे हैं? कहने लगे, बस अल्लाह तआला की जलालते शान की वजह से रो रहा हूँ। उन्होंने पूछा, क्या कोई गुनाह हो गया है? उन सहाबी ने गेहूँ का एक दाना जो सामने पड़ा हुआ था वह उठाकर दिखाया और कहने लगे कि मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूँ कि मेरी ज़िंदगी के गुनाहों का वज़न गेहूँ के दाने के बराबर भी नहीं है। मैं तो इसलिए रोता हूँ कि कहीं परवरदिगार आख़िरी वक़्त में तौहीद से महरूम न कर दे।

सैय्यदा आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा

यही वजह है कि महबूबा महबूबे ख़ुदा, मख़्दूमतुल-मुस्लिमीन, उम्मुल-मुमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूरी रात यह आयत पढ़कर गुज़ार दी ﴿وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ﴾ (उनको अल्लाह तआला की तरफ़ से एक ऐसा मामला पेश आएगा जिसका उनको गुमान ही नहीं होगा।) अगरचे यह आयत काफ़िरों के बारे में है लेकिन आप इसको पढ़कर रो रही थीं कि मेरे साथ यह मामला पेश न आ जाए।

हज़रत उमर और ख़ौफ़े ख़ुदा

एक बार हज़रत उमर ने पीने के लिए पानी मांगा तो उनको

पानी के बजाए शर्बत दे दिया गया। आप शर्बत पीने लगे तो आँखों में आँसू जारी हो गए। किसी ने कहा, ऐ अमीरुल मुमिनीन आप क्यों रोते हैं? फ़रमाया, मुझे क़ुरआन पाक की एक आयत रुला रही है। ऐसा न हो कि उमर बिन ख़त्ताब को कह दिया जाए ﴿أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا﴾ कि तुम अपनी नेमतें दुनिया के अंदर लूट चुके हो। तुमने ख़ूब मज़े उड़ाए। ऐसा न हो कि मुझे जो ये नेमतें मिल रही हैं ये मेरी नेकियों का अज्र कहीं दुनिया ही में न मिल रहा हो। आप इतना रोते थे कि आँसुओं की चलने की वजह से गालों पर लकीरें पड़ गई थीं हालाँकि आप मुरादे मुस्तफ़ा थे, अशरा मुबश्शरा में से थे मगर इसके बावजूद बहुत ज़्यादा रोने वाले थे। ज़ब तक इंसान इस दुनिया से नहीं चला जाता है उस वक़्त तक शैतान के हथकंडों का कोई एतिबार नहीं।

इमाम अहमद बिन हंबल रह० का ख़ौफ़े ख़ुदा

इमाम अहमद बिन हंबल रह० का एक मशहूर वाक़िआ है कि आपका आख़िरी वक़्त था। शागिर्दों ने कलिमा तैय्यबा पढ़ना शुरू कर दिया। हज़रत आगे से पढ़ते हैं "ला" और कुछ नहीं पढ़ते। बार बार यही मामला होता रहा। शागिर्द बड़े हैरान हुए कि पूरा कलिमा ज़बान पर क्यों जारी नहीं हो रहा। अल्लाह तआला ने रहमत फ़रमाई और आप संभल गए। तलबा ने पूछा, हज़रत! जिस वक़्त सब कलिमा पढ़ रहे थे, उस वक़्त आप पूरा कलिमा नहीं पढ़ रहे थे? फ़रमाने लगे, उस वक़्त मेरे पास शैतान आया और कहने लगा, अहमद बिन हंबल! तू ईमान को बचाकर दुनिया से चला गया और मैं उसे कह रहा था "ला" नहीं ऐ मरदूद! जब तक मेरी रूह निकल नहीं जाती उस वक़्त मैं तुझसे अमन में नहीं

हूँ। वे हज़रात जिन्होंने दीन की ख़ातिर ज़िंदगियाँ लगा दीं और जिनको क़ुरआन मजीद के मख़्लूक़ होने न होने पर इतने कोड़े मारे गए कि अगर हाथी को लगाए जाते तो वह बिलबिला उठता। ऐसी अज़ीम क़ुर्बानियाँ देने वाले आख़िरी वक़्त में इतना डर रहे होते हैं कि पता नहीं कि मेरे साथ क्या मामला बनेगा? फिर भला ग़ौर कीजिए कि हम किसी खेत की गाजर मूली हैं।

हज़रत हसन बसरी रह० और ख़ौफ़े ख़ुदा

सहाबा किराम, ताबेईन और तबे ताबेईन के तीन दौर ऐसे हैं कि इन लोगों में ख़ुशू ज़्यादा ग़ालिब होता था। हसन बसरी रह० के बारे में आता है कि आप चलकर आते तो तबीयत पर ऐसा ग़म होता था कि जैसे वह आदमी आ रहा हो जिसने अभी-अभी अपने बाप को क़ब्रिस्तान में दफ़न किया। जब बैठते थे तो यूँ महसूस होता था कि जैसे वह मुजरिम है जिसके लिए फांसी का हुक्म जारी हो चुका है। आप इस क़द्र रोते थे कि आँसुओं का पानी ज़मीन पर बह पड़ता था।

राबिया बसरिया रह० और ख़ौफ़े ख़ुदा

राबिया बसरिया रह० के बारे में किताबों में लिखा है कि आप ख़ौफ़ से इतना रोती थीं कि आँसुओं के क़तरे ज़मीन पर गिरने लगते तो इतने आँसू गिरते कि बाज़ दफ़ा ज़मीन पर घास उग जाती थी।

हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु और ख़ौफ़े ख़ुदा

हमारे बड़े जब ज़रा सी कैफ़ियत बदलते देखते तो फ़ौरन रो

पड़ते थे। एक बार हज़रत हंज़ला घर से निकले और कहने लगे ﴿نافق حنظلة نافق حنظلة﴾ ऐ अल्लाह के महबूब आपकी सोहबत में जो कैफ़ियत होती है वह घर में नहीं होती। बस हंज़ला तो मुनाफ़िक़ हो गया।

मुनाफ़िक़त का डर

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में आता है कि आपने अपनी ख़िलाफ़त में हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और कहा, भाई हुज़ैफ़ा! अल्लाह के महबूब ने आपको मुनाफ़िक़ों के नाम भी बता दिए और मना भी फ़रमा दिया कि आप वे नाम किसी और को न बताएं। अब मैं आप से वे नाम तो नहीं पूछता, सिर्फ़ इतना बता दो कि कहीं उमर का नाम तो उनमें शामिल नहीं है।

फ़िक्र की घड़ी

मेरे दोस्तो! ये वाक़िआत मामूली नहीं हैं कि हम पढ़कर आगे गुज़र जाएं या एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दें बल्कि ये हमें कुछ सबक़ दे रहे हैं कि हमारे दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का ख़ौफ़ होना चाहिए। उसकी जलालते शान हमारे सामने होनी चाहिए ताकि हम गुनाहों से बच सकें। आजकल तो गुनाहों का करना इतना मामूली सा नज़र आता है जैसे किसी तिनके को तोड़ देना। हैरत की बात है कि अगर दो चार साल का बच्चा भी पास हो तो कोई नौजवान फ़हश हरकत नहीं करेगा लेकिन जब महसूस करेगा कि तन्हा हूँ तो मालूम नहीं क्या-क्या हरकत करने लग जाएगा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने एक प्यारे बंदे की तरफ़

इल्हाम फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे! लोगों से कह दो कि जब तुम गुनाह करते लगते हो तो तुम उन तमाम दरवाज़ों को तो बंद कर लेते हो जिन दरवाज़ों से मख़्लूक़ देखती है और उस दरवाज़े को बंद नहीं करते जहाँ से मैं परवरदिगार देखता हूँ। क्या अपनी तरफ़ देखने वालों में से सबसे कम दर्जे का मुझे समझते हो?

एक इल्हामी बात

हम खाते भी अल्लाह तआला का हैं और शिकवे भी उसी के करते हैं और उसकी इबादत बंदगी और शुक्र अदा करने में सुस्ती कर जाते हैं। अता बिन रबाह रह० फ़रमाते थे कि अल्लाह तआला ने मेरे दिल में यह इल्हाम फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे! जब तुझको कोई ज़रा सी तकलीफ़ पहुँचती है तो तुम फ़ौरन लोगों में बैठकर मेरे शिकवे करना शुरू कर देते हो। जबकि तुम्हारा आमालनामा गुनाहों से भरा हुआ मेरे पास आता है मगर मैं फ़रिश्तों में बैठकर तुम्हारे शिकवे नहीं करता।

5. सबसे ऊँचे दर्जे का ख़ौफ़

सबसे ऊँचे दर्जे का ख़ौफ़ यह है कि इंसान अपनी तरफ़ से कोई भी गुनाह न करे। इसके बावजूद डरे कि मालूम नहीं कि मेरे साथ क्या मामला पेश आ जाए। हदीस पाक में आया कि सैय्यदना रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दूध पीते बच्चे की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और आपने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! इसको क़ब्र और जहन्नम के अज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमा देना। सहाबा किराम यह सुनकर बड़े हैरान हुए और पूछा कि ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह तो छोटा सा

बच्चा है। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने तो यह फ़रमाया है नाँ, ﴿لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ﴾ (मैं जहन्नम को जिन्नों और और इंसानों से भर दूंगा।) जैसे आग जलाने के लिए लकड़ी डाली जाती है, अल्लाह तआला बच्चों को इसी तरह पैदा करके जहन्नम को भर दे तो यह भी उसका इंसाफ़ है। उसको अख़्तियार है, कोई यह नहीं कह सकता कि परवरदिगार आलम ने यह क्यों किया? वह ख़ालिक़ है और ख़ालिक़ को इसका अख़्तियार होता है। एक आदमी लकड़ियाँ ख़रीदकर लाए और अगले दिन उसको आग में डाल दे तो उसको कौन पूछने वाला है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला मालिक है, ख़ालिक़ है, वह इतने बच्चे को भी जहन्नम में डाल दे तो उसको कोई पूछने वाला नहीं।

एक हदीस में आया है कि एक बार एक मासूम बच्ची का जनाज़ा पढ़ने के लिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले गए। वापसी पर घर में से किसी औरत ने कहा कि यह असाफ़ीरे जन्नत में से एक असफ़ोरा है यानी जन्नत की चिड़ियों में से एक चिड़िया थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुझे यह मालूम है कि क़ियामत के दिन इसका अंजाम क्या होगा?

आख़िर ख़ौफ़ कब तक?

जब तक मोमिन पुलसिरात से पार नहीं हो जाता तब तक वह ख़ौफ़ से अमन में नहीं है। यह मसअला बाक़ायदा उलमा ने लिखा है क्योंकि क़ुरआन मजीद में है ﴿وَإِنْ مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا﴾ जो कोई भी तुम में से है उसको जहन्नम के ऊपर से गुज़रना है। ﴿كَانَ عَلٰى

﴿رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا﴾ यह तेरे रब के नज़दीक हतमी और फ़ैसलाशुदा बात है। ﴿ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوا﴾ फिर हम मुत्तक़ी लोगों को नजात दे देंगे। ﴿وَّنَذَرُ الظّٰلِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا﴾ और जो ज़ालिम गुनाहगार होंगे उनको औंधे मुँह जहन्नम में गिरा देंगे। साबित यह हुआ कि जब तक इंसान पुलसिरात से नहीं गुज़रेगा वह ख़ौफ़ से अमन में नहीं होगा। अलबत्ता जिस लम्हे पुलसिरात से गुज़र जाएगा फिर ख़ौफ़ हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगा और हमेशा के लिए ख़ुशी का दौर शुरू हो जाएगा।

ख़ौफ़े ख़ुदा मांगने का तरीक़ा

हम दुनिया में जहाँ दुनिया की और बहुत सारी नेमतें मांगते हैं, हम उससे ख़ौफ़ वाली नेमत भी मांगे क्योंकि यह वह नेमत है कि जिसकी वजह से इंसान की गुनाहों से जान छूट जाती है। इसलिए दुआ मांगते हुए कहे कि ऐ अल्लाह! मैं आपसे ऐसा ख़ौफ़ मांगता हूँ जिसकी वजह से मेरे अंदर से गुनाहों का खोट निकल जाए।

मक़ामे ख़ौफ़

इंसान और जिन्नों के अलावा सारी मख़्लूक़ को मक़ामे ख़ौफ़ हासिल है। ऐ इंसान! तू अशरफ़ुल मख़्लूक़ात है मगर तेरे दिल में ख़ौफ़ ख़ुदा नहीं। बेहतर तो यह था कि अशरफ़ुल मख़्लूक़ात होने की वजह से आला दर्जे का ख़ौफ़े ख़ुदा तेरे दिल में होता।

मलाइका पर ख़ौफ़े ख़ुदा का असर

हदीस पाक में आया है कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैराज पर तशरीफ़ ले गए और सातवें आसमान

पर पहुँचे तो आपने ऐसे फ़रिश्तों को देखा कि जो सज्दे में पड़े हुए थे और उनके क़द इतने लंबे थे कि उनके कंधों के बीच कई मील का फ़ासला था। उनके कई-कई पर थे मगर वे सज्दे में पड़े हुए काँप रहे थे और कांपने की वजह से उनके जिस्मों से एक आवाज़ निकल रही थी। नबी अलैहिस्सलाम ने जिब्रील अमीन से पूछा, ऐ जिब्रील! यह क्या मामला है कि ये फ़रिश्ते सज्दे की हालत में भी हैं और इनके जिस्मों से आवाज़ें भी आ रही हैं? कहने लगे, ऐ अल्लाह के महबूब! यह जब से पैदा हुए उसी वक़्त से सज्दे की हालत में हैं और क़ियामत के दिन तक सज्दे ही में रहेंगे मगर उनके ऊपर अल्लाह तआला के ख़ौफ़ का ऐसा असर है कि उसकी अज़मत की वजह से यह थर्रा रहे हैं जिसकी वजह इनके जिस्मों से आवाज़ निकल रही है।

जिब्रील अमीन अलैहिस्सलाम और ख़ौफ़ खुदा

नबी अलैहिस्सलाम ने एक बार जिब्रील अलैहिस्सलाम से पूछा, ऐ जिब्रील! क्या तुझे मेरे रहमतुल्लिल्-आलमीन होने से हिस्सा मिला है? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जी हाँ मुझे आपकी रहमतुल्लिल्-आलमीनी से हिस्सा मिला है। आपने पूछा वह कैसे? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! जब आप दुनिया में तशरीफ़ नहीं लाए थे। उस वक़्त मैं अपने अंजाम के बारे में डरा करता था। मेरे सामने कई नेक लोगों के अंजाम बुरे हुए। मैंने शैतान का अंजाम भी देखा था जिसकी वजह से मैं भी डरा करता था कि पता नहीं मेरा अंजाम क्या होगा लेकिन जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए अल्लाह तआला ने आप पर एक आयत उतार दी :

﴿إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ○ ذِي قُوَّةٍ عِندَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ○ مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ○﴾

यह आयत क्योंकि मेरे बारे में है और इससे मुझे अपने अच्छे अंजाम का पता चल गया है। इसलिए मेरे दिल पर जो ग़म सवार रहता था आपकी रहमतुल्लिल्लि-आलमीनी के सदक़े मुझे अब इस ग़म से नजात नसीब हो गई है, सुब्हानअल्लाह।

अर्श पर अल्लाह तआला की जलालते शान का असर

मैंराज वाली हदीस में आया है कि जब नबी अलैहिस्सलाम अर्श से ऊपर जाने लगे तो आप ने अर्श के अंदर से एक आवाज़ सुनी जैसे किसी पर बहुत ज़्यादा वज़न हो तो उसमें से आवाज़ आती है। मसलन कोई भारी आदमी कुर्सी पर बैठे तो उसमें से आवाज़ निकलती है। इसी तरह अर्श से आवाज़ निकल रही थी। आपने पूछा, जिब्रील! यह आवाज़ कैसी है? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! इस अर्श पर अल्लाह तआला की जलालते शान का ऐसा असर है कि अल्लाह का अर्श भी उसकी हैबत से सहमा जा रहा है।

मख़्लूक़ात की तस्बीह

नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि इंसान के सिवा अल्लाह की जितनी मख़्लूक़ है वे सब अल्लाह तआला की इबादत करती है। क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ﴾ जो कोई भी चीज़ है वह अल्लाह तआला की हम्द व तस्बीह बयान करती है ﴿وَلَٰكِن لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ﴾ लेकिन

तुम उसकी तस्बीह को नहीं समझ सकते।

आलम की मख़्लूक़ में अरकाने नमाज़ की तक़्सीम

इर्शाद बारी तआला है ﴿كُلٌّ قَدْ عَلِمَ تَسْبِيْحَهُ﴾ (हर चीज़ को अपनी नमाज़ और तस्बीह का पता है।) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने पेड़ों को क़याम की हालत में पैदा किया, वे सारी ज़िंदगी क़याम की हालत में रहते हैं। अल्लाह तआला ने चौपायों को रुकू की हालत में पैदा फ़रमाया। वे सारी ज़िंदगी रुकू की हालत में रहते हैं। अल्लाह तआला ने कीड़ों को सज्दे की हालत में पैदा किया। वे सारी ज़िंदगी सज्दे में रहते हैं। अल्लाह तआला ने पहाड़ों को अत्तहियात की शक्ल में पैदा किया, वे सारी ज़िंदगी अत्तहियात की शक्ल में रहते हैं।

ऐ इंसान! मख़्लूक़ को सिर्फ़ एक-एक अमल मिला और वे सारी ज़िंदगी उसी अमल पर ज़िंदगी गुज़ार रही है। तुझे अल्लाह तआला ने तमाम आमाल का मजमूआ अता फ़रमा दिया। तू क़याम करता है तो तुझे पेड़ों की इबादत के साथ एक मुनासबत मिल जाती है, रुकू करता है तो चौपायों की इबादत का अज्र भी तुझे मिल जाता है, सज्दे करता है तो तुझे कीड़ों की इबादत का भी अज्र दिया जाता है और क़ायदे में बैठकर इबादत करता है तो तुझे पहाड़ों की इबादत का भी अज्र मिल जाता है। अल्लाह तआला ने तुझ पर कितना बड़ा करम कर दिया कि उसने तुझे एक कामिल इबादत अता कर दी। मगर अजीब बात यह है कि जब तू नमाज़ में खड़ा होता है तो नमाज़ की हालत में भी तू दुनिया के ख़्यालात में गुम होता है।

पेड़ का रुकू और सज्दा

हदीस पाक में फ़रमाया गया है कि तुम में से कोई आदमी भी किसी सायादार और फलदार पेड़ के नीचे पेशाब व पाख़ाना न करे। सहाबा किराम ने पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! इसमें क्या हिकमत है? आपने फ़रमाया, पेड़ का साया जब घटता बढ़ता है तो यह पेड़ अल्लाह तआला के सामने रुकू और सज्दा कर रहा होता है।

ऊँट के दिल में ख़ौफ़ ख़ुदा

हदीस पाक में आया है कि एक सहाबी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मेरा एक ऊँट है। मैं सारा दिन मेहनत मज़दूरी करता हूँ। इस ऊँट पर सामान लादता हूँ। और मैं उसके दाने पानी का पूरा-पूरा ख़्याल रखता हूँ। लेकिन जब मैं रात को आकर सोता हूँ तो कभी-कभी वह ऐसी दर्दनाक आवाज़ निकालता है कि मेरी आँख नहीं लगती। अब मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूँ। आप दुआ फ़रमा दीजिए कि ऊँट मुझे रात को सोने दिया करे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब यह बात सुनी तो आपने फ़रमाया, हमने मुद्दई की बात सुन ली। अब हम जिस पर दावा किया गया है उसको भी बुलाएंगे। चुनाँचे ऊँट को बुलाने का हुक्म दिया गया। किताबों में लिखा है कि जब ऊँट को पैग़ाम दिया गया तो ऊँट बड़े अदब व एहतिराम से चलता हुआ बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हुआ। वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने अत्तहिय्यात की शक्ल में बैठ गया। नबी करम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऊँट से इर्शाद फ़रमाया कि तेरा मालिक तेरी शिकायत बयान कर रहा है कि वह तेरे दाने पानी का ख़्याल रखता है लेकिन तू उसका ख़्याल नहीं रखता और रात को ऐसी आवाज़ें निकालता है कि जिससे तेरे मालिक की नींद ख़राब होती है। यह क्या मामला है?

यह सुनकर ऊँट की आँखों में आँसू आ गए और कहने लगा, ऐ अल्लाह के महबूब! मामला यह है कि हम दोनों सारा दिन मेहनत व मज़दूरी करते हैं। यह मेरा ख़्याल रखते हैं और मैं इनका ख़्याल रखता हूँ। यह बोझ लादते हैं और मैं लेकर पहुँचाता हूँ। यह मुझे दाना भी देते हैं। हम दोनों एक दूसरे के अच्छे साथी हैं। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब अच्छे साथी हो तो फिर इसको सोने क्यों नहीं देते? वह कहने लगा, ऐ अल्लाह के नबी! मामला यह है कि यह कई बार थके हुए आते हैं, मग़रिब के बाद खाना खाते हैं। उस वक़्त कभी-कभी इन पर नींद ग़ालिब आ जाती है तो सोचते हैं कि मैं थोड़ी देर के लिए कमर सीधी कर लूं। फिर मैं उठकर इशा की नमाज़ पढ़ लूंगा। लेकिन जब कमर सीधी करने के लिए लेटते हैं तो नींद गहरी हो जाती है। इन्होंने इशा की नमाज़ नहीं पढ़ी होती। रात को काफ़ी देर हो जाती है क्योंकि मैं क़रीब होता हूँ इसलिए मुझे नींद नहीं आती कि अगर इनकी नमाज़ क़ज़ा हो गई तो कहीं ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला मुझसे पूछें कि तूने अपने साथी को क्यों नहीं जगाया था ताकि वह मेरे हुक्म की पाबन्दी कर लेता। ऐ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! थकावट की वजह से मेरे ऊपर भी नींद का ग़लबा होता है मगर मैं अल्लाह तआला की

जलालते शान की वजह से डरता हूँ और दर्दनाक आवाज़ें निकालता हूँ कि मेरा मालिक उठ जाए और अपने मालिक की बंदगी कर ले।

ऐ इंसान! एक जानवर के दिल में तो ख़ौफ़े ख़ुदा का यह हाल है कि अल्लाह तआला का हुक्म टूट रहा है ओर उसको नींद नहीं आ रही है और तू अशरफ़ुल मख़्लूक़ात है और अल्लाह तआला के हुक्मों को तोड़ता फिरता है। तेरे घर में नबी अलैहिस्सलाम की सुन्नतों को ज़िब्ह किया जाता है मगर तुझे एहसास नहीं होता। तेरी औलाद तेरी आँखों के सामने अल्लाह के हुक्म को तोड़ती है लेकिन अपने दिल में ग़मगीन नहीं होता। आख़िर तो कोई वक़्त आएगा जब हमें अपने दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ पैदा करने की ज़रूरत महसूस होगी।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० और ख़ौफ़े ख़ुदा

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० ने सारी ज़िंदगी हदीस पढ़ाई। यहाँ तक कि एक वक़्त में चालीस-चालीस हज़ार शागिर्द उनसे हदीस पाक पढ़ा करते थे। जब वह फ़ौत होने लगे तो अपने शागिर्दों से फ़रमाया कि मुझे चारपाई से उठाकर ज़मीन पर लिटा दो। नीचे न कोई क़ालीन था न कोई फ़र्श था और न कोई संगे मरमर लगा हुआ था। फिर भी शागिर्दों ने हुक्म पूरा करते हुए उनको ज़मींन पर लिटा दिया। यह देखकर तलबा की चीख़ें निकल गयीं कि इतने बड़े मुहद्दिस अपनी दाढ़ी को पकड़कर अपने गालों को ज़मीन पर रगड़ने लग गए और रोते हुए दुआ करने लगे कि ऐ अल्लाह! अब्दुल्लाह के बुढ़ापे पर रहम फ़रमाना। अल्लाहु अकबर जिसने सारी ज़िंदगी हदीस पढ़ाई उसने यह नहीं कहा कि

ऐ अल्लाह! मैंने हदीस के दर्स दिए, मैंने लोगों को दीन की तरफ़ बुलाया, मैंने लोगों को नेकी तरफ़ बुलाया। कोई अमल इस क़ाबिल न समझा कि अल्लाह की हुज़ूर पेश कर सकें। आख़िर में आजिज़ी कर रहे हैं कि ऐ अल्लाह! अब्दुल्लाह के बुढ़ापे पर रहम फ़रमा। वह अपने सफ़ेद बालों को पेश करते थे कि ऐ अल्लाह! कोई अमल ऐसा नहीं जो आपके सामने पेश कर सकें। आप ही मुझ पर रहम फ़रमाइए। हमें भी इसी तरह करना चाहिए कि हम भी अपने गुनाहों को याद करके अल्लाह तआला के सामने नादिम हों और उसका ख़ौफ़ तलब करें ताकि गुनाहों से बच सकें। इस तरह मांगें कि जैसे हमें जो कुछ मिलना है वह अल्लाह तआला की रहमत से ही मिलना है। इस दर से हटकर हम जाएंगे तो हमें कुछ नहीं मिल सकता।

अल्लाह तआला से माफ़ी मांगने का तरीक़ा

हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि जिस तरह एक बच्चे को किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो वह अपनी माँ से मांगता है। माँ झिड़क देती है तो बच्चा फिर मांगता है। माँ फिर झिड़क देती है। यहाँ तक कि थप्पड़ भी लगा देती है मगर बच्चा रोते हुए फिर अपनी माँ से लिपट जाता है और उसी का दामन पकड़कर कहता है कि अम्मी! अब तो दे दे। बच्चे को यक़ीन होता है कि अम्मी को ही मनाना है और इसी से मेरी ज़रूरत पूरी होनी है। हम से तो वह छोटा बच्चा अच्छा है जो इस मारिफ़त को समझ लेता है और रो-रो कर अपनी माँ को मना लेता है। मगर अफ़सोस कि हम रोकर परवरदिगार को नहीं मना सकते। हम माफ़ी तो मांगते हैं मगर माफ़ी ऐसी नहीं होती। उस वक़्त दिल में नदामत भी पूरी

होती। हमें चाहिए कि हम सच्चे दिल के साथ अल्लाह तआला से माफ़ी मांगें बल्कि इसरार के साथ अल्लाह तआला से माफ़ी मांगे। आजिज़ी और इन्किसारी के साथ माफ़ी मांगे कि ऐ परवरदिगार! आपके मेरे जैसे अरबों खरबों बंदे हैं मगर मेरा तो तेरे जैसा कोई माबूद नहीं। रब्बे करीम तू मेहरबानी फ़रमाकर मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे।

एक अजीब वाक़िआ

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह० ने एक अजीब बात लिखी है। सुब्हानअल्लाह! फ़रमाते हैं कि मैं एक दफ़ा एक गली से गुज़र रहा था। एक दरवाज़ा खुला। मैंने देखा कि कोई आठ नौ साल का बच्चा है और उसकी माँ उससे नाराज़ होकर उसको थप्पड़ लगा रही है। उसको धक्के दे रही है और कह रही है कि तू नाफ़रमान बन गया है, मेरी कोई बात नहीं सुनता, कोई काम नहीं करता, दफ़ा हो जा, चला जा यहाँ से। यह कहकर माँ ने जो धक्का दिया तो वह बच्चा घर से बाहर आ गया। फ़रमाते हैं कि माँ ने तो कुंडी लगा ली। अब मैं वहीं खड़ा रह गया कि देखूं अब क्या होता है? फ़रमाते हैं कि बच्चा रो रहा था क्योंकि मार पड़ी थी। ख़ैर वह उठा और कुछ सोचता-सोचता एक तरफ़ को चलने लगा। चलते-चलते वह एक गली के मोड़ पहुँचा। वहाँ खड़े होकर वह कुछ सोचता रहा और सोचने के बाद उसने फिर वापस आना शुरू कर दिया और चलते-चलते अपने घर के दरवाज़े पर आया और आकर बैठ गया। थका हुआ था, रो भी काफ़ी देर से रहा था। दहलीज़ पर सर रखा, नींद आ गई। वहीं सो गया। चुनाँचे काफ़ी देर के बाद उसकी माँ ने किसी काम के लिए दरवाज़ा खोला तो

क्या देखती है कि बेटा उसी दहलीज़ पर सर रखा हुआ पड़ा है। माँ का गुस्सा अभी ठंडा नहीं हुआ था। माँ ने उसे बालों से पकड़ कर फिर गुस्से से उठाया और कहा तू दफ़ा हो जा, यहाँ क्यों पड़ा हुआ है। बच्चे की आँखों से फिर आँसू आ गए। वह कहने लगा, अम्मी! जब आपने धक्के देकर घर से निकाल दिया था तो मेरे दिल में ख़्याल आया था कि मैं कहीं चला जाता हूँ, मैं बाज़ार में खड़ा होकर भीख मांग लूंगा या फिर किसी के जूते साफ़ कर लूंगा। यह सोचकर मैं गली के मोड़ तो चला गया लेकिन अम्मी! वहाँ जाकर मेरे दिल में ख़्याल आया कि ऐ बंदे! तुझे दुनिया में खाना पीना तो मिल जाएगा मगर तुझे माँ की मुहब्बत तो कहीं से नहीं मिल सकेगी। माँ की मुहब्बत अगर तुझे मिलेगी तो सिर्फ़ इसी घर से मिलेगी। अम्मी! यह सोचकर मैं वापस आ गया। अब मैं इसी दर पे पड़ा हूँ। अम्मी! अब अगर तू धक्के भी दे तो मैं कहीं नहीं जा सकता। अम्मी! क्योंकि तेरी जैसी मुहब्बत मुझे कोई नहीं दे सकता। जब माँ ने यह बात सुनी तो उसका दिल मोम हो गया। उसने कहा, बेटे! जब तेरे दिल में यह एहसास है कि तुझे मुझे जैसी मुहब्बत कोई नहीं दे सकता तो अब तुम्हारे लिए इस घर के दरवाज़े खुले हैं। आ और इस घर में अपनी ज़िंदगी गुज़ार ले।

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह० फ़रमाते हैं कि बंदे को भी चाहिए कि इसी तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से माफ़ी मांगे और कहे कि परवरदिगार! यही तो दर है जहाँ से माफ़ी मिलनी है। ऐ अल्लाह! दूसरा कोई दर ऐसा नहीं है। मैं तेरे दर को छोड़कर कहीं नहीं जा सकता। जब इंसान इस तरह माफ़ी मांगेगा तो फिर अल्लाह तआला अपने बंदे की माफ़ी क़बूल फ़रमाकर पिछले गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे।

एक दर्द भरी दुआ

किसी ने क्या ही प्यारी बात कही—

اِلٰهِیْ عَبْدُكَ الْعَاصِیْ اَتَاكَ

مُقِرًّا بِالذُّنُوْبِ وَقَدْ دَعَاكَ

فَاِنْ تَغْفِرْ فَاَنْتَ لِذَاكَ اَهْلٌ

وَاِنْ تَطْرُدْ فَمَنْ يَّرْحَمْ سِوَاكَ

ऐ अल्लाह! आपका गुनाहगार बंदा आपके दर पर हाज़िर है। अपने गुनाहों का इक़रार करता है और आपसे दुआएं मांगता है, अगर तू मग़फ़िरत कर दे तो तुझे यह बात बड़ी सजती है। अगर तू ही धक्के दे दे तो फिर कौन है, कोई दूसरा दर वाला कि मैं वहाँ चला जाऊँ।

मेरे दोस्तो! आज की इस महफ़िल में हम अपनी ज़िंदगी के पिछले तमाम गुनाहों से माफ़ी मांगे और आइन्दा के लिए अल्लाह तआला से उसका ऐसा ख़ौफ़ मांगे जो हमें गुनाहों से बचा ले ताकि हम भी अपनी ज़िंदगी के कुछ दिन गुनाहों से पाकीज़ा गुज़ारकर अपने परवरदिगार के हुज़ूर पहुँच जाएं।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾